वैदिक-आर्य-हिन्दू गौरवांश झलक

राजस्थानी-देन

अंकेता-

दिनेश मिश्र

गोंदिया

प्रकाशक-

साहित्य-मण्डल

गोंदिया (महाराष्ट्र

ाशक–
हित्य-मण्डल
दिया (महाराष्ट्र)

मुद्र
निर्भर
हाथरस

सर्वाधिकारी
लेखक–दिनेश मिश्र

प्रथम संस्करण १९[illegible]
मूल्य ५०-०
सहयोग सुमन ४०-० मृणाल

धन्यवाद–
समस्त ज्ञात-अज्ञात सहयोगियो के प्रति साभार धन्यवाद

श्री

ई० १९५७ में स्थापित

देवनागरी प्रधान भिन्न भाषायी साहित्य सेवी संस्था

साहित्य-मण्डल, गोंदिया द्वारा

अन्याय के समक्ष

नही झुकनेवाली महान आत्माओं के प्रति

वैदिक-आर्य-हिन्दू गौरवांश झलक

"राजस्थानी-देन"

शण्ठं शब्द गुच्छ

सादर अर्पित
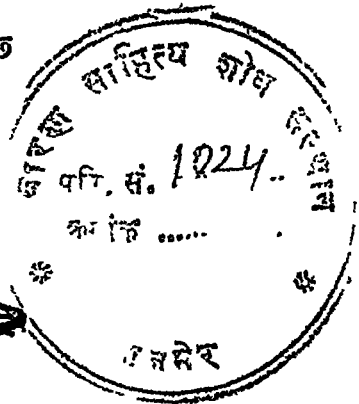
दुर्जनः खलु द्रष्ट्वै न मसूयन्तेच नित्यशः

सज्जना मोदमायान्तु परिश्रम विदो बुधाः (सं)

प्राङ्गण प्रवेश–

ई० १५ के पहले से भारत की ओर यवन आक्रमण होने लगे थे। ई० ७ वी सदी से मुस्लिम आक्रामक ने भारतीय अपार धन राशि लूट कर स्वदेश ले गये। भारतीय विशाल ग्रंथ भण्डार यत्र तत्र जला गए। कई स्थानो पर तोड फोड, विध्वस, आगजनी, लूट, खसोट, कल्लेआम, स्त्री-पुरुष बालको का हरण, उन्हे अरब मे बेचना, हजारो व्यक्तियो को वल पूर्वक मुस्लिम वनाना, घृणित कार्य करवाना आदि कारणोवश भारतीय आर्थिक, वौद्धिक एव जनशक्ति की जवरदस्या हानि हुई। परस्पर ऊँच, नीच, जातीय, प्रान्तीय द्वेश-विश्र व्याप्त हुआ।

अ–भारतीय तथा उनके प्रभाव मे भारतीय लेखनी ने पोरस, पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप के वन्दनीय विजय-इतिहास को निन्दनीय पराजित चित्रित करने का श्रम किया है।

पोरस का विजयी पौरुष, विषम परिस्थितियो मे भी पृथ्वीराज चौहान की दृढतम कर्त्तव्य निष्ठा, एव हर ओर से उफनते मुगली लावे के विक्राल थपेडो को पछाडकर त्रिविध वीर महाराणा द्वारा मगर रूपी अकवर के कराल जबड़े से छीनी गई विजयमाल का चित्रण। विश्व मे सदियो पहले से व्याप्त भारतीय-राजस्थानी सहयोग की झलक। विश्व विज्ञान का प्रेरणा श्रोत आद्य ज्ञान ग्रंथ वेदो का सृजन स्थल राजस्थान। भारत मे मुगल आगमन के पहले से मुसलमान वस रहे थे, किन्तु मुगल और अंग्रेजो द्वारा छुआ छूत धार्मिक द्वेष का जहर फैलाया जाना।

राजस्थान एवं राजस्थानी समाज की सर्वोच्च गौरव गरिमा को घृणित रूप मे प्रस्तुत कर भारतीय शौर्य की उज्ज्वलता को लांछित करने की दुष्टता। १८५७ के पहले से स्वतन्त्रता सग्राम मे राजस्थानी पहल, आउआ, मानागढ, हाथरस, अलवर, भोमट, कोटडा आदि मे हथारो नर नारी शहीद। सैकडो

घरो की होली जिन की तुलना मे जलिया वाला काण्ड तुच्छ है। का अंशाकन इसमे है। इस प्रगति युग मे प्राचीन मान्यताओ से जुड़े रहना, पिछडापन मान कर पिता को भूलना, पाश्चात्य भौतिकीय अन्धानुकरण मे नैतिक पतन है। पूर्वजो की श्रेष्ठताओ मे पाश्चात्य श्रेष्ठताएं समाविष्ट कर श्री वृद्धि करना बुद्धि कौशल्य है। पूर्वजो की गौरव गाथा प्रेरणाप्रद होती है।

यह कृति प्रथम सोपान है गुजरात, हरियाणा, पंजाब, ब्रज, सिन्ध, आदि सोपान विद्वानो द्वारा निर्मित होना आवश्यक है। गुजरात भी असंख्य देव-स्थान, सिद्धभक्त, दानवीर एवं रणवीरो की भूमि है। इसी तरह सिन्ध, हरियाणा, पंजाब एवं ब्रज के सांस्कृतिक ऐतिहासिक रत्न भण्डार को कोई विद्वान जौहरी सजोकर प्रस्तुत करे तो हिन्दु गौरवाश अधिक उज्ज्वल होगा। पुस्तक मे सामग्री अभूतपूर्व नही है, भूत पूर्व की है।

अंकेता

दिनेश मिश्र

जाज्वल्य गौरव

विश्व इतिहास के उज्ज्वल पृष्टों मे भारतीय इतिहास के कुछ पृष्ठ मेरी दृष्टि से समुज्ज्वल है, किन्तु इन पृष्ठो की जाज्वल्यता को विदेशी लेखको और उनके अनुगामी भारतीय लेखकों ने विकृत करने का मनः पूर्वक श्रम किया है।

उन मिथ्या विकृतियो का अनुधावन करने पर प्रगट होता है कि बलपूर्वक मिथ्या प्रसिद्धि बटोरने वाले शहशाह अकबर को महान सिद्ध करने, उसके क्रूर कुटिल घिनौने चरित्र एव मेवाड मे हुई अकबरी घोर पराजयो को छुपाने तथा अकबर को हर प्रकार से राष्ट्र हितैषी, सघटक, उदार, सहिष्णु, अनोखा, अभूतपूर्व, महान व्यक्ति चित्रित करने का भरसक मिथ्या प्रयत्न किया कराया गया है

इसी प्रकार अकबर के भारतीय साथी, सहयोगी, मातहत वैभव सह पदलोभी मन्सबदार राजपूतो द्वारा स्वार्थ लिप्सा मे किये गए राष्ट्रीय, क्षेत्रीय (प्रान्तीय), सामाजिक, धार्मिक, सभी प्रकार के घातक दुष्कृत्यो को सुकृत्य निरूपित करते हुए पोरस, पृथ्वीराज चौहान एव राणा प्रताप की सर्वागीण यथार्थ उज्ज्वलता को धूलाच्छादित करने की कुटिल दुश्चेष्टा सुनियोजित रूप से की गई परिलक्षित होती है, क्योकि अपरिमेय धन, बल और तत्कालीन नूतन बारूदी शस्त्र सज्जित क्रूर हिंसक मुगलिया विशाल सैन्यबल का स्वामी अकबर जिसकी सेवा मे समर्पित विभीषण रूपी राजपूत-सुपूत कुपूत राजाओ की लम्बी कतार थी। इन समस्त सबल विनाशकारी शक्ति-पुंजो के समक्ष एक मात्र तेजोराशि दिवाकर की भाति भारतीय गौरव रूपी गगन मे अपने प्रखर प्रताप से ताप का प्रबल प्रताप प्रतापित हुआ है।

प्रताप अकबर की तुलना मे धन, बल एवं सैन्यबल मे अति तुच्छ होते हुए भी सर्व शक्ति सम्पन्न अकबर से परास्त नही होकर उल्टे अकबर को प्रताप ने बार-बार शिक़स्त दी है, पराजित किया है।

शत्रु को रणभूमि पर परास्त करना या मौत के घाट उतार देना विजयान्त है यह एक बार की विजय है किन्तु, शत्रु की कुटिल चालों को बार-बार असफल कर निरन्तर विजय पाना कुशल खिलाड़ी के लिए विजयभाल है, यही तो प्रताप ने प्राप्त किया है।

मुगलिया खूनी पंजो द्वारा चारों ओर से घिरे हुए नन्हे मेवाड़ याने छोटे से प्रताप को, अकबर विशाल चौबीस वर्ष हर प्रकार के प्रयत्न करके जिन्दा या मुर्दा भी नही पा सका एवं उसे न ही झुका सका। प्रताप का निवास, अधिकार, शासन मेवाड में था यहाँ अकबरी शासन कभी नही हुआ यह महाराणा प्रताप की सुस्पष्ट विजय तथा अकबर दी ग्रेट की ग्रेट पराजय के सुस्पष्ट प्रमाण हैं।

हल्दी घाटी युद्ध में आक्रामक प्रबल विशाल मुगल सैन्य से मुठ्ठी भर मेवाडी सेना लेकर टकरा कर बचकर प्रताप ने सिद्ध कर दिया था कि बाहुबल के साथ बुद्धिबल भी हमारे में है।

प्रताप अकबर सर्वोच्च लोभ को ठुकराकर शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक असहनीय कठिन कष्टो को सहज निर्विकार सहकर अपने आर्य-हिन्दू राजधर्म के सिद्धान्त पर अविचल अडा रहा और छोटे-छोटे छापामार आक्रमण करने की नयी नीति अपनाकर सफल विजयी हुआ है। यह सत्य सर्वत्र स्पष्ट प्रमाणित है, अत: विजयी प्रताप को पराजित एवं पराजित अकबर को विजयी बतलाना ऐतिहासिक धोखा है।

प्रताप की तरह पोरस की उज्ज्वल विजय को भी पराजय चित्रित करने का कुत्सित प्रयास हुआ है तथा इसी प्रकार की भ्रामकता अन्यत्र भी है। ऐसी सत्य विजयो को भ्रमजाल मे उलझाया गया है। उन्ही सत्य मुक्ताओ को भ्रमजाल की उलझन से मुक्त करवाने का यह आंशिक प्रयास मात्र है।

निन्दा या स्तुति के परिवेश को त्याग कर यथार्थ कटु भी स्वीकारना चाहिये। विशाल सैन्यबल युत अकबरी शक्ति का साधन क्षीण

राणा प्रताप पर विजयी नही होने से उत्पन्न लज्जामय दशा को आवृत्त करते हुए भविष्य मे विजयी कहलाने हेतु महत्वाकांक्षी प्रशंसानुरागी तानाशाह क्रूर अकबर के कृपाभिलाषी शाही इतिहास लेखक अब्दुल कादर बदायूनी एव अबुल फजल आदि के द्वारा अकबरी प्रसन्नता हेतु अकबरी दोषो की सराहना एव घोर पराजय को विजय लिख अकबर की कोर दृष्टि से बचकर कृपा दृष्टि पाना इनके लेखन का मुख्य ध्येय था क्योंकि इनके लिए रोजी रोटी जीवन मरण का प्रश्न था। भाट मित्थ्या प्रशसक भी हुए हैं। किन्तु चारण राजाओ के आश्रित रहकर भी स्पष्ट सत्यवादी मर्गदर्शक थे। स्पष्टवादिता मे इन्हे हानि भी हुई है। फिर भी इनकी कलम को मित्थ्या चाटुकार कह उपेक्षित किया गया है। जबकि सही चाटुकार बदायूनी और फजल है। बदायूनियो पर व्यगात्मक प्रसिद्ध उक्ति है। "वदायूं के लल्ला" यानि भोला अनाडी, इस योग्यता वाला बदायूंनी मुस्लिम सैनिक सरदारो से आत्म प्रशसा मुनता रहा, लिखता रहा। अकबरी पराजय का उल्लेख करना मौत को निमन्त्रण देना था इनकी लेखनी पर अकबर स्वय निगाह रखता था। इसलिए अकबरी दोषहीनता पराजय, क्रूरता आदि का सत्य स्पष्ट लेखन करने का दुसाहस बदायूंनी, फजल आदि नही कर सके। किन्तु वदायूंनी की लेखनी मेवाड़ी विजय एवं मुगलिया पराजय का परोक्ष स्पष्ट संकेत करती है।

अकबर मे प्रताप तो पराजित किसी भी रूप में नही हुआ है, हाँ हमारे अनेक इतिहासज्ञ मुगल कलम से पराभूत अवश्य हुए हैं।

अकबरी विशाल शक्ति से क्षीण बल प्रताप का परास्त नही होकर विजयी होना अविश्वसनीय आश्चर्यप्रद होते हुए भी उसी प्रकार सत्य है जिस प्रकार छोटे से अकुश द्वारा कुशल महावत गजराज पर अधिकार रखता है। किन्तु अकबरी कृपापात्र बदायूंनी और फजल जैसे (नामानिगार) इतिहास लेखक प्रताप के पास नही थे, फिर भी

प्रताप का श्रेष्ठ इतिहास जनमानस के विशाल ग्रंथ रूपी पारिवारिक वंशानुगत पृष्ठों पर अमिट अंकित है। मिथ्या निन्दा या प्रशंसा के पूर्वाग्रह को त्याग कर यथार्थ सत्य शोधकर जनता के समक्ष रखना चाहिए।

सिकन्दर-अकबर महान (थे), नहीं थे

"सिकन्दर की घोर पराजय तथा पोरस की विजय हुई है।" महान कहा जाने वाला सिकन्दर, हिन्दकुश पारकर कवायलियो से पिटता हुआ भारत मे प्रवेश किया तब तक्षशिला का शासक आम्भीक सिकन्दर से अड़तीस लाख रुपया लेकर सिकन्दर का साथी बन गया, शशिगुप्त भी सिकन्दर का सहायक बना, काश्मीरी अभिसार नरेश, सिकन्दर के पक्ष में तटस्थ रहा। जब कि मार्ग के छोटे-छोटे स्थान कुनार, पजकेरा, स्वात, मस्सग आदि के कबाइलियो ने सिकन्दर को भारत मे प्रवेश करने से रोकने तथा उसे वापस लौटाने हेतु आक्रामक रूप से सिकन्दरियो पर हमला करके जान की बाजी लगा दिये किन्तु वे अफगान-पठान सफल नही हो सके। सिकन्दर झेलम किनारे पहुँचा तब दूसरे तट पर सेना सहित यादवराज पुरुषोत्तम पोरस भी आ पहुँचा था। पोरस की सेना को देख विचलित हुये सिकन्दर ने कपट का सहारा लिया, सेनापति क्रातेरस के आधीन चन्द्रावल सेना को नृत्यगान उत्सव मनाते रहने का आदेश देकर स्वयं सेना सह वृक्षो की ओट लेता हुआ लगभग साठ मील तट के किनारे-किनारे छुपकर बढता हुआ हरणपुर स्थान से रात के अंधेरे मे चोरी से झेलम नदी को पार कर पोरस की ओर सेना सह दौडा है। दोनो पक्ष की सेनाओ का सामना हुआ तब केकय नरेश पोरस ने सिकन्दर को सूचित किया कि निरीह सेना क्यो कटवाई जाय आओ हम दोनो ही परस्पर युद्ध करके विजय-पराजय का फैसला कर ले? किन्तु इस चुनौती को विश्व विजेता महान पराक्रमी कहलाने वाले बुजदिल सिकन्दर ने स्वीकार नही किया, इन्कार कर दिया। युद्ध

आरम्भ हुआ। पोरस की सेना के हरावलिया पोरस के पुत्र ने ग्रीक सेना पर जबरदस्त आक्रमण कर मध्य में पहुँचा और सुरक्षित सिकन्दर पर वार किया किन्तु सिकन्दर घोड़े पर से नीचे गिरा और अपने रक्षको की ओट मे छुप कर बच गया। उसका प्रसिद्ध घोड़ा बुसेफ़ेलस मारा गया। सिकन्दर भी घायल हो गया था। इस घटना ने सिकन्दरी सेना को भय ग्रस्त कर दिया था। परन्तु सिकन्दर के रक्षक सैनिको द्वारा अकेला पोरस पुत्र मारा गया। झेलम के दूसरी ओर रुकी हुई नाच-गान का अभिनय करने वाली सिकन्दर की रक्षित चंदावल सेना लेकर सेनापति क्रातेरस भी रणक्षेत्र पर आ पहुँचा था। घमासान युद्ध हुआ, सिकन्दर बुरी तरह पराजित हुआ।

परन्तु इसके विपरीत भारतीय लेखक दिग्भ्रमित हो पराजित सिकन्दर को विजयी एव शत्रु पोरस पर दया कर उसे उसका राज्य लौटा देने वाला महान उदार लिखे है, जो निःसन्देह मिथ्या है।

पोरस ही विजयी हुआ है, सिकन्दर पराजित हुआ है, वास्तविक सत्य तथ्य यही है।—

(१) ग्रीक सैनिको ने पोरस के हाथियो की आँखे बाण द्वारा फोड़ दी, यह तर्क मिथ्या है, सभी ग्रीक सैनिक सिद्ध निशाने बाज नही थे जो अनेक हाथियों की आँख पर अचूक निशाना लगा लिये हों। (२) तलवार से सूण्डे काट दी यह तर्क भी मिथ्या है। (३) अचानक वर्षा होने से हाथी फिसलकर गिरने लगे, उठकर अपनी ही सेना को रोदते थे, इसलिये पोरस पराजित हुआ, इत्यादि तर्क बचकाना हैं, पूर्णत. गलत है।

पोरस, पोरस का मन्त्री, सेनापति, गजसेनापति, गजपाल, गज-शिक्षक, महावत, गजसैनिक, अश्वसेना, पदाति सैनिक, आदि सभी गज प्रकृति एवं गज युद्ध से परिचित थे। सैन्यबल जिस प्रकार का होता है उसकी व्यवस्था एवं संचालन में सभी प्रकार से प्रवीणता रखी जाती है। उपयुक्त स्थान पर ही उसका उपयोग किया जाता है।

राजा और गज सेनापति, गज और गज सैनिक प्रशिक्षित एवं पूर्ण अनुभवी रहते है। अनुभव हीन व्यक्ति महावत का साथी भी नही रह सकेगा, पोरस की गज सेना प्रशिक्षित थी।

अन्य पशुओ की अपेक्षा हाथी अधिक समझदार होता है, सर्कस मे उत्तम कला प्रदर्शन अधिक प्रमाण मे हाथी ही करता है। हाथी को साथी बनाने हेतु आँवला एव हाथी को क्रोधोन्मत्त कर प्रचण्ड आक्रा-मक बनाने हेतु विशेष ढग का शब्दोच्चारण किया जाता है कि जिसको सुनकर हाथी क्रूर हिंसक-विध्वसक बन जाता हे। मौसम, समय, असुरक्षा (खतरा), मित्र, शत्रु, अनुचित मार्ग, आदि को समझने की क्षमता हाथी मे रहती है। तथा इनके प्रति वह महावत को सकेत देता हे, सिंह की गध दूर से पाकर हाथी अपने सवार को बचाने का यत्न करता है। किन्तु घोडा मील भर दूर रहने पर भी अपने सवार को सिंह के समक्ष भोजन हेतु सादर पहुँचा देता है। महाराणा प्रताप के प्रसिद्ध हाथी रामप्रसाद को हथियाने की लालसा अकबर मे इसलिये थी कि वह हाथी अत्यन्त कुशल लडाका था। खेतडी नरेश अजीतसिंह की मृत्यु सुनकर उनका प्रिय हाथी मोती पट्ठा निरन्तर निराहार रह रोते-रोते प्राण त्यागा था। महाराणा साँगा के समय अहमदनगर किले का लौहजडित विशाल द्वार तथा महराणा अमर सिंह के समय का ऊँठाणा किले का द्वार हाथी ने मस्तक की हूल-टक्कर देकर तोडा है। द्वार मे लगी लोहे की सुद्रढ नुकीली कीलो पर राजपूत वीर अपना शरीर अडाकर हाथी की हूल अपने सीने पर लेते थे ताकि हाथी विचलित नहो। ऐसे ही एक हूलदार हाथी के चारो पैर भरतपुर सग्रहालय मे आज भी विद्यमान है, एक पैर की पजा गोलाई अडतालिस इन्च लगभग थी दो सौ वर्ष पहले।

आज के हाथी की अपेक्षा पोरस के समय के हाथी का शरीर अधिक बड़ा था, हाथी के दाँत बल्लियो जैसे तीन-चार फुट लम्बे,

नुकीले, मोटे, सुदृढ होते थे । सूँड़ भी अजगर की तरह पांच-छह फुट लम्बी होती थी, गजसेना के हाथी युद्ध प्रवीण होते थे। रणक्षेत्र मे हाथी पर महावत रक्षक एव पीठ पर बंधे मचान रूपी डाले पर चारों ओर मुँह किये निशाने बाज धनुर्धर सैनिक रहते है। हाथी के दाये-बाये जमीन पर गजरक्षक, सचालक, सैनिक, महावत के सहायक रहते हैं। हाथी का पैर अधिक चौडा होने की वजह से फिसलने की सम्भावना कम रहती है, घोडे के खुर की गोलाई अधिक तम बारह इच लगभग रहने से फिसलने की सम्भावना अधिक रहती है।

तत्कालीन पहाड़ी डील-डौल के विशालकाय हाथियों की रण स्थल पर क्रुद्ध, कर्कश, भयावनी चिघाड़े, हाथियो द्वारा सूड से शत्रु को उठा गगन मे उछाल फेंकना या धरती पर पछाड मारना, पैरो तले कुचल देना, रथ एव अश्वारोहियो को उलट पटकना एवं उन्हे दाँतो से गोद-गोद कर मार डालना, रथ एव अश्वारूढ सैनिकों से अधिक ऊँचाई पर चलते दौडते मचान रूपी हाथी पर सवार अनेक (१०-१२) सैनिको द्वारा विभिन्न दिशाओ मे अचूक बाण वर्षा किया जाना । इस प्रकार के सभी प्रहार सिकन्दरी सेना के लिए अभूतपूर्व आश्चर्यजनक थे, भयप्रद थे । स्वय सिकन्दर, सिकन्दरी सैनिक एव अश्व ये सभी भारतीय गजसेना के प्रहार से एव गज की युद्ध कुशलता और उसकी प्रकृति से पूर्ण अनभिज्ञ थे । गज सेना खच्चर या भेड बकरी नही थी कि ग्रीक सेना ने गन्ने की तरह सूंड़े काट दी हो, गज और गज सैनिक मौन दर्शक रहे हो, यह तो सर्वथा असम्भव है।

इन चलती फिरती छोटी-छोटी पहाड़ियो को देखकर एव इनकी डरावनी कर्कश चिघाड़े निकट से सुनकर स्वय सिकन्दर तथा सिकन्दरी सेना और उनके अश्व भयाक्रान्त विचलित हो गये थे, अश्व चौक पड़े, बेकाबू हो उन्मुक्त यत्र तत्र भाग छूटे थे, यह तथ्य असत्य

नही हैं क्योंकि ग्रीक सेना इन भारतीय भयावने पशुओं से अन्जान थी। विदेशी इतिहासकार "कार्टियस" ने भी यही लिखा है कि इन पशुओ के घोर आतक और चिघाड से ग्रीक सैनिक, अश्व सैनिक सभी भयातुर हो उन्मुक्त पलायन करते हुए जिधर राह मिली उधर ही दौड पडे थे।

"डीयोडोरस", "एरियन", "जस्टिन" के लेखन का सारांश भी यही है कि अपार वलशाली हाथी सिकन्दरी सैनिको को पैरो तले कुचल देते, दातो से अश्व को पछाडकर, उसे गोदकर, पसलिया तोड़कर मार डालते, सैनिक को सूँड़ से धर ऊँचा उठा जमीन पर पछाड दे मारते या ऊँचा उछाल कर कही फेक देते, या अपने संचालक की ओर उसे वढा देते तो उस शत्रु सैनिक को पुरु सैनिक तलवार या भाले से मार गिराते।

उपरोक्त समस्त तथ्यो से सिकन्दरी सेना की घोर दुर्दशा स्पष्ट प्रमाणित है, इसलिए पोरस को पराजित सिद्ध करने हेतु अचानक वर्षा होना, एव हाथियो का फिसलना तथा फिसले हाथी द्वारा अपनी ही सेना को रौदना यह कथन पूर्ण मिथ्या है। वर्षा मे फिसलनी जमीन पर फिसला हाथी उठने मे फिसलता ही रहेगा, उठ पाना मुश्किल ही है। फिसल कर उठा हुआ हाथी क्रोधित हो सभी को रौदने लगता है, तव मित्र और शत्रु मे भेद नही करता है। (शत्रु सैनिक को रक्षित छोटते थे) अपने ही सैनिको को (खोजकर) मार डालते थे, यह लेखन वचकाना ही नही हास्यास्पद भी है।

अपने क्षेत्र की समस्त भूमि की मिट्टी से भली प्रकार परिचित पोरस पक्ष द्वारा युद्ध के लिए उपयुक्त भूमि का चयन विचारपूर्वक किया गया है, वर्षा के कारण सिसलन हुई होती तो तुरन्त ही गज सेना हटा दी जाती। सम्भव है एक दो हाथी घायल दशा में फिसले हों, फिसल कर या गिरकर उठा हाथी जिधर मुँह रहेगा उधर ही मारने दौड़ेगा, अतः हाथी अपने ही सैनिक रौंदते थे यह कथन अवश्य

ही असत्य है। फिसलनी धरती पर छोटे पैरों के कारण सिकन्दरी सेना के घोड़े अवश्य फिसले होगे। उनके लिये यह धरातल नया था।

उपरोक्त तथ्यो की क्रियात्मक प्रमाणिकता से स्पष्ट सिद्ध है कि सिकन्दर की पराजय में सन्देह को स्थान ही नही है।

इथोपियाई महाकाव्य के सम्पादक "ई० ए० डब्ल्यू० बैज" ने सिकन्दरी विजयो के वर्णन में लिखा है-पोरस से हुये युद्ध मे सिकन्दरी अश्व सेना बडी सख्या में नष्ट हो गई तब युद्ध बन्द करने की प्रार्थना सिकन्दर ने पोरस से की थी कि श्रीमान पोरस मुझे क्षमा कर दे, आपकी वीरता और साहस मै स्वीकारता हूँ। तब पोरस ने युद्ध बन्द कर आत्मसमर्पित सिकन्दर से पूछा कि तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाय? उत्तर में सिकन्दर ने कहा "जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है", यह सुनकर शालीन पोरस ने सिकन्दर को क्षमादान दिया है। इस प्रकार की क्षमाशील उदार नीति भारतीयो मे आदिकाल से है, जिसके असंख्य उदाहरण है।

रुकमिणी के भाई रुकमैय्या (रुक्मीश) को युद्ध मे बलराम ने क्षमा किया है। महाराणा कुम्भा ने मालवा के मुहम्मद खिलजी को तथा महाराणा सांगा ने माण्डू के मुहम्मदशाह को बन्दी बनाकर मुक्त किया है। ऐसी क्षमायाचना स्वीकारना यह हिन्दुत्व की महान शिक्षा है, ऐसी शिक्षा अन्यत्र नही है।

सिकन्दर महान की महानता केवल महान शब्द मे है, वास्तविक कृति में सिकन्दर महान हिंसक, क्रूर, हठी, प्रतिशोधी, अत्यन्त महत्वाकांक्षी था। शीघ्र ही राज्य पाने की लिप्सा मे पिता फिलिप की हत्या करवाने मे सिकन्दर का हाथ था।

राज्यारूढ होते ही सिकन्दर ने अपने सौतेले भाई एव चचेरे भाई का वध करवा दिया था। ईरानी शाह "डेरियस" पराजित हुआ तब आधा राज्य सिकन्दर को देना चाहा किन्तु सिकन्दर नही माना। पराजित डेरियस अपने अंगरक्षको के साथ अपने प्राण बचाने जहा-

जहां भी गया सिकन्दर उसका पीछा करता रहा। इस भाग-भाग से त्रासित हो डेरियस के रक्षक साथियो ने ही डेरियस को मारकर डेरियस का शव सिकन्दर को सौप दिया तब सिकन्दर शांत हुआ था "बैक्ट्रिया" के पराजित "बसूस" के नाक, कान कटवाकर उसे कोडो से मार-मार कर मौत के घाट उतरवाया था। ऐसी क्रूर हिंसक महानताएँ उस सिकन्दर में थी, ऐसी कुटिल प्रकृतिवाला सिकन्दर पराजित शत्रु पोरस को राज्य नही लौटायेगा बल्कि शत्रु पोरस को बसूस की तरह तडफा-तडफाकर मौत के घाट उतारता।

यूनान से पोरस तक पहुँचने में बीहड मार्ग की अनेक कठिनाइया एव कबाइली पठानों से राह मे बार-बार खूनी सघर्ष कर सिधु और झेलम को सिकन्दर ने पार किया था, युद्ध में सिकन्दरी सैनिक और उनके अश्व भय विह्वल हुये थे। कई सैनिक भाग चुके थे, कुछ सैनिक कबाइलियो द्वारा मार्ग मे ही मार दिए गए थे। वे ही कबाइली पोरस के साथ भी दिख रहे थे। पोरस के द्वन्द युद्ध को सिकन्दर ने नही स्वीकारा। पोरस के पुत्र द्वारा ग्रीक सेना के मध्य पहुँचकर सिकन्दर पर प्राणघातक वार से सिकन्दर का घायल होना तथा सिकन्दर का घोडा बूसेफेलस मारा जाना, घोडे पर मे धराशाई हुआ सिकन्दर अपने सैनिको मे छिपता हुआ प्राण बचाकर भागा था। वर्षा के कारण पूरी गजसेना नही फिसली बल्कि सिकन्दरी सेना रौदी गई थी। कई रथ और घोडे कुचने गये थे, सैनिक हतोत्साहित हो चुके थे। इतनी कठिनाई और जबरदस्त हानि उठाकर अगर सिकन्दर विजयी हुआ होता तो वह पोरस को क्रूरता पूर्वक अवश्य ही मौत के घाट उतार देता।

सिकन्दर मैच खेलने नही आया था कि अपनी मधुर स्मृति मे पोरस को पोरस का राज्य जीतकर सादर भेट मे दे गया। सिकन्दर द्वारा पोरस को राज्य लौटाया गया यह कल्पना चिल्नी गप्प प्रमाणित हो चुकी है।

सिकन्दर विजयी हुआ होता तो पोरस का राज्य अपने सहायक मित्र आम्भीक को भेट मे दिया होता । सिकन्दर के सहयोगी आम्भीक, अभिसार शशिगुप्त ने सिकन्दर को बधाई या कुछ भेट नही दिये, इन तीनों सहयोगियो को बधाई या कुछ भेंट नही दिये, इन तीनो सहयोगियो को सिकन्दर ने कोई पुरस्कार या धन्यवाद भी नही दिया, ग्रीक सेना ने विजयोत्सव नही मनाया, इतने स्पष्ट प्रमाण है पोरस की विजय एव सिकन्दर की पराजय के ।

सिकन्दर विजयी हुआ होता तो आम्भीक, अभिसार, शशिगुप्त पोरस इन चारों से अधिकार पूर्वक सैन्य सहायता लेकर मगध पर या अन्य राज्यो पर चढाई अवश्य करता, विजयी सेना दूसरे युद्ध के लिए दूने उत्साह से सन्नद्ध रहती है, शस्त्र नही फेकती है । भारतीय द्वार रक्षक कबाइली पठानों से करारी मार खाता हुआ सिकन्दर भारत के आगन में प्रवेश करते ही पोरस द्वारा बुरी तरह पछाडा गया था । बोहनी ही खराब हो गई । जिस मार्ग को आक्रान्त करता हुआ सिकन्दर भारत में आया था उसी मार्ग से लौटने पर सिकन्दर सुविधा प्राप्त कर लेता या उन पीड़ित कबाइली मार्गवासियो पर अत्याचार करता इसलिए दूरदर्शी विजयी पोरस की इच्छानुसार पराजित सिकन्दर को नये अपरिचित मार्ग से लौटना पडा है । सिकन्दर को बिदा करने आम्भीक अभिसार आदि कोई नही पहुँचा । पोरस पराजित हुआ होता तो या पराजित पोरस को सिकन्दर ने उसका राज्य उसे लौटाया होता तो विजयी सिकन्दर की सेवा में या उसे बिदा करने कृतज्ञ अहसानमन्द पोरस को सिकन्दर के समक्ष उपस्थित रहना पडा होता । किन्तु पोरस का एक सैनिक भी सिकन्दर को विदा करने उसकी सेवा मे नही पहुँचा । पोरस के शत्रु सिकन्दर के सहयोगी आम्भीक, अभिसार, शशिगप्त भी सिकन्दर से नही मिले क्योंकि सिकन्दर पराजित हुआ था, पोरस विजयी हुआ था । विजयी पोरस के आदेशानुसार पराजित सिकन्दर दूसरे

मार्ग से लौटा था । रावी और व्यास के मध्य कठ (काति-काठि) शासको ने सगल के प्रांगण पर गाड़ियों का तिहेरा घेरा बनाकर युद्धोत्साही काठी वीर सिकन्दर से टकराने, उद्यत थे। दोनों मे झडप होने लगी। विकल सिकन्दर ने पोरस से सहायता मांगी, इधर कठो ने युद्ध छेड़ दिया था। प्रथम युद्ध की पराजय से हतोत्साही सिकन्दरी सेना जान बचाने जी जान से लड़ी किन्तु पोरस द्वारा भेजी गई सैन्य सहायता पहुँचने के वाद ही युद्ध रुका। तव सिकन्दर संगल से आगे बढसका था, इन दो पराजयो ने ग्रीक सेना के साहस को निचोड दिया था। भारतीय उद्भट लडाको से भयातुर सिकन्दरी सेना ने अब आगे युद्ध करने से द्रढतापूर्वक इन्कार कर शस्त्रफेक दी थी, सिकन्दर की करुण विनय तथा आदेश सेना ने ठुकरा दिये थे क्योंकि सिकन्दर पराजित था, पराजित नेता की उपेक्षा होना स्वाभाविक है। उसी मार्ग मे मलावी (मालव) क्षुद्रक (खोखर) साम्बुस साम्ब (कृष्ण पत्नी जाम्बवती की शाखा) मूजिकन आक्सकन जनजातियो से रक्षात्मक युद्ध करते हुए ही सिन्ध होकर सिकन्दर स्वदेश लौट सका था। कार्टियस ने लिखा है कि सिकन्दर ने मालव एव क्षुद्रको के सन्धि दूतो को मूल्यवान आसन पर सम्मान पूर्वक वैठाया था। अर्थात सिकन्दर पराजित था। इसलिए विजयी शत्रुओ को सम्मान दिया है। विजयी शत्रु के शिविर मे जाने का साहस सिकन्दर मे नही था।

पाटल तक लौटने में सिकन्दर को दस महीने लगे थे। पोरस से हुए युद्ध के वाद सिकन्दर निरन्तर दिवालिया होता गया अन्तत. सिकन्दर ने अपने मन्त्री (सेक्रेटरी) यूडोमिनिस से कर्ज रूप मे द्रव्य सहायता मांगा किन्तु यूडोमिनिस ने सिकन्दर को द्रव्य सहायता नही दिया। सिकन्दर ने यूडोमिनिस का डेरा जलवा दिया। यह तथ्य सिकन्दर की पुरु द्वारा घोर पराजय का सुस्पष्ट सवल प्रमाण है। इस पराजय की मर्मान्तक चोट से तड़फते कायर सिकन्दर ने अपने

प्रतिनिधी विश्वस्त व्यक्ति फिलिप को पोरस के पास छोड़ गया था। फिलिप ने घोर पराजय का बदला लेने धोखे से पुरु को मरवा दिया था। सिकन्दर द्वारा पोरस की धोके मे हत्या करवाया जाना भी सिकन्दर की ही घोर पराजय का सबूत है। पोरस का हत्यारा फिलिप भी मारा गया। इसी मार्ग मे खोकर वीर के घातक शस्त्र प्रहार से घायल हुआ सिकन्दर वेबीलोन मे दम तोड दिया। सिकन्दर की मृत्यु के बाद इसकी पत्नी व पुत्र की शीघ्र ही हत्या कर दी गई थी। इसका स्पष्ट अर्थ है कि क्रूर सिकन्दर के साथियो मे सिकन्दर (महान-हीन) के प्रति श्रद्धा नही थी।

सिकन्दरी महान क्रूर आतंक वश ग्रीक सेना सिकन्दर की सेवा में नत मस्तक रही है। सिकन्दर के मरते ही उसका क्रूर आतक भी मर गया। श्रद्धा-पुत्र एव पत्नी की हत्या नही करती रक्षा करती।

भारत मे अनेक प्रमाण है शासक की मृत्यु के बाद शासक की पत्नी एवं पुत्र की रक्षा करने को खीची पन्ना धाय द्वारा राजपुत्र उदय सिंह की प्राणरक्षा एव दुर्गादास राठौड द्वारा शिशु अजीत सिह की रक्षा किया जाना दो उदाहरण पर्याप्त हैं।

इसी प्रकार उपरोक्त विवरण पोरस की विजय एव सिकन्दर की स्पष्ट पराजय को सत्य प्रमाणित करने के लिये पर्याप्त है।

यदु–भट्टी–भाटी–

मथुरा-द्वारका से राज्यच्युत कृष्ण का वंशज सिध से आगे बढकर दैव योग से विहाड का राज्य पाया था। विहाड़ के नि:सतान राजा की मृत्यु हो गई थी तब जननिर्णयानुसार प्रात. नगर द्वार पर जो पथिक मिले उसे राज्यारूढ किया जाना तय हुआ था, तदनुसार यदु-भानु (कृष्ण का वंशज(विहाड का राज्य पाया। इसी का वंशज रज का पुत्र गजसेन हुआ इसने युधिष्ठिर सम्वत ३००८ में गजनेर (गजनी) नगर बसाया।

ईसा से १९४ वर्ष पहले रज एवं गजसेन पर खुरासान का फरीद चार लाख सैनिक एवं सिकन्दर रूमी (प्रथम) सह संयुक्त आक्रमण किया किन्तु गजसेन विजयी हुआ, ३० ००० यवन ४००० हिन्दू मारा गया। ग्रीक इतिहास मे है कि–प्रसिद्ध वीर आंट्रियोकस गंजसेन के हाथो मारा गया था, सीरिया,बैक्ट्रिया, खुरासानसे यादवो ने युद्धकिये थे। गजसेन को सोभाग मेनस लिखे है। ममरेज के पुत्र ने शीघ्र ही पुन गजनेर पर आक्रमण किया इस युद्ध मे एक लाख यवन एव तीस हजार हिन्दू धराशायी हुये थे। खुरासानीशाह और गजसेन मारा गया, गजसेन के चाचा श्री देव ने एक महीने तक गजनी की रक्षा की। अन्तत. ६००० महिलाओं का जौहर हुआ। श्री देव ने मरण युद्ध किया, गजनेर पर यवन अधिकार हुआ। पचीस हजार यवन एव सात हजार हिन्दू मारा गया। इस युद्ध के पहले गजसेन के बालक शालीवाहन को शिवालिक पहाडी को ओर रक्षार्थ भेज दिये थे। समयानुसार शालिवाहन ने गजनी वापस छीन लिया, शालपुर बसाया। पैठण (पीहन-प्रतिष्ठानपुर) पर राज्य किया तथा मालव-नरेश विक्रमादित्य को परास्त कर शालिवाहन शक चलाया।

गजसेन से पाँचवी पीढी मे दूसरी सदी मे शालिवाहन के प्रपौत्र गजनी के शासक युवक चकेता ने बलख बुखारे का उजबेक राज्य पाने के लोभ मे यवन धर्म स्वीकारा एव उजबेकी शहजादी से विवाह किया। इसके वशज चगताई मुसलमा हुए।

बदक्शां. बलख और काबुल के मध्य हिन्दु नाम स्पष्ट है। कृष्ण-पत्नी जाम्बवती के पुत्र साम्ब ने सिन्धु निकट राज बसाया था, इसके वंशज साम्ब्र कहलाए इन्होंने भी सिकन्दर पर आक्रमण किये थे। इनेना नेता चगेज पौत्तलिक (मूर्ती पूजक) कहलाया है। अफगानी यहूद यदु का अपभ्रंश है। मुस्लिम "बूता" कभी राजपूत थे। आबू के सोलंकी इस्लाम स्वीकारने बाद "लगा" कहलाए। जाटो की नुमरी शाखा इस्लाम स्वीकारने के बाद "बलोच" कहलाई। यूसुफ

जई कबीले की एक शाखा जदून यदु का अपभ्रंश है। काबुल कन्धार बलख बुखारा, सीस्तान बचोचिस्तान के अफगान यदुवंशी हैं। यादवो (चंद्रवंश) का मूल मातृ पक्ष ययाति की पत्नी देवयानी एवं शर्मिष्ठा इसी क्षेत्र की थी। पठान एव अफगानियों की "राय" उपाधी रहती थी। वराह्ा, तक्षका, आश्वा भारतीय नाम हैं। हेकल (यवन लेखक) ने हिरात को हरी लिखा है। गजनी स्थापक गजसेन का खुरासान से युद्ध कुंजरे शाख एवं हरिरुद के मध्य हुआ था सम्भव है वह हिरात ही हो।

शालीवाहन के पौत्र भट्टी के वंशजों ने लोद्रवा पट्टन पर अधिकार किये। देरावल, तन्नौट, भटनेर बसाये एव शासन किये। यदु भट्टी-भाटी कहलाये। भाटी जैसल ने ई० ११५६ मे जैसलमेर किला बनवाया।

शालीवाहन के तीसरे पौत्र कलूराव के आठ पुत्रो ने इस्लाम स्वीकार लिया था।

ई० १२८५ से अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति महबूब खां लगातार आठ वर्ष तक जैसलमेर को घेरे रह आक्रमण करता रहा किन्तु सफल नही हुआ, शासक रावल जैतसी की मृत्यु हो गई। मूलराज शासक वना, इसने भी एक वर्ष तक महबूब को सफल नही होने दिया। नौ वर्ष किला घिरा रहने से तथा चारों ओर घेरा सख्त किये जाने से किले मे खाद्यान्न एव चारे का घोर अभाव हो गया तब संघर्षरत दसवे वर्ष किले में जौहर की तैयारी हुई। बाहर महबूब खां निराश हो लौटने की तैयारी करने लगा,मूलराज का अनुज रतनसी महबूब का मित्र हो गया था। रतनसी ने महबूब के अनुज को किले में विदाई दावत दिया तव किले की भीतरी दुरावस्था एव भुखमरी की जानकारी छोटे भाई से महवूब को मिली। [किले का रहस्य पाने हेतु लौटने का अभिनय कर छोटे भाई को किले में दावत दिलवाना महबूब की चाल रही हो] रहस्य मिलते ही महबूब ने पूरी ताकत से

किले पर हमला कर दिया, चौबीस हजार महिलाओ ने जौहर किया। ३००० भाटी वीरों ने केसरिया धारण कर मरण युद्ध किया । ई० १२८५ मे ध्वस्त एव जनशून्य जैसलमेर पर महबूब खां ने विजय पाया। जैसलमेर सम्पदाहीन, जनहीन वीरान हो गया था।

जौहर से पहले रतनसी ने अपने दो पुत्र घडसी एव कान्हडको महबूब के रक्षण मे दे दिया था। इन दोनो भाइयो की परवरिश महबूब ने हिन्दू तरीके से करवाई थी । यह भी एक मिसाल है।

उजाड़ जैसलमेर पर महोविया राठोड ने अधिकार कर लिया था, तब एक अन्य भाटी वशज दूदा ने राठौड से जैसलमेर छीनकर शासन किया किन्तु इसे ई० १३०६ मे फिरोजशाही आक्रमण में निछावर होना पडा । १६,००० महिलायें जौहर कुण्ड मे समर्पित हुई थी।

भारत में तैमूरलग के आक्रमण समय घडसी एवं इसके जाति-बन्धु भीमकाय-बलिष्ठ सोनिगदेव के प्रचड पराक्रम से दिल्ली शाह प्रसन्न होकर घडसी को जैसलमेर राज्य लौटा दिया था।

इस पश्चिम दिशा से विदेशी यवनो के कई आक्रमणो का सामना जैसलमेर को करना पड़ा है इसलिए इसके सम्मान मे कहा जाता है "उड किवाड़ उतराद रा भाटी झेलण हार"। किन्तु इन भाटियो को अकबर शरण पहुँचाने वाला कछवाह भगवानदास ही था। कृष्ण के बडे भाई बलराम भी कही दूर जा बसे थे, कुछ विदेशी विद्वान बलराम को "हरक्लस" मानते है । बेबीलोन का स्थापक बभ्रु चन्द्रवशी था। चीन का राजवश चन्द्रवशी मानते है। अग, बंग, कलिंग, कीलजर, केरल, तजौर, पाड्य, चौल, राज्य यादवो ने बसाये हैं । ई० १५१७ फरवरी मे बाबर ने लिखा है श्रीकृष्ण के वशज "बिहाड़" यदु का डुंग-यदु गिरी पर राज्य करते थे। "राय" उपाधि थी । गजनी से नीलाब (नील नदी) बहीरा, समरकन्द तक यादव शासन था। बाबर को ज्ञात हुआ कि पच्चीस सौ वर्ष पहले

कृष्ण के वंशज उस क्षेत्र में आकर बसे थे । ई० १९८७ में ४४७० वर्ष पूर्व का वह समय हुआ, महाभारत के युद्ध के कुछ शदाब्दि बाद का यह समय है जो सत्य है। बाबर का लेख एव अन्य कथानकों से ज्ञात होता है कि विदेश में बहुत दूर तक यादव-चन्द्रवंशी राजा प्रजा का अत्यधिक विस्तार हुआ । वर्तमान इस्लाम धर्म के पहले भी यवन धर्म था। प्रसंगवश यवन धर्म स्वीकारे आर्य (वैदिक) धर्म बिसारे, फिर भी उनके राज्यो मे हिन्दूदेव प्रतिष्ठान तब भी थे, आज भी अवशेष विद्यमान है । चन्द्रवश का चन्द्र इस्लामी ध्वज का प्रतीक है। चन्द्र-इन्दु वश के प्रभाव वश भी भारत इन्दु (हिन्दु) स्तान कहा गया है। अफगान पठान बलोच चगताई आदि यादव है, भारतीय है। "महाभारत युद्ध मे अठारह दिन मे अठारह अक्षौहिणी सेना के पचपन लाख से अधिक व्यक्ति मारे गए। पशु भी लाखो की संख्या में धराशाई हुए थे । मीलो लम्बा भू-भाग सर्वत्र ल्हाशो से भरा पडा वीभत्स, घोर दुर्गन्ध से व्याप्त था, ऐसी भयानकता एव कुटुम्बियो के अतुल विनाश को देख कौरव, पाण्डव,यादव आदि द्वारा क्षेत्र त्याग दूर जाकर बसना, पूर्व इतिहास नष्ट कर देना। प्रचण्ड घातक अस्त्र शस्त्र निर्माण विद्या नष्ट किया जाना आदि असम्भव नही है। ताकि प्रतिशोध की भावना उत्पन्न न हो।"

चालुक्य और पवार--

उस युग मे राजस्थान मे गुजरात के चालुक्य एवं माल्वीय पंवार राज्य भी श्री एवं शौर्य मे समृद्ध थे। चालुक्य-मूलराज, चाणुण्डराय, सिद्धराज, जयसिह, भीमदेव, प्रथम आदि। पवार-भृतहरी, विक्रमादित्य, मुंज, भोज, जयसिह, जगदेव (शीसदानी) आदि का चरित्र भी रोचक है । किन्तु भ्रमाच्छादित नही है। इसलिए यहा लिखा नही है । भोज का वर्चस्व बेलगाम, नासिक, थानेश्वर तक था । भोज ने अनेक ग्रंथ रचे है। माघ, वररुचि, धनपाल, उछटाचार्य, शीला पण्डिता, शीता पण्डिता आदि भोज के

दरवारी विद्वान थे । दोर समुद्र तक युद्ध करने वाले जगदेव का शासन येवतमहाल तक था माहिष्मती नरेश पवारकार्त वीर्यार्जुन ने रावण को वदी बनाया था । पवार राजा रामदेव ई० ७१४ मे तेलग में यशस्वी राजा हुआ है । डोगरगांव शिलालेख देखें ।

धार के पवार राजा मुज का अनुज राजा भोज भी पराक्रमी था । चेदिर्लेलीयतेऽस्गैः क्षितिपति सुभठ कान्य कुब्जोत्र कुब्जो । कलचुरी चेदिराज एव कन्नौज तक भोज का वर्चस्व था यह पारिजात मंजरी मे वर्णित है । सप्तकोकण चालुक्य विजय कुलेनूर वेलगांव अभिलेख एव मिरजदान पत्र में वर्णित हैं। विजयोपलक्ष मे थानेश्वर करा जिले में नालतडाग ग्राम प० देल्ह को भोज ने दिया है भोपाल एवं वहां का प्रसिद्ध ताल भोज की अमर कृति है । भोज ने कुछ ग्रन्थ भी लिखे है । भोज के अनुज उदयादित्य का तृतीय पुत्र जगदेव, गुर्जरेश, चालुक्य, सिद्धराज जयसिंह के पास महासेनापति के पद पर रहा किन्तु जयसिंह की भावना मालव के प्रति कुत्सित जानकर जगदेव कुन्तल (कर्नाटक) कल्याणाधिपति विक्रमादित्य के पास उच्च पदासीन हुआ । मेरुतुग कृत प्रवन्ध चिन्तामणि से ज्ञात होता है कि जगदेव राज सभा मे पहुँचा तव नग्न नृत्यरत राजनर्तकी लज्जित भाव से अधोमुख वैठ गई, अर्थात जगदेव प्रभावशाली था ।

उक्त विक्रमादित्य का सामन्त दोर समुद्र का शासक वल्लाक विद्रोही वन गया था जगदेव उसका दमन तथा आन्ध्राधीश, मलहराधीश (होयसल) पर विजय पाया । जगदेव का सेनानायक दाहिमा लोवार्क था । आन्ध्र की राजधानी वेगी पर जगदेव विजयी हुआ था येवतमाल जिले के डोंगरगाव मन्दिर के ई० १११२ के शिलालेख से प्रमाणित है कि जगदेव ने श्रीनिवास ब्राह्मण को डोगरगाव दिया है। जगदेव द्वारा वल्लाक पर विजय का प्रमाण डोगरगॉव से ६५ मील दूर पूर्व में जयनद ग्राम से प्राप्त शिलालेख मे है । यह जयनद अव आन्ध्रमें हैं । जगदेव ने वस्तर के नाग वशीय चक्र कोट दुर्ग पर अपने भाई धार नरेश लक्ष्मदेव के लिए विजय पाया था ।

पूर्वोक्त जयसिह की आयु समाप्ति के निकट जानकर उसकी आयु वृद्धि के लिये जगदेव व्यग्र था। जयसिह की अल्पायु टालने हेतु चारणी रूप धारी देवी जगदेव से जयसिह के हितार्थ जगदेव का शीश पत्नी के हाथ से दान मांगी। पति के आदेश पर निर्विकार भाव से पत्नी ने पति जगदेव का शीस थाल मे धर कर चारणी को सादर दान दे पत्नी भी स्वयम् का शीसदान करने उद्यत हुई थीं कि चारणी ने तत्काल देवी रूप धारण कर जगदेव को जीवित किया है।

मु शी प्रेमचद के नवनिधि कहानी सग्रह मे पृ० ३४ पर लिखे का साराश यह है कि ओरछा नरेश चम्पतराय पत्नी सारन्धा के साथ महल के गुप्त मार्ग से भागे किन्तु मुगल सेना में घिर गये। मुगलों द्वारा बन्दी बनाकर क्रूरतम दुर्गती पाने की कल्पनावश पति चम्पत-राय को तरवार के धार उतार कर स्वय ने भी आत्म हत्या कर ली।

इस घटना पर प्रेमचद का यह लिखना गलत है कि- आत्म गौरव की ऐसी घटनाएं उदयपुर और मारवाड के इतिहास मे भी नहीं मिलती। प्रेमचद राजस्थान के इतिहास से अनभिज्ञ हैं अन्यथा भावावेश मे बहकते नही।

सारन्धा के कारण मुगल हमला हुआ था। चम्पतराय निर्बल जर्जर था। चलना भी दूभर था, पालखी मे ले जाया जा रहा था, सैन्य शक्ति भी नही थी इस दुरावस्था मे मुगलो की यातना से बचने चम्पतराय और सारन्धा को यूं मरना पडा था। इस की तुलना मे पत्नी द्वारा पति जगदेव का शीस एव स्वय का शीस परोपकार में दिया जाना पुण्य स्मरणीय गौरव है। जगदेव कंकाली की नौटंकी राजस्थान मे प्रसिद्ध है। जगदेव के प्रति लिखी अनेक पंक्तियो में से दो—

> न स देशो न स ग्रामो न स लोको न सा सभा
> न तन्नक्तं दिवं यत्र जगद्देवो न गीयते।। अर्थात-

जगदेव की चर्चा भारत मे सर्वत्र होने लगी थी।

हजारों पँवार क्षात्र धर्म त्याग, कृषक एवं व्यवसायी वन गये है। हजारों पँवार शैवोपासना त्याग जैन धर्म स्वीकारे है।

चौहान–

पृथ्वीराज चौहान पर मूर्ख, भगोडी, स्त्रियासक्त आदि मित्थ्या दोप थोपे गये है। वे सभी दोप नि. सन्देह मित्थ्या ही है।

ई० ६८४ मे दुर्लभराज चौहान के राज्य अजयमेरु (अजमेर) पर छद्मवेश मे मुस्लिम आक्रमण हुआ था दुर्लभ मारा गया माणिकराय चौहान शासक वना। मण्डला, लाहौर, मुल्तान, पेशावर, कावुल, दिल्ली, ठट्टा, नेपाल, कोंकण, गोवालकुण्ड (गोलकु डा), महेश्वर तक चौहान राज्य था।

ई० १०११ मे गोलकुण्डा पर रणधीर चौहान शासक था। पृथ्वी-राज चौहान के शासन मे महोवा, कालिजर, बुन्देलखण्ड भी थे। पृथ्वीराज का ध्वजरक्षक असीरगढ़का तक्षक राजा था। अलाउद्दीन खिलजी ने असीरगढ के चौहान राव चन्द्र को परास्त किया था। सतलज के निकट महलावा जो अब गोगामेडी के नाम से प्रसिद्ध है गोगा चौहान यहां का छोटा सा शासक था ४५ पुत्र ६० भतीजे थे। सोमनाथ की रक्षा मे समूचे परिवार सह निछावर हो गया।

गुजरात के शासक चालुक्य भीमदेव द्वितीय ने, चौहान शासित नागौर दुर्ग पर ई० ११७३ मे आक्रमण कर विजय पाया। इस युद्ध मे चौहान नरेश सोमेश्वर मारा गया, उस समय दिल्ली, अजमेर, साम्भर, नागौर चौहान राज्य थे किन्तु पृथ्वी को नागौर रहित राज्य मिला था।

पिता सोमेश्वर की मृत्यु के वाद ११ वर्षीय पुत्र पृथ्वीराज को राज्यासीन किया गया। अल्पवय के पृथ्वीराज की मा कल्चुरी राज पुत्री कर्पूरदेवी एव–मन्त्री बयाना का दाहिमा पजाव मे अहिरावती का राजपुत्र कैमास ने कुछ दिन राज्य सचालन किया।

गजनी और हिरात के मध्य गौर के शासक शहाबुद्दीन गौरी ने ई० ११७८ मे गुर्जरेश भीमदेव का दमन किया । इस समय भीमदेव ने पृथ्वीराज से सहायता मांगी किन्तु चौहान तटस्थ रहा। इस तटस्थता को गलत लिखना गलत है। भीमदेव ने आक्रमण कर चौहानी नागौर छीन लिया था एवं इस युद्ध मे चौहान नरेश सोमेश्वर मारा गया था। इस घटना को एक वर्ष भी नही हुआ था। मां कर्पूरदेवी को वैधव्य दे नागौर छीनने वाला नृपहन्ता, पितृहन्ता, आक्रान्ता भीमदेव को सहायता नही दिया यह चौहान राज्य ने सर्वथा उचित ही किया । यह विरोध अनुचित नही था। पृथ्वीराज ११ वर्ष की आयु मे राजविद्यार्थी था। राज विस्तार के लोभ मे पड़ौसी राज्य नागौर छीनकर चौहान राज्य को शत्रु बनाने की जबरदस्त गलती भीमदेव ने की है।

गुड़गांव गुडापुरा) मे विग्रहराज के पुत्र नागार्जुन चौहान विद्रोही का दमन एव अलवर, भरतपुर, मथुरा, रेवाड़ी, भिवानी के भण्डानकों का दमन किया तलवार के बल पर, पृथ्वीराज चौहान ने। ई० ११८७ में पृथ्वीराज ने सशक्त आक्रमण कर अपना नागौर वापस ले लिया तथा गुजरात पर आक्रमण कर भीमदेव (चालुक्य) सोलकी को परास्त कर उसे क्षमातृण मागने पर वाध्य कर दिया था। (मुख मे घास कर पशुभाव में क्षमा मागना)।

गुजरात विजय से लौटते समय महोबिया चन्देल परमारदीन के सैनिको ने चौहानी घायल सैनिको की अकारण अकस्मात मार्ग में हत्या कर दी। चौहानी सेना की बहुत क्षति हुई। इस प्रकार की हत्याओं को रोकने आल्हा और ऊदल ने परमारदीन और राजमाता मालिनी देवी को मना किये बहुत समझाये, किन्तु वे नही माने वल्कि आल्हा ऊदल को कन्नौज शरण मे जाना पड़ा।

चौहानी सेना स्वस्थ होने पर पृथ्वीराज ने महोबे पर चढाई किया। राजा परिमाल की प्रार्थनावश पृथ्वी ने एक माह युद्ध रोक

दिया था। चन्देलराज परिमाल और रानी मालिनी के दूत के सविनय आग्रह एवं माता देवलदेवी के मर्मान्तक प्रोत्साहन पर प्रसिद्ध वीर आल्हा ऊदल दोनो बन्धु, जयचन्द राठौड़ कन्नौजी से सैन्य सहायता साथ लेकर महोबे की सहायता को पहुँचे।

युद्ध को रोके सवा महीना हो चुका था। पृथ्वीराज ने परमार से समझौता करना चाहा किन्तु परमार नही माना। रणभेरी बज गई, घोर सग्राम हुआ, वीर ऊदल मारा गया, आल्हा के वार से पृथ्वीराज बच गया, विजयी हुआ। पराजित राजा परिमाल ने क्षमा तृण पृथ्वीराज के समक्ष मुख मे धारण किया था। आल्हा सन्यास ले वन मे चला गया था।

प्रसिद्ध वीर आल्हा-ऊदल के सेनापतित्व मे कन्नौजी और चन्देली सयुक्त सेना रहते हुए भी परिमाल की पराजय एव ऊदल का मारा जाना, जयचन्द ने स्वय की पराजय एव मानहानि मानकर पृथ्वीराज का अपमान एव विनाश करने हेतु कुचक्र रचा। पृथ्वीराज दल पगुलता के निकट पहुँच रहा था। जयचन्द दल पगुल था।

कमधज (शायद कामध्वज) राठौड जयचन्द बहुत बड़ी सेना का धनी था, कवचधारी पैदल सैनिक अस्सी हजार, अश्व और सवार सैनिक दोनो कवचधारी (पाखर धारी) तीस हजार, सादा सैनिक पाँच लाख थे, गजसेना भी थी।

जयचन्द राठौड ने सिन्धु निकट शहाबुद्दीन गौरी को परास्त कर उसके सहयोगी आठ भारतीय राजाओ को बन्दी बनाकर छोडा था। ये आठों राजा सिन्धु के पश्चिमी भू-क्षेत्र के थे। अबुल फजल ने कन्नौज नगर की परिधी पैंतीस मील एव पान की दुकाने तीस हजार लिखा है। इतने वैभव और शक्ति सम्पन्न एवं शासन अनुभव मे वृद्धत्व निकट पहुँचे हुए वीर जयचन्द ने चौहान युवक पृथ्वीराज द्वारा राठौड-चन्देल संयुक्त सेना की महोवा मे हुई पराजय को तसल्ली देने कन्नौज अपने घर में रहकर पृथ्वीराज को अपमानित या मृत कर

गौरवान्वित होने के लिये राजसूय यज्ञ एव पुत्री अनंगमंजरी के स्वयवर का विशाल आयोजन किया। अनगमजरी की माता गौरीदेवी उत्कल नरेश मुकुन्ददेव की पुत्री थी इसलिये जयचन्द को उत्कल राज्य का सैन्य सहयोग भी सुलभ था।

उक्त आयोजन हेतु पृथ्वीराज को जयचन्द ने निमत्रण नही भेजा किन्तु पृथ्वीराज की प्रतिमूर्ति बनवाकर सभामण्डप मे अपमानित करने प्रतिहारी के स्थान पर धरवाया है। नगर-द्वार, अतिथि-निवास, सभा-स्थल, अन्त पुर, सदिग्ध परिवार आदि सर्वत्र स्थलों पर सैनिक एवं गुप्तचर प्रबन्ध सशक्त सघन करवाकर जयचन्द को दृढ़ विश्वास हो गया था कि इस घेरे मे आने का साहस पृथ्वीराज नही करेगा, यदि आ ही पहुँचा तो जीवित नही लौटेगा।

आधुनिक सौन्दर्य या वैभव की अपेक्षा उस युग मे विजयी शौर्य का महत्व अधिक था। वीर की पत्नी कहलाना गौरव था और शीस कटे जुझार से अधिक श्रद्धायुक्त सुकीर्ती पाने निर्विकार सोत्साह सती होना सत्य ही प्रत्यक्ष ही अग्नि परीक्षा थी। कवियो की पक्तियो मे कन्या की कामना-बाबल दे उण देस ड़ै जहँ वीरा रो वास। पत्नी-खाग कलम कागद धरा स्याही रगत वणाय। माँ-पग वैर्यारा पालटै साँचो गिणू सपूत। सत्य सती का सत्त्र-बली अगन मे जीवती एक ना मुडियो अग। सहधर्मिणी वीरागना-हुकम होय पिव आप रो हूँ भी चालू साथ, बैरी देख र धूनसी म्हारा करड़ा हाथ। कृपाण हाथ मे धर जूझी है, ऐसी भी वीरागनाए है, जो इस देश मे सर्वत्र हुई है, किन्तु उनमे राजस्थानी वीरागना अग्रणीय है।

रण मे जूझने वाला हर सैनिक वीर होता है किन्तु इतिहास मे विशेष उल्लेखनीय वीर पति पाना ईर्ष्यात्मक अहोभाग्य है। ऐसी मानसिक प्रतिस्पर्धावश राजकुमारी अनगमजरी पृथ्वीराज की निरन्तर विजयो को सुनकर उस पर मोहित हो उससे विवाह करने स्वयं उत्सुक थी। अनग मजरी द्वारा पृथ्वीराज को ही पति रूप मे वरण

करने के दृढ़ निश्चय की विश्वस्त सूचना पृथ्वीराज को मिली है यह जानकर ही जयचन्द ने स्वयंवर का भी कुटिल भाव से आयोजन रचा था एव पृथ्वीराज की मूर्ती को प्रतिहारी वनाकर आग मे घी झोका है, ताकि पृथ्वीराज प्रतिशोध लेने अवश्य आवे, यदि नही आया तो उसका सर्वत्र उपहास होगा और आ ही पहुँचा तो कन्नौज मे उसकी मौत का अदृश्य जाल फैला था।

अपने शत्रु राज्य कन्नौज मे हो रही समस्त गतिविधियों की सूचना पृथ्वीराज को मिलती थी तदनुसार चौहानी शासक गोपनीय योजनावद्ध-क्रियाशील थे। चौहानी सेविकाए (दूती) समय से पहले ही अनंगमंजरी तक पहुँच उसे पृथ्वीराज के प्रति और अधिक आकर्षित दृढनिष्ठ सहयोगी वनाई है एवं योजना सफल करने माध्यम बनी-वनाई है।

पृथ्वीराज अपने विश्वस्त गुप्त सहयोगी, अंगरक्षक एव कुशल सैनिकों-सह छद्ग वेश मे कन्नौज पहुँच अनिमंत्रित दर्शक समूह के साथ आयोजन में सम्मिलित होता रहा है।

यज्ञ के पश्चात सशस्त्र प्रहरियों से रक्षित विशाल सभास्थल पर स्वयंवर में अनंग मंजरी द्वारा वर-माला पृथ्वीराज की प्रतिमा को पहनाये जाने पर जयचन्द ने पुत्री पर आक्रोश व्यक्त किया, किन्तु इस दृश्य को देख पृथ्वीराज क्रोधोत्साही हो सामयिक वातावरण मे पूर्ण संयमित रह गुप्त माध्यमों से अन्तः पुर से चौहानी सम्भ्रान्त सेविका समूह मे छद्म वेशी दासी रूप मे अनगमंजरी को निकलवाकर पूर्व निर्धारित स्थान पर पहुँचते ही प्रतीक्षारत पृथ्वीराज उसे अपने साथ अश्वारूढ़ कर विशेष रक्षको के साथ कन्नौज से तत्क्षण प्रस्थान कर तीव्र गति से अजमेर की ओर वढ़ गया। दूसरी ओर से चौहानी सेना कन्नौज की ओर तेजी से वढ रही थी।

अनंग मंजरी ने शायद माँ के मार्गदर्शन मे ही पृथ्वीराज को सहयोग दी है इसी कारण संयोगिता-संयुक्ता नूतन नाम प्रसिद्ध हो

गया, पृथ्वीराज बगैर रुके एक सौ पचास मील अश्वारोहण मे कुशल था, पृथ्वीराज कन्नौजियो की पकड से दूर हो चुका।

"अनंगमजरी एव अन्त.पुर के सहयोग बगैर हरण असम्भव है।"

दलपंगुल शक्ति सम्पन्न राठौड अपनी राजधानी मे थे, पृथ्वीराज की अपमानित प्रतिमा के कारण चौहानो से राठोड़ शकित एवं सतर्क थे, राठौड़ी सेना सर्वत्र सावधान थी, निमन्त्रित अनेक राजा, राजकुमार, प्रतिनिधी अपनी रक्षक सेना के साथ कन्नौज मे थे। यज्ञ और स्वयम्बर इन दो आयोजनो के कारण जन समुदाय विशाल सख्या में वहाँ था। युवक पृथ्वीराज के प्रतिशोधी स्वभाव एवं अपनी गूढ योजनावश जयचन्द चौकन्ना था कि पृथ्वीराज अपमान का बदला लेने कन्नौज पर यदि आक्रमण करेगा तब यहा उपस्थित राज्यो के अधिकारी स्वभावतः मेरे सहायक हो पृथ्वीराज से युद्ध करेंगे इनकी और मेरी सयुक्त सेना से टकराकर पृथ्वीराज धूल-धूसरित हो जायेगा।

महोबा मे चौहान द्वारा ऊदल की मृत्यु से आल्हा का सन्यास लेना एव राठौड़ तथा चन्देली सेना की पराजय से व्यथित, प्रतिशोध मे व्याकुल क्षीणबल वृद्ध जयचन्द पृथ्वीराज पर आक्रमण करने का साहस स्वय नही कर सका इसीलिये पृथ्वीराज को कन्नौज में घेरने की कुटिल योजना सूझ-बूझ से रची गई।

राठौड़ी विश्वस्त सैनिक दूर तक कई जगह सतर्क रह पृथ्वीराज एवं चौहानियो की टोह मे थे। स्वयवर समय अनगमजरी अकेली नही थी, सहेलियो, दासियो, भद्र महिलाओ एवं सशस्त्र अगरक्षकों से पूर्ण रक्षित थी। उपस्थित राजाओ के रक्षक सैनिक तथा जयचन्द के नगर-रक्षक, सभा रक्षक, गुप्त एव सशस्त्र विशेष सैनिक चारो ओर चौकस थे, ऐसी सुगठित नाकेबन्दी रहते हुए सभास्थल से अनगमंजरी को अपने अश्व पर साथ लेकर कई बाणभालो तलवारों के प्रहार मे बचाव करते हुए जीवित निकल जाना सर्वथा असम्भव

है। पृथ्वीराज के शौर्य पर प्राणार्पित हो उसे ही पति बनाने की उत्कट अभिलाषा मे अनगमंजरी द्वारा सहयोगार्थ वचन बद्धता, एवं शत्रु जयचन्द द्वारा मूर्ती के माध्यम से सभा मे पृथ्वीराज का अपमान यह दो कारण रहते हुए भी शत्रु के क्षेत्र मे, घर मे, सैकडो वीरो की सभा में प्रगट रूप से पहुँचना या सैनिकी आक्रमण करना उद्देश मे हानिप्रद मानकर पृथ्वीराज एव इसके विश्वस्त रक्षक-सैनिक सहयोगी कपट वेष मे दर्शक बने हुए अवसर की प्रतीक्षा मे सभास्थल, नगर और क्षेत्र मे व्याप्त थे। उत्सव के कारण चौहानी दूती, सेविकायें अन्त.पुर मे पहुँचने मे सफल हो अनगमंजरी की सेविकाएँ बन उसे पृथ्वीराज के प्रति दृढनिष्ठ करती रही तथा स्वयम्बरी सभा मे पृथ्वी की मूर्ती को वरमाला अर्पित करने बाद अनंगमंजरी को छद्मवेशमे सेविकाओ मे सम्मिलित कर महल से निकालकर योजनानुसार पृथ्वीराज तक पहुँचाई है। पृथ्वीराज छद्मवेश मे ही पत्नी अनगमजरी को अपने साथ अश्वारूढ कर त्वरित कन्नौज से प्रस्थान कर गया। सावधान राठौड शीघ्र ही रहस्य जानकर पृथ्वीराज की ओर दौड़े, पृथ्वीराज इनकी तलवारो से दूर जा चुका था, किन्तु छद्मवेशी चौहान सैनिको ने कन्नौजियो को तलवार के बल पर आगे नही बढने दिया और कुछ समय बाद ही दूर से आती हुई चौहान सेना की गर्द कन्नौज से दीखने लगी थी।

संयोगिता चौहान राज्य मे सकुशल पहुँच गई किन्तु महोदय जी का भू-क्षेत्र लहू की प्यास से व्याकुल हो उठा था।

चौहानी सेना को सहयोग देने हेतु चौंसठ राजा पृथ्वीराज के साथी थे। स्वयंवर में निमन्त्रित कुछ राजा तटस्थ हो गए, कुछ राजाओ ने जयचन्द को सहयोग दिया। कन्नौजी धरा पर दोनो पक्ष के योद्धा लगातार पाच दिन तक वीर संहार करते रहे। पृथ्वी के बहनेऊ पृथा के पति गहलोत समरसिह ने प्रचण्ड शौर्य का प्रदर्शन किया था, पृथ्वी के दूसरे बहनेऊ आमेरी कछवा पंजूनराय का मुका-

बला एतमादखा से हुआ था, युद्ध मे एतमादखां पंजोनीराय भाई पाल्हण आदि कई वीर मारे गए, पंजोनी का पुत्र मलैसी घायल हुआ था। वीरो की असख्य लाशो के अम्बार से प्रसिद्ध गाधीपुर समाधि-पुर बन गया, दलपंगुल जयचन्द वलपंगुल रह गया एव विजयी पृथ्वीराज अब से "परम भट्टारक महाराजाधिराज" कहलाया।

स्त्रियासक्ति के कारण पृथ्वीराज ने संयोगिता हरण किया, यह मत गलत है। पृथ्वीराज की मूर्ती को सभा मे प्रतिहारी बनाकर खुद जयचन्द ने विनाश को साग्रह निमंत्रण दिया है। युवा पृथ्वीराज द्वारा अपनी मूर्ती के अपमान का वदला लेना वीरोचित था।

पृथ्वीराज को अनगमजरी ने मन से पहले ही वरण कर लिया थी तथा विशाल सभा मे भी पृथ्वी की मूर्ती को वरमाला पहनाकर स्पष्टतः प्रामाणिक रूप से पति स्वीकारी है अर्थात अनंगमजरी पृथ्वी की पत्नी हो चुकी थी, यसी नही थी। पत्नी को ले जाना पति का नैतिक कर्तव्य था। जिसका उसने पालन किया था। पृथ्वी स्त्रिया-सक्त रहा होता तो मण्डोर की राजपुत्री से विवाह करने से इन्कार नही करता। पृथ्वी की कुल पांच पत्नी हुई थी। यह स्त्रियासक्ति नही है। राजाओ मे वहु-पत्नी प्रथा थी तथा उस युग मे इसे दोप नही माना गया था। अनगमजरी ने विशाल जनसमुदाय के समक्ष पृथ्वी की मूर्ती को वरमाला पहनाई थी, इसी के बाद साधिकार पत्नी को पृथ्वी ले गया है, पहले नही ले गया, यह पृथ्वी के सच्चरित्र का प्रमाण है। वरमाला अन्य किसी के गले मे डाली गई होती या वर माला अर्पित होने के पहले अनगमजरी का हरण पृथ्वी ने किया होता तो वह वास्तव मे अपराधी होता। सुभद्रा और रुक्मिणी हरण की तुलना मे संयोगिता हरण दोप-रहित है।

वयाना के दाहिमाराज की पुत्री पृथ्वीराज की मुख्य पत्नी थी, इससे रणजीत नामक पुत्र हुआ था। दाहिमा राजपुत्र कैमास, पुंडीर,

एवं चोयन्द (चामुण्डराय) तीनो ही पृथ्वीराज के मन्त्री, सामन्त एव सेनापति थे। दिल्ली पर चौहान प्रतिनिधी गोविन्दराज था।

संयोगिता हरण के पहले ई० ११९१ के आरम्भ मे तवरहिन्द (भटिण्डा) लेकर शहाबुद्दीन गोरी आगे बढा। जम्मूनरेश चक्रदेव की सहायता पाकर लाहौर के शासक गजनवी खुसरो मलिक को मातहत बनाया और आगे बढा तब तराईन (घग्गर) के मैदान पर पृथ्वीराज चौहान से टकराकर फुटबाल की तरह उमुन्ख लौट भागा घायल गोरी को उसके सैनिक ने बच भागन हेतु अपना घोडा दे दिया। अन्यथा गोविन्दराज के हाथो गोरी मारा जाता, शहाबुद्दीन गोरी गोर मे समा जाता। गोर सेना को अस्सी मील दूर तक खदेड कर पृथ्वी लौट आया था।

विभिन्न ग्रन्थो मे ई० ११९१ तक ७, ८, १८, २०, २१, २३ मर्तबा पृथ्वी से गोरी की पराजय होना लिखा है किन्तु गोरी, पृथ्वी स्वय दो मर्तबा युद्ध किये है, शेप पृथ्वी के प्रतिनिधियो से गोरी के युद्ध हुए है। चौहानी अन्य युद्धो की अपेक्षा ई० ११९१ मे स्वय पृथ्वीराज के साथ हुए युद्ध मे सेना सहित गोरी द्वारा अस्सी मील तक भागते ही भागना उसके जीवन की जबरदस्त पराजय थी, उस शर्मनाक पराजय की बदले की भावना विस्फुटित ज्वालामुखी की तरह शहाबुद्दीन गोरी के अन्तस मे उबल रही थी, उस लावे की दुर्गन्ध पर जयचन्द आकर्पित हो पृथ्वी पर आक्रमण करने गोरी को प्रोत्साहन दिया है। जयचन्द ने गोरी को आक्रमण करने पत्र भले ही न दिया हो, किन्तु तटस्थ रह गोरी को सहयोग अवश्य दिया है। पृथ्वी के मुकाबले जयचन्द कमजोर नहीं था, यह तर्क, कुतर्क है। पृथ्वीराज भी गोरी के मुकाबले ११९१ मे कमजोर नही था किन्तु अब परिस्थिती बदल चुकी थी। संयोगिता-हरण समय चौहानी-राठौडी सेना लगातार पांच दिन घोर सग्राम कर बहुत बडी सख्या मे कटकर घट चुकी थी। इस नरसंहार का जन्मदाता जयचन्द ही था। पृथ्वीराज की

निरन्तर विजये, पृथ्वीराज से बुरी तरह खुद के राज्य कन्नौज मे पराजित एव प्रवल सैन्य मरण से-क्षुब्ध, दुर्धर्ष, वीर आल्हा-ऊदल के सहयोग से वचित, पुत्री हरण अपमान से प्रतिशोधोन्मन्न एव राठौरा-धीन परमारदीन पर चौहान की विजय से व्यथित वृद्ध जयचन्द द्वारा पृथ्वीराज पर आक्रमण करने शहाबुद्दीन गौरी को निमन्त्रण देना या तटस्थ रह सहयोग देना असम्भव नही है। स्वाभाविक है। वह युग राष्ट्रीयता का नही था, निजी राज्यप्रधान था। इन तथ्यों पर पाठक मनन कर ले।

कन्नौजी युद्ध मे चौहानी सैन्य शक्ति की जवरदस्त हुई क्षति का लाभ उठाने तथा जयचन्द के निमत्रण या मौन सहयोगवश अत्यन्त उत्साहपूर्व भरपूर सैन्य शक्ति सगठित कर छलकपट पूर्ण योजनाओं मे येन केन-प्रकाररेण पृथ्वीराज का विनाश करने ई० ११९२ के अन्तिम चरण मे गोरी गजनी से विशाल सेना साथ ले तराईन के प्रागण पर पुन: पहुँच गया। इस वार जम्मुनरेश विजयसिंह एवं युवराज नरसिंह देव गोरी के साथी थे। जयचन्द राठौड तटस्थ रह शहाबुद्दीन की विजय एव पृथ्वीराज की पराजय के लिये व्याकुल था।

इस युद्ध हेतु पृथ्वीराज द्वारा एकत्र किये गये सैनिक नगे भूखे थे, उन्हे वेतन नही मिलता था, उनमे एकरूपता और अनुशासन का अभाव था, उनके पास अच्छी नस्ल के घोडे नही थे, इत्यादि कथन सत्य से शून्य है। रामायणानुसार:— अयोध्या मे सैनिक विद्यालय थे, सैनिको को वेतन दिया जाता था, तव चव्हाण के समय सैनिक लड़ाकू न हो यह केवल भ्रम है।

पृथ्वीराज को नागौर में सात करोड़ का भूधन (गड़ा खजाना) मिला था, उसके अतिरिक्त अन्य राज्यों पर विजय पाकर लाया हुआ धन भी था, इसलिए सेना को वेतन देने मे असुविधा कतई नही थी। पृथ्वीराज के समय वेतन अत्यल्प था, पृथ्वीराज के ६८४ वर्ष वाद ई० १८७६ मे अल्वर मे सैनिक वेतन-तोपची को ५) रु० से ६) रु०

तक मासिक, अश्वारोही को ४॥=) से ५॥=) तक पैदल सैनिक को ५) से ५॥) तक मासिक वेतन था। तब इसके ६८४ वर्ष पहले वेतन अत्यन्त कम अवश्य था। पृथ्वीराज के ११८ वर्ष बाद ई० १३१० के लगभग चाँवल, नौ पैसा मन, गेहूँ बारह पैसा मन, मक्खन पाँच पैसा सेर, शक्कर तीन पैसा सेर भाव था। निम्नाङ्कित तालिका देखिये।

नाम वस्तु	रुपया	आना	पाई	नाम वस्तु	रुपया	आना	पाई
गेहूँ	×	६	९	दही	×	१०	६
काबुली चना	×	९	४॥	शक्करमोरम,सफेद	४	१२	१०॥
देशी चना	×	४	१०॥	शक्करपीलीकडकड़	२	१	९
मसूर	×	७	१॥	नमक	×	९	४॥
जौ	×	४	१०॥	मिर्च	२	१	९
चावल ऊँचा	३	६	×	पालक	×	९	९
चावल सादा	१	८	×	पोदीना	१	८	×
साठी चावल	×	४	१०॥	कादा-प्याज	१	८	×
मूंग	×	१०	१०॥	लहशुन	१	८	×
उडद	×	९	९	अंगूर	३	×	×
मोठ	×	६	९	"प्रति सेर"	×	×	×
तिल	×	९	९	किशमिस	×	५	३
जुवार	×	६	×	बादाम	×	६	९
मैदा	×	१३	१॥	पिस्ता	×	५	३
बकरी का मांस	२	२	×	अखरोट	×	३	×
बकरे का मांस	२	×	३	चिरोंजी	×	१	३
घृत	३	१५	×	मिश्री	×	३	९
तेल तिल्ली	३	×	×	केसर	१५	×	×
दूध	×	१५	×	सुपारी	×	२	३

इस प्रकार देहली नगर मे ई० १५४० से १७१० तक का भाव पक्का मन का है। कच्चा मन २६ सेर १० छटाक वजन का था, इसका डेढ़ा वजन पक्का मन होता था। ई० १५४० से १७१० तक गेहूँ ।)।।, चांवल .।.), शक्कर ३ ☰) घी. २ =।।), तेल २), दूध.।। =), जवारी .।.) मन भाव था, केसर १०) रु० सेर, उपरोक्त मन कच्चा रहा हैं, इन्ही को डेढा करले, पक्का मन का भाव बनेगा। ई० १३१० मे गेहूँ, चावल का भाव कितना कम है, उसी अनुपात से चौहान के समय वेतन भी तब अन्नियों मे रहा होगा, अस्तु पृथ्वी के सैनिक नंगे, भूखे नही थे, उन्हे वेतन पाने मे कठिनाई किंचित भी नही थी। उनमें भावनात्मक अनुशासन और एकरूपता थी कि अपने विपक्ष को धराशायी करने कृत सकल्प रहते थे, तव परेड और यूनीफार्म का चलन नही था, किन्तु शैशवावस्था से ही वालक को युद्धप्रिय बनाना मातृकर्म था।

धरतां पग धर धूजती दक्कलता दिग्पाल
जणती रजपूताणिया थणती साण बम्वाल
पूत सिखावै पालणै मरण वड़ाई मांय
इला न देणी आपणी रण खेता भिड़ जाय (सं)

ऐसी अनेक पंक्तियां उनके जीवन चर्या की है। ये भारतीय सैनिक केवल वेतन प्रिय नही थे, धरा और धणी के प्रति भी निष्ठा-वान होते थे। वेतन-पीड़ित, नगे, भूखे एव अनुशासन हीन रहे होते तो रणक्षेत्र तक जाते ही नही, ये किसी घेरे में कैद नही थे, युद्ध के पहले या युद्धारम्भ होते ही भाग सकते थे, किन्तु कोई सैनिक बेवक्त नही भागा, ये सैनिक जन्मजात युद्धप्रिय लड़ाके थे, इनमे एकरूपता एव अनुशासन इतना था कि अपने कर्त्तव्य को स्वयंस्फूर्त पूर्ण करने सदा तत्पर रहते थे, ऐसे अनेक उदाहरण है।

राजपूतो के पास अच्छी नस्ल के घोड़े नही थे, यह कथन केवल काल्पनिक है। राजपूतो के पास अच्छी नस्ल के घोड़े रहते थे, दरयाई

नस्ल से भी बछेरे प्राप्त कर भैंस को दूध पिलाकर उस भैंस का दूध बछेरो को पिलाते, मेवा, घी, और पौष्टिक वनस्पति खिलाते। ऐसे घोड़े दूरगामी, जलगामी, द्रुतगामी, चंचल, रण कुशल और स्वामीभक्त होते थे, वैदिक युग से यहाँ अश्व की उपयोगिता के प्रमाण है। अनेक राजाओं के अश्व ऐतिहासिक है। ईडर के राजा राठौड वीरमदेव ने विक्रम स० १६५३ के करीब (आज से ३९० वर्ष पहले) चारण झूला सायां को बक्शीस मे सालाहर नामक घोड़ा दिया था, जिसका तब चौवालीस हजार रुपया मूल्य था। इससे भी और अधिक मूल्यवान घोडो का वर्णन पाया जाता है, अत भारतीय वीर उत्तम नस्ल के ही घोड़े रखते थे।

पृथ्वीराज विलासी था क्योकि गौरी ने आक्रमण किया तब पृथ्वीराज सोया था, यह आक्षेप भी हास्यास्पद है। दैनिक स्वाभाविक निद्रा लेना विलासिता नही है। पृथ्वीराज के सहयोगी अनेक राजा, सामन्त, सरदार, सेनापति, सैनिक, पहरेदार आदि हजारो व्यक्ति रणभूमि पर थे, वे भी समयानुसार निद्रा लेते थे, सम्भव है रात देर तक शिविर मे मत्रणा हुई हो इसलिये पृथ्वी को गाढ निद्रा ने घेर लिया हो। रणक्षेत्र मे पहुँचने के कुछ दिन बाद तक युद्ध नही हुआ था। शहाबुद्दीन ने दिखावे मे समझौता वार्ता चला रखा था, किन्तु रात मे धोके से पृथ्वीराज पर दुतरफा आक्रमण किया था, फिर भी पृथ्वीराज तत्काल शस्त्रसज्ज हो रणक्षेत्र सम्हाला है, यह दोनो तथ्य विचारणीय है। गोरी ने आक्रमण रात में धोके से किया था, इस दशा मे पृथ्वी भाग सकता था किन्तु वह वीर था, कायर भगोडा नही था, किसी भी प्राणी के लिये नैसर्गिक निद्रा दिनचर्या की महत्व-पूर्ण प्रक्रिया है, विलासिता कतई नही है।

गौरी द्वारा चलाये गये समझौते के झूठे झासे मे चालाक पृथ्वी-राज ने नही आना था, यह विचार भी व्यर्थ है। समझौता वार्ता का निर्णय होने के पहले पृथ्वी यदि गोरी पर आक्रमण करता और

विजयी या पराजित होता तब भी उसे नाहक खून-खराबा करने वाला मूर्ख लिखे होते। युद्ध तीन दिन चला था । तीसरे दिन पराजय से बचने के लिये गौरी ने धोके से आक्रमण किया था। वस्तुत पृथ्वीराज और उसके सहयोगी एवं सेना सभी धोके का शिकार हुए है। उतवी-कृत ताजुल मआसीर तथा हसन निजामीकृत जमीउल हकीकत से ज्ञात होता है कि गौरी ने पृथ्वीराज से समझौता वार्ता मे वापस लौटने का अभिनय करते हुए रात के अन्धेरे मे कुछ सेना को घुमाव देकर चौहानी सेना पर पीछे से आक्रमण करने भेज दिया जो युद्ध समय अर्धचन्द्रकार घेरा बनाकर चौहान सेना पर आक्रमण करेगी । तथा अग्रिम मोर्चे की युद्धरत सेना युद्ध से लौट कर भागेगी और फिर पलटेगी पीछा करती चौहान सेना के पीछे गौर चद्रावल सेना के बीच चौहानी सेना को चौहानी पड़ाव से काफी दूर घेरकर समाप्त करने का कपट व्यूह गौरी ने रचा था। "विदेशी युद्ध नीति मुक्त विनाश प्रधान थी, भारतीय युद्ध नीति पौराणिक नियमबद्ध थी।"

नियम विरुद्ध युद्ध का आरम्भ उषाकाल के कुछ पहले ही रात के अन्धेरे मे चार बजे के निकट हुआ और छावनी मे यत्र-तत्र अलाव धधक रहे थे, उनके प्रकाश मे गौर सैनिक कार्यरत दिख रहे थे। चौहान सैनिक समझौता वार्ता की सद्भावनावश असावधान, बिखरे हुए, शौचादि, नित्य कर्म मे लगे हुए थे (उस युग मे सूर्योदय के पहले ही शौच-स्नानादि से निवृत्त होने का सद्गुण था) मन्त्रणावश विलम्ब से सोया पृथ्वीराज नीद में था, इस अवसर मे चोट खाये हुये विषधर सॉप की तरह गौरी ने भोर के पहले ही आक्रमण कायराना ढग से किया था, फिर भी चौहान सेना त्वरित स्वयस्फूर्त शस्त्र सज्ज हो गौर सैना से कडा मुकाबला की है। पाठक ध्यान दे कि उपरोक्त परिस्थतियो मे अकस्मात आक्रमण होने से एकरूपता अनुशासन, स्वयमेव नष्ट होता है एव सेनापति के आदेश की प्रतीक्षा मे रुके रहना अपमृत्यु को गले लगाना है। गौर सेना ने धोके से

अकस्मात आक्रमण किया था, फिर भी कर्त्तव्यनिष्ठ असावधान चौहान सेना ने तत्क्षण सावधान हो गौर सेना पर सख्त प्रत्याक्रमण कर उसे मीलों दूर तक खदेडा है। गजारूढ पृथ्वीराज अपनी सेना को ललकार उसे शत्रु पर रोष पूर्वक वढाये जा रहा था। तरावडी-तराइन (पानीपत-थानेश्वर का क्षेत्र) से सरस्वती-घग्गर की ओर योजनानुसार गौर सेना लडती हुई कुछ मील तक लौट भागी, चौहानी सेना उनका पीछा किये वढ़ी जा रही थी, कुछ समय वाद गौरी की अर्ध चन्द्राकार योजना क्रियान्वित हुई, झाडियो की ओर मे निकल कर गौर सेना ने पीछे से आक्रमण किया तव चौहानी सेना खेकडे के पजे मे जकडे सम्मान होते हुए भी चौहानी सेना भीषण संग्राम कर विजय की ओर वढ रही थी कि दोपहर के समय पृथ्वी-राज का हाथी घायल हो पीड़ा से विचलित हो, अनियन्त्रित हुआ जा रहा था, इस दशा में उस हाथी पर से कूदकर अपने घोडे पर सवार होते हुए तत्कालीन प्रक्रिया की सहज असावधानी मे पृथ्वीराज पर कई गौर सैनिक टूट पडे, किन्तु मुट ढ कवच के कारण पृथ्वीराज मौत से वच गया परन्तु बुरी तरह घायल दशा में वन्दी वनाया गया था। भोर के पहले से आरम्भ हुआ युद्ध दोपहरी तक घमासान सहार मचाए था। दोनों पक्ष की सेना वड़ी सख्या मे कट मरी, द्रवद्वती सरस्वती (घग्गर) के निकट युद्ध समाप्त हुआ। गहलौत समर सिंह, गोविन्दराज, चण्डमुण्डीर आदि योद्धा मारे गए।

युद्ध छोड कर पृथ्वीराज भाग छूटा था, उसे पीछा करके गौर सेना ने सिरसा में पकडा था, यह लिखना सत्य से शून्य है, तराइन से सिरसा भ्रमात्र मोड़ रहित सीधा लगभग ११५ मील (१९५ कि० मी०) दूर है। मुहम्मद गौरी द्वारा कपट पूर्ण निर्णायिक युद्ध की उग्रता के समय मार्ग से हटकर गौर सैनिको ने पृथ्वीराज को रेस का घोडा दोड़ाने मुक्त मार्ग नही दे दिया था कि सिरसा तक पृथ्वी पहुँचा हो। पृथ्वीराज से युद्ध मे कई वार खदेड़ा हुआ तथा ई० ११८१ मे इसी

रणक्षेत्र पर बुरी तरह पिटकर पराजित हो प्राण बचाकर भागा हुआ शहाबुद्दीन गौरी और उसके इस्लाम परस्त जेहादी वहम के शिकार सैनिक अपने एकमात्र जबरदस्त शत्रु पृथ्वीराज पर गहरे ही खार खाए हुए थे, किसी भी तरह पृथ्वीराज को नष्ट करना ही उनका ध्येय था उनकी गिद्ध द्रष्टि पृथ्वीराज पर केन्द्रित थी । इसलिये पानीपत-तराइन से सिरसा की सीमा तक भी पृथ्वीराज का पहुँचना असभव है। उस युग मे आज के जितने मार्ग नही थे।

चौहानी सेना लगभग एक लाख मारी गई, मेवाड़ नरेश समरसिंह एवं इनका पुत्र कल्याण एवं मेवाडी सैनिक तेरह हजार मारे गये। पृथ्वी की वहन पृथा समरसिंह की पत्नी थी सती हुई। हिन्दू धर्म के कट्टर उपासक, प्रजापालक पृथ्वीराज को बन्दी दशा मे राजलोभ, प्राणलोभ एवं कठोर यातनाये देकर वजनदार भारी हथकडी बेडी तौक मे जकड़े रखकर, गर्म सलाखो से उसकी आँखे फुडवाकर उसे इस्लाम एवं दासवत आधीनता स्वीकारने वाध्य किया जाता था, ताकि चौहानी राज्य एवं सेना मे इस्लाम व्याप्त हो, प्रजा गौर सेना की सहायक हो, ताकि गौर सेना की अन्यत्र विजय हो और अधिक क्षति न हो, चौहानी सेना यदि गौर सेना के प्रति हिंसक-आक्रामक हो जायगी तो प्राप्त सफलता एवं बची हुई गौर सेना नष्ट हो जायगी। प्रजा को भ्रमित कर शान्त रखने ११९३ में पृथ्वीराज शहाबुद्दीन नामक सयुक्त सिक्का भी चलाया, किन्तु पृथ्वीराज पृथ्वी की तरह अपने धर्म-कर्म पर दृढ रहा, उच्च लोभ एवं क्रूर असह्य यातनाओ से विचलित नही हुआ उसका हिन्दू राज धर्मनिष्ठ आत्म-गौरव पराजित नही हुआ, उस दयनीय दशा मे भी वनराज की तरह दहाड़ते हुए पृथ्वी ने शहाबुद्दीन एवं उसके लिए राज्य लोभ तथा इस्लाम को सदा ही अपमानित तिरस्कृत करते हुए अपने हिन्दुत्व के लिये राज्य सुख एव अपने प्राण तक निछावर कर भारतीय क्षात्र

धर्म, कर्म, शौर्य और आन, वान पर अडिग रहा, यह पृथ्वीराज चौहान की नैतिक उज्ज्वल विजय है। पाठक सत्य तथ्य स्वीकार लें।

पृथ्वीराज युद्ध से भागा होता तो गौरी के प्रलोभनो को ठुकराकर, क्रूरतम यातनाये सहकर मृत्यु को वरण नही करता, इससे स्पष्ट प्रमाणित होता है कि पृथ्वीराज युद्ध से नही भागा है, सामयिक, आकस्मिक विकट परिस्थितियो की विवशताओ ने उसे वन्दी बनाया था। उपरोक्त तथ्यो पर पाठक भली प्रकार मनन कर लें।

राज्य लोभ में पृथ्वीराज के भतीजे ईश्वरदास ने इस्लाम स्वीकारा किन्तु प्रजा से तिरस्कृत हो गया था। सरवानी, वेदवानी, कायमखानी, कुरुखानी मुसलमान भी चौहान है। रणथम्भौर का प्रसिद्ध हम्मीरदेव चौहान, पृथ्वीराज चौहान का ही वशज था।

युद्ध मे उत्पन्न हुई गौर सेना की क्षीणता इस वीच सुधरनी थी, सेना के सम्हलते ही वैतालगढ़ मे पृथ्वी को मार कर शहाबुद्दीन ने, पृथ्वीराज के विनास से आनन्द मनाने वाले कमधज कहलाने वाले राठौड़ जयचन्द पर ११९४ मे तगडा आक्रमण किया। चन्दवार के प्राङ्गण पर जयचन्द ने गौरी से मोर्चा लिया, किन्तु संयोगिता-हरण युद्ध में सैन्य शक्ति से क्षीण हुआ जयचन्द अपनी पराजय निश्चित जानकर तथा वन्दी, वेवसी मे पृथ्वीराज को दी गई कठोर यातनाएं याद कर प्रायश्चित करने पापो से मुक्ति पाने को जयचन्द राठौड पतित-पावनी गगा की गहन गोद मे गोता खा वैठा।

गौरी ने वाराणसी लूटा, मन्दिर तोडा, मस्जिद वनवाया, ग्वालियर और वयाना पर अधिकार किया। शहाबुद्दीन के सेनापति मुहम्मद खिलजी, मुहम्मद विन-बख्त्यार ने ११९७ मे वगाल विहार सहज ही जीत लिया, उद्दण्डपुर (उदभाण्डपुर) मे हजारो वौद्ध निर्विरोध कत्ल कर दिया। विश्व का एक मात्र नालन्दा विश्वविद्यालय जहा दस हजार छात्र एव पन्द्रह सौ अध्यापक रहते थे, तथा हजारों ग्रन्थ युत विश्व मे वेजोड़ सात मजिल के तीन भवन, रत्नोदधि,

रत्नसागर, रत्नरंजक नाम के थे (ग्रंन्थों को रत्न की ओपमा थी) यह विशाल ग्रन्थ भंडार जला दिया। जिन्हे बचाने कई विद्वान भी जल मरे, कई महीनों तक आग जलती रही, विश्वोपयोगी ज्ञान भण्डार राख हो गया। सभ्यताहीन, बुद्धिहीन, विद्याहीन, जाहिल व्यक्ति ही ग्रन्थ जलाते है।

इस तरह का विनाश इस्लामी जेहाद का अन्धानुकरण है, इसे भारतीय नीति पाशविकता कहती है।

वीर श्रेष्ठ महाराजा पोरस (पौरुष) और पृथ्वीराज चौहान की उज्ज्वल कीर्ति पर जिस तरह मिथ्या दोष लादे गए है उसी तरह प्रताप के धवल यश पर भी मिथ्या लाछन थोपने का तथा अकबर एव उसके आतकवश मुगल सेना मे समर्पित सत्ता लोभी राजपूतो के घिनौने विकृत चित्र को सौन्दर्याबृत्त करने का कुटिल श्रम किया, कराया गया है।

प्रसिद्ध शोध कर्ता टेस्सी टॉरी, इलियट, सुरेन्द्रनाथ सेन आदि का मत है, कि मुस्लिम इतिहास ग्रन्थ विश्वास योग्य नही है। किन्तु भारतीय कुछ विद्वानो ने आत्मप्रशंसक बाबर की एव हुमायूं की राज्याश्रित बहन गुलवदन की तथा अकबर के परम चाटुकार अबुल फजल एवं अब्दुल कादर वदायूंनी की कलम को विश्वस्त मानना तथा राज्याश्रित होने का दोप देकर चारण कवि भाट की कलम सर्वथा अविश्वसनीय मानना युक्तिसगत नही है।

श्रगारात्मक अतिशयोक्ति होती है किन्तु मूल घटना सत्य रहती है, तथा आश्रयदाता की गलतियो पर उसी के समक्ष तीखे व्यग भी किये है, यह सत्य निर्भीकता का प्रमाण है।

(१) जोधपुरी राव चन्द्रसेन का पोता (भिणाय) कर्मसेन हाथी पर सवार जहागीर पर खवासी में चँवर डुला रहा था, उन दोनो को सुनाते हुए कवि ने कहा–'कम्मा उग्रसेन रा तो जननी बलिहार, चँवर ज झल्ले साह रै नहं झल्ले तरवार", यह सुन कर्मसेन हाथी से कूद पड़ा।

(२) शाहपुरा के क्रांति वीर केसरी सिंह बारहठ ने महाराणा फतहसिंह के समक्ष कहा था–'पसरैलो किमपाण पाण छतां थारो फता।

(३) शाहपुरा के राजा उमेद सिंह के समक्ष कही पक्ति–"गि ड्ग मोहोडाह थे खादा कुल रा अधक।"

(४) जयपुर जोधपुर के राजाओ के समक्ष चारण ने कहा–"कूरम मार्यो डीकरो, कमधज मार्यो बाप।"

(५) जोधपुर के प्रताप सिंह के समक्ष कही पंक्तियो में से दो–"डहक्यो डंफर देख बादल थो थो नीर बिन", एव "पता कठे उतारसो महा चीकड़ा पाप।"

कवि ने सरे आम मुनाया–"सिहा सिर नीचा किया गाडर करे गराल।"

ऐसे अनेक उदाहरण है। इतने तीखे व्यंग कवि को मृत्युदण्ड दिला सकते हैं। यथा–औरंगजेब के दूत से वार्ता के समय महाराणा राजसिंह ने अपने ताजीमी (अभिवादनीय) सरदारो को प्रवेश मना किया था। (क्योकि मुगलो को ताजीमी सम्मान राणा ने कभी नही दिया) बारहठ उदयभान प्रहरी के मना करने पर भी मंत्रणा कक्ष में प्रवेश कर गया, किन्तु राजसिंह ने इन पर ध्यान नही दिया, तब बारहठ ने कहा–"रही चिरमिठी बापड़ी कीधा मुख काला, राजसिह की गुर्ज के प्रहार से बारहठ तत्काल मारा गया, क्योंकि उसने अनाधिकार प्रवेश किया था। जैसलमेर के राजा हरराज के समक्ष चारण कवि वीरदास ने कहा था–"फाट्योडी जाजम चारु फेर, घोडां रै पास बुगां रो ढेर, मैं दीठा जादव जैसलमेर।" तब इस कवि को कैद हुई पर, कवि ने क्षमा नही मांगा। किन्तु बीकानेर नरेश रायसिह तोरण पर जाते हुए यहाँ अड़ गये थे, कवि को मुक्त करवाने। कवि कैद मुक्त हुआ, तब ही बारात आगे बढी थी। मेवाड़ मे जन्मे कवि करणीदान कविया की शोभा यात्रा मे जोधपुर नरेश पैदल चले थे, ऐसा था कवियो का सम्मान।

शौर्य प्रदर्शक का गुणगान हुआ हैं, अयोग्य की सरासना नही की गई। मेवाड़ी-राजस्थानी साहित्य मे वर्णित प्रताप विजय के समर्थन में लगभग स्पष्ट जैसा ही चित्रण परोक्ष रूप में बदायूंनी ने भी किया है।

जयपुरेश रामसिंह से इतिहास लेखक ने पूछा कि– आपके पूर्वजों ने मुगलों को डोले दिये हैं, उनका वर्णन लिखे या नही, इस पर राजा रामसिंह ने कहा, क्यों न लिखा जाय, अवश्य लिखिये कि इस जमीन के लिये हमारे पूर्वजों ने क्या-क्या किये है । राणा राजसिंह ने कहा है–"पूजो पग कवेसरां", याने कवियो के पैर पूजिये कि इनके कारण आदिकाल से इतिहास रक्षित है। रजिया से सम्बोधित पंक्ति–"साहित ब्रह्म सरूप समपै प्राण समाज नैं।" "साहित बिनां समाज मैं साहस रहै न सत।" दीपै वां रो देस जांरो साहित जग मगै ।" कवियों ने जातिदोष भी व्यक्त किये है–"म्हैसरी मे मूंदड़ो, मुसल्ला मे कूजड़ो।" "नाज में कायमो, बामणा में दायमो।" ऐसे और भी है, अतः कवियों को चाटुकार मित्थ्या प्रशंसक कहना उचित नही है।

ब्रह्म क्षत्रीय-गुहिलोत-सीसोदा-

सूर्यवंशी रामपुत्र लव का वंशज कनकसेन ई० १४४ मे लवकोट (लाहौर) से सौराष्ट्र मे आकर वसा। इनकी मुख्य राजधानी वल्लभी नगरी थी। इन्होने विजय नगर (धौलका) वसाया। इनका वंशज शिलादित्य था।

किन्तु यह दूसरा मत सही जान पड़ता है कि सौराष्ट्र में "कैयर" नगर के तपोनिष्ठ ब्राह्मण देवादित्य की पुत्री वाल विधवा "सुभगा" गुरु कृपा से सूर्योपासक हुई। इसे सुर्यानुकम्पा से पुत्र हुआ। पुत्र गैवी को पितृहीन के व्यंग से वचाने हेतु सूर्यदेव ने एक अश्व और एक पापाणास्त्र दिया था। इनके वल से शिलादित्य नाम हुआ। कनकसेन के वंशज से शिलादित्य ने वल्लभी जीत लिया था। (जिला भावनगर से उत्तर-पश्चिम पाँच कोस पर वल्लभीपुर तहसील है, डौला जंक्शन से वस जाती है)।

ई० ५८५ में शिलादित्य पर फारस के नौशेखाँ ने आक्रमण किया था, तव शिलादित्य के सेनापति ने इसके सूर्याश्व एवं पाषाणास्त्र को गौ रक्त से भ्रष्ट कर दिया था (सम्भव है यह सेनापति 'पूर्व राजा का वफादार' था) इस कारण दैवी शक्तिहीन शिलादित्य हारा एवं मारा गया। वल्लभी ध्वस्त हो गई।

शिलादित्य की पत्नी पुष्पावती, विन्ध्याचल में चन्द्रावती के पवाँर राजा की पुत्री थी, वह आठवा पूजकर वापस लौट रही थी। मार्ग में इसे वल्लभी 'पतन का समाचार मिला, अपने रक्षको को साग्रह वापस भेजकर गर्भिणी पुष्पावती मलिया नामक पर्वत की गुहा मे छुपकर रही। निकटस्थ वीरनगर की ब्राह्मणी कमला से इसकी भेंट हो गई। वही कमला पुष्पावती की प्रसूति मे सहायक वनी। पुष्पावती

को पुत्र हुआ । इसका नाम गुहादित्य रखा गया । कमलावती को अपना पारिवारिक परिचय एव घटित घटना बतलाकर दुग्धपायी शिशु को उसे सौंप, रानी पुष्पावती सती हो गई । कमला ने बालक का पालन-पोषण किया । बड़ा होने पर उसके भील मित्रो ने सहज बालक्रीड़ा' के खेल में उसे अपना राजा बनाया था । किन्तु इस खेल को सुनकर ईडर के भील राजा माण्डलिक ने ईडर का राज्य सच ही गुहादित्य को समर्पित कर दिया ।

गुहादित्य की आठवी पीढी में नागादित्य को मारकर भीलो ने ईडर वापस ले लिया । इस समय पूर्वोक्त कमला ब्राह्मणी के वंशज ने ईडर से नागादित्य के बालक पुत्र शैल को बचाकर ले भागा । त्रिकूट पर्वत के पाराशर वन में नागह्लद ग्राम में निवास किया एव गुप्त रूप मे बालक का संवर्धन हुआ । बालक को वप्पा-बापा कहने लगे थे । सही नाम शैलाधीश था, शील भी कहते थे ।

पद्मपुराण के एक लिग महात्म्यानुसार यहां नागराज वासुकी ने एकलिग की उपासना कर नागजाति की रक्षा हेतु शिव से आशीर्वाद पाया था । जन्मेजय ने जहां नागयज्ञ किया था, वह यज्ञ स्थल यहां तक्षक कुण्ड के (तलैया) नाम से प्रसिद्ध है, विद्यमान है, यही वासुकी ने नगर वसाया है । श्लोक–११० ततो नागदहं नाम पुर निर्माय वासुकी, वह नागह्लद कहलाता है । प्रजा नागर कहलाती है, यहां पार्वती की बावड़ी भी है । उदयपुर से पश्चिम पांच मील पर बागेश्वर महादेव कुण्ड मे भ्रमणशील है, अस्तु एकलिंग स्थल कैलाश-पुरी कहलाता है शिवमय पौराणिक तीर्थ हे । महकालेश्वर एवं ओकारेश्वर से अधिक प्रभावशाली पचमुखी दर्शन है । मन्दिर भले ही आधुनिक हो, बप्पा के समय यह मूर्ति गुफा मे थी, इसी निकट हारीत रिर्षी तपस्या करते थे । उस समय वप्पा चरवाहा था, एक गऊ इस मूर्ति पर अपने थन की धार से दुग्धाभिषेक करती थी, उस दुध की खोज मे वप्पा को इस स्थान के दर्शन हुए, तव से वप्पा हारीत ऋषि

की सेवा में भी पहुँचने लगा था। नागह्रद की राजपुत्री से खेल में ही वप्पा का विवाह हुआ था, किन्तु राजा ने इसे सत्य स्वीकार कर लिया था। गुरु हारीत एवं गुरु गोरखनाथ ने प्रत्यक्ष आशीर्वाद से चित्तौडी पवाँर मौर्य मामा मानसिंह का सामन्त-सेनापति नियुक्त हुआ, इससे मान के सामन्त रुष्ट हो उठे थे। उन्ही दिनों बगदादी कासिम द्वारा विनष्ट देवल के दाहिर राज का पुत्र चित्तौड शरण में आया था। ई० ७१३ में वगदादी सेनापति मेवाड की ओर वढा, मार्ग में वैतालगढ के चौहान माणिकराय को परास्त कर मौत के घाट उतार दिया, और चित्तौड की ओर चला। इसको पराजित करने चित्तौडी सामन्तों ने राजा मान मौर्य का आदेश नही माने तथा ईर्षावश वप्पा पर यह भार डलवाये। मौर्य सेनापति वप्पा ने वगदादी सेनापति का गरूर ऐसा तोड़ा कि मौर्य सामन्त सरदारों ने वप्पा को चित्तौड का शासक वना दिया।

वप्पा रावल ने इस्फहान, कावुल, ईराक, ईरान, तूरान, गजनी, काम्बे, काश्मीर विजय किया। गजनी मे अरव प्रतिनिधी सेनापति सलीम की पुत्री से विवाहा, वप्पा की मुस्लिम पत्नियां और भी थी, इनसे उत्पन्न संतान नौशेरा पठान कहलाए। द्वारका निकट कालीवाव के परमार राज की पुत्री से वप्पा को अशील नामक पुत्र हुआ, इसने अशी (र) ल गढ़ वनाया। सूरत निकट वन्दर द्वीप के इस्फगुल की पुत्री से वप्पा को अपराजित नामक पुत्र हुआ यही राज्याधिकारी हुआ।

कनकसेन के वशज है तो भी सूर्यवंशी है किन्तु मां सुभगा व्राम्हणी एवं पिता सूर्यदेव से उत्पन्न शिलादित्य के कारण वप्पा व्रम्ह क्षत्रीय-सूर्यवंशी कहाया है। (महारथी कर्ण का जन्म भी इसी तरह हुआ था) नैणसी ख्यात में तथा ई० १२७४ चित्तौड़ १२८५ आवू शिलालेख में वप्पा को विप्र लिखा है अतः इस वंश को व्रम्हक्षत्रीय कहना उचित है।

वप्पा के वंश में खुमान एव अल्लह बडे पराक्रमी हुए है, खुमान चौवीस मर्तबा यवनों को परास्त किया है । हारूं रशीद का पोता अन्लमामून खुमान से हारा था । खुमान के सैन्य सहयोगी अनेक राज्य थे गजनी के गहलौत, कन्नौजी राठौड एव असीरगढी तक्षक भी थे ।

खुमान क पुत्र मंगल लोद्रवा पट्टन को हस्तगत कर वहा शासक बना, इसके वंशज मग्गलिया गहलौत कहलाये ।

खुमान का दूसरा पुत्र भर्तृभट्ट मेवाडी शासक बनाया गया । इसने माही आबू सौराष्ट्र मालवा मे तेरह राज्य अपने तेरह पुत्रो मे बाट दिया । अजरगढ, धरनगढ प्राचीन किले आदिवासियो के थे । खलीफा वलीद इँजीद मामून का वह समय था । भर्तृभट्ट के तेरह पुत्रों का वश गाटेरा गहलौत कहलाये ।

भर्तृभट्ट की कुछ पीढी बाद वीरसिह शासक हुआ, इसने कोवाखि युद्ध में चौहान दुर्लभराज को परास्त किया किन्तु वीरसिह के पुत्र तेजसिह से दुर्लभराज के पुत्र की मैत्री रही । शक्तिसिह की नौवी पीढी मे वीरसिंह हुआ था, मालवीय उदयादित्य की पुत्री श्यामलदेवी से विवाहा था । यह गुर्जरेश सिद्धराज जयसिह का समकालीन था । शक्ति के समय पवार राजा मुंज एव भोज ने मेवाड़ पर वर्चस्व बनाया था । इससे वीरसिह के पुत्र जैत्रसिह (वैरीसिह-विजय सिह-पद्मसिह) ने मेवाड को मुक्त कर लिया था । शासन सीमा भी बढाया था ।

वीरसिंह का पौत्र तेजसिह इसका पुत्र समरसिह था यह ई० १२९२ में पृथ्वीराज चौहान के पक्ष मे तराइन युद्ध में मारा गया (राज प्र० भीखारासा) समरसिंह की दूसरी पत्नी अनहलवाडा पट्टन की कर्णवती थी, इसका पुत्र कर्ण बालक था, इसलिये राजकार्य कर्णवती के आधीन थे । समरसिह का एक पुत्र नेपाल में गोरक्ष राज्य स्थापक हुआ । गौरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने मेवाड़ पर चढाई किया तब रानी कर्णवती ने वीर वेष धारण कर सैन्य सचालन कर ऐबक पर विजय पाई थी ।

कर्ण की असमय मृत्यु हो गई । समरसिंह की पौत्री कालोड़ के सोनगरा को विवाही थी, इसके बालक रण धवल को गद्दी पर बैठाकर सोनगरा शासक वनना चाहे, परन्तु मेवाड़ी सरदारो ने समरसिंह के भाई सूर्यमल्ल के पुत्र राहुप को मेवाड सौंपे थे । पाली के निकट सोनगढो से युद्ध में विजयी हो राहुप मेवाड का शासक वना । मण्डोर के शासक पवार राणा मुकुल को राहुप ने पराजित कर अव से महाराणा उपाधी ग्रहण किया ।

एक समय आखेट मे व्रड़ी कठिराई वाद केवल एक शशक ही जहां राहुप ने मारा था वहा शशदा-सीसोदा ग्राम वसाया, यह शाखा सीसोदा कहलाई ।

राहुप के वाद पृथ्वीमल गया तीर्थ की रक्षा में निछावर हुआ था ।

पद्मिनी—

ई० १२७५ में लक्ष्मणसिंह गद्दी पर वैठा, कुछ लेखक लक्ष्मणसिंह को सीसोदा का मानते हैं । रानी पद्मिनी के पति रतनसिंह को चित्तौण का राजा मानते है किन्तु सीसोदा छोटा स्थान होने के कारण अपने वश के वडे राज्य चित्तौड में रक्षण पाने सपरिवार रतनसिंह का आना सम्भव है ।

भिक्षुक राघव चेतन ने पद्मिनी को छोटे स्थान सीसोदा में या उसके पितृगृह पूंगल में उसे देखा होगा । पूंगल में सिंहल ग्राम के हमीरशख चौहान की पुत्री पद्मिनी थी । चौहान शासक या प्रसिद्ध व्यक्ति लंका या सीलोन में उस युग मे नही था । सिंहल द्वीप से मेवाड तक आवागमन सरल एव युद्धरहित नही था, उस समय मेवाड़ प्रवल शक्ति सम्पन्न नही था तथा लोकोक्ति मे "पूंगल गढरी पद्मिणी" कहावत प्रसिद्ध है । सिंहल द्वीप या लका का वर्णन नही है । वीकानेर की ओर "पूंगल" है । कुछ लोग सिगोली को सिंहल मानते है ।

किन्तु हमीरशंख चौहान पूंगल के निकट सिंहल का था, वह सिहल या तो नष्ट हो गया हैं या नाम वदल गया है। मुस्लिम शासको ने नगर, भवन, व्यक्ति पशु आदियों के नाम कईयों के वदले हैं। चित्तौड का शासक रतनसिंह रहा होता तो पद्मिनी का महल छोटी सी हवेली नही रहती। अनन्य सुन्दरी पद्मिनी का महल भी कुछ वड़ा एव सुन्दर भी रहा होता, किन्तु महल भव्य नही है। साधारण हवेली है। रक्षण हेतु आये रतनसिंह परिवार को तत्काल आवास के लिये उपलब्ध छोटे से भवन में रहना पड़ा है। इस भवन से वारहवे दर्पण में अथवा दर्पण से निकटस्थ तालाब के जल मे प्रतिबिम्ब स्पष्ट दीखना असम्भव है। कुएँ का जल स्थिर रह सकता है तालाब का जल कुछ न कुछ अंश में लहराता रहता है। तब परछाई स्पष्ट दीखना असम्भव है। परीक्षण कर देख ले। राजमहिला को किसी भी विधी से एक विदेशी विधर्मी शत्रु को दिखलाना घोर अपमान था, इसे राजपरिवार एव राजपूतों ने स्वीकारा हो यह सर्वथा असम्भव है। उस युग मे पर्दा प्रथा प्रबल नही थी, किन्तु चित्तौड़ राजमहल के रनिवास तक अपरिचित राघव चेतन का पहुँचना पद्मिनी को देखना सहज नहीं था। सम्भव है पद्मिनी के सौन्दर्य की प्रशंसा कही राघव ने सुनी हो तथा स्वयं को खिलजी के बन्धन से मुक्त करवाने पद्मिनी की प्रशसा खिलजी को सुनाया हो तब मेवाड पर आक्रमण करने पद्मिनी मागना खिलजी ने कारण बनाया हो। सोन्याणा के केसरीसिंह बारहठ की पंक्ति—"पदमण थारा रूप रो रह्यो अनोखो हाल, कै निरख्यो रावल रतन कै जौहर री ज्वाल"; । से भी प्रमाणित होता है कि पद्मिनी को दर्पण या जल के माध्यम से अलादीन को नही दिखाया गया। दर्पण के माध्यम से दिखाये जाने वाली कहानी मनघड़ंत है, जो रजपूती गौरव को लज्जित करने हेतु ही रची गई है।

राजा होने के कारण राज मर्यादानुसार लक्ष्मणसिह कनिष्ट रहता तो वह खिलजी को विदा करने गया होता या उस समय रतनसिंह के साथ गया होता।

रतनसिंह को छुडाने अलादीन के डेरे पर सोलह सौ पालखी पहुँचना भी गप्प है, एक पालखी पर एक (दो) सवार, चार वाहक, दो सहायक, दो रक्षक योग नौ। कुल योग चौदह हजार चार सौ होता है। इतनी बड़ी संख्या में शत्रु दल को अलाउद्दीन अपने पड़ाव पर नही आने देता; अतः सात सौ पालकी पहुँचना असम्भव है।

सात सौ पालकी के सभी सदस्य कुशल लडाके थे। पद्मिनी के वेष मे पद्मिनी का भतीजा बादल था। आत्मसमर्पण के लिये पद्मिनी आ रही है, इस बहाने मेवाड़ी दल खिलजी की सेना मे पहुँच धोकेबाज से धोकेबाजी करके रतनसिंह को छुडाकर चित्तौड़ भेज दिये। अलाई सेना मेवाड़ियो पर टूट पडी, अनेक सैनिक मारे गए, गोरा भी वीरगति पाया, बादल बच निकला था।

अलाउद्दीन ने किले पर जबरदस्त आक्रमण कर दिया तब रतनसिंह, बादल, ग्यारह पुत्रो सह लक्ष्मणसिंह एवं हजार मेवाडी वीर रणचण्डी को समर्पित हो गए, १६,००० स्त्रियो सह पद्मिनी ने जौहर किया। आठ माह के सघर्ष बाद ई० १३०३ अगस्त मे श्मसान रूपी चित्तौड पर अलाउद्दीन ने अधिकार कर अपने पुत्र खिज्रखा को शासक बनाया, चित्तौड का नाम खिज्रावाद रखा, खिज्रखां निकम्मा रहा तब अलादीन ने जालोरी सोनगढे मालदेव को अपना प्रतिनिधी नियुक्त किया।

हमीर—

लक्ष्मणसिंह के बडे पुत्र अरिसिंह ने आखेट समय वन में ऊनवास के ठाकुर चन्दावत, राजपूत परिवार की कृषक वीरबाला से गान्धर्व विवाह किया था इससे हमीर नामक पुत्र हुआ था। युद्धारम्भ के पहले लक्ष्मणसिंह ने दूसरे पुत्र अजयसिंह को वंश रक्षा हेतु सपरिवार गुप्त मार्ग से कैलवाड़ा भेज दिया और आदेश दिया कि अरिसिंह के पुत्र को ही राज्याधिकार देना।

उत्तराधिकारी का निर्णय लक्ष्मणसिंह ने दिया है, लक्ष्मणसिंह को "भढ लक्खमसी" कहा जाता था, भड याने युद्ध की ओपमा उसे दी गई है तथा खिलजी को विदा करने यह नही गया, इससे स्पष्ट है कि लक्ष्मणसिंह ही महाराणा था । पिता के आदेशानुसार अजयसिंह ने भतीजे "हमीर" को खोज कर उसे राज्याधिकार सौंप दिया, तथा स्वयं के दो पुत्रो को एक-एक गॉव जागीर दिया, किन्तु राज्य नही पाने के दुख में छोटे पुत्र की मृत्यु हो गई । वडा पुत्र सज्जनसिंह अपनी जागीर बेचकर दक्षिण मे जाकर बसा, इसी के वश मे महाराष्ट्र केसरी छत्रपति शिवाजी हुए है । इन्होने अपने पूर्वज महाराणा प्रताप की स्वाधीनता एवं छापामार नीति का अनुसरण कर आजीवन यवन शासन से सघर्ष किये हैं ।

महाराणा हमीर का विवाह चित्तौड मे मालदेव सोनगरा की बालविधवा पुत्री से वैधव्य को छिपाकर हुआ था, वैधव्य ज्ञात होने पर इस अपमान को सहकर, पत्नी को अभयदान देकर पत्नी के सहयोग से मालदेव की अनुपस्थिती मे अल्प सघर्ष कर खिलजी के अधिकार से चित्तौड छीन लिया तथा मालदेव के पुत्र मे जाति सम्मान जागृत कर अपनी शासन सेवा मे रख लिया । हमीर चौहान की तरह महाराणा हमीर भी शत्रुओ से कड़ा सघर्ष कर विजयी हुआ है । महमूद खिलजी ने जब चित्तौड़ पर आक्रमण किया तव हमीर ने उसे परास्त कर वन्दी वना लिया था । तीन माह कैद में रहकर अजमेर, नागौर, रणथम्वोर, शिवपुर ५० लाख रुपया एव १०० हाथी हमीर को देकर महमूद कैद से छूटा था ।

हमीर का पौत्र लक्ष्मणसिह (द्वितीय) लाखा भी रणवीर था, यह गया तीर्थ को यवनो से वचाने युद्ध मे उत्सर्ग हुआ ।

"राहुप के बाद से इस लाखा तक गया-तीर्थ के रक्षण में सात राणा रण मे निछांवर हुए ।"

लाखा का पौत्र कुम्भा ने दिल्ली, गुजरात, मालव के सुल्तानो को परास्त किया है। मालवी महमूद तुगलक को छह महिना कैद रखकर छोड़ दिया था। गुजरात के मुहम्मदशाह एवं मालवी महमूद को पराजित करने की स्मृति में कुम्भा द्वारा कल्पित १४४८ मे निर्मित नौ खण्डा जयस्तम्भ विश्व की वेजोड़ अनुपम कलाकृति है, दर्शनीय है। इसकी प्रशसा फर्ग्यूसन ने भी मुक्त कण्ठ से की है। कुम्भा ने ८४ किले वनवाया था, इनमे कुम्भलगढ विशेष सराहनीय है, यह दुहेरा किला है। इसके पहले ई० १४३९ में वीहड़ सघन वन मे चौदह सौ चौवालिस स्तम्भो पर सात सौ वावीस शिल्पांकन से सज्जित पोरवाल जैन धरणाशाह द्वारा निर्मित रणकपुर के चौमुखा मन्दिर के लिये कुम्भा का पूर्ण सहयोग रहा है। चन्द्रमौलि मन्दिर वर्तमान ताजमहल का सौन्दर्य धवल संगमरमर है, यह राजधानी के निकट मुख्य मार्ग पर होने के कारण ही प्रसिद्ध है, अन्यथा स्वर्गिक कला सौन्दर्य माउन्ट आवू पर लूण वसही एव विमल शाह द्वारा निर्मित मन्दिर में है, उस युग में उतनी दुर्गम ऊँचाई पर संगमरमर' पहुँचाने के साधन और मार्ग सरल नही थे। उक्त मन्दिर ई० १०३१ मे अठारह करोड़ त्रेपनलाख रुपयों की लागत मे वना था।

महाराणा कुम्भा ज्ञानवीर, दानवीर, रणवीर (त्रिविधवीर) था, विद्वानो का आश्रयदाता एव स्वयं भी ग्रथकर्ता, शिल्पज्ञ, सगीतज्ञ, कवि, नाट्यकार, वेदज्ञाता, संस्कृत, मेवाड़ी, हिन्दी, कर्नाटकी, महाराष्ट्रीय भाषा का ज्ञाता था, इसके प्रमाण सग्रहालयो मे विद्यमान हैं।

कुम्भलगढ निर्माता कुम्भा तालाव किनारे वैठा था तव इसके ज्येष्ठ पुत्र उदय ने शीघ्र राज्य पाने के लोभ में इसकी हत्या कर दिया था, किन्तु सामन्त सरदारो ने इस पितृहन्ता को हटाकर कुम्भा

के दूसरे पुत्र रायमल को राज्यभार सौंपा । रायमल नीतिवान परा-क्रमी शासक था । इसकी सत्रह सन्तानों मे से जयमल, पृथ्वीराज, सग्राम ये तीन ही उल्लेखनीय हुए।

तोड़ा टंक (टूंक टोडा) के शासनहीन राव सुरतान की प्रसिद्ध पुत्री तारा से जगमाल ने अभद्रता की थी, जगमाल वही मारा गया। यह समाचार सुनकर रायमल ने राव सुरताण की सराहना एव अपने पुत्र की भर्त्सना किया था । पृथ्वीराज वलिष्ठ योद्धा था, घुड़ दौड़ करता हुआ घोडे को अपने पैरो में जकडे हुए ही पेड़ की डाल पर लटक जाता था, इसकी वहन आनन्दी सिरोही के देवड़ा जगमाल को विवाही थी, आनन्दी को जगमाल बहुत कष्ट देता था । पृथ्वीराज सिरोही जाकर जगमाल को ताड़ित कर लौटा, तव जगमाल ने पृथ्वीराज को राह के लिये जहरी लड्डू दिया था, इन्हें खाने से पृथ्वीराज की मृत्यु मार्ग मे ही हो गई थी । इसके पहले पृथ्वीराज ने सुरताण की पुत्री तारा की शर्त के अनुसार तारा एव उसके सैनिक तथा खुद के निजी सहयोगी साथ ले लल्ला पठान से टोड़ा छीनकर सुरताण को दे दिया और तारा से विवाह किया था।

राणा सांगा—

ई० १५०६ में संग्राम सिंह (सांगा) राज्यासीन हुआ । इसने अठारह मर्तबा यवनों को परास्त किया है। ई० १५१५ में गुजरात के मुजफ्फरशाह के अधीन ईडर के निजाम उल मुल्क पर आक्रमण कर विजय पाया है। वहां मस्जिद तोड़कर मन्दिर वनाया। वीरं मेड़तिया एव बागड़ का उदसिंह सागा के साथी थे काल्पी चन्देरी रायसेन सागा के अधीन थे। चन्देला मेदिनीराय गागरोन मे सांगा का प्रति-निधी था।

अहमदनगर पर सागा ने चढ़ाई किया, तव किले का द्वार तोड़ने डूंगरसिंह का पुत्र कान्हा किले पर अड़ा, तब इसकी छाती पर हूल

(टक्कर) देकर हाथी ने द्वार तोड़ा था। अहमदनगर, वड़नगर, वीसलनगर लूटता हुआ सांगा लौटा था। ई० १५१६ में माण्डू के महमूद खिलजी द्वितीय को परास्त कर वन्दी वना लाया। छह माह कैद मे रखा, फिर महमूद का जडाऊ ताज एवं कमरवन्द लेकर महमूद को छोड दिया था। उसे उसका आधा राज्य भी लौटा दिया था। दिल्ली के मुल्तान इब्राहिम लोदी को दो वार पराजित किया है।

अपनी विजयो से प्रसन्न होकर सांगा ने केसरिया शाखा के चारण हरदास को राज्यचिन्ह सहित चित्तौड का राज्य दे दिया था, किन्तु चारण ने राज्य नही लिया। अन्तत· हरदास को सौ बीघा भूमि साग्रह दी गई। इस दानवीरता पर हरदास की काव्य पक्तियों मे मे दो–"माण्डवगढ, गूज्जर ग्रह मूके रेणवा दीध चत्रगढ राज" एव "सिहाहन छत्र चँवर सईतो दूजै किणी न दीधो दान।" (इसी तरह छत्रपति शिवाजी ने गुरु रामदास को अपना राज्यार्पण किये थे।)

पैतृक स्थान फरगना से दो वार खदेड़ा गया वावर भारत की ओर वढा, मार्ग मे लूट, खसोट करता हुआ कोहट, टगू, वन्नू, वगश दश्त, इसखेल, इस्तम्बूल, वजोर, खराज, पजकेरा आदि मे भारतीय द्वार रक्षक कवीलादारो की, पठानो की वस्तिया लूटी, जलाई एव जनता को कत्ल कर, उनके सिर कटवाकर, ऊँची ढेरिया लगवाकर खुशी का जश्न मनाता था। ई० १५२६ मे मलोट के किले मे वावर ने विशाल ग्रन्थ भण्डार भी जलाया था। लाहोर, देवल, सईदपुर मे भी विनाश मचाया। कटे सिरो की मीनार देखना, वस्तियाँ लुटवाना, जलवाना निर्दोष जनता को भी कत्ल करवाना या वन्दी वनाकर गुलामी करवाना तो वावर के शौक थे।

दिल्ली के मुल्तान इब्राहिम लोदी के विद्रोही चाचा आलमखाँ और दौलतखाँ के आग्रह पर वावर ने दिल्ली पर चढाई किया, तब इब्राहिम के अन्य साथी भी गद्दार हो वावर को विजयी वनाए। इब्राहिम का पुत्र महमूद लोदी एव हसन खाँ मेवाती सागा की शरण

गए। विजयी बाबर दिल्ली से लौटने के बजाय दिल्ली में आसन जमा दिया। दो के झगडे में इस तीसरे मुगल बाबर का लाभ हो गया। राजलोभी चाचा ची-चूं भी नही कर सके। बाबर ने दिल्ली, आगरा, बयाना, मेवात क्षेत्र को हिंसापूर्वक खूब लूटा, जलाया एवं राजपूतो के दमन को उद्यत हुआ। कन्नौज के निकट चालीस हजार अफगन पठान बाबर से टकराने एकत्र थे (इनके पूर्वज यदुवंशी हैं) किन्तु इनसे अधिक शक्ति वाले राणा सागा का दमन पहले करना बाबर ने तय किया। बाबरी उत्पात सुनकर महाराणा सागा मेवाड़ से प्रस्थान कर मार्ग में खण्डार, बयाना जीतकर सीकरी के पास खानवा, पीलीखाल के मैदान पर पहुँच गया।

सांगा के साथ महमूद लोदी, हसन खां मेवाती तथा कुछ सौ पठान एव सात राजा, नौ राव, एक सौ चार रावत थे, ऐसा सहयोगी सगठन था।

बाबर ने अपनी सात सौ तोपों को मोर्चे पर घेराबन्दी मे रख उन्हे परस्पर चमडे के पट्टों से बन्धवा दिया ताकि शत्रु तोपों तक आसानी से न पहुँच सके। तथा तोपों के मुँह न पल्टा सके या तोपे छीनकर न ले जा सके। किन्तु बाबर एवं बाबरी सेना सांगा के शौर्य से भयग्रस्त अवश्य थे तथा सैनिक इस युद्ध को त्याग कर वापस लौटने को व्याकुल थे, परन्तु बाबर भारतीय वैभव एवं फूट पर मुग्ध था, अब तलक पाई हुई विजय खोना नही चाहता था, उसे निवास के लिये भी जगह चाहिये थी, बाबर ने अपनी सेना के समक्ष प्रतिज्ञा किया कि शराब कभी नही पीऊँगा, यह जग काफिरो से जेहाद (धर्म प्रचार) के लिये है। अब से पंज नमाजी बना, खुदा से फतह की दुआ मागते रहा। बहुत समझाने बाद जेहादी-युद्ध के बहाने बाबरी सेना सांगा से युद्ध करने तैयार हो सकी थी।

बाबर को आशा थी कि इब्राहिम का पतन, अब तलक की खूंरेजी और बरबादी के हालात सुनकर सागा मेरी शरण आ जायगा।

लेकिन संग्राम भूमि पर संग्राम करने सांग लिये संग्रामसिंह संगियों के साथ सन्नद्ध मिला।

इस्लाम प्रचार के धर्मयुद्ध के झूठे बहाने पर अपनी सेना को उत्साही करने के बाद भी युद्ध मे सागा की विजय एवं खुद की निश्चित पराजय होने के आसार समझ कर वावर बुजदिली की चादर ओढ सागा के विश्वस्त हरावलिया सेनापति रायसेन के तवर शिलादित्य (सलैदी) को समझौते के बहाने से बुलाकर उसे उच्चतम लोभ देकर सागा के प्रति (देश के प्रति) खतरनाक विश्वासघाती बना दिया था।

पहियों पर जमाई हुई, चर्मपट्ट से परस्पर बन्धी हुई, आग उगलती सात सौ तोपो के घेरे मे घुसकर आक्रमण करना, या तोप का मुंह पलट देना या तोप ले भागना तरवारधारी राजपूतो के लिए असम्भव हो गया था।

युद्ध आरम्भ हुआ तब वावरी सेना को लाँघकर राजपूती सेना पर तोप से गोले बरसने लगे, सांगा का विश्वस्त हरावलिया सलैदी अपनी पैंतीस हजार सेना साथ ले देशद्रोही बनकर बावर के पक्ष मे जा पहुँचा। बाबर के पैंतीस हजार सैनिक बढ गए, सागा के पैंतीस हजार सैनिक घट गए। इस अविश्वसनीय मर्मान्तिक विश्वासघात पर राणा सागा अवाक् हो क्षणिक असावधान हुआ ही था कि सागा के मस्तक पर बाण लगने से साँगा मूर्छित होकर गिर पड़ा। मारवाड़ के राव मालदेव ने एव आमेर के कछवा हरिभक्त पृथ्वीराज ने मूर्छित सागा को उपचार हेतु त्वरित बसवा ग्राम भेज दिये। इधर सादडी के झाला अज्जा ने युद्ध का नेतृत्व सम्हाला। सात सौ तोपों से लगातार बरसती मौत और जमीन से उठते धुंए और धूल के अंधकार मे विचलित न हो राजपूती-सेना वावरी सेना पर टूट पडी लेकिन ये हाड-मांस के सिपाही तलवारबाज थे, धोखेबाज नहीं थे, बरसते हुए बारूदी गोलों ने और इस देश की फूट रायसेन के देशद्रोही

सलहदी ने बाबर की झोली में विजय रूपी भारतीय स्वाधीनता डाल दी ।

चन्देरी, कालपी, रायसेन राज्य साँगा के मातहत थे, सांगा की रुग्णावस्था मे बाबर के चन्देरी जीत लिया, तब सांगा स्वस्थ होते ही सेना सज्जित कर बाबर का दमन करने उद्यत हुआ, किन्तु विश्वास-घाती साथियों ने विष देकर सागा की हत्या कर दिये, अर्थात सांगा के सहयोगियो ने सांगा के साथ दो मर्तबा विश्वासघात किया। सांगा का आद्यान्त जीवन संग्राम करते हुए बीता है। शरीर पर अस्सी घाव हुए थे। एक नेत्र, एक हाथ, एक पैर युद्ध मे खोने के बाद भी सागा ने साहस नही खोया, सच्चे अर्थो मे सांगा संग्राम मे सिह के समान था।

बाबर ने सिरो की ढेरियाँ (मीनार) बनवाकर खुशी मनाया तथा भारत मे लूटी हुई अतुल सम्पदा में से सत्तर लाख का धन साधारणों मे बटवा दिया, कुछ अमीरों को १० लाख, कुछ को आठ लाख, कुछ को सात लाख, कुछ को छह लाख दिया, कामरान को सत्रह लाख, जमान मिर्जा को पन्द्रह लाख, अस्करी, हिन्दाल तथा अन्य कईयों को (बे हिसाब) सोना, चाँदी, कपडा, दास, दासी वगैरह दिया। फरगना (कोकन्द रूसी तुर्किस्तान) समरकन्द, खुरासान, काशगर, ईराक, मक्का, मदीना आदि में हर व्यक्ति को बहुत सी भेट भेजा। (पाठक मनन कर ले) बाबर अपने साथियो मे लूट का बंटवारा गिन कर नही करता था, तराजू से तौलकर करता था, याने इतनी विशाल सम्पदा भारत से लूट कर ले गया कि उसको गिनती कर बॅटबारा करना मुश्किल था।

बाबर का यह लिखना सर्वथा मिथ्या है कि इब्राहिम पर आक्रमण करने (बाबर को) सागा ने पत्र भेजा था। बाबर ने यह भी लिखा है कि दिल्ली, मालवा, गुजरात का कोई भी अकेला शासक सांगा को परास्त नही कर सकता था।

इससे प्रमाणित है कि सांगा इब्राहिम के लिये अकेला पर्याप्त था, सांगा ने इब्राहित को दो वार पराजित कर भगाया है । सागा की सेना मे एकरूपता नही थी, तोप नही थी, अच्छे घोड़े नही थे, यह दोष सशक्त नही है। सेना मे एकरूपता सम्पूर्ण मुगल शासन मे कभी नही रही, भारतीय अश्व के साथ अफगन-ईराकी अश्व भी राजपूतो के पास थे, वैदिक युग से भारतीय जनता अश्व से भली प्रकार परिचित है । वाबर चारो ओर से ७०० तोप और भारवाहक १६०० गाड़ियो का घेरा वनाए हुए था, वावरी सेना घेरे में और घेरे के वाहर भी थी। वावर ने अपनी सेना से कपट कर, उसे जेहाद के नाम से लड़ाया था ।

राजपूत अश्वारोही भी प्रयत्न करके भी, वावरी सैन्य घेरा नही तोड सके, क्योंकि सात सौ तोपों से गोले निरन्तर बरस रहे थे, हरावलिया सलेंदी पैंतीस हजार सैनिक साथ ले वावर की ओर हो गया और इस विश्वासघातक घटना के कारण असावधान सागा का घायल होना ही वावरी विजय का मुख्य कारण था।

तोपो के गोलो के प्रहार से सुदृढ दुर्ग की प्राचीरे ढह जाती है, किन्तु यहा गोलो के प्रहार मे राजपूत सेना डटी रही, आगे वढने का प्रयास करती रही, किन्तु रण से भागी नही। इसी कारण विजयी कहलाने वाला वावर राजस्थान मे वढने का साहस नही कर सका, यह महाराणा के संगठनात्मक शौर्य की विजय का प्रमाण है।

"यह कथन मिथ्या है कि भारत मे गुलाव का पौधा वावर ने लाया। वाबर के पहले भारत मे गुलाब था। ई० १४४३ मे तैमूर लग के पुत्र ने अब्दुल रज्जाक को विजयनगर देखने भेजा था, रज्जाक ने लिखा है ऐसा सुन्दर नगर ससार मे नही है, जवाहरात खुले विकते है नगर मे छोटी-छोटी नहरे है। चारो ओर गुलाव की गध आती है। इनसे स्पष्ट है कि गुलाव भारतीय उपज है वाबर ने भारत मे तमाखू लाया है, गुलाब नही लाया।"

"इसी प्रकार ऊँट मुगलों ने भारत में लाये, यह शेखी शेखचिल्ली वाली है। भारत में ऊँट वैदिक युग से है। (१) अथर्ववेद कुन्ताप ऋचा-"उष्ट्रा यस्य प्रवाहिणो (२) रघुवंश सर्ग ५ श्लोक ३२ "अथोष्ट्र" वामीशतवा हितार्थम्। ऐसे और भी प्रमाण है।"

सांगा का पुत्र रतनसिंह राज्यासीन हुआ। इसने किले का द्वार और तलवार शत्रु के लिये हमेशा खुले रखा था। सौतेली मां कर्मवती के भाई बून्दी के हाडाराव सूरजमल के हाथ से शिकार के समय परस्पर घात में मारा गया क्योंकि विक्रम और उदयसिंह का रक्षक समर्थक सगा मामा सूरजमल था।

हुमायूं द्वारा कर्मवती की राखी खाख-

रतनसिंह की मृत्यु के बाद विक्रम सत्तारूढ हुआ, किन्तु अकर्मण्य था, इसलिये सांगा की शरण मे रहा हुआ गुजरात का बहादुरशाह चित्तौड़ पर चढाई किया। इस समय रानी कर्मवती ने पद्मशाह के हाथ राखी हुमायूं के पास भेजी और बहादुरशाह के विरुद्ध सैन्य सहायता मांगी, किन्तु हुमायूं ने सैन्य सहायता नही दिया, क्योकि बहादुर ने हुमायूं को सूचित किया था कि मैं जेहाद (धर्मयुद्ध) पर हूं, तुमने काफिर (हिन्दु) की मदद नही करना। यही सलाह हुमायूं के सलाहकार सरदार खाँ ने भी दिया अतः हुमायूं ने पिता बाबर के शत्रु सांगा परिवार को सहायता न भेजकर राखी को राख बना दिया। राखी की साख वह क्या जाने ? गुजरात और मेवाड दोनों लड़कर शक्तिक्षीण हो जांय यह भी मुगल नीति रही है। जो गलत नही है।

हुमायूं नही आया, चित्तौड़ पर बहादुर ने आक्रमण किया। विक्रम और उदय को रक्षको के साथ अन्यत्र भेजा गया। युद्ध का नेतृत्व प्रतापगढ़ के सूरजमल के पुत्र "बाघा" ने किया, अपने वशज

के लिये जूझ गया, और भी अनेक वीर धराशाही हुए। राजमाता कर्मवती (कर्णवती) एवं तेरह हजार महिलाओ ने जौहर किया। वत्तीस हजार वीर वीरगति पाये। ई० १५३५ मार्च आठ को वहादुर-शाह ने चित्तौड पर अधिकार किया।

[गुजरात के मुजफ्फर शाह का वडा पुत्र मिकन्दर था, इसके डर से इसके छोटे भाई वहादुर एवं चाँद खाँ सांगा की शरण मे चित्तौड रहे थे, एक समय मेवाड़ी सरदार से विग्रह किये तव राजमाता ने ही वहादुर को वचाई थी, ऐसी रक्षणदायिनी धरा पर वहादुर ने आक्रमण किया था।]

चित्तौड़ से लौटते समय मन्दसौर के निकठ वहादुरशाह को हुमायूं ने परास्त किया, इसी अवसर में विक्रम ने सरदारो के सहयोग से चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया। किन्तु विक्रम अयोग्य ही रहा, इसलिये सांगा के वडे भाई पृथ्वीराज के पासवानिया (दासी) पुत्र वनवीर को सामन्तो ने राज्याधिकार सौपा।

अपना राजपद निष्कण्टक रखने के लिए वनवीर ने विक्रम की हत्या करके वालक उदयसिंह की हत्या करनी चाही। यह समाचार उदय की रक्षक धायमाँ खीची क्षत्राणी पन्ना को मिलते ही उसने अपने पुत्र को अफीम का नशा देकर उदय के विछावन पर सुलादी। उदय को भी अफीम के नशे में वस्त्र वदल कचरे की टोकरी मे छुपा वारी के हाथ किले के वाहर भेज दी थी। उदय की शय्या पर सोये पन्ना के पुत्र को उदय समझ कर उसकी हत्या विक्रम ने कर दिया।

कई जगह भटकने के वाद पन्ना ने उदय को कमलमेर के किलेदार आशाशाह के रक्षण मे गुप्त रूप से रखी। अज्ञातवास मे उदय वडा हुआ तव सामन्त सरदारो ने राजसी व्यवहारों मे उदय का परीक्षण कर सच्चाई पर विश्वास किये तव दल, वल सहित चित्तौड पहुँच, १५४० मे उदयसिंह को राज्यारुढ किये।

ऐसा परिवर्तन होने का पूर्वाभास होते ही वनवीर माल असवाव

खजाना जितना हाथ लगा, लेकर चित्तौड़ से चला गया, यही परिवार नागपुर भोंसले राजघराना है।

महाराणा उदयसिंह विस्तारवादी नही था, कायर भी नही था, ई० १५५७ में मारवाड के राजा राठौड मालदेव के विरुद्ध शेरशाह सूर के अजमेरी सूबेदार हाजी खाँ पठान की मदद कर सफलता पाने के उपलक्ष में हाजीखॉ की प्रिय नर्तकी रंगराय को हाजीखॉ से माँगा। फलतः हाजीखाँ एवं मालदेव की संयुक्त सेना से हरमाड़ा युद्ध मे उदसिंह पराजित हो गया। कूछ ही वर्ष पहले हुए चित्तौडी जौहर एव बनवीर द्वारा सम्पदा हरण के कारण मेवाड क्षीणवल ही था। ई० १५४४ जनवरी में शेरशाह सूर से हुए युद्ध मे मारवाड़ का मालदेव भी क्षीणवल हो गया था।

ई० १५५८ मार्च मे अकबरी सेनापति हुसेन कुली खाँ एव कासिम खा ने हाजी खॉ से थोड़ी सी झड़प के वाद अजमेर पर अधिकार कर लिया था। इस आक्रमण के समय आमेर का कछवा भारमल, इसका अनुज जगमल एव मेड़तिया जयमल राठौड़ भी मुगल सेना के साथ थे। अजमेर के बाद जैतारण पर भी इसी मुगल दल ने अधिक़ार कर लिया। "पाठक ध्यान दे ई० १५५८ से राजपूत अकबरी सेवा मे दौड़ने लगे थे।

राणा उदयसिंह की रखैल वीरमती से पराजित अकबर—

अकबर ने चचा शरफुद्दीन को अजमेरी सूबेदार बनाया। ई० १५६२ की जनवरी १४ को ख्वाजा शरीफ की धार्मिक यात्रा के बहाने अजमेर तक निर्वाध पहुँचकर अजमेरी सूबे की सेना भी साथ लेकर अकबर अचानक मेवाड मे बढ़ गया। हरमाडा युद्ध मे हुई राणा उदयसिंह की पराजय के कारण मेवाड़ को दुर्बल जानकर अकबर ने मेवाड़ पर अचानक चढाई किया। इस समय विलासी उदयसिंह को

मेवाड़ी सरदारों का सशक्त सहयोग नही मिलने मे मुगल दवाव वढ़ गया था तब उदयसिह की रक्षा हेतु उनकी रखैल उप पत्नी वीरा (वीरमती) ने शस्त्र सज्ज हो सैन्य संचालन कर अकवर को पराजित की है। इस महिला की निष्ठा एवं शौर्य से लज्जित हो डाहवश मेवाडी सरदारों ने वीरमती की हत्या करवा दिये। यह घटना रखैल नारी के शौर्य की होने से लज्जावश मेवाड़ी और मुगलिया इतिहास मे उपेक्षित है।

कछवाह, चित्तौड़-पतन–

जनवरी २० से फरवरी ६ के मध्य का यह समय था, इतने समय मे उक्त घटना होना असम्भव नही है। सीकरी से अहमदावाद ग्यारह दिन में अकवर पहुँचा था। १६८१ में मुअज्जम उदरपुर से अजमेर तीन दिन मे पहुँचा था। इसलिये मेवाड आक्रमण मे पन्द्रह दिन का समय अकवर के लिये पर्याप्त है। नारी के द्वारा हुई उक्त हास्यास्पद करारी हार की मार से दुखी अकवर त्वरित लौट पडा, लौटते समय पूर्व योजनानुसार साम्भर मे फरवरी ६ को आमेरी कछवा भारमल की पुत्री हरखा के साथ एक ही दिन मे विवाह कर आगे वढ गया था। भारमल के पुत्र वान्धवादि का परिचय भी दौड़ भाग कर अकवर से अगले पडाव पर करवाया जा सका था। यह भाग-भाग एव वर-वधू दोनो पक्ष मे शाही विवाहोत्सव, सामूहिक भोज, वक्शीस आदि कुछ नही होना, वीरमती मे हुई अकवर की करारी पराजय का प्रमाण है।

वीरमती से हारा हुआ अकवर चोट खाए हुए जहरीले साँप की तरह प्रतिशोध मे फुंकारता, ऐंठता हुआ मालवा अभियान का अभिनय करता हुआ मालवीय सीमा के "वाडी" नामक स्थान तक निर्विरोध पहुँचकर पुनः अकस्मात मेवाड में घुस चित्तौड पर आक्रमण करने दौड़ा।

आसफखाँ एवं वजीर खाँ को माण्डलगढ़ विजय करने भेजकर अकबर ई० १५६७ अक्टूबर २३ को चित्तौड़ पहुँचा। माण्डल-गढ में आक्रमण की सम्भावना नही होने से युद्ध की तैयारी थी ही नही, किलेदार वल्लू सोलकी अधिक प्रतिरोध नही कर सका, वल्लू-सिंग किला छोड चित्तौड़ चला गया।

प्रगट मे अकबर ने मालवा जाने का प्रचार किया था, इसलिये चित्तौड में भी युद्ध की विशेष तैयारी नही थी। अकबर "वाड़ी" से अचानक चित्तोड़ पहुँचा। इतने कम समय मे ही जितनी हो सकी उतनी तैयारी की गई थी। मेवाड़ी सरदारों ने महाराणा उदयसिंह को परिवार सहित चित्तौड़ से दूर गिरवा पहाडी क्षेत्र में सुरक्षा हेतु भेज दिये, वहाँ राजपीपला स्थान पर चार महिना निवास रहा।

अजमेर पर मुगली आक्रमण मे सहायक मेड़तिया जयमल राठौड़ नागौर का कभी शासक था, अकबरी विश्वासघात से घायल हो चित्तौड़ की शरण मे था। अकबर का शत्रु माण्डू का बाजबहादुर भी शासनहीन हो चित्तौड की शरण मे था। किले मे एक हजार मुसल-मान अफगन मेवाड़ के पक्ष मे थे। मेवाडी सामन्त सरदार और प्रजा भी मुगल सैन्य से युद्ध करने सन्नद्ध थे।

अकवर ने जयमल, पत्ता, सहीदास, कल्ला, ईसरसिंह आदि मुख्य सरदारो को अपने पक्ष मे करने हेतु कई प्रलोभन दिया। किन्तु एक भी मेवाडो डिगा नही। अकबरी दूत द्वारा की गई डोले की मांग को ठुकराकर जयमल ने उस दूत के कान काट दिये थे। युद्ध का सम्पूर्ण भार जयमल राठौड पर था।

अकबर के साथ भगवानदास, मानसिंह, टोडरमल तथा अनेक मुस्लिम सेनापति एव बड़ी सख्या में सेना, भारी मात्रा मे तोप, बन्दूक बारूद आदि समग्र सैन्य साधन साथ थे, पाँच हजार मजदूर पाशेब और मजनीक बनाने मे लगे थे। किले में देखने किले की ऊँचाई बराबर टीला बनाने मलमा लाने हेतु प्रति टोकनी एक मुहर मजदूरी

अकबर ने दिया था, वह टीला मोहर नगरी के नाम से आज भी विद्यमान है। तोपो से गोले बरसाये गए, तीन सुरंग मे दो सौ मन से ज्यादा बारुद फूंका गया। चित्तौड पाँच महीने तक चारो ओर से सख्त घिरा रहा। झड़प होती रही, अकबर सफल नही हो सका। किन्तु किले मे खाद्य सामग्री समाप्त हो आई थी, आक्रमण अकस्मात हुआ था, इसलिये अन्न संचय अधिक नही था, गुप्त मार्ग अवरुद्ध हो रहे थे, विवश राजपूतो ने जौहर करवाया एव केसरिया धारण कर किले का द्वार खोल समर भूमि पर जूझ उठे। पत्ता चंदावत की माँ, बहू तथा लड़का कुछ वीरांगनाओ को साथ लेकर रणभूमि पर अनेक शत्रुओं का सहार कर वीरगति पाई थी। महिलाओ का शौर्य, साहस निष्ठा देख अकबर हैरान था। ईसरसिंग ने कई हाथियों के दाँत तोड दिया, पत्ता ने कई हाथियो को नकटा बना दिया था, हाथी लुढकने लगे थे। मेवाड़ियो के तीव्र प्रहार से घबराकर अकबर ने भगवानदास से पूछा कि यह क्या हो रहा है। भगवानदास कछवा ने कहा जौहर और केसरिया याने 'मेवाडी मरण युद्ध कर रहे है, इसलिये फौरन कत्ले आम का हुक्म दीजिये (वर्ना जान बचाना मुश्किल हो जायगी) अकबर ने दिल खोलकर उदारता पूर्वक कत्लेआम करवा दिया, नन्हें-मुन्ने बालक, बालिका, वृद्ध, रोगी, अपंग, महिलाए आदि सभी को कत्ल किया गया। सरेराह कत्ल हुए पडी नारी की लाश जिसका तुरन्त जन्मा शिशु भी मौत के लिए छटपटा रहा था। इतना जबर-दस्त आक्रमण एव नरसंहार अकबर ने अन्यत्र कही नही किया। दूर-दूर तक चारो ओर लाशो से अटा पटा दृश्य देख आपको कैसा महसूस हो रहा है आप जाने लेकिन अकबरी इस जालिमाना महानता पर अकबर परस्त आज भी खुश जरूर होंगे, किन्तु गैरतदार इन्सानियत दिल मे उठते जौहरी शोलो को ठण्डक पहुँचाने अश्क बार होगी।

ई० १५६८ फरवरी २५ का वह दिन चित्तौडी अन्तिम तीसरा जौहर और कत्ले आम का खूनी दिन था। गहलौत ने तीन लाख

व्यक्ति का कत्ल लिखा है, यह संख्या निः सन्देह सत्य ही है, क्योंकि कछवाहो के देखते हुए अकबर ने हिन्दू लाशों का धार्मिक अपमान शान से करने हेतु उनके यज्ञोपवीत निकलवाकर तुलवाया था, इनका वजन साढे चौहत्तर मन हुआ था। इस साढे चौहत्तर अक की आन-शपथ जानकार राजस्थानी आज भी मानते है। सभी ल्हावे यज्ञोपवीत धारी नही थी।

हाथी पर सवार अकबर लाशो को रोंदता हुआ श्मशान जैसे जनहीन चित्तौड किले पर पहुँच कर खुश हूआ होगा। कटे सिरो की ढेरी बनवाकर दादा बावर की तरह खुश होना पैतृक देन थी। यह भारतीय सस्कृति मे पला सम्राट अशोक नही था, जिसने कलिग विनाश करके सन्यास ले लिया था, अकबर अरब संस्कृति निष्ठ था।

चित्तौड वीरान था, शर्मिन्दा शैतान था, अकबर पशेमन था, जो मिला बेजान था। मन्दिर तुडवाता हुआ अकबर लौट पड़ा। भगवान दास और टोडरमल इस जबरदस्त विनाश में अकबर के साथी थे।

माण्डलगढ और चित्तौड उदयसिह के हाथ से निकल गए। मेवाड़ के चारो ओर मुगल शासन बढ रहा था, किन्तु उदयसिह में प्रतिशोध की भावना नही थी। ई० १५५९ में उदयपुर नगर बसाकर अपनी स्मृति स्थायी कर गया किन्तु पूर्वजों की योद्धा श्रेणी मे अयोग्य था। ई० १५७२ फरवरी २८ को उदयसिह का देहान्त हो गया। मृत्युसमय उदयसिह ने छोटे पुत्र जगमल को राज्याधिकार दिया था, जब कि सही उत्तराधिकारी कुम्भलगढ मे वि० १५९७ ज्येष्ठ शुक्ल ३ रविवार ता० १९/५/१५४० को जन्मा बडा पुत्र प्रताप था। पिता की इच्छावश प्रताप गोगून्दा मे रहता था, राज्य द्वारा दैनिक भोजन खर्च मिलता था। जगमल को राज्य दिये जाने की पितृआज्ञा को स्वीकार कर गृह कलह को टालने प्रताप सपरिवार मेवाड़ त्यागने के

प्रयास में था। इसी समय किसनदास चन्दावत, अक्षयराज सोनगरा ईडर का नारायणदास तीनो ने प्रताप को रोककर मेवाड का राज्य-भार प्रताप को साग्रह गोगून्दा मे १५७२ फरवरी २८ को सौपे, एवं जगमल को गद्दी से अलग कर दिये थे। प्रताप के उपरोक्त व्यवहार से ज्ञात होता है कि प्रताप राजलोभी नही था, वडो का आदर करता था अन्यथा अपने वरीय अधिकार हेतु आक्रामक वन सकता था।

प्रताप–

जगमल को किसी ने सम्मान नही दिया था, किन्तु प्रिय प्रताप को पाकर सभी ने हर्षोल्लास मनाया था। किन्तु राज्यारोहण पर प्रताप की इच्छानुसार राज्य द्वारा कोई उत्सव नही मनाया गया वल्कि प्रताप ने प्रतिज्ञा किया कि मुगल अधिकार मे गई मेवाड भूमि जव तक स्वतंत्र न कर लूं तव तक भूमि पर शयन, पत्तल पर भोजन, वृक्ष की छाव, शिलासन एवं सादा जीवन रहूँगा। शपथ है एकलिंग भगवान की। यह राणा प्रताप की प्रतिज्ञा वेद अनुसार ही थी। अथर्व १२/१/१२ माता भूमिः पुत्रो अह पृथिव्या. । ऋग १०/१८/१० उपसर्प मातरं भूमिम् ।५/६६/६ यते महि स्वराज्ये।

प्रताप के राज्यारोहण वाद अहेरिया दस्तूर मे शिकार के समय प्रताप और भाई शक्तिसिह मे परस्पर तलवार चल गई। इन दोनो भाईयो को रोकने दोनो के मध्य कुलपुरोहित ने आत्मघात कर लिया तव प्रताप ने अनुज शक्तिसिह को मेवाड से निष्कासित कर दिया।

प्रताप के भाई जगमल, शक्तिसिह, सगर तीनो अकवर शरण पहुँचे, अकवर ने सगर को चित्तौड दिया। जगमल को आधी सिरोही का राज दिया। सिरोही पाने हेतु हुए युद्ध मे सिरोही के शासक द्वारा जगमल मारा गया।

परिस्थितियों पर पाठक ध्यान दें—ई० १५३५ मे जौहर, वनवीर द्वारा १५४० में सम्पदा हरण, १५६८ मे जौहर और कत्लेआम के चार वर्ष बाद ई० १५७२ फरवरी २८ को मेवाड़ का ध्वस्त राज्य प्रताप को मिला, जिसके चारों ओर मुगल ज्वाला धधक रही थी।

राज्य का वास्तविक उत्तराधिकारी होने के नाते तथा सामन्त सरदार एवं प्रजा को बाल्यकाल से अपने पक्ष मे जानकर कर्तव्यनिष्ठ प्रताप ने कुछ वर्ष पहले से ही शायद १५६२ से तत्कालीन राजनैतिक वातावरण का बिशेष अध्ययन आरम्भ कर दिया था। वह शिवोपासक, हिन्दूधर्म और देश के प्रति एकनिष्ठ, क्रियाशील, जागरूक, दूरदर्शी, क्षात्रकर्मी राजपुत्र था। विदेशी आक्रामकों के विचार, अत्याचार, अधिकार के एवं अकबरी शरण में राजपूतों के दयनीय पतन के समाचार, प्रताप भी सुनता समझता रहा है।

जिस प्रकार आज की जनता विश्व की हलचल जानने में रुचि रखती है, उसी प्रकार प्रताप भी अपने भारतवर्ष की संस्कृति और पूर्वज महापुरुषों की शौर्यगाथा एव विश्व मे भारतीय प्रभाव का वर्णन मनःपूर्वक सुनता था। उस युग मे ज्ञानार्जन एवं मनोरजन का साधन वे सत्यकथाएं ही रहती थी उन्नतशील कुशल राज्य शासक को देश-विदेश की नानाविधि जानकारिया रखनी पड़ती थी। उसकी पूर्ति के लिये विद्वानों को आदर, आश्रय, उपहार दिया जाता था। विद्वानों द्वारा प्रचारित जनश्रुतियों के आधार से प्रताप को ज्ञात हुआ होगा कि विश्व मे बहुत दूर तक हमारी भारतीय वैदिक–आर्य–हिन्दु सस्कृति थी। कई जगह शिव उपासना थी। प्रताप भी शिवोपासक था, इसके पूर्वज भी शिवोपासक थे।

———

विश्व में वैदिक सीमा, सभ्यता, संस्कृति, धर्म के अवशेष

भारत का प्राचीन नाम अजनाभ (खण्ड) वर्ष है। आर्य वाहर से भारत में आए थे, यह मिथ्या शोध है। विदेशी आक्रामको का कुचक्र मात्र है, ताकि वे स्वयं की भांति आर्यों को भी अभारतीय कह सकें। आर्यों ने द्रविडों को मारकर दक्षिण में भगा दिए, यह विचार भी द्वेषमूलक है, ताकि भारतीय वन्धु परस्पर द्वेषी रहे।

महाभारत कर्ण पर्व २–५,० मालवा भद्रकाश्चैव "द्राविडा" श्चाग्र कर्मणि तथा प्रलय समय ताम्रपर्णी नदी पर मनु को मत्स्य दर्शन और पश्चात मनु को वचाना यह ताम्रपर्णी से सम्वन्धित है, वह ताम्रपर्णी द्रविड में ही है। द्रविड़ ही शिवोपासक थे, सांवले थे, इत्यादि तर्क कुतर्क है, समुद्रीय जलवायु से काला रंग हो सकता है। कश्मीरी गौर वर्ण होते हैं इन्हे यूरोपियन कहना चाहिये क्या ? शिवोपासक राम, परशुराम भी थे। द्रविड़ी उत्तम वेदपाठी होते हैं। कृष्ण सावले थे, हब्शी, अफ्रीकी काले है, उन्हे भी द्रविड़ कहिये। अतः द्रविड़ हो या आर्य हो, ये सभी इसी भूखण्ड के निवासी वन्धु है, वन्धु ही रहने दीजिये।

वर्तमान भारतीय सीमा से वहुत वडी सीमावाला यह देश था। मनु अ २ श्लो, २२ आ समुद्रात्तु वै पूर्वादा समुद्रात्तु पश्चिमात् तयो रेवान्तरं गिर्यो रार्या वतर्म विदुवुर्धाः पूर्व एवं पश्चिम क्षितिज के समुद्र के मध्य का भाग आर्यावर्त है। हजारो मील दूरातिदूर पर्यन्त हिन्दू धर्म वैदिक–आर्य संस्कृति प्रसारित थी। तक्षशिला, नालन्दा, उड्डयन्नपुर आदि के हजारो वर्ष पहले अयोध्या, मथुरा, माया, काशी,

कांची, अवन्तिका, द्वारका यह सात ब्रह्मपुरी विद्यापीठ थी। काशी आज भी विद्या केन्द्र है। श्रीकृष्ण ने अवन्ती के सान्दीप विद्यालय में शिक्षा पाई थी। अश्वमेध यज्ञ का अश्व खोजने सगर के साठ हजार पुत्रों ने जम्बू द्वीप को चारो ओर से खोदे थे। वे भाग आज समुद्र है। दक्षिण भारत, लका, जावा, आस्ट्रेलिया, अफ्रिका, अमेरिका, यूरोप, एशिया समस्त एक ही भू-भाग था मध्य मे समुद्र नही था, यह तथ्य भूगर्भ वेत्ता भी स्वीकारे है।

मुस्लिम मतानुसार पैगम्बर—ए—हजरत आदम (मनु) को अल्लाह ने हिन्दुस्तान जन्नत निशान मे उतारा यहां से वे सरन (स्वर्ण-सीलोन) द्वीप हो भारत से बाहर गए, सीलोन पर्वत पर चरण चिह्न है जिसे शैव, शिव का बौद्ध शाक्य मुनी का, अरबी मुसलमा हजरत आदम का मानते हैं। हिजाज और यमन के मध्य अरब की आदि जाति का शासन था। अब रेगिस्तान है। आक्सस नदी के आगे साइरोपोलिस और इस्कन्दरिया के अत्तर में शोध करने से भारतीय चिह्न मिलना सम्भव है। चकेता (यदु) राज्य, कोजेन्ट, ताशकन्द, डांगजोडीज, डट्रार, इस्कन्दरिया, समरकन्द, साइरोपोलिस तक था। इसी मे नार्वे, स्वीडन भी है। शक्वाकार बौद्ध लीपी पाली को तातारी लोग अपनी पवित्र लिपी मानते है। स्केडिनेवियन एव सीथियन लोग मकर सक्राति पर उत्सव मनाते है। फ्रास मे सक्राति पर्व की तरह नोहल नामक त्योहार मनाते है। मदीना और तबूक के मध्य की शासक समूद जाति के ध्वस्त भवन अनेक पड़े है। ईराक और फिलस्तीन के मध्य एशिया सहारा सम्पन्न नगरवाले क्षेत्र थे। मिश्र, फिनिशिया, ईराक, कोरिया, बोर्निया, फिलीपाइन्स, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, मेक्सिको, स्केडीनेविया, यूनान, वियतनाम, जर्मन, सीथियन, बेबीलोन, सुमेरियन, जापान, चीन, इण्डोचायना, सीरिया, ब्रह्मश्याम, इण्डोनेशिया, मध्यएशिया, अफगान, काबुल, कम्बोडिया, थाईलैंड, मलाया, जावा, सुमात्रा, जोहोर, सिंगापुर, बाली, सीलोन, तिब्बत,

उत्तर यूरोप, आफ्रिका, अमेरिका, आयरलैंड, काकेशस-पर्वत माला, चाल्डिया, मेसोपोटामिया पर्यन्त का विशाल भू-क्षेत्र आर्य (भारतीय) संस्कृति मय था। अवशेष आज भी विद्यमान हैं मिलते है। भारतीय संस्कृति एवं शब्दो की (विकृत) विद्यमानता यह सुस्पट प्रमाण है कि वहां तक आर्यत्व-हिन्दुत्व था। यह विद्यमानता प्रवासियो के कारण नही है यह तो सदियो पूर्व की वंश परम्परा की देन है।

मत्स्य पुराण—इक्षुश्च पंचमी ज्ञेया तथैवच पुनः कसु, कसू अपभ्रंश आरक्सस एव ऑक्सस नदी है। अफ्रीका मे नीलनद एवं स्कैंडिनेविया तक शिखियन प्रभाव था। शिखिया-शाकद्वीप-स्कन्दनाभ-स्केंडिनेविया मे शैव और शैवी लोग विशेप आदरणीय थे, मूर्ती पूजक थे। पृथ्वी और ईशी की पूजा करते थे। शैवी लोग त्रिमूर्ती "खर" (हर) संहार कर्त्ता, "बोधन" पालन कर्ता, "फ्रेया" आद्या शक्ति के उपासक थे, मन्दिर थे। स्कैंडिनेवियन काव्य ग्रथानुसार-खर (हर) देवता युद्ध समय रणक्षेत्र पर दौड़ दौड़ कर नर कपाल में रक्तपान करता है। यह भाव कापालिक महंकाल रौद्र का ही है। फ्रेया के समक्ष वन वराह की वली चढाते थे। शैवी, शाकसेन, जित, काती, किन्ही एक वश की शाखा है। इन के कुल देवता छह मुख वाले हैं (कार्तिकेय पडानन है) शीत संक्राती पर शस्त्र पूजा करते है। ग्रीक देवता (हरिकुलेश) हरक्यूलियस-हरिकुलेश वलराम होना सम्भव है। वेपभूपा वदली है, वलराम भी दूरस्थ जा वसे थे। शैवियो में वहु पत्नी एव वड़ी पत्नी सती होना प्रथा थी। दाह कर्म होता था। जिन लोग मृतक के साथ अश्व का भी दाह करते थे। सीरिया, लेवनान, फिलस्तीन "वअल" (सूर्य-वृहस्पति) पूजक थे। एशिया का वअल ब्रिटेन और गॉल (फ्रास) का वेलिनस वेबिलोन का मिथोरा सूर्य के नाम हैं। ये लोग सूर्योपासक थे। ब्रिटेन और गाल के लोग नरवली भी देते थे। वेलिन वाले वैल एव जाक्सरतीस वाले अश्व उत्सर्ग करते थे। आरक्सस, जक्षिरतीस, शाकद्वीपीय सूर्योपासक भी थे। ये आर्मे-

नियन कहलातें थे, (आर्य मानवन)। यूनान के एल्फी नगर में डेल्फस सूर्य मन्दिर है। काव्य की देवी केलोपिया (सरस्वती तुल्य) थी, मिनर्वा कला की देवी थी। मार्सडेन और विलीयम जॉन्स के शोध ग्रथ एशियाटिक रिसर्चेज खड ६ पृष्ठ २२६ में लिखा है, मेडागास्कर से पूर्व द्वीप तक मालियन भाषा मे सस्कृत शब्द बहुत है।

मेक्स मूलर का मत है कि–भारतीय, यूनानी, ईरानी, रोमन, जर्मन, सैल्ट, इनके पूर्वज एक साथ रहने वाले रहे होगे, इसलिये इनकी पारिवारिक भाषा के शब्दो में काफी साम्यता है।

आज से १५०० वर्ष पहले चम्पा-वर्तमान वीयतनामा की स्थापना हिन्दुओं ने की है। चीन, जापान, सीरिया, मिश्र, यूनान, एपीरस, मेक्सिको, थाई देश, जावा, सुमात्रा, बाली, सीलोन आदि कई देशों मे बौद्ध धर्म सहजता से पहुँचा है। शस्त्र वल से नही पहुँचा। जावा एवं मध्य अमेरिका मे बुद्ध के वैठने की पीठिका है। दक्षिण अमेरिका मे भोजन तैयार होने पर उसका अंश अग्नि में होमते है। इटली में भगवान राम के प्रति श्रद्धा एव रावण के प्रति अनादर भाव है। मेक्सिको मे गणेश, माया, विष्णु, हस एवं रुद्राक्ष धारी शिव तथा शख वादक के चित्र मिले हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, पार्वती, काली, भवानी, लक्ष्मी, माया, सरस्वती, गणेश, इन्द्र, इन्द्रधनुष, वर्षा, चन्द्र आदि विभिन्न क्षेत्रो में पूजित है। उत्तर दक्षिण अमेरिका एवं मेक्सिको मे बंगाल की तरह चरक पूजा करते है। मेक्सिको मे दक्षिण भारतीय मन्दिरो के विशाल गोपुरम जैसा सात मजिया भव्य गोपुरम खण्डितावस्था मे है। फिर भी दर्शनीय है। यहां बौद्ध स्तूप के अवशेष भी है। कानो में वडे कुण्डल पहने जोगी का (शिव) शिल्पाकन भी यहां है। भारत से कौण्डिण्य ब्राह्मण मलाया होते हुए "फुनान" पहुँच राज्य करने लगे थे। चंद्रवंशी कहलाए। इसी क्षेत्र मे द्रोणपुत्र अश्वत्थामा के वशज भी आ वसे थे शैव एव वैष्णव धर्मी थे। रोम मे टायवर नदी की घाटी पर शनी एव गणेश मन्दिर था गणेश को

"जेनी कुल" कहा जाता था । कुछ इटालियन अब भी गणेशोत्सव पर पूना तक पहुँचते है । इटली में ,निर्धारित समय पर चौराहो पर फौवारों मे त्रिशूल सर्प धारी शिवाकृति सजाते मे । ॐ के परिवर्तित रूप अक ३ के प्रति यहूदी (इजराइली) ग्रीक रोमन श्रद्धावनत है । यह त्रिगुणात्मक ब्रह्मा, विष्णु, महेश का प्रतीक है । तीन का तिगुना २७ नक्षत्र है एवं २ और ७ का योग ९ कायम है । ३ मे त्रिलोकी, त्रिनेत्र, त्रिदोष आदि समाहित है । ॐ एमेन, आमीन, एलोहिम का आशय समान हैं इस्लाम धर्म मे बिस्मिल्ला हि रहमानि रहीम का अक ७८६ है इन अको का मिलान मूल योग २१ का ३ है अर्थात ओ, ॐ के ३ को सर्वोच्च शीर्षस्थानी प्रधानता इस्लाम मे भी है यह अकाट्य तथ्य त्रिवार सत्य है ।

यादव, यदु, जदु, जदुस्म, ज्यू, यहूद, यहूदी एव ईसाई ग्रथ मे कंननकँनन का उल्लेख परोक्षत कृष्ण-कृष्ण है यूरोप सह पश्चिम एशिया मे विशाल स्तम्भ के मन्दिर होते थे । कृष्ण-विष्णु मुख पर तेजोवलय सह मूर्ति होती थी । ईरान बॅबलिन, ग्रीस, इजिप्त, पेरू आदि मे सर्प को भी महत्व था ब्रिटेन मे "सेराफ" अवशेष स्पष्टत: सर्प के ही है ।

चीन की गणेश मूर्ती मुकुट रहित द्विभुज है । जापान की मुकुट रहित चतुर्भुज है । कम्बोडिया, वर्मा, श्रीलका, एव नेपाल मे मुकुट-धारी चतुर्भुज गणेश मूर्ती हैं । चीन मे कुआन एवं शीतियेन । जापान मे कांगितेन-कांतिगेन, शोदेन, विनायक, खड्ग विनायक । कम्बोडिया मे कैनेस, पाइकेनीज । वर्मा मे महावियन,विघ्नदूर, गणेश । यूनान मे ओरेनश । मिश्र में एकटोन । मंगोलिया मे वातरलारू मरवागान । नेपाल मे हेरम्ब, विनायक । जावा, सुमात्रा, बोर्नियो, रूस, लका, मारिशस आदि मे भी गणेश स्थल देखे जा सकते हैं । जावा के वारा बिरडर स्थान पर काले पाषाण की कालान्तक नाम से गणेश मूर्ती है । डागपुर एवं पो नगर क्षेत्र मे गणेश एवं कार्तिकेय की अनेक मूर्ती

हैं। मीसोन में मयूरारूढ़ कार्तिकेय मूर्ती है। एवं जटाजूट रूद्राक्षधारी त्रिनेत्र शिव मूर्ती है। मध्य एशिया के खण्डहरों मे गणेश एव शिव मूर्ती मिली है। जावा मे गणेश, दुर्गा एव अगस्त मूर्ती मन्दिर में है। बोरोबुद्दूर मे भव्य बौद्ध चैत्य है। इस्कन्दरिया तक बौद्ध प्रचारक गये थे। विश्व मे दो सौ करोड बौद्ध धर्मी है। जावा क्षेत्र में लाराजोग्राग शिव मन्दिर पाषाणी प्राचीर से वेष्टित दो मजला है, इसमे दस फुट ऊँची मानवाकार शिव मूर्ती है, सामने नन्दी भी है। दाहिने भाग मे ब्रम्हा है इन के समक्ष हंस है। वाम भाग में विष्णु के समक्ष गरुड है। गणेश एवं दुर्गा की मूर्ती भी है। राम एवं कृष्ण लीला के भित्त चित्र भी है। परतरन ग्राम मे शिवालय है। ब्राजील (द० अमेरिका), मेक्सिको, कम्ब्रोडिया, सुमात्रा मे कई शिवलिग है। इण्डोचायना के शिव मन्दिर मे ओ नमः शिवाय अकित है। उत्तर अफ्रीका मे काहिरा की ओर नील नदी के निकट मम्फिस एव अशी-रिस क्षेत्र मे नन्दी आरूढ त्रिशूल व्याघ्राम्बर धारी शिव मूर्ती है, इन पर दूध एव बिल्वपत्र जैसा त्रिपत्र चढाते है। शाम और लाओस में शिव मन्दिर है। बॅबिलन मे विश्व का सबसे बडा ३०० हाथ लम्बा शिवलिंग है, इस से छोटा सीरिया हैड्रापॉलिस मे ३०० फुट लम्बा है। स्काटलैंड ग्लासगो मे सुवर्णावृत शिवलिंग अब भी पूजित है। बिसमिस, टॅलोस, बुरजो, इटली मे शिवलिग विद्यमान है। इटली के अनेक ईसाई शिवोपासक है। यूरोप के कोरिथ नगर में पार्वती मन्दिर मिला है। फिजी के एटिस, निनावा नगर मे एशीर नामक शिवलिग है। चित्राल, काबुल, बलख, बुखारा मे शिवलिग है इन्हे पंजशेर या पजवीर कहते है। वाली मे शिवोपासक ब्रम्हाण्ड पुराण के प्रेमी है रामायण एवं महाभारत के नाटक प्रस्तुत करते है, अधिकांश नाम संस्कृत युत भारतीय है। ट्राक्य नगर मे जटाजूट सर्प धारी मानवाकार शिवमूर्ती है। डाग फुक मे अर्धनारीश्वर मूर्ती है। यानमुम मे त्रिनेज त्रिशूलधारी शिव है। ड्रानलाय मे नन्दी आरूढ

मूर्ती है। चीनी तुर्किस्तान के दक्षिण में मध्य एशिया के ऑरलस्टाइन-खोतान के भूगर्भ मे काष्ठ पर उत्कीर्ण बौद्ध एवं शिव की आकृति मिली है । रोम मे प्रियेपस (प्रियासस) यूनान मे फल्लुस (फलास) चीन में हुवंग-हिफुट नाम से शिव पूजा धूप दीप पुष्पादि से होती थी । यह तीनो देश फाल्गुन में विशेष उत्सव (सम्भवत. शिवरात्रि या धुलैंडी) मनाते थे। चीनी तुर्किस्तान के दन्दान यूलिक के खण्डहर से त्रिमुखी महेश्वर का चित्र मिला है । ग्रीस और मिश्र मे बेकस नामक शिवमूर्ती सूरत के सहश्रलिग एव कोटि लिंग जैसी है । मिश्र के आराध्य प्रधान हर और ईशी थे । असिरिश नाम भी था । फ्रिजिया के असुरिया भू-खण्ड मे सेबाजिय (शिवजी) तथा मिश्र मे कही-कही सेवा नाम से शिव पूजा है, सर्प को भी मान्यता है । प्लूतार्क के लेखानुसार मिश्र सह सारे पश्चिम मे लिग पूजा थी । अरब मे लात-लाट नाम से लिग पूजा थी । मुक्तेश्वर-मक्केश्वर को यहूदी और इसराइली पूजते थे, इन्हे विश्व के मुस्लिम आज भी पूजते हैं। यहा सात परिक्रमा आवश्यक है। आबे जम-जम जल कुण्ड मे शिवलिंग पर खजूर पत्र चढाते हैं। मक्केश्वर का सकेत भविष्य पुराण के ब्राम्ह पर्व मे है । तथा वैदिक राष्ट्र पुस्तक मे इतिहासज्ञ ओक ने हरि हरेश्वर माहात्म्य का श्लोक दिये हे, उसकी एक पक्ति-एकं पद गया यातु मकायातु द्वितीयकम– विष्णु का दूसरा पद मक्का मे हे । अमेरिका के पेरुविया मे हिन्दू अवशेष मिले है। यहा का राजवंश सुर्यवंशी हे, राममीतोया नामक उत्सव मनाते है। वहा कुछ लोग सिव्रू नाम से शिव पूजा भी करते हैं । इण्डोचायना मे फ्रेंच राज्याधीन अनाम (चम्पा) क्षेत्र मे शिव मन्दिर अनेक है। शोध कर्ता फ्रेंच विद्वान् ए० वर्गेन ने वहा के संस्कृत शिलालेखो को पुस्तक रूप दिया है। शिव पर ६२/ शिव और विष्णु पर २/ विष्णु पर ३/ ब्रम्हा पर ५/ बुद्ध पर ७ लेख है । चम्पा क्षेत्र के पो नगर में कोठारेश्वरी (शयायद अन्नपूर्णा) का मन्दिर है। देवी के प्रति रचित संस्कृत काव्य

में से तीन पंक्ति–भूता भूतेश भूता भुवि भव विभवोद् भाव भावात्म भावा। भावा भावस्व भावा भव भवक भवा भाव भावैक भावा। भावा भावाग्र शक्तिः शशि मुकुट तनोरर्ध काया मुकाया। छन्द एवं शब्द कौशल से सिद्ध होता है कि वहा संस्कृत का वर्चस्व रहा है। भगवान शिव द्वारा भृगुऋषी को दिया हुआ शिवलिंग उरोज नामक राजा ने वुवन पर्वत पर ज्ञान भद्रेश्वर नाम से स्थापित किया है। इस मन्दिर में राज्यार्पित सुवर्ण कवच १७२० तोले का था। मन्दिर के शिखर पर ३००० तोला सुवर्ण लगा था। दीवारो पर ३५०० पौण्ड याने लगभग चौदह लाख तोला चान्दी की परत चढ़ी थी। शिलालेख २३-२४ में से २ पंक्ति–रजत सुवर्ण मुकुट रत्न हारादि परिभोग सान्तः। पुर विलासिनी दास दासी गो महिष क्षेत्रादि द्रव्यं तस्मै तेन दत्तं चित प्रसादेन। इतनी सम्पदा मन्दिर को अर्पित की गई। इसी प्रकार अन्य राजाओ के दानार्पण शिलालेख है। यहां का अति प्राचीन मन्दिर मुखलिग महादेव का है।

कम्बोज मे ई० ११२५ के करीव सूर्यवर्मा का बनवाया हुआ अकोरवाट विष्णु मन्दिर दर्शनीय है, जलाशय, श्रीफल, कदलीफल आदि की हरीतिमा से शोभित दो प्राचीर के मध्य उच्च पीठस्थ पच-शिखर देवालय है।

श्याम में स्दाक काक थाम भग्न देवालय है। कनिष्क की स्वर्ण मुद्रा पर शिव अकित है, ईरान के सासानी राजाओ के सिक्के पर त्रिशूल नन्दी सह शिव अकित है। दक्षिण कोरिया में भूगर्भ से ब्रम्हा एव इन्द्र की मूर्ती मिली है, वे वही सग्रहालय में धरी है। इण्डो-चायना एवं इण्डोनेशिया मे शैव धर्म स्थापक अगस्त माने जाते है। पुराणानुसार विन्ध्य पर्वत लाघकर अगस्त का दक्षिण जाना प्रमा-णित है।

एडवर्ड पोकाक का लेखन है–"परशुराम ने ईरान पर विजय पाया, तब से वह भाग परशीय, फरसीय, पर्शिय-न कहा जाने लगा।

ईरान, कॉलचिस–अर्मेनिया के प्राचीन नक्शे से प्रमाणित है कि वहां भारतीय वसे थे, उनकी वस्तियो के एवं रामायण, महाभारत के तत्थ्यो के प्रमाण मिलते है । देव सेनापति कार्तिकेय स्कन्द के क्षेत्र उत्तर यूरोप को स्कन्धनाभ-स्केडिनेविया कहा जाता है । ग्रीक में स्वर्ग को कॉइलॉन रोमन मे कॉइलॉम कहते है, यह वैदिक कैलाश का अपभ्रंश है । गिरीश का अपभ्रंश ग्रीस है । काश्यप का अरभ्रंश कास्पियन है । उत्तर भारत के सूर्य वंशियो द्वारा रोम, इटली, ग्रीस, पेरू, इजिप्त, सिलोन आदि मे निर्मित इमारते आश्चर्यप्रद है ।"

रेवरेण्ड थामस, मारिस, लिचफीहुड-यूवेनवरो के ड्रुइड्स इतिहास ग्रथो के अंश का सार पूर्व दिशा के निवासी विजय करते करते वढते गए एवं पूरे यूरोप के शासक वन गए । ड्रुइड मूलतः एशिया के थे साइवेरिया तक पहुंचे, ब्रिटेन मे भी आश्रम वनाये थे । ड्रुइड भारत से आये दार्शनिक थे । ईसाइ वनने वाद भी ये लोग वर्ष मे ४–५ मर्तवा अज्ञात में एकत्र हो प्रार्थना करते हैं । इस क्षेत्र में अत्री ऋषी या आत्रेय गोत्रीय किसी विद्वान का अति प्रभाव रहा है । इग्लैण्ड मे हेरो एव इटन विद्यालय गुरू प्रणाली के है । ब्रिटेन के अवीरी भग्न-स्थल से सर्पाकृति मिली है, वेल्स विभाग मे आइल आफ अँगल्सी एव आइल आफ मॅन मे विष्णु, एव ब्रह्मा, विष्णु, शिव मन्दिर थे । ड्रुइड लोग सचालक थे । आँग्ल मूल निवासी विश्व के पूर्वीय भाग मे आकर वसे थे (भारत ही से हो) भारतीय द्रविड़ ब्राह्मण और ड्रुइड एक ही समाज के है । विद्वान, ज्ञानदान, समाज व्यवस्था करते थे । गुरुकुल प्रथा थी । सूर्यस्तवन एव शिवसहिता का चलन उल्लेखनीय है । ब्रिटेन, गाल (फ्रास) जर्मन, इटली, ग्रीक लैटिन तक इनका प्रभाव था । ब्रिटेन और फ्रास मे हवन किया जाता था । प्रसिद्ध रोमन ज्यूलियस सीजर ईसा से ५०–५५ वर्ष पहले हुआ था इस के ग्रंथ का अंग्रेजी अनुवाद लन्दन मे १९०८ मे प्रकाशित हुआ था इस में लिखित वर्णन का अल्पतम सारांश–ड्रुइड धर्म गुरू आचार्य थे, देव

पूजन, हवन, अध्ययन, अध्यापन, समाज व्यवस्था, न्याय दण्ड निर्णय आदि कार्य में लगे रहते थे। इनके पास बीस वर्ष तक कण्ठस्थ अध्ययन करना पड़ता था लेखन वर्ज्य था। दूसरे ड्रुइड–क्षत्रीय सैनिक वर्ग के थे आत्मा अमर है यह मान कर युद्ध में मृत्यु से कोई नही डरता। ग्रहो की स्थिती भ्रमण–विश्व का विस्तार, देव शक्ति आदि का ज्ञान देते थे। बुध, सूर्य, मंगल, इन्द्र एवं मिनर्वा (देवी) के प्रति श्रद्धा शील थे। इत्यादि।

ई० १६२६ में प्रकाशित गॉड फ्रे हिगिन्स के शोध ग्रंथ से अल्पाश-धर्म गुरू ड्रुइड पूर्व से भारत ले आये। कैडमियन लिपि उन्ही की देन है। स्टोन हेज, कॅरनॅक एव एशिया तथा यूरोप की भव्य इमारतो के वे निर्माता हैं। सत्य पर आधारित विश्व की दन्त कथाएं लिखे। ग्रीस इटली फ्रांस (गॉल) ब्रिटेन तथा दक्षिण एशिया से सीरिया एव अफ्रिका तक पहुँचे। पाश्चात्य देशो की भाषा एक ही थी। ब्रिटेन गॉल (फ्रास) इटली, ग्रीस सीरिया अ (श्व) रवस्थान ईरान हिन्दु-स्थान सब की एक ही लिपि थी। यूरोप के प्राचीनतम इतिहास की खोज में हर प्रदेश मे ड्रुइड भवनों के विशाल अवशेष मिलते है। ब्रिटानी ड्रुइड सेल्टेक लोग प्राचीन परम्परा के थे प्रलय से बचकर इस दिशा मे आये थे। ड्रुइडों की लिपि से अनभिज्ञ ईसाई पादरियो ने उन के अनेक ग्रंथ "अगम" कह कर यत्र तत्र जला दिये थे। (अगम शब्द सस्कृत है) अगम लिपि की विधी पुस्तक हस्तलिखित तक प्रति आयर-लैण्ड मे डब्लिन कालेज मे है। ग्रीक रोमन सैल्टिक भाषाएं परस्पर मिलती है। वैदिक विद्वान एव पाणिनी सस्कृत भाषा और उसकी लिपि को देव निर्मित मानते थे। वाराणसी काश्मीर नगरकोट एव समरकन्द विद्या केन्द्र थे इनमे संस्कृत साहित्य विपुल था। इजिप्त अलेक्जेंड्रिया, रोम तुर्किस्तान, इस्तम्बूल मे भी ग्रन्थ भण्डार सह धर्म केन्द्र थे।

ई० १९३५ में डोरीथी चैपलीन भी लिखी है—द्रविड़ क्षत्रिय आर्य थे पुरोहित भी थे । वेल्स मे ग्लैसी के मोना नगर मे विद्यालय था जहा वीस वर्ष तक अध्ययन करना पडता था । कँट और वाइट द्वीप जाटों द्वारा स्थापित है । ब्रिटेन में ड्रुइडो के धर्म केन्द्र कई जगह स्थापित हुए थे ।

ई० १८८१ मे लन्दन से प्रकाशित लारा एलिजावेथ पुअर के शोध ग्रथ से अश—कई देशों का विभिन्न समय का सारा साहित्य एक जैसा है वे देश परस्पर कितनी ही दूरी के हो । रोमन ग्रीक फिनिशियन एव कार्थेजियन इतिहास भिन्न होते हुए भी एक राष्ट्र से सम्बन्धित भासने पर अध्ययन मे रुचि वढती है तदर्थ संस्कृत ही सब को एक सूत्र में पिरोती है अतः सस्कृत अध्ययन आवश्यक है । ड्रुइडों को मंत्र कण्ठस्थ करना पड़ता था अध्ययन मे वीस वर्ष तक लग जाते थे । यूरोपीय कहानी पुस्तक संस्कृत के हितोपदेश और पच तत्र पर आधारित है । इनका अरवी अनुवाद भी हुआ है । सस्कृत साहित्य स्वरित सद्गुणी दयार्द्र आध्यात्मिक है । ग्रीक साहित्य कृत्रिम अनैतिक अनाध्यात्मिक लगता है ।

एडवर्ड पोकॉक के इण्डिया इन ग्रीस ग्रथ मे लिखा है—पुराणों मे वर्णित तत्थ्य परम्पराए प्रतिष्ठान वहुत प्राचीन है ईसा से ३०० वर्ष पहले भी थे इनकी प्राचीनता की वरावरी अन्य कोई भी प्रणाली नही कर सकती । ग्रीस का सारा समाज सैनिक और नागरिक प्रमुखतः एशियाई और अधिकतर भारतीय ढाँचे का था । भारतीयो द्वारा उस प्रदेश को वसाने के कारण उनका धर्म और भाषा वहां पाई जाती है । भारत से जो राज घराने एव दरवारी सामन्त सरदारों के घराने एवं दरबारी सामन्त सरदारों के घराने लुप्त हुए वे ही ग्रीस मे प्रगट हो "ट्रॉय" के समरांगण मे युद्ध लडे थे ।

अमेरिकन विलियम डुरँड ने दस खण्ड में संस्कृति का इतिहास लिखा है उसमे से कुछ अंश—जैसे भारत ही मानव जाति की माता है

उसी प्रकार संस्कृत ही विश्व की सारी भाषाओं की जननी है। संस्कृत मे ही हमारा दर्शन शास्त्र पाया जाता है। गणित का भी श्रोत वही है। ईसाई पंथ में गढे गए आदर्शो का उद्गम भी भारत ही है। स्वतं-त्रता, जन शासन आदि सारी प्रथाएं भारत मूलक होने के कारण भारत ही विविध प्रकार से मानवीय सभ्यता की जननी है।

सर विलियम जॉन्स का मताश—ईरानी हब्शी मिश्री फिनिशियन ग्रीक टस्कन सीथियन चीनी जापानी गोठ पेरू सॅल्ट—कॅल्ट और भारत की सभ्यता अनादि रही हैं।

ओरिजन ऑफ दी आर्यन ग्रंथ मे आयसफ टैलर ने लिखा है— विविध दर्शन शास्त्रो का तुलनात्मक अध्ययन कर जर्मन विद्वान एडेलॅग ने निष्कर्ष निकाला है कि मानवीय सभ्यता का आरम्भ काश्मीर से हुआ। वही स्वर्ग था। मानवता का आरम्भ पूर्ववर्तीय प्रदेश मे होने से साइबेरियन एव सेल्ट जैसी पश्चिमी जातियां वही (पूर्व) से निकली होगी।

एल० ए० वडेल का लेखन है—प्राचीन सभ्यताओ मे समानता का रहस्य समझ मे नही आता था किन्तु अब पता लगता है कि वे किसी उन्नत सभ्यता के अग प्रत्यंग थे और वह उन्नत लोग आर्य कहलाते थे।

यूनानी एव जैसलमेरी मतानुसार "इण्डो सीथिक यादव है" साइरो पोलिस बलख इस्कन्दरिया मे इनके अवशेष मिल सकते हैं। यूनान और मिश्र में हरक्यूलस का आदर सिकन्दर के समय जैसा ही है। बलदाऊजी को हरक्यूलस—हरिकुलेश बतलाते है हल और व्याघ्राम्वर धारी है,क्षेत्रानुसार भूषा परिवर्तन होता है। कृष्ण को अपोलो-वुध को मर्क्यूरी कहते हैं। हिन्दू, मिश्र और यनानी इतिहास पुराण कथाओ मे अधिक समानता है। हेरा क्लाइटी लोग अटरियस (अत्रि वश) कहाते है। यूनान में सूर्यवशी "हेलो" पाडी कहाते हैं, नाम सूर्य का सस्कृत मे है।

भारतीय द्वारा कही गई सत्य बात को विदेशोन्मुख भारतीय कुछ महा विचारक लोग मिथ्या बकवास आत्मप्रशंसा मानकर पीडा से छटपटायमान हो जाते हैं इसलिये भारतीय वैदिक आर्य हिन्दू संस्कृति या मानव जाति संसार मे सर्वत्र प्रभाव पूर्ण प्रसरित विद्यमान थी तत्सम्बन्धी शोध कर्त्ता पाश्चात्य प्रसिद्ध अनेक विद्वानो के विचार सार प्रस्तुत किया हूँ ताकि सत्य को सत्य ही माना जाय कि हम सब आर्य हैं।

प्रॉ० फ्रेझ क्यूमान्ट एवं प्रॉ० शावर मन का मतांश है—ईसा के पहले रोम में मूर्ती पूजा थी। उनके सिद्धान्त ईसाई पंथ से अधिक उत्तम समाधान कारक थे।

डोरोथी चैप्लीन की पुस्तक में है—सैल्ट-कॅल्ट (यूरोपीय) आर्य थे, नही थे तो यज्ञ प्रथा कहां से आई। बैल, वराह, सर्प किस साहित्य की देन है।

काउन्ट विओनस्टि अर्ना का लेखांश—हिन्दू लोग ग्रीको से कितने ही अधिक अग्रसर होने के कारण वे ही ग्रीको के गुरु रहे होंगे विश्व मे हिन्दू प्रणाली की प्राचीनता की बराबरी कोई नही कर सकता है। हिन्दुओ की उच्च सभ्यता इथोपिया, इजिप्त, फिनिशिया, स्याम, चीन, जापान, सीलोन, जावा, सुमात्रा, ईरान, खाल्डिया, कॉलचिस, हाइपर, बोरिअस, ग्रीस, रोम तक पहुँची है।

ई० ३१२ के करीब रोमन सम्राट कांस्टंटाइन नें सैन्य बल से प्रजा को क्राइष्ट धर्म स्वीकारने बाध्य किया था । यही नीति इस्लाम प्रचार मे भी रही है।

लारा एलिजाबेथ पूअर का ग्रंथाश—ईसा पूर्व १०१५ सालोमन, ईसा पूर्व ३२२ अलेक्जेण्डर के समय संस्कृत बोली जाती थी। संस्कृत भाषा हो सबको एक सूत्र मे पिरोती है। इस्लाम स्वीकारने बाद

ईरान राक्षसी देश बन गया। ईसा से २२३४ वर्ष पहले ईरान में आर्य-शासन था।

रायल० ए० सो० लन्दन मे पठित प्रबन्ध का अंश—आश्चर्य है कि अनेक क्रूर आक्रमणों के वाद भी वहा (भारत) की भाषा (संस्कृत) विद्यमान है। जो ग्रीक और लैटिन भाषा की जननी है।

इण्डियन ए टीक्विटीज १७६२ मे हॉल्हेड का मतांश—वह (संस्कृत) भाषा ही पृथ्वी की मूल भाषा है।

यूरोपीय पिकेट का मनन है—संस्कृत भाषा सबसे सुन्दर और परिपूर्ण है।

दक्षिण अमेरिकी "मय" सभ्यता १०.००० वर्ष पुरानी मानी गई है। अमेरिका के येलोस्टोन पार्क मे एवं अफ्रीका मे रक्षित वन में कई प्रकार के हजारो पशु हैं, किन्तु वहाँ शिकार करना सख्त मना है। इग्लैण्ड मे भी पक्षी रक्षालय हैं।

फॅनी पार्क की शोध पुस्तक के अनुसार—यहूदी, मुसलमान एवं क्रिश्चियनों मे तुलसी के पौधे को महत्व था, ईसाई, मुसलमां एवं हिन्दुओ मे माला का प्रयोग समान है। ईरान में रुद्राक्ष माला का चलन है। प्रोफेट का हवाला है कि—उसने कहा हसन एवं हुसेन मेरे दो प्यारे तुलसी के पौधे हैं।

ऑक्सफोर्ड से प्रकाशित विष्णु पुराण की भूमिका में एच० एच० विल्सन ने लिखा है—जिन-जिन भाषाओ मे सस्कृत का सम्बन्ध दीखता है वे सभी उस मूल साहित्य के ही अंग है। उस मूल का केन्द्र वहा था जहां मानव आरम्भ मे बसता था। याने भारत।

गॉडफ्रे हिगिन्स—सारे देशो में भारत में ही प्रथम मानव बस्ती हुई। वे भारतीय ही अन्य सारे जनो के जन्मदाता है। उन की सभ्यता चरम सीमा पर थी। विश्व में फैलने के पहले ही श्रेष्ठतम प्रगती पा चुके थे। उस सभ्यता को छुपाने का प्रयास हमारे पादरियों ने किया, किन्तु वे सफल नही हो सके।

जेम्स कॉयर्ड–पाश्चात्य श्रेष्ठियों को अभी तक पता नहीं कि हिन्दू ही विश्व के प्राचीनतम शासक है।

क्रुई झे–पृथ्वी पर मानव का लालन-पालन आद्य सभ्यता का गठन सर्वप्रथम भारत में हुआ है। वहां से अन्यत्र प्रसार हुआ है।

डिओनिसिस–हिन्दू जाति सर्वप्रथम सागर पार कर अज्ञात प्रदेशो में पहुँची। नक्षत्रो का अध्ययन ग्रहगति उनके स्थान एवं नाम निश्चय किये।

एडिअवर्ग रिव्हिव १८७२–जिस प्राचीन सभ्यता के अशशेष मिलते हैं वह हिन्दू सभ्यता ही थी। इतिहास मे औरो का नाम भी नही था, तब हिन्दू सभ्यता उत्कर्ष पा चुकी थी।

डब्ल्यू० डी० ब्राउन–बारीकी से जाच करे तो हिन्दू ही विश्व साहित्य एवं ईश्वरीय ज्ञान के जनक है। संसार में साहित्य, धर्म और सभ्यता का प्रसार हिन्दुओ ने किया है।

विक्टर काउसिन–भारत के दार्शनिक साहित्य के समक्ष यूरोपीय दर्शन शास्त्र नगण्य है। इसलिये भारत के समक्ष नतमस्तक हे कि उच्चतम दर्शन शास्त्र का प्रणेता भारत है भारत।

मॅक्स मूलर एव विलियम जॉन्स–इस बात के पक्के प्रमाण है कि ईश्वर ज्ञान के सारे तत्थ्य विश्व को भारत से ही मिले है।

विश्व प्रसिद्ध भविष्य द्रष्टा नॉस्ट्रा डेमस (फ्रेंच) की १५५५ में प्रकाशित 'सेन्च्युरी" पुस्तक मे वर्णित ढाई हजार भविष्यवाणियो में से आठ सौ सत्य सिद्ध हो चुकी है। ग्रथ लेखन समय ब्रिटेन और हिटलर थे ही नही किन्तु इनके लिये लिखा भविष्य, भविष्यफल की सत्यता का ठोस प्रमाण है। उस ग्रंथ का एक अश उल्लेखनीय है–

"दक्षिण भारत मे जन्मा शक्ति पुज महा पुरुष १९९९ से सात वर्ष मे भारत का उत्थान कर विश्व मे हिन्दुत्व को स्थापित करेगा। इस्लाम और ईसाई धर्म समाप्त हो जायेंगे। जिन विदेशियो ने हिन्दुस्तान को रौन्दा है, लूटा है उन्हे क्षमा नही किया जायेगा।

हिन्दवीर पेरिस पहुँचेंगे तब रोम आग से दहकने लगेगा । हिन्दवीर का प्रथम अनुयायी रूस होगा । हिन्दुत्व दिग्विजयी होगा ।" रूस तो भारत का साथी है ही ।

[इस भविष्य फल का समर्थन करीब दो हजार वर्ष पहले के योगी काकय्यार द्वारा लिखित काक नाड़ी ग्रंथ से भी होता है । सारांश है कि-इस कर्ता धर्ता शक्ति पुंज का जन्म मीन राशि के बृहस्पति के समय मे होगा । इसके जन्म के कुछ ही समय पहले पृथ्वी की धुरी और गति बदलेगी (विश्व कम्प होगा), काल गणना के आयाम बदलेंगे, प्रचण्ड घन गर्जन विद्युच्चपलता, निरन्तर उल्कापात अविरल घोर वर्षा, हिमस्खलन हो विन्ध्याचल पहुँचेगा, ज्वालामुखी विकाल होगा, प्रलय जैसी हा हा कार मय दशा होगी, विलक्षण धूमकेतु का उदय होगा, बृहस्पति का तारा तेजोमय चन्द्र की तरह प्रकाशमान होगा, शुक्र का तारा स्थान च्युत होगा; ऐसी वेला में उस विलक्षण दैवी शक्ति सम्पन्न हिन्दू वीर का जन्म होगा, इस के सहायक सशरीर व्योमचारी होगे ।इत्यादि]

अमेरिका मे संगमरवर के बने बहुत भवन थे ।वर्तमान में भी अमेरिका मे विष्णु, शिव, राम, हनुमान, बालाजी आदि के मन्दिर बने हैं, वन रहे है । महाभारत मे "मय" असुर-मायावी (वैज्ञानिक)का वर्णन है । मिश्र मे ईसिस, असीरिश का उत्सव होता है, सुएवी जाति इन्हें हर गौरी वत मानती है । अनेक राज्यो मे भारतीय त्योंहार जैसे त्योहार, आचरण, व्यक्ति नाम, स्थलनाम भारतीय नाम जैसे मिलते जुलते है । सम्भव है महाराज सगर का बहुत दूर तक प्रभाव था, सगर ने वैदिक प्रचार करवाया हो । पद्मपुराण-ततः शकान स यवनान कम्बोजान पारदांस्तथा । ते हन्यमाना वीरेण सगरेण महौजसा । पल्लवाश्चापिनिः शेशान । दूसरी सदी तक श्याम सीरिया मे पारद राज्य था । रघुवंश-तत्र हूनावरोधानां भर्तृषु व्यक्त विक्रमम् कपोल पाटला देश वभूव रघु चेष्टितम् । महाराजा रघु का चीन करद राज्य

था। महाभारत में वर्णित विश्वमित्र मे वशिष्ठ के युद्ध में आए हुएं सहयोगियो मे-चिवुकांश्च पुलिन्दांश्च चीनान हूनान स केशवान (केरलान) लिखा है। भारतीय प्रलय कथानुसार इस्लामी प्रलय कथा हैं-जल प्रलय के समय नूह की नौका जूदी पर्वत्त पर टिकी थी, अर-राट-अरमेनिया से कुर्दिस्तान तक फैली शैलमाला मे "जूदी" है। ईराकी कुर्दिस्तान की भाषा में सस्कृत शब्द है, हिन्दु रिवाज के अंश अव भी हैं। यूनान, मिश्र, अरव, चीन, ईराक, वर्मा, मलाया, आस्ट्रे-लिया, न्युगिनी, अमेरिका, यूरोप मे भारतीय मनु के समय जलप्लावन फिर सृष्टि रचना की कथा जैसी ही कथा है। यहूदी और इस्लाम में नू-नूह मीनेश एवं भारतीय मनु की कथा मे साम्य है। तातारी-मुगल "आय" चीनी "यू" पौराणिक "आयु" तीनो ही चन्द्रवश के आधार मे एक है। स्कैंडिनेवियन, बेविलोन, पारसी एवं वैदिक सम्वत् मे काफी समानता है।

इलापुत्र चद्रवशी पुरुखा के प्रपौत्र ययाती की दो पत्नी शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी मे यदु,तुर्वमु, एव मुल्तान नरेश विंषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा से अनु, द्रुहयू, पुरु पुत्र थे। यदु से यादव, पुरु से कौरव, पाण्डव एव शेश के वश विदेशो मे जा वसे, म्लेच्छ या यवन हुए, यदु-वंशज हय-"हैहयहूण"-चीन वश का सस्थापक है। द्रुहयु का पुत्र वभ्र वेविलोन का स्थापक है। व्रलराम भी दूर जा बसे थे। पाण्डव हिमा-लय मे गले नही वे भी दूर जा वसे एवं अनेक पाण्डव कौरव यादवादि परिवार भी महाभारतीय युद्ध के घृणित विनाशी परिणाम एवं मीलो दूर तक लाशो, रथो, शस्त्रों से भयानक-हृदयद्रावी तथ दुर्गन्धमय द्रश्य से ग्लानिवश दूर जा वसे थे। इसी तरह कलिग विजेता-विना-शक अशोक विनाश देखकर वौद्ध वन गया था। सोगदियाना मे पाण्डियाना (पाण्डु) नगर है। चद्रवंश का प्रतीक इस्लाम मे चन्द्रध्वज एव चन्द्र का विशेप महत्व है। भारत में भी चन्द्र का धार्मिक महत्व है। चान्द्रायणव्रत, पौर्णिमा और चतुर्थी व्रत, ज्योतिप मे चन्द्र को

राजपद आदि उल्लेखनीय हैं। सोलोमन का उपास्य मन्दिर एवं गुजरात का आदिनाथ मन्दिर एक ही लकड़ी के बने हुए प्रतीत होते है।

जापान एवं मिश्र वाले अपना वंशाधार "सूर्य" मानते है। जापान में वर्ष के प्रथम दिन सूर्य दर्शन अवश्य करते है। मिश्र में सूर्योपासना थी। भूगर्भ से सूर्यमूर्ति मिली है। सुमेर एव सिन्ध के भूगर्भ से मिली वस्तु पर अंकित लिपि में समानता है। अजमेर, आमेर, जैसलमेर, सुमेर में साम्यता है।

यूनान के एल्फी नगर मे सूर्य मन्दिर है। दक्षिण अरब में यमन, हाजरामौत, अबीसीनियातक "सबा" जाति सूर्य पूजक थी। मेडा-गास्कर एवं आस्ट्रेलिया मे सूर्यवंशियों के बनवाये हुए महल हैं। किब्ती जाति गऊ भक्त थी। समरकन्द के तोरण द्वार पर अकित भारतीय लिपि १९०५ के पहले पढी गई है। यहां तैमूरलंग के मकबरे में उत्कीर्ण सूर्य एवं शार्दूल उसे हिन्दू भवन सिद्ध करते है। जर्मन (आर्यमन) भी स्वयं को आर्य मानते है। हिटलर का राज्य चिन्ह स्वस्तिक था। इटालियन शिवोपासक थे, उनमें हिन्दु संस्कृति के अंश अब भी हैं। एटरूस्कन में शिवलिंग, संग्रहालय मे रक्षित है। नार्मन (अग्रेज) भी आर्यमन हैं। बाटिकान का अपभ्रंश वेटिकन नगर है। ब्रिटेन में "डेविड-ड्रुइड्स-द्रविड" पण्डित है, ये गीतकार, गायक हैं, सूर्य का आह्वान करते हैं। इंग्लैंड के स्टोनहैज (मन्दिर) चर्च मे गायत्री मंत्र के अर्थ का ही गीतपाठ विशेष अवसर पर करते है। सामवेद का "सामगान" भी होता था। अब केवल नाम है। बोर्नियो का शासक सेरी भगवान (श्री भगवान) कहलाता था। बन्दरगाह का हिन्दू नाम था, पन्द्रहवी सदी तक यहां हिन्दुत्व था। संस्कृत शिलालेख में राजा मूल वर्मन द्वारा २०,००० गोदान का उल्लेख है। समरकन्द से काफी दूर कुर्दिस्तान की भाषा मे संस्कृत एवं भारतीय रीत रिवाज के अश है। ईहोप नगर से दूर गर्म पानी के झरने के

निकट भूगर्भ से पुण्डरीक स्रोत मिला है। विक्रमादित्य के पुरोहित वररुचि-कृत व्याकरण ग्रन्थ "कातन्त्र" के कुछ भाग मध्य एशिया के भूगर्भ से मिले है। चाल्डिया मेसोपोटामिया को भारतीय व्यापारियो ने उन्नत किया था। राजस्थान के अनहलवाड़ा पट्टन, भीलवाडा, मालपुरा, आहड, चूरु, पाली अन्तरराष्ट्रीय व्यापार केन्द्र थे। तिब्बत काश्मीर, कच्छ, मुलतान, चीन आदि का माल यूरोप, अफ्रिका, अरव मस्कट, मिश्र, फिनिशिया, वगदाद, फारस आदि देशों से आदान प्रदान था, केवल पाली को चुगी टैक्स ७५,००० रु० वार्षिक आय सदियो पहले थी। भारतीय अनेक वस्तुए विक्रयार्थ जलपोत-द्वारा विदेशों मे ले जाते थे। भारतीय जलपोत तीन तलवाले सुद्रढ़ होते थे, ऐसे जलपोत विश्व मे अन्यत्र कही भी नही वनते थे।

दो हजार वर्ष पहले भारतीय वाणिक जलपोत से जर्मनी तक जाते थे। फाहियान भारत से सिंहल जिस जलपोत मे गया था उसमे दो सौ यात्रियो की प्रवास व्यवस्था थी। महा भारत काल मे भारतीय तट पर १७८ वन्दरगाह थे। हिरण्यकश्यप मुल्तान का राजा था, प्रहलाद को चित्राल पर्वत से गिराकर मारने की वात-यहां कही जाती है। भगवान नृसिंह के प्रति यहां वार्षिक मेला भरता था।

कौरव नरेश-धृतराष्ट्र का श्वसुर गान्धारराज नग्नजित का पुत्र सुवल था। ई० ५२१ के पहले ईरान के राजा दायरवौप के शिलालेख में आर्याणां आर्यः क्षत्रियाणां क्षत्रिय. अकित है। शिलालेख सस्कृत मे है। अरव मे भारतीय लिपि थी। ईरान का अन्तिम शासक आर्य मेहर (सूर्य) शाहरजा पहलवी खुद को सगर्व आर्य कहता था। पल्लव का अपभ्र श पहलवी है। ईरानी शासक हिन्दू सम्वोधन "शाह" कहलवाया है। तेहरान मे हिन्दू मन्दिर है, वौद्ध मठ, गुरुद्वारा, चर्च एवं शिया मजिद हैं, किन्तु सुन्नी मजिद नही वनाने दी गई। अरव के अन्य शासक सुल्तान, खलीफा या अमीर कहलाते हैं। ई० ३३० मे कावुल, कन्धार का शासक देवपुत्र था। वलोचिस्तान में क्वेटा से

साठ मील दूर पहाडो पर नृसिंह जयन्ती का उत्सव मनाया जाता था। इसी पहाड़ से गिराकर भक्त प्रह्लाद को मार देने का कार्य हिरण्याक्ष ने किया था ऐसी मान्यता है। अफगान के प्राचीन महल हिन्दुओ ने बनवाए है। दसवी सदी तक काबुल और बलोचिस्तान के राजा सब हिन्दू थे। कावुल और लाहौर पर ब्राह्मण शासन था। सामन्त नामक राजा ने अफगान-अफगनों को सिन्धु की पश्चिमी सीमा सुरक्षा सोपी थी। (इस पश्चिमी भाग को बाबर ने खुरासान लिखा है) तथा उन्हे उधर का क्षेत्र दिया था, कोहे गिरदामन मार्ग में खैवर दुर्ग बनवाया गया है।

बलख के नौ बहार विद्यालय का प्रधानाचार्य भारतीय था, परम–क नाम था, यह मुसलमान बना ईराक का शासन दस वर्ष पहले तक इसी परम–क अपभ्रंश "बरमक" परिवार का था। ई० ७६१ तक पेशावर कारमान के अफगन पठानों ने इस्लाम धर्म नही स्वीकारे थे। समनि एवं तुर्की राज्यमंत्री ब्राह्मण थे, लगतुर्मन का मत्री कल्लूर नामक ब्राह्मण था। भारत की ओर बढते सिकन्दर को अफगन बाधक इसलिये बने कि उनके पूर्वज भारतीय हैं, वे जहां हैं, वहां भारत है, यह उन्हे ज्ञात था। वे भारत के प्रति निष्ठावान थे। पश्तो भाषा मे संस्कृत शब्द पर्याप्त हैं, संस्कृत पढ़ा व्यक्ति पश्तो शीघ्र सीख सकता है। यूरोपियन लिपि एव ग्रीक तथा लैटिन भाषा की जननी सस्कृत को ही मानते है। लैटिन, ग्रीक, इटालवी, जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश, अग्रेजी, रूसी, तुर्की, हिब्रू, ईरानी, पर्शियन, मालियन भाषा मे भी सस्कृत शब्द है। स्यामी भाषा सस्कृत का अपभ्रंश है। मेक्स-मूलर, विल्लीयम जॉन्स, मार्स डेन, एलेफिंस्टोन का भी यही शोध है। अरवी, ग्रीक, लैटिन, हिब्रू, जेन्द्र एव चीनी सामोपेडिक भाषा का व्याकरण सस्कृत के व्याकरण जैसा है। भारतीय भाषा देव वाणी संस्कृत एव व्याकर्ण वैदिक युग से है। सत्तावन व्याकर्णियो मे तेवीस प्रमुख है। इन्द्र का तीसरा स्थान है। २१६५०८५ वर्ष पहले का इनका

समय माना गया है। सदियों पहले से पातंजलि एवं पाणिनी के व्याकरण की व्यापकता है। पाणिनी का समय विक्रम से २८०० वर्ष पहले का है। इनकी अष्टाध्यायी एवं शब्दानुशासन व्याकरण की उच्च-कोटि की पुस्तक है। प्रो० मेनियर विलियम, सर विलियम हन्टर, प्रो० टी० शेखास्सकी आदि का विचार सार है—पाणिनी का व्याकरण मानव मस्तिष्क का आश्चर्यतम अत्यन्त महत्वपूर्ण आविष्कार है, इन्सानी दिमाग की सबसे बड़ी रचना है। ऐसा आविष्कार किसी देश ने प्रस्तुत नही किया। वर्णमाला में भी संस्कृत सबसे आगे है। अक्षर-संस्कृत में ४७/ रूसी ३५/ फारसी ३१/ तुर्की २८/ अरबी २८/ स्पेनिश २७/ अंग्रेजी २६/ फ्रेच २५/ लैटिन २०| हिब्रू २०| बाल्टिक में १७ है।

अरबी, फारसी, पारसी, चीनी, जापानी, इंग्लिश शब्दो में संस्कृत (भारतीय) शब्दों की विद्यमानता के कुछ प्रमाण—

अरबी-हिन्दी, संस्कृत	फारसी-संस्कृत, हिन्दी	इंग्लिश-हिन्दी, संस्कृत
अल्लाह, ईलाही, इल्लाह—ईल्य	निहंग—निहंग, नग्न	न्यू—नूतन, नया
इशा—निशा	निहां—निहित	इयर्स—वर्ष
इक—एक—मेक		
आब—आप, पानी	नौको—नौको, सुन्दर	मेन—मानव
काफूर—कपूर, कपूर (कुरान मे है)	नीलोफर—नीलोत्पल	अपर—अपर, ऊपर
शगाल-श्रृगाल, सियार	नाम—नाम	स्वेट—स्वेद
शवीह—छवि	नर—नर	काऊ—गऊ
अफयून—अफीम	नेश्त—नष्ट	माऊस—मूषक
आशिकी—आसक्ति	दामाद—जामात, दामाद	शुगर—शकर
जात, जाति-ज्ञाति, जाति	शाम—शाम, सायं	ब्रेन—ब्रह्माण्ड
चिराग-चिर (आग) अग्नि	शीर—क्षीर	नोज-नाक, नासिका

तम्बूर—तम्बूरा	शारक—सारिका	कफ—कफ
नमाज—नमन	हलाहल—हलाहल	ग्लैंड—ग्रथी
तौहीन—हीनत्व	शगुन—शकुन	डेन्ट—दन्त
शक—शंका	शकर-शर्करा, सक्कर	स्टार—तारा
सन्दल—चन्दन	अगुस्त—अंगुली	डोअर-द्वार
वसअत-विस्तार,'विस्तृत	दस्त—हस्त	मंकी—मर्कट
इतरीफल—त्रिफला	अब्र—अभ्र	वाटर—वारि
इन्कार—नकार	जानू-जानु, घुटना	हार्ट—हृदय
इन्तकाल—अन्तकाल	पाए—पाद, पाव	एण्ड, अँन्ट—अन्त
मौत, फौत-मृत, मृत्यु	दंद—दन्त	सेंट—सन्त
मनशा—मनेच्छा	गदुम-गोधूम, गेहूं	डे—दिन
शामिलात-सम्मिलित	अस्प—अश्व	विडो—विधवा
तूतिया—तुथ्य	अश्क—अश्रु	नेवि—नाव
पिदर—पिता	चश्म—चक्षु	गो—गच्छ
मादर, अम्मी-माता माँ	आँख—अक्षि	माई-मम, माम
ईदगाह-इड्य. गेह	खर—खर, गधा	सन—सूनु, पुत्र
"मा"-मैं, मम, अहं, माम	चर्ख—चर्खा	मीडियम-मध्यम
न ना अव्यय- प्रत्यय नकार नही	कार-कार्य, कार	वार—प्रहार
नापाक ना,-राधितासि		
ना वीना न, मोक्षस्याकांक्षा	चर्म—चर्म	नो, नान-नतु,नही,नकार
ना जायज	जवां—जिह्वा	ओपियम-अफीम
"या" सम्बोधन	आमला—आंवला	टू—द्वौ, दो
या-रब	दर—द्वार	थ्री—त्री
हे-रब		
या-अल्लार या-माया	आगा-अग्रज, अगुआ	सिक्स्थ—शष्ठ
हे-अल्लाह हे-माया	सितारा—तारा	एट्थ, एट-अष्ट
या-कुन्देन्दु आदि	तुर्किस्तात-तुरगस्तान	नाइन-नव

अजान आह्वान

शाख—शाखा	अरवस्तान—अश्वस्तान	सेवन्थ—सांत
रशीद—रिषी	वादवान—वातवान	आइएम—अहम्
हरम—हर्म्य		
कुरान-"हुत"-मति हुत-अग्नि	साया—छाया	सन्—सुनु, सुत
सू १०४ हुत-मतु अमर कोप स्वर्ग वर्ग	गुम्वद—कुम्भज	ड्यू—देय

आ ४-५ श्लोक ५५
दोजख को आग हिरण्य रेता "हुत" भृग
सू. २ आ. ९४
तमन्नवुल "मीत" मृत्यु

पारसी-संस्कृत हिन्दी	चीनी—हिन्दी	जापानी—हिन्दी
अहुर मज्द—असुर मर्द	सनत्साइ—सन्सार	हीनिन-हीन अछूत।

चिश्ति—चित्त
दाता—छाता
थृता—त्राता
ज्नाता—ज्ञाता
दूरे दर्शता—दूर द्रष्टा
दाथ—देय
उश्ता—उचित

यूनान में सूर्य वंशी "हेलीविड" कहे जाते है, सस्कृत मे सूर्य का नाम "हेली" है। मैसूर में "हलेविद" प्रसिद्ध स्थान है।

आदि युग में विश्व भाषा संस्कृत थी, यह मानकर अंग्रेजों ने अग्रेज वच्चों को संस्कृत पढाने हेतु करीव दस वर्ष पहले इग्लैण्ड मे संस्कृत विद्यालय स्थापित किये है। मेवाडी रायपुर के भवानी शकर त्रिवेदी ने ४० वर्ष शोध कर के संस्कृत योरोपीया भाषाश्च ग्रथ मे सिद्ध किये है कि योरोपीय भाषा संस्कृत है । इस ग्रंथ पर ५०००/रु०, माघ पुरस्कार राजस्थान संस्कृत अकादमी ने दिया है।

अरबी एवं संस्कृत ज्ञाता अग्रिम शब्दों पर विचार करें—अमर कोष व्योम वर्ग श्लो० २ "वियत", कुरान सू० २४ आ० ३५ सू० २ आ० ११६. १७ नूर "स्समा" "वाति" वला" अर्ज" स्समा—"समाया" है, वियत-वाति याने आकाश। अम: भूमि वर्ग श्लो० २ क्षोणि 'उर्व्री" अर्ज याने पृथ्वी। अम. वारि. व. श्लो० ४ नीर क्षी—"राम्बु" सू० २२ आ० ५ "अम्ब" तत् सू० ५० आ० ८ मुबारकन फ "अम्ब" तना अम्बु-अम्ब याने पानी। आ० १६ वसेरुन याने बसा हूँ वास।.सू० २१' आ० २२—सफा पर्वत पर खड़े होकर मुहम्मद साहब ने सभा के लिये जनता को या "सवाहा" कहकर आवाज लगाये थे, सवाहा—सभा में साम्यता स्पष्ट है। सहाबा—सभासद।

सू० ५० आ० १६ नफ्सुह-प्राणवाहिनी। सू० ७५ आ०.२ नफ्सिल। अम० म. व. ६६ अथवस्नसा "नस"—"नफ्स"

अम० वि० व० १०१ नमस्थित—नमसित्त पूजित नम-ाज (मानस पूजा निराकार की)

अमर १०६ ईलित—वन्दना की गई धेद-ईल्य-कुरान. इलाह-इलाही। अमर. ११० ईडित्त—वन्दना किया गया। वन्दना किये जाने के स्थान का नाम ई(ड)द. गाह (गेह)

अजान—आव्हान

सू०.२ आ० १४० "अ" "अन्तुम" अ याने नहीं है, अभाव है, अन्त नहीं है। सू० २ आ० १ १८६ द अवत्तदाई याने द्वैत, भेद आदि।

संस्कृत एवं अरबी याम अर्थात एक प्रहर। ऐसे शब्द और भी हो सकते हैं।. उक्त तत्थ्य प्राचीन अपनत्व को प्रमाणित्त कर भ्रातृत्व वर्धन के लिये उपयोगी हो सकते है।

चीन जापान वर्मा शाम के बौद्ध स्वय की संस्कृति को भारतीय संस्कृति से मानते है। अशोक के बौद्ध प्रचारक लाइबेरिया, इस्कन्दरिया तक गए थे। विश्व मे बौद्ध धर्मावलम्बी दो सो करोड़ है। असीरिया का प्राचीन ज्ञान भारतीय ज्ञान के समान ही है। जापानी

शिन्टो (हिन्दो) मन्दिरों मे हिन्दू मूर्तियां विद्यमान हैं । नटेश्वर, लक्ष्मी, गणराज आज भी पूजित हैं। अफगान मे भीम की आराध्या गणेश मूर्ती मिली है इसका मन्दिर बनवाने में राष्ट्रपति ववरक कमाल का सहयोग है । अफगान की वामिया शैलमाला मे वारह हजार गुफाए हैं, इनमें मूर्तिया उत्कीर्ण है, एक पुरुष मूर्ति ८० एल., स्त्री की मूर्ति ५० एल., वालक की मूर्ति ५० एल. की है । (एक एल. पौने चार फुट लगभग) । कावुल मे संगमरमर की अश्वरथारुढ मानवाकृति सूर्यमूर्ति है। ऑस्ट्राकान मे हिन्दू मन्दिर थे। आरमेनियन सूर्योपासक थे । मध्य एशिया के भूगर्भ से नारद स्मृति ग्रथ एवं अन्य संस्कृत पाण्डुलिपि प्राप्त हुई है। राजस्थान पर्वतसर तहसील के खुड़ी भूगर्भ से मिले ताम्रपात्र एवं प्राचीन ईरानी ताम्रपात्रो मे समानता हैं। अजर वैजान मे भारतीय कमल वहुत प्रिय है, तथा नव वधू को काश्मीरी शाल भेंट देना दस्तूर है । अजर वैजान के प्रसिद्ध यज्ञ (अग्नि) कुण्ड को रूमी हरक्लस ने ई० ६२४ मे नष्ट किया था । वगदाद-वाकू मे अग्नि मन्दिर है। ई० ६२८ से ईरान मे इस्लाम का प्रवेश हुआ। पारसी धर्म ग्रंथ जेदा अवेस्ता में संस्कृत के शव्द कई हैं। पारसियो में तेतीस देवता है । यज्ञोपवीत जैसा संस्कार भी होता है। अखण्ड अग्नि कुण्ड पवित्र अग्नारी के नाम से पूजते है। अग्यारी-अग्नि ध्वनी साम्य स्पष्ट है । छटवी शती तक चीन में हिन्दू राज्य था । दक्षिण पूर्व चीन मे दरिण भारतीय मन्दिरों जैसे मन्दिर विद्यमान है। भगवान शिव को सारा एवं देवी ओ शिवाम्ब कहते थे । राज-परिवार के नाम नारायण, शिवदास, यशोदा आदि जैसे रहते थे, ई० ६१८ के वाद परिवर्तन होने लगा था । ऐसे अनेक स्थान है । पूर्व वर्णित महाराज सगर एवं रघु ने उस वाहरी क्षेत्र मे हजारो वर्ष पहले वैदिक प्रचार किया होगा । उनके वाद में प्रभावशाली सम्पर्क हीनता के कारण उस क्षेत्र मे वैदिक आस्थाए घटकर विकृत होने लगी हो तव हजारो वर्ष वाद उस क्षेत्र को महाराजा विक्रमादित्य ने

बौद्धिक धार्मिक रूप में संस्कारित करने का प्रयास अवश्य किया है। इस सत्यता का प्रमाण अरवी साहित्य मे प्राप्त है । मक्का स्थित मुक्तेश्वर मन्दिर विक्रमादित्य द्वारा स्थापित है, या पुनुरुद्धारित है। इस मूर्ति को कुछ वर्ष वाद पुनः स्थापित किये मुहम्मद साहब ने जो कावा के नाम से प्रसिद्ध है। हजरत मुहम्मद साहब से सदियों पहले से मक्का के देवस्थान पर "ओकाज" नामक वार्षिक मेला (यात्रा) समस्त अरेवियों का भरता था । इस समय खुले मंच पर काव्यपाठ और प्रवचन होता था। आम जनता से प्रशसित रचना पुरस्कृत की जाती एवं उत्ताम कृति को सुवर्ण थाल पर, एव द्वितीय रचना को चर्म पट्ट पर अंकित कर देवालय-सभागार मे लट्काते थे। ताकि सभी दर्शक पढ सके ।

इस्लाम के पूनरुद्धार मे तौहीद-जेहाद के दौर में मुहम्मद साहब ने ई० ६२० मई हिजरी ८ में मक्का पर चढाई किये तव हजरत मुहम्मद सा० के साथी हसन बिन साविक ने कावा में नष्ट किये जा रहे साहित्य में से पाच सुवर्ण (पट्ट) थाल एव सोलह चर्मपट्ट कही गुप्त सुरक्षित रखवा दिया था । जिन्हे साबिक के पोते ने खलीफा हारूं रशीद के दरवारी विद्वान अबू अमीर अब्दुज असमई के द्वारा खलीफा को सादर भेट मे देकर पुरस्कार मे वड़ी राशि पाया था । उक्त साहित्य को देख खलीफा हारू रशीद ने इस प्रकार का साहित्य खोज कर एकत्र करने का आदेश अबू अमीर को दिया । उक्त आदेशानुसार सग्रहित साहित्य टर्की के इस्तम्बूल स्थित राजकीय मकतबे सुल्तानिया नामक प्राचीन सग्रहालय में रक्षित है। ई० १७४२ मे टर्की के शासक सुल्तान सलीम के आदेश से हरीर नामक रेशमी वस्त्र के पृष्ठो पर सुवर्ण रेखा सज्जित "से अरुल ओकुल" नामक ग्रथ रूप मे वह साहित्य सकलित है इस ग्रथ के पृष्ठ २५७ पर ओकाज मे प्रथम पुरस्कृत रचना लवी विन अखतव की है । मुहम्मद साहब से २३०० वर्ष पहले याने ईसा से १८०० वर्ष पूर्व, याने ई० १९८६ से ३७०८ वर्ष

पहले की लवी शायर की वह रचना है । उक्त रचना में से तीन पंक्ति-(१) अया मुवारेकल अरज मुशैये नोहां मिनार "हिन्दे"-ऐ हिन्द की पुण्य भूमि तू धन्य है, ईश्वर ने अपना ज्ञान प्रकाश तुझ पर किया । (२) वहोवा आल "मुस्साम" वल" यजुर" मिनल्लाहे तन-जीलन । (३) व इसनैन हुमा "रिक" "अतर" नासेहीन का-अ-खुवातुन, ईश्वरीय ज्ञान प्रकाश चारो वेद हैं, इन को मानो अज्ञान से दूर रहोगे ।

काव्य पंक्तियों में चारों वेदों के नाम एवं "हिन्द" सम्वोधन स्पष्ट है । मु० पैगम्वर साहव से १६५ वर्ष पहले का अरवी शायर (कवि) प्रसिद्ध "ओकाज" आयोजन मे तीन मर्तवा प्रथम पुरस्कार विजेता "जिर्रहम विन तोई" की एक कविता जो स्वर्ण थाल पर अकित कावा भवन में टगी थी, का साराश है-भाग्यशाली हे वे लोग जो सम्राट विक्रमादित्य के शासन क्षेत्र मे हैं, जन्मे या वसे है, प्रजा के कल्याण में विक्रमादित्य कर्त्तव्यनिष्ठ, दयालु, चरित्रवान राजा था । "खुदा को भूले हुए हम अरव लोग विषय वासना मे डूबे थे, अत्या-चार, षडयंत्र, अनाचार, हत्या, अशान्ति एवं दुरावस्था के अन्धकार में भटक रहे थे, कि जैसे घोर अमावस की रात्रि मे हो, किन्तु शिक्षा का सुखद सूर्य प्रकाश उस नेक सम्राट विक्रमादित्य की कृपा का ही परिणाम है । हम विदेशी थे, किन्तु उसने हमारी उपेक्षा नही किया, अपने देश से विद्वान भेजा सत्य मार्ग एवं अपने धर्म का प्रचार कर-वाया उनके उपदेश से हम पुन. खुदा के अस्तित्व का अनुभव करने लगे, इत्यादि । सेअरुल ओकुल ग्रंथ के पृष्ठ २३५ पर संकलित अरवी शायर उमर विन-ए-हश्साम (हाकिम) मुहम्मद सा० के चचा की कविता में से तीन पंक्ति—(१) व अंहा लो लहा अजहू अरामीमन "महादेव" ओ-सच्चे मन से महादेव की सेवा करें तो आत्मा परमपद पाती है । (२) व सहवी के याम फीम कामिल हिन्दे यौमन-हे ईश्वर केवल एक दिन हिन्द मे निवास करवा दो, जहां मोक्ष मिलती है ।

(३) नजूम्रन अजा अत सुम्मा गबुल हिन्दू-हिन्द के विद्वानो की सगति शुभ कर्म देती है।

उपरोक्त वर्णन से विदेशों (अरब) में शिव की व्यापकता एवं भारतीय सम्बन्धों को प्राचीनता का प्रमाण स्पष्ट होता है । हिन्दू, हिन्द, हिन्दुत्व के प्रति उनमे हार्दिक श्रद्धा थी। किन्तु बाद मे विक्रमादित्य जैसा कोई राजा भारत मे नही हुआ जो अन्धकार मे बढते अरब को सम्हालता ।

मुहम्मद सा० से १६५ वर्ष पहले के कवि जिरहम बिन तोई की लेखनी एव हवशा के राजा नज्जाशी असमहा के दरबार में मु० सा० के अनुयायी-प्रचारक अबू तालिब के बेटे हजरत अली के भाई हजरत जाफर का बयान तथा हि० ९२५ मे शेख नफजूवी कृत परफ्यूम गार्डन में वर्णित जहालत एवं व्याभिचार की पराकाष्ठा इनका साराश हजरत जाफर के मुख्य शब्दों मे से—एक युग से हम असभ्यता और पथ भ्रष्टता के अन्धकार मे भटक रहे थे, एक ईश्वर को भूलकर सेकडो मूर्ति पूज रहे थे । मृत जीवों का मांस भी खाते थे । परस्त्री गमन, अत्याचार, चोरी, लूटमार दैनिक जीवन था, निर्बल को शक्तिवान वासना का शिकार वना लेता था, हिंसक पशु जैसा जीवन था, लेकिन मुहम्मद साहब ने हमे सही मार्ग दिखलाया, इत्यादि । कुरान सू० ४ आ० २२ से २४ मे मौसी, सास, बुआ, माँ, धाय मा, बहन, दूध बहन, बहू, वेटी, भतीजी, भांजी, पोती और नातिन को पत्नी हराम है। अव तक जो हो चुका सो हो चुका। इससे प्रमाणित होता है कि उस युग मे ऐसा अनाचार अरव मे था। इसलिए मु० सा० ने उक्त नैतिक नियम लगाए है ।

अरव मे मनघड़ंत देवता बनाए जा रहे थे, पूजा का तरीका भी वेढंगा एव घिनौना था। लात मनात उज्जा हुबल नाईला आदि नाम से देवी पूजा थी कबीला कल्ब के लोग वद्द की मूर्ति पूजते थे। कबीला हुजैल सुवाअ की मूर्ति पूजता था, इसका मन्दिर मदीना के

निकट यंवूअ ग्राम के पास वन् लह्यान कवीले की व्यवस्था मे था। मजह्ज एवं जुरश कवीला यग्रूस नामक मूर्ति पूजता था। कवीला खैवान यऊक की मूर्ति, एवं नश्र की मूर्ति हिमयर कवीला पूजता था। किताव–उल–असनाम में ऐसे वर्णन है।

उस वख्त पूरे अरब में फिर से जहालत का दौर छाया था। ऐसे वख्त में रहनुमाई के लिये मक्का के प्रसिद्ध कुरैशी [आधुनिक शोध-कर्ता कुरैश को कौरव मानते है। पहले वर्णन हुआ है कि महाभारत युद्ध से दुखी एवं क्षुब्ध कौरव, पाण्डव दूरातिदूर जा वसे थे तथा महाभारत युद्ध के पहले भी ययाती के वशज विदेशो मे जा वसे हैं। इसी आधार से सत्य सम्भव है] कवीले मे ई० ५६६ नवम्वर ११ को जन्मे मुहम्मद साहव की हत्या करने मक्का क्षेत्र के कवीले सामुहिक रूप से तैयार हुए ताकि कोई एक कवीले को अपराधी न माने। खून खरावे से वचने के लिये रात मे अपने विस्तर पर हजरत अली को सुलाकर मुहम्मद सा० घर से रवाना हो कर राह मे अवू वक्र साथी को साथ ले "गार" (गुफा) ए–सूर मे तीन दिन छुपे रहे, हमलावर वहां तक भी खोज कर नाकाम लौट गये। आप चौथे दिन गुफा से निकल कर उत्तर मे जाने के लिये दक्षिण होते हुये घुमाव देकर लम्वा रास्ता तय करके मदीना पहुँचे, वहा आपका स्वागत हुआ।

मक्का का व्यापारी काफिला ५०,००० अशर्फी लिये ३०–४० व्यक्तियो के संरक्षण मे शाम से मक्का लौट रहा था, राह मे मदीना से ८० मील दूर वद्र नामक स्थान पर हिफाजत के लिये १,००० कुरैश मक्का से आ पहुँचे थे। मुहम्मद सा० ने अपने चुने हुए शस्त्र सज्ज ३१३ साथियो को साथ ले वद्र मे काफिले पर सफल आक्रमण किये। प्राप्त माल असवाव अशर्फी आदि का वटवारा हुआ जो इस्लाम की सेवा मे रहा, शानो शौकत मे नही।

वद्र की पराजय का वदला लेने आये कुरैशी लड़ाको से मदीना से ४ मील उहूद पर मुहम्मद सा. को युद्ध लड़ना पड़ा, इस युद्ध मे

मुहम्मद सा. मूर्छित हो गये थे। बद्र युद्ध में मारे गये अपने पिता के प्रतिशोध के लिये अबू सूफियान की पत्नी हिन्दा उहूद युद्ध में पहुँची थी, एवं पिता के मारने वाले हजरत अमीर हमजा के मारे जाने पर उनका कलेजा निकाल कर, चबाकर खुद की प्रतिज्ञा पूरी की थी। ऐसी महिलाए और भी थी। इससे ज्ञान होता है कि उस समय अरब मे महिला मानस क्रूर हिंसक भी होता था। एक समय मुहम्मद साहब के घर आयोजित (वलीमा) भोज मे कुछ व्यक्ति महिलाओ को देखे जा रहे थे, ऐसे अभद्र कारणोंवश मुहम्मद सा. ने पर्दे का आदेश दिया। परदा प्रथा दृढ हो गई। मुहम्मद सा. खन्दक (मदीना) और खैबर का युद्ध सफल किये। मुहम्मद सा. का ध्वज चिन्ह "गरुड" बतलाते है।

प्रभास मे विनाश से बचे यादव परिवार भी दूर जा बसे तो आश्चर्य नही। यादव—यदु को यहूद-ज्यू कहना सम्भव है। प्रभास क्षेत्र मे मूसल से उत्पन्न ऐरा शस्त्र से परस्पर सहार के विनाश से व्यथित शेष यादव भी दूरस्थ जा बसे हो एव क्रूर घटनाएं भूलने अपना पूर्व इतिहास जलाकर लुप्त किये हो। मूसल युद्ध सम्वत् एवं यहूदी सम्वत् मे पूर्ण समानता इतिहासज्ञ ओक ने सिद्ध की है। ईसा पूर्व यहूदी ही धर्म नेता थे, तौरात ग्रथ था, दाऊद द्वारा निर्मित "बैतुल मकदिस" तीर्थ केन्द्र था, यहूद, मुसलमान, ईसाई तीनो उसे मानते थे। कौरव—यादव बैर महाभारत समय से प्रसिद्ध है। पहले 'बैतुल मुकद्दिस की ओर मुंह करके नमाज पढी जाती थी।

पहले येरुसलम की मस्जिदे अक्सा को बैतुल मुकद्दस का दर्जा था, किन्तु हजरत मुहम्मद स. अ. ने मदीना पहुँचने बाद ई० ६२४ फरवरी में "काबा" को बैतुल मुकद्दस किबले का दर्जा दिये तब से काबा शरीफ मस्जिदे हराम की ओर मुंह करके नमाज पढ़ने लगे है। मुहम्मद सा. के हाथो पुनः स्थापित बाबा मुक्तेश्वर की अनगढ मूर्ति सगे अस्वद के मन्दिर को शिर्क से मुक्त करने दस हजार जानिसार सशस्त्र बहादुरों को साथ ले ई० ६३० मई हि० ८ को मुहम्मद सा.

मक्का जा पहुँचे, इन की सेना का ध्वज सफेद था। सेना के एक भाग को दूसरे मार्ग से खालिद बिन वलीद के नेतृत्व मे मक्का मे भेजे और आदेश दिये कि किसी पर आक्रमण न किया जाय, किन्तु आक्रामक से जरूर लड़ा जाय। सेना के शेष भाग का नेतृत्व खुद मुहम्मद सा. ने किया, मुहम्मद साहब ऊँट पर सवार, बचाव के लिये सर पर मगफर (शिरस्त्राण) पहन उस पर काली पगड़ी बान्धे मक्का मे प्रवेश करते समय ईश वन्दना मे तन्मय हो इतने झुके जा रहे थे कि आपका मुँह ऊँट की पीठ को छू रहा था। इनका विरोध किसी ने नही किया। किन्तु दूसरे दल के तीन एव विपक्ष के तेरह व्यक्ति मारे गए। कावा परिसर से ३६० मूर्ति एव चित्रादि नष्ट करवा दिए, किन्तु बावा मुक्तेश्वर को अपमानित नही किया गया। कावा के इस पवित्र स्थल को मजिदे हराम कहा जाता है। सूरा० २/ आ० १४६-५०-६६ मे मस्जिदिल हरामि लिखा है। मु० सा० ने कावा की वामावर्त परिक्रमा किये। नमाज अदा किये, तकवीर अल्लाहो अकवर कहे। कुर्वानी का मांस कावा की दीवार एवं मूर्तियो पर जहा तहा लगा देते थे, मूर्तियो पर शहद चढाते थे उसे मक्खियां चाट जाती तो दर्शक वहुत प्रसन्न होते थे उसे मु० सा० ने वन्द करवाए। कावा शरीफ की सात परिक्रमा करना जरूरी है, किन्तु नग्न होकर परिक्रमा करने की मनाही किए। कावा मे घी का अखण्ड दीपक रहता है, उसका दर्शन पवित्र माना जाता है। गगाजल की तरह आवे-जम-जम का महत्व है। "मुस्लिम सन्त हजरत जुनैद ने हज की वास्तविकता व्यक्त की है कि गुनाहो से दूर हो कर अच्छाइया धारण करना, ईश्वर मे लीन होकर उसे हर जगह देखना, मन के विकार एव ख्वाहिशे कुर्बान करना"। मक्का की सीमा मे हिसा, शिकार या हिसा की चर्चा भी गुनाह है। यह अहिंसा का नियम मुहम्मद-साहव के पहले से प्रचलित है। उस सीमा मे अपराधी या जानी दुश्मन भी रक्षित रहता है। जिस पवित्र तीर्थ मे शिकार-हिंसा की कल्पना भी गुनाह

है, पाप है, उसे क्षेत्र में कुर्वानी को जायज फर्ज का महत्व विरोधाभास है। कुर्वानी के ऊँट को काबा की ओर खड़ा करके उसके हृदय में भाला मारते है। खून बह जाने पर ऊँट गिर पडता है, तब जिवह करते है। ऊँट व अन्य पशु पक्षी भी अल्लाह की कायनात उम्मत है। भारत में बलि (कुर्बानी) तांत्रिक विधी मे विशेष प्रयोजन पर हुई है; किन्तु इसका विरोध भी निरन्तर होता रहा है। अधिकांश हवन बलि रहित सात्विक ही हुए है। हजयात्री ने पूर्ण सात्विक सन्यस्त भाव भाषा भूषा मे रहना आवश्यक है, इहराम मे केवल एक तहमत लपेटने को, एक ओढ़ने को चाहिए, इहराम मे श्रृगार करना भी मना है। मुहम्मद सा० ने इस वक्त के पहले की तमाम दुश्मनी, खून का बदला, ब्याज खोरी समाप्त घोषित किये। हि० ८ मे ही बारह हजार जांबाज वीरों को साथ ले हवाजिन और सफीक कबीलों का दमन करने बढ़े हुनैन और ताईफ पर युद्ध हुआ, रूम की सीरिया सीमा पर पहले तीन हजार मुसलमा सैनिक भेजे गये थे, रूमी सेना पर विजय पाये तब रूमी बड़ी सेना आई, इसलिये तीस हजार मुसलमा सैनिक साथ ले मुहम्मद सा० खुद मुकाबले पर गए, लेकिन रूमी सेना बगैर लडे ही लौट गई। मुहम्मद सा० के नेतृत्व मे २७ युद्ध लड़े गए इनके साथी सरदारो के नेतृत्व में ३८ युद्ध लड़े गए। कुल ६५ युद्ध लड़ेगऐ थे हि० ९ से काबा मे शिर्क प्रवेश और मूर्ति पूजा बन्द करवाए। किन्तु अरब में इस्लाम प्रचार करने बाद इस्लाम प्रचार के लिये मुहम्मद सा० ने हिन्दुस्तान की ओर बढने का ख्याल तक भी कभी नही किये। कुरान में ईश्वर के उल्लेख समय ८५० मर्तबा ज्ञान शब्द का प्रयोग हुआ है अतः वह सर्वज्ञ अल्लाह और पैगम्बर भारत से अनजान नही थे।

इस्लामी धर्मग्रथ तौरात, जबूर, इंजील का समर्थन एवं अरब के अनेक राज्यो मे तौहीद–एकेश्वर का प्रचार मुहम्मद सा० ने किया है किन्तु भारतीय, हिन्दू, वेद, आर्य आदि किसी का भी उल्लेख मुहम्मद

सा० या कुरान ने ६२३६ आयतों के ७६५६६ शब्दो के २८८७०० अक्षरों मे एक वार भी कही नही किया है, क्योकि तौहीद का जन्मदाता भारत है, तथा भारतीय मूर्ती पूजा अरव जैसी विकृत नही थी। अकवा में ७२ लोग इस्लाम स्वीकारे तव हुई शर्त मे चोरी, व्यभिचार, वाल-हत्या मना किए है। जीवित लड़की को दफनाना मना करवाए। रोमन कैथलिक सम्प्रदाय मे अनेक लड़कियां अनाथाश्रम मे डाली जाती है। स्त्रियो एव गुलामो को सम्मान दिलवाए। हि० ११ सफर. १८ या १६ को मुहम्मद सा० का स्वास्थ्य विगडा, इनकी नौ बीवी थी, किन्तु घर मे जो अशर्फियां थी वे दान करवा दिये। रवि उल अव्वल १२ को इनका देहान्त हुआ। इनको पुत्र नही था। पुत्री फातमा एवं हसन, हुसेन यह दो नाती थे। किन्तु हजरत मुहम्मद सा० के देहान्त के कुछ वर्ष वाद हजरत उमर, हजरत उस्मान एवं हजरत अली की हत्या कर दी गई तथा पचास वर्ष वाद मुहम्मद सा० के नाती हजरत हसन को वीवी ने जहर दे के मार डाला। दूसरे नाती हजरत हुसेन के ७२ व्यक्तियो के पारिवारिक काफिले को फरात नदी के कर्वला मैदान पर यजीदी सेना ने वेरहमी से मौत के घाट उतार दिया। हजरत हुसेन अपने छह महिने के शिशु को गोद मे ले यजीदियों से केवल वच्चे के लिए नम्रता से आगे वढकर पानी मागे लेकिन यजीदी शिम्र ने दूधमुंहे वच्चे को तीर मार दिया, नन्हा खिलौना, छौना चीखा, छटपटाया दम तोड़ दिया। उफ वाप की गोद मे नन्हे वेटे की मौत हो गई। लाशों को घोड़ो से रौंदा गया। औरतों को वन्दी वनाकर कूफा के वाजार मे वेपर्दा घुमाया गया। उक्त हृदय द्रावक करुण घटना से यजीद से वदला लेने मुस्लिम समाज में रोष फैला जिसे कुचलने यजीदी सेना ने मक्का के वदले पुराने वैतुल मुकद्दस को फिर से कावा का दर्जा दिलाने संगे अस्वद के मुकावले "सगे-याकूव" स्थापित किया, किन्तु येरुशेसलम को पुराना महत्व नही मिला।

अरब में जहालत के कारण मामूली बात पर तलवार चल जाती खूनी बदला चलते रहता, सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक व्यवस्थाएँ टूट गई थी। इसलिए कुरान में सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक, धार्मिक व्यवस्थाएँ दी गई है, क्योंकि तत्कालीन अरेबिया जैसा दूषित्त वातावरण कही नही था। अरब में तलवार के बल पर इस्लाम का जो लाभ हुआ उसके विपरीत उस तलवार ने भारत में द्वेष-विरोध की फसल ही बोई हैं। जिसका फल साम्प्रदायिकता है। ई० ९१२ मे अजाइबुल हिन्द ग्रन्थ में बुजर्ग बिन शहरयार ने लिखा है कि ई० ९९० में सीलोन के राजा ने इस्लाम स्वीकारा था। ई० ८१५ के करीब दक्षिण भारत के कदांगनूर के राजा ने इस्लाम स्वीकारा तथा अपने राज्य में अरबी व्यापारियों के सद्कार्य मे सहयोग देने का आदेश जारी किया था। ई० १०९४ के बाद गुजरात के सिद्धराज जयसिंह के मंत्री तारमल के पुत्र ने एवं पूरे परिवार ने इस्लाम धर्म स्वीकारा था। तारमल के पुत्र फखरुद्दीन की दर्गाह, प्रसिद्ध गलियाकोट में है। यह धर्म परिवर्तन सद्भाव से हुआ था, तलवार के खौफ से नहीं हुआ। मुहम्मद साहब की मृत्यु बाद ह. अबू बक्र ने जैद अंसारी को कुरान संकलित कर लिपि बद्ध करने को कहा। किसी से सुनी हुई या लिखी हुई पंक्तियों को दो साक्ष द्वारा सही स्वीकारने पर सत्य माना जाय, यह तय हुआ था। तरीका सही था लेकिन आयतें देने वाले और उनके साक्षीदार साथी सभी सही थे यह सन्देहात्मक है क्योंकि मुहम्मद साहब के जीवित समय और उनकी मृत्यु बाद भी उनके शत्रु सक्रिय रहे है। सू० ९० बलदि० ९१ शम्सी, ९२ लैली, ९३ जुहा मे अरेबियों के समक्ष सौगन्ध शपथ ले ले कर मुहम्मद साहब द्वारा खुद को नबी-पैगम्बर सिद्ध करना पड़ा है। मुहम्मद साहब के बाद अबू बक्र को भी युद्ध लड़ना पड़ा था। कुरान की हस्तलिखित प्रथम प्रतियां मक्का, मदीना, दमिश्क, मिश्र आदि एवं चर्म पट्ट पर लिखित लन्दन मे रक्षित है उनसे भारतीय

कुरान का मिलान कर सत्यासत्य प्रगट-होना चाहिए। औरंगजेब द्वारा भी कुरान को दूषित किये जाने की बात है। इसलिए विचारणीय तत्थ्य है। भारत मे आए अरवी आक्रामक, इस्लाम प्रचारक नही थे, इस्लाम (जेहाद) प्रचार की आडमे धन और शासन के ही लालची थे। हजारो भारतीयो ने प्राणभय से ही इस्लाम स्वीकारा लेकिन सौहार्ध नही पनपा। वही इस्लाम तरवार के वगैर आया होता तो भारत में उसका विरोध न हुआ होता, अनेक धर्मो मे वह भी साथी रहता। क्योकि तौहीद (एकेश्वर) का वास्तविक मूल सिद्धान्त भारतीय वेद से उत्पन्न एकेश्वर का ही रूप है, भेद नही है, भेद केवल भाशा और व्यवस्था का है। इस्लाम मे जिज्ञासा एवं शका को स्थान नही हैं जवकि भारतीय पंथ समाधानकारी है।

ऋगवेद ६।३६।४ एको विश्वस्य भुवनस्य राजा। १।१६४।४६ एकं सद्विप्रा वहुधा वदन्ति। अथर्ववेद १३।५।७ स एष एक एक बृदेक एव। २।२।१ एक एव नमस्यो विक्ष्वीड्य.। यजुर्वेद ३२।८ सऽ ओत. प्रोतश्च विभू प्रजासु, इन सभी का सारांश है— ईश्वर एक है। उसे विद्वान कई नाम से पूजते है, वही वन्दना, अचर्ना के योग्य है। ईश्वर के लिए इस्लामी "इन्लाह" शव्द सम्वोधन वेद मे निहित है, वेद मे "ईल्य" नाम ईश्वर का है। इस्लाम मे "इलाह" है, भाषा भेद मे अल, इलाह, अल्लाह सम्वोधन प्रचलित है, किन्तु ईश्वर के अनेक नाम हैं। (१) अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुवल हुलस्मा उल हुस्ना—केवल अल्लाह ही अर्चनीय है, सभी अच्छे नाम उसी के लिए है। (२) कुलिद्ऊ अल्लह अविद्उल रहमान अय्यम्मा तद्ऊ अफल हुलस्मा उल हुस्ना—अल्लाह कहो या रहमान कहो सव अच्छे नाम उसी के है। (३) व लिल्ल हिलस्मा उल्हुस्ना फाद्ऊ हुविहा व जरु अल्लजीन मुल्हिदून फी अस्माइही-सभी अच्छे नाम अल्लाह के हैं। इन्नल्लाह ला यहुव्वुल जालिमीन (मुक्सिदीन) ईश्वर-अल्लाह अत्याचारियो से खुश नहीं। इन्नलिल्लाहे व इन्ना

इलैहे राजे ऊन-सारा संसार जिससे पैदा हुआ है, उसी में समा जाएगा। यही आशय श्रीमद् भागवत् ११।६।२१ के श्लोक में है। यथोर्ण नाभिर्हृदयादूर्णा—मकडी अपने जाल को समेट लेती है। वैसे ही अन्य अनेक ग्रन्थो में भी है। अल्खल्कु इयालु अल्लाहि फा हब्बु-ल्खल्क इला अल्लाहि मन हसन इला इयालिही—सब एक ही ईश्वर का कुटुम्ब है। ईश्वर के लिए सभी के साथ अच्छा व्यवहार करो जैसा अपने ही कुटुम्ब से करते हो। सू. २२ आ. ४७ मानव के १००० वर्ष अल्लाह का १ दिन है, इसी तरह का विस्तृत वर्णन पुराणो मे सृष्टि काल में लिखा है।

आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्– अपनी आत्मा के समान दूसरो से अच्छा व्यवहार करो। कुरान की कुछ पंक्ति पहला अक सूरे का, दूसरा अंक आयत का है—४।१ सब एक ही पिता की सन्तान है। २।२५६ दीन में जबराई नही। ५।३३ फसाद करना गुनाह है। ५।३२—१७-३३ नाहक कत्ल मत करो। ५।६०-६१ शराब, जुआ हराम है, शैतानी काम है। ६।१०६ दूसरे के उपास्य को बुरा मत कहो। स् ६ आ. १०७ शिर्कवालों को उनके हाल पर छोड दो, उनका निगहवां तुमको अल्लाह ने नही बनाया है। ६।१५८ विश्वास-घात अल्लाह को पसन्द नही। १७।३२ व्यभिचार बुरा कर्म है। ६।१२६ अल्लाह जिसे चाहता है, उसे इस्लाम देता है। वर्ना गुमराह कर देता है। १०।६६-१०० किसी को जबरन मुसलमान नही बनाया जा सकता है। ३८।८ से १० तक अल्लाह ने जिनकी अक्ल कैद कर ली है उनको सही राह नही सूझेगी। अल्लाह के हुक्म के बगैर कोई जीव ईमान नहीं ला सकता है। तेरा रब चाहता तो धरती के सब लोग ईमान ले आते, क्या तू विवश करेगा कि ये ईमानवाले हो जाएं। मुहम्मद सा. ने सूरा १०६ आयत १ से ६ में फर्माया है लकुम दिनुकुम वलिय दीनि तुम्हे तुम्हारा, मुझे मेरा धर्म मुबारक है। मूल तत्व अल्लाह तो एक ही है लेकिन सू. २२ आ. ६७ हर तबके के

लिए शरीअत (धार्मिक तरीके) अलग-अलग बताये गए हैं । इन्हे फसाद कहना मूल तत्व को ही गलत कहना हो जायगा। यह आयत भी विचारणीय है। सू. ६० आ. ८-६, सू. ३ आ. २८ का साराश है कि शिर्क-मुश्रिक काफिर है। स्पष्टतः हिन्दू को काफिर नही लिखा हैं। विधर्मी तुम से सद्भावना रखे तो तुम भी सद्भाव रखो। फसाद मत करो।

इसी आशय का स्पष्ट समर्थन लखनवी मौलाना मुहम्मद ओवैस शेखुल् तफसीर दारुल उलूम नखतुल् उलमा की तहरीर में है, तथा अवुल हसन नदवी एव काजी हाफिज मुहम्मद सिद्दीककारी मुफ्ती विद्वान भी इसके समर्थक हैं । सू० २ आ०, ५१ "यहूदी और ईसाई" से दूर रहो। भारतीय धर्म के विरुद्ध कुरान मे उल्लेख कही नही हैं।

मुशरिक तो हिन्दू भी है, लेकिन मुहम्मद साहव ने केवल अरव के ही मुशरिकों को सुधारने की वात कही है। सू०, २ आ०, १६०-६१-६३ सू० ४२ आ० ७-८ मे है कि सीमा मत लाघो, कावा मे युद्ध मत करो, दूसरे मुशरिक भले ही इस्लाम ना स्वीकारे, लेकिन अरव के मुशरिक या तो इस्लाम स्वीकार ले अन्यथा युद्ध करे।

सू० १४, आ० ४ कुरान अरवी भाषा मे इसलिये उतरा है कि अरवी लोग सही राह पा सके । यह सुस्पष्टता सिद्ध करती हैं कि मुहम्मद सा० भ्रष्ट अरेवियो के लिये नवी थे। मुहम्मद सा० ने अपने अन्त समय में स्पष्ट कहे हैं कि अरवी एव अजमी याने गैर अरव मे कोई भेद नही है, सभी आदम की औलाद हैं।

अजमी सम्वोधन ईरान के लिये भी है, भारत का प्राचीन नाम अजनाभ है। उस युग मे ईरान-आर्यन हिन्दू राज्य था, कुरान मे कई जगह अल्लाह को सर्वज्ञ लिखा है । सू० १३, आ० ६ आलिमुल् गैली ऐसा वह सर्वज्ञ अल्लाह भारत एव हिन्दुत्व से अनजान नही था, एव भारत या हिन्दुत्व पर प्रहार करने का आशय कुरान मे कही भी नही है । इससे नि सन्देह सत्य सिद्ध होता है कि सत्तालोभी काजी

मुल्ला एवं बादशाहों ने अपढ, गरीब अरेबियों को फीसबीलुल्लाह-जेहाद के नाम पर युद्ध मे झोककर क्रूर अत्याचार कर आदम की औलाद भाई-भाई मे द्वेष का घातक जहर फैलाए है, बल्कि कुरानी आदेश के विरुद्ध चलकर सीमा लाघते रहे, फसाद करते रहे । सू० २२, आ० ३७ कुर्बानी का मास अल्लाह तक नही पहुँचता है । तक़वा याने हार्दिक समर्पण पहुँचता है । इसका स्पष्ट आशय है, कुबानी नही करना, खुद को उसमें अर्पित करना है । सू २ आ० १९६ कुर्बानी न दे सके तो इसके वदले मे दस रोजे रखना चाहिये अर्थात कुर्बानी सख्त जरूरी नही है । सू० २२, आ० ६७ गाय जिब्रह की परीक्षा मूसा के समय की है, मुहम्मद साहब के समय की नही है ।

सू० १०, आ० ३७ कुरान पुराने धर्म ग्रंथो का सार है (जबूर, तौरात, इंजील, बाइबिल, सहीफे) उनका समर्थन करता है । सू० ३, आ० १८ नूह आदि पैगम्बरों की किताबो मे भेद नही है । सू० २६, आ० ४५ अल्लाह ने जो ज्ञान हमे और तुम्हे दिया है, उसे हम मानते हे, क्योकि सबका अल्लाह एक है । इजील—सभी ईश्वरीय ग्रथ मानवोपयोगी है ।

उपरोक्त कुरानी उपदेशात्मक आयतो जैसी आयतें कुरान मे कई है, किन्तु इनसे भी अधिक उन्नत आध्यात्मिक नैतिकता सद् आचरण एकात्मबोध एव एकेश्वर भारत में हजारो वर्ष पहले से आत्मसात है । इस्लाम मे पुण्यात्मा का अन्तिम स्थान जन्नत है । किन्तु हिन्दू मे अन्तिम स्थान मोक्ष है । दोनो ही प्रेतयोनि और पुनर्जन्म मानते हैं । इस्लाम मे पांच जिन्न एवं जिब्राइल, इजराइल, मीकाइल, दरदाइल, इस्लाइम, इश्राफील, किलकाइल, तनकफील, महकाइल, जुहराइल, असवाकील, इतराइल, दौराइल आदि फरिश्ते मवक्किल है । चान्द्रा-यण वृत्त-उपवास की तरह रोजा रखते है । रमजान के अलावा भी रोजा रखा जाता है । फूल डोल, गणपति, दुर्गा आदि की स्थापना और शोभायात्रा की तरह मुस्लिम बन्धु ताजिये बैठाते है, जुलूस

निकालते हैं, दुल-दुल घोड़ा (पुतला) सजाया हुआ साथ रखते हैं। मोहोरम मे कतल की रात मे शिया मुसलमां आटे के पुतले मे गुड का शीरा भर उमे वाण या छुरी से बीन्धकर याद ताजा करते है, सैकडो मजारों पर मनौती मानते हैं, सिजदा करते हैं-फूल, चादर, सन्दल, लोवान (धूप), दीपक, इत्र, शिर्नी (नैवेद्य-प्रसाद) चढ़ाते है। कई जगह महमूद गजनवी के भान्जे गाजी मिया के नाम की छडी पूजते हैं। कुछ स्थानो पर ब्राह्मण भी मुजावर है। चेहलुम (सृतक भोज) ग्यारवी, शरीफ, वारा वफात, शव-ए-वरात पर नया जल घट भर कर उस पर पक्वान्न मृतक की रुचिकर वस्तु धर कर फातेहा याने मृतात्माओ के प्रति श्राद्ध की तरह भोजन योग्य वस्तुएं अर्पित कर परस्पर भोजन करवाते हैं। मृत्यु समय गीता आदि की तरह सूर-ए-यासीन सुनाते हैं। मृत्यु के वाद भी सूर-ए-यासीन पढते हैं। सिज्जीन ग्रथ मे पाप एवं जिल्लियन ग्रथ मे पुण्य लिखा जाता है। चन्द्रग्रहण मे नमाज-ए-खुसूफ पढते है। सूर्यग्रहण मे नमाज-ए-कुसुफ पढते हैं। स्वर्ग, नर्क एवं चौदह लोक भी मान्य है। धार्मिक कथाओं का चलन मीलाद-मौलूद नाम से है। खोजा पथ मे मुहम्मद साहव को व्रह्मा एवं हजरत अली को विष्णु का अश मानते है। हिन्दुओ में मांगलिक कार्यों मे हरे रग के तोरण मण्डप आवश्यक होते है। प्राय. आम के पत्तो के तोरण वन्दन वार बनाए जाते हैं। नीम-पत्र भी प्रचलित है। विभिन्न ताजा पत्तो के मण्डप वनाते है। केले के स्तम्भ भी लगाते है। कमल एवं केले के पत्ते पर भोजन करना उत्तम मानते है। नववधू को हरी साड़ी, हरी चूडी पहनाते हैं। इसी तरह इस्लामी ध्वज हरे रग का है। एवं आर्य ध्वज की तरह लम्ब-त्रिकोण आकार का होता है। विवाह समय तेल, हल्दी, कलाई पर लाल डोरा (रक्षासूत्र) वाँधते है। पास मे कटार रखते है आखो मे काजल एवं कण्ठ पर चन्दन लगाते है। (शिव ने कण्ठ मे विष धर लिया था, तथा वर वधू ने शीतल शब्दो का अव से व्यवहार करना

चाहिए।) मांगलिक रंग के वस्त्रों का उपयोग होता है । ताम्बूल (पानबीड़ा) का भी चलन है, महावर की तरह मेंहदी लगाने का रिवाज है । दूल्हे के साथ विनायक की तरह शहवाला रहता है। भारतीय वचन बद्धता तीन वार कहना द्रढ निश्चय का द्योतक है, इसी तरह मुस्लिम निकाह में वर-वधू की तीन बार मंजूरी एवं तलाक में तीन बार तलाक कहना निश्चयात्मक है।

उपरोक्त कुछ तत्थ्य इस्लाम और हिन्दू सम्प्रदाय मे साम्यता सिद्ध करते है। रोमन कैथलिक चर्चों में माँ मरियम की गोद मे शिशु ईशु की मूर्ति एवं इसाई सन्तो की मूर्ति रहती है। इन पर जल प्रक्षेप, पुष्प-धूप, दीप, घंटा, घड़ियाल बजाकर अर्चना करते है। ग्रीक चर्च एकोन की मूर्ति को सजाकर शोभा यात्रा निकालते है। तिब्बतीय बौद्ध मठो एवं रोमन कैथलिक चर्चों के अनेक रिवाजों में अधिक साम्यता है।

कुरान में वर्णित ईश्वरीय व्यापकता स्वर्ग का सौन्दर्य, नर्क की भयानक यातना एवं जीवन चर्चा के वर्णन से अत्यधिक प्रभावी वर्णन भारतीय अनेक धर्म ग्रथो में वर्णित है। स्वर्ग मे अनेक ऐश्वर्य तथा नर्क में पापात्मा के लिए विविध क्रूरतम घृणित यातनाओं का वर्णन गरुड़ पुराण में विशेष है। ईश्वर पाप, पुण्य, स्वर्ग, नर्क, सुख, दुख, एवं परिवार की कड़ियो की जंजीर से मानव को बान्धने वाला व्यक्ति महान था, अन्यथा ससार का सर्वोच्च खूँखार खतरनाक प्राणी यथासम्भव मानव ही होता। मानव यूं तो आज भी कम खत-रनाक नही है। जानवर भी अपनी सीमा का पालन करता है, लेकिन इन्सान खूँख्वार, हैवानी और शैतानी फितरत हर जगह देखी जा सकती है।

विश्व के वड़े मज़हब एशिया में उत्पन्न हुए है। इनका मूल स्थान भारत माना जाता है। अल्लाहो-अकबर, अल्लाह याने ईश्वर, अकबर याने महान, ईश्वर-महान याने 'महादेव" का रुपान्तर हुआ । चीना

लाओत्सी (ताओ) एवं वैदिक धर्म में काफी समानता है । पारसी ग्रथ जेदा अवेस्ता मे है कि मजदओ सखारे मैरस्तो- एक ईश्वर को भजो । यजुर्वेद ३२/८ सऽओतः प्रोतश्च विभु. । इंजील-दी लाइट दैट लाइटेथ एवरी मेन । कुरान-अल्लाहो नूरुस्समा वातिवल अर्ज, तीनों का एक ही अर्थ है कि ईश्वर सर्वव्यापी है । तथा— सर्गाणामा दिरन्तश्च । इंजील-आइ एम द फर्स्ट एण्ड द लास्ट । कुरान हुवल अव्वल हुवल आखिर । तीनो का अर्थ है कि ससार का आदि अन्त केवल ईश्वर है । गीता-अहं आत्मा गुडाकेश । इंजील-आई एण्ड माई फादर आर वन । कुरान-सू० २, आ० १५२-१८६ अफलातू वसेरुन । तीनों का अर्थ है -आत्मा-परमात्मा मे अभिन्नता । वेद-अग्ने नय सुपथा । कुरान-एहदेनस सिरातल मुस्तकीम । दोनों का अर्थ हैं हे ईश्वर अज्ञानरूपी अन्धकार मे ज्ञानरूपी मार्ग दिखा । गीता-या निशा सर्व भूतानां तस्य जागर्ति संयमी । कुरान-सू० ५१. आ० १७ दोनों का आशय है कि रात्री के एकान्त मे संयमी लोग ईश्वरोपासना करते है । गीता अ० ६, श्लो० २६ एवं कुरान सू० २, आ० १५२ दोनो का मतलव है-जो मुझे दिल से याद करते है (भजते हैं) उन्हे मैं नही भूलता । कुरान-सूरा, २, आ० १८६-मुझे चाहने वाले की पुकार मैं सुनता हूं । भगवत्-दासानामनुदासोऽहम् । मराठी पंक्ति-त्यज भक्ता साठी लाज जगि दास होउन आलो । उदाहरणार्थ-संत सखु, गोरा कुम्हार, नरसी मेहता, नानक तथा अनेक है । चीनी ग्रथ ताओ-तेह-किंग में लिखा है ईश्वर सर्वव्यापी है । उसे जान लेना ही असली ज्ञान है । कुरान-आलिमुल गैवी-अल्लाह सर्वज्ञ है । पारसी ग्रथ गाथा-तुझमे आ मिलेंगे । गीता,७/१० मत्तः परंतरनान्य । यहूगी ग्रंथ जोहर-सवको उसी मे लौटना है । जोहर तलमूद-वह सर्वव्यापी है ।

सू. १०, आयत, ३८, सू. ११ आ. १३, कुरान की आयत जैसी आयत कोई वना लाए, यह कथन यहूद और ईसाई के लिए है । भारतीय के लिए नही है । महाभारत-देश काल- निमित्ता नाम भेद्रैः

धर्मो विभिद्यते, यही बात कुरान में है कि— हमने हर कौम के लिए अलग-अलग शरअ एव मिनहाज (कर्मकाण्ड) बताए है। याज्ञ बल्क—अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचंमिन्द्रय निग्रहं, दानं दया दमः क्षान्ति सर्वेषां धर्म साधनं, इन्ही बातों को कुरान, इंजील, वौद्ध, जैन आदि सभी धर्मों ने दुहराया है। जरथुश्र, कगफूत्जे (चीनी), बौद्ध, महावीर स्वामी, ईसा, मुहम्मद सा. का कथन है कि हमारा मार्ग (धर्म) नया नही है। पुराने धर्म का ही परिमार्जित रूप है। ईश्वर हर उपासक की आत्मा में है। संसार के उपासना गृह में ध्यान केन्द्रित करने के स्थान है। ईश्वर को कैद रखने वाले जेलखाने नही है, ईश्वर सर्वव्यापी है।

वेदोपनिषद, पारसी ग्रन्थ गाथा, कनफ्यूशियस (चीनी), कुरान, इंजील आदि ईश्वर को सर्वस्व मानते है, आद्यान्त मानते है। याद करते है उसे आत्मा में ढूंडो, उसे जानना ही सच्चा ज्ञान है। सृष्टि द्विरूपा (जोड़ेदार) है। पारसी ग्रन्थ गाथा मे वैदिक साभ्यता है। संस्कृत शब्द भी प्रचुर है।

आत्मनः प्रतिकूलानी परेषां नं समाचरेत—महाभारत, भाग्वत, गीता, बौद्ध. जैन, ईसाई, चीनी, पारसी, इस्लामी धर्मग्रन्थ यही उपदेश देते है। पारसी ग्रन्थ जेंद्रा वेस्ता—मैं (ईश्वर) भले (भलाई) का साथी हूँ, बुराई का साथी नही हूँ। चीनी ग्रथ ली- की, कुरान, महाभारत, मनुस्मृति, पारसी ग्रन्थ गाथा एव पतीत पशेमानी, यहूदी ग्रन्थ मिशना, ईजील आदि ग्रंथ लोभ और बुराई को त्याग कर निःस्वार्थ जनसेवा की प्रेरणा देते है।

गरुड़ पुराण, इंजील, कुरान, महाभारत, बौद्ध ग्रन्थ महा बग्ग, पारसी ग्रन्थ गाथा, चीनी कन्फ्यूशियस, को आगत्जे, सुंफिग, आदि धर्म ग्रन्थ कह रहे है कि नेकी का ही फल अच्छा मिलेगा, बुराई का फल बुरा ही मिलेगा। चीनी, ईसाई, इस्लामी, जैन, बौद्ध एव वैदिक ग्रन्थ इन्द्रियजित (नफ्शकुशी) रहने का आदेश देते हैं। गीता

मे इन्द्रियाणां मनश्चास्मि कहा है, याने इन्द्रियो में प्रधान मन है, आयुर्वेद में मन को कारणं बन्धमोक्षणँ आसक्ती एवं विरक्ती का सर्जक लिखा है, मन पर नियंत्रण रखने का काम वाग्भट ग्रन्थ में धीधैर्यादि विज्ञान, बुद्धि, विवेक और धैर्य का है।

कुरान–अल्लाह की फितरत पर आदमी की फितरत है। हदीस–इन्सान की सूरत रहमान की सूरत है। एक सूफी कहता है मेरे जुब्बे में खुदा के सिवा कुछ नही है। एक सूफी कहता है। शक्ले इन्सां मे खुदा है मुझे मालूम न था। दिल्ली का सन्त सरमद राम और कृष्ण का ध्यान भी करता था। एक मुस्लिम शायर की नज्म की एक पंक्ति-तुम राम कहो या रहीम कहो दोनो की गरज अल्लाह से है। इस्लाम की प्रसिद्ध हस्ति "हजरत अली" पहले सूफी सन्त माने जाते है। हजरत अली ने फर्माया है कि (मांस खाकर) अपने पेट को जानवरो की कब्रगाह मत बनाओ। स्मरण रहे कि सूफी पंथ "सलूक" में हर तरह का मांस खाना वर्जित है। वजीफा, चिल्लाकशी याने अनुष्ठान एवं हर तरह के रोजे (उपवास) में भी मांस वर्जित है कुछ उपासना में, गोश्त, मछली, अण्डा, दूध, घी, दही, मक्खन, लहसुन, प्याज का सेवन मना है। इन्हे तर्क हैवानात और तर्क मकरूहात कहते है। पूर्ण एकान्त जरूरी है कभी-कभी भोजन भी स्वय द्वारा ही बनाना जरूरी होता है। पवित्रता भी जरूरी बताई है।

हराम के एक समय के भोजन का पाप ४० दिन रहता है। ईसा मसीह से पहले यहूदी भी ईश्वर के नाम पर अग्नि मे मांस होमते थे। इस कुप्रथा का विरोध इंजील मे कई बार किया गया है।

कूरान सू. २२ आ. ३७ मे स्पष्ट है कि कुर्बानी का मांस या खून अल्लाह तक नही पहुँचता है। अल्लाह तक हार्दिक समर्पण पहुँचता है [शक होता है मक्का के मुशरिकों की प्रचन्लित कुर्बानी की प्रथा को मुहम्मद साहब ने मुशरिको की अड़ियल शर्त मे स्वीकारे हों]।

आज विश्व में दो सौ तीस करोड सेर मांस प्रतिदिन खाया जाता है इसमें मछली, अण्डा शामिल नही है।

भारतीय जैन, बौद्ध भी हिंसा के विरोधी हैं। महाभारत के शान्ति पर्व अ ३४५ में यज्ञ में पशु हत्या की स्वीकृति नही है। पशु-वध तान्त्रिकीय प्रथा का विकार है।

[प्रस्तुत सक्षिप्त धर्म विवरण में विश्व के विभिन्न धर्म परोपकार एव ईश चिन्तन का आदेश देते है, सभी धर्म क्रूरता के विरोधी हैं। किन्तु स्वयं के महत्वाकांक्षियों ने विकृतियां उत्पन्न कर सात्विक मानवता को दूषित दानवता के भ्रमजाल में फांसा है।]

ऋग्वेद, सामवेद, उपनिषद, मनुस्मृति, गीता, महाभारत, बौद्ध, जैनी, चीनी, जापानी, पारसी, यूनानी, इजील, कुरान आदि का आदेश है कि सभी से सद्व्यवहार करो, क्रोध मत करो, अहंकार, घमण्ड मत करो, दीन विनम्र बनो, बुराई का बदला भलाई से दो, मध्यमार्गी जीवन जीओ, किसी भी प्रकार की "अति" मत करो, इत्यादि। (महाभारत शान्ति पर्व अध्याय ७० का अनुशरण सच्ची मानवता है।) महाभारत—तीर्थानामपि तत्तीर्थं विशुद्धिर्मनसः परः, मन को निर्विकार कर लेना, सभी तीर्थों से बढकर है। ईश्वर से दया, क्षमा, ज्ञान, सन्मार्ग चाहो। मनुस्मृति, कुरान, इंजील, गुरु-गीता एवं बौद्ध का आदेश है कि पाखण्डी, लोभी, पण्ड़ा, पण्डित, पुरोहित, नबी, पैगम्बर, मुल्ला आदि गुमराहियो से सावधान रहो। चीनी पैगम्बर कहलाने वाला कन्फ्यूशियस भारत में विद्वानो के पास कई दिन रहा है। तथा कुछ विद्वानों को अपने साथ चीन ले गया था। चीनी महात्मा मैनशियस ने कहा है कि ईश्वर हम सभी के पास है, सभी की सेवा में भलाई है।

विश्व के प्रसिद्ध विभिन्न धर्म ग्रन्थों के ज्ञाता विद्वानों की सामुहिक सभा में धर्म ग्रन्थो का पठन कराया जाय तो यह नि:सन्देह निर्विवाद सिद्ध होगा कि सभी धर्मो मे परस्पर बुनियादी साम्यता

अधिक है। अन्तर है केवल क्षेत्र भेद में भाषा और विधी तथा वाद के धर्म नेताओं का बौद्धिक अहं।

चीन में कन्फ्यूशियस, लाओत्सी (ताओ), बौद्ध एव इस्लाम धर्मी परस्पर धर्मों की सराहना करते है। क्योंकि वहां भाषा और संस्कृति चीनी है। भाषा और संस्कृति भेद ही साम्प्रदायिक द्वेष का कारण है। मौलाना हाली की पुस्तक मुसद्दए हाली में भी ऐसी ही स्पष्टोक्ति है।

[मुहम्मद विन कासिम ई० ७१२ से अहमद शाह अब्दाली ई० १७६१ तक एक हजार उन पचास वर्षों तक भारत पर मुस्लिम आक्रमण निरन्तर होते रहे, कल्ले आम, आगजनी, लूट, अपहरण, जवरी धर्म परिवर्तन आदि के कारण आक्रामको के प्रति घृणा द्वेष रोप व्याप्त होना स्वाभाविक है। सभी आक्रामक सत्ता और वैभव के भूखे भेड़िये थे। इस्लाम का सही प्रचारक एक भी नही था। अरव के अभाव ग्रस्त क्रोधी, अपढ व्यक्तियो को इस्लाम प्रचारक के जेहादी वहाने से यहां लाकर लडवाये और खुद शासक बने रहे।]

भारत में विरोध इस्लाम धर्म का नहीं था, इस्लाम धर्म की आड़ में सत्ता लोभी आक्रमण एवं जवरी अरवीकरण का विरोध था। उस दौर मे भाषा भूषा और संस्कृति भेद के कारण पण्डित, पण्डा एव शस्त्रधारी काजी मुल्लाओ ने सैद्धान्तिक भ्रम मे दूरियां घटने नही दी। यूरोप में यहूदी, ईसाई, मुस्लिम तीनो की संस्कृति एक ही है. अरवी नही है।

संसार को सुसंस्कृत करने वाले भारत के आधुनिक पूत आज शिष्य आरुणी एकलव्य की उपेक्षा कर गुरुजनों के प्रति गाली गलौज जूते, चप्पल, छूरा, चाकू का उपयोग करके आनन्दित होते है। श्रवण और राम की पितृ भक्ति की उपेक्षा कर पितृजनों को अपमानित कर गौरवानुभव करते हैं। सौतेली माँ कैकयी से चौदह वर्ष वनवास पाकर भी उस सौतेली माँ के प्रति यथावत श्रद्धा रखने वाले राम के देश के

अनेक युवक जन्मदात्री माँ को तिरस्कृत करते है। राम सह चारों भाईयों ने अयोध्या के राज्य में अपना हिस्सा पाने हेतु कल्पना भी नही किये। किन्तु आज अधिकांश बन्धु थोडा ही हिस्सा पाने हेतु परस्पर घातक बन जाते हैं। अनुसूया, अहिल्या, सीता, मन्दालसा, बेहुला, पद्मिनी, कर्मवती आदि असंख्य सत्वनिष्ठ महिलाओं के देश की अनेक महिलाएं पथ हीन हुए जा रही है। महात्मा गाँधी द्वारा बन्द करवाई गई दारू अब दर दर बिक रही है। स्वतंत्रता पूर्व के शालेय पाठ्य क्रम में एवं पत्र, पत्रिका, उपन्यास और फिल्मों मे पुराण, इतिहास, गुरु, माता, पिता, बहन, भाई, पती, पत्नी, पडौसी, मित्र, अतिथी, श्रम, ईमानदार आदि के प्रति शिक्षा प्रद साहित्य रहता था। आज मदिरा, हेरोइन, दारू, तामसी विलासी पत्रिका, उपन्यास, मारधाड, चोरी, उद्दण्डता प्रधान फिल्में और पूर्णाहूति में वीडियो, टी०वी० आदि द्वारा देश के भावी कर्णधार कहे जाने वाले युवा वर्ग के मन मस्तिष्क में विकृती का मधुर विष भरा जा रहा है। ताकि ये सत्ता के अयोग्य रहे एवं सत्ता सीमित हाथों में जकड़ी रहे। प्लोटो ने कहा है—अपने देश की संस्कृति की उपेक्षा करने वाला महा पापी है, ऐसे व्यक्ति का मर जाना अच्छा है।

तुर्किस्तान की आजादी के नेता कमाल पाशा ने अपना तुर्की नाम कमाल अता तुर्क रखा एवं रोमन लिपि चलाया, अरबी लिपि, अरबी शब्द, अरबी रीति रिवाज बन्द करवाया तथा कुरान, अजान, नमाज का तुर्की भाषा में वैधानिक चलन करवाकर तुर्की संस्कृति को अरबीकरण से बचाया है। चीन मे भी अरबीकरण नही हुआ है। यही नीति भारत में रही होती तो भाषा और संस्कृति की एकताबश जन मानस में सौहाद्र्य रहता साम्प्रदायिक विष व्याप्त नही होता। विदेशी डिरको, कोबरा, मदिरा, मादकता, की भ्रष्ट संस्कृति में भारतीय युवा वर्ग दिग्भ्रमित न हुआ होता। चीनी ग्रंथ शु-किंग में हैं कि सब भाई भाई हो, मेल मिलाप से रहो।

पूर्व वर्णित विभिन्न धर्मों की साम्यता स्पष्ट है, द्वेषोत्पादन नही है, एकेश्वर की मान्यता में समानता है। इसी भावनावश अहमद की सामुद्रिक पुस्तक एवं याकूव की रस भूषण पुस्तक का आरम्भ हिन्दू देवनाम से हुआ है। रहीम के दोहे आज भी लोकप्रिय है। ऐसे और भी प्रमाण है।

औरंगाबाद वि०वि० के डॉ० यू०एम० पठाण ने ज्ञानेश्वरी पर डॉक्टरेट की है। इन के प्रवचन एव लेख विद्वतापूर्ण होते है। उत्तर प्रदेश के हसनुद्दीन ने गीता का उर्दू अनुवाद किया है। फरोग नागपुरी ने महाभारत को उर्दू काव्य मे लिखा है। अन्वर आगेवान हिन्दू संस्कृति के विद्वान है। कोटा के वशीर अहमद "मयूख" वेदान्त के विद्वान है। लखनऊ के अरवी विद्वान प० नन्दकुमार अवस्थी ने कुरान की आयते अरवी उच्चारण मे देवनागरी मे लिखी है।

कलकत्ता के नन्दलाल टाटिया के अर्चना ट्रष्ट ने मयूख, अवस्थी एवं विश्वनाथ मुकर्जी को प्रत्येक को २१–२१ हजार रुपया सादर दिया है। यह हिन्दुत्व मे धर्म एव जाति निरपेक्ष गुण ग्राहकता का प्रमाण है।

ईश्वर को नही मानने वाले तथा विज्ञान को सर्व-सर्वा एव भौतिक ऐश्वर्य को जीवन मानने वाले उच्चतमतम वैज्ञानिको ने अन्तत. दैवी शक्ति को स्वीकारा है। ई० १६०० से हरवर्ट स्पेन्सर, ऑलिवर लाज, एडिंगटन, चार्ल्स डारविन, अल्फ्रेड रसेल वॅलेस, मिल्लिकान कॉम्पटन आदि की तथा दी ग्रेट डिजाइन पुस्तक मे अन्य चौदह वैज्ञानिकों की स्वीकारोक्ति का साराश है कि—ससार को चलाने वाली सर्व व्यापक अद्रश्य चेतन शक्ति कोई है। मिल्लिकान ने लिखा है अपने जैसी ताकतो वाला चमत्कारी इन्सान भेजकर ईश्वर ज्ञान वांटता है। लन्दन, वौन, लेडेन, लिपजिग-आदि योरोप एवं अमेरिका की अनेक यूनिवर्सिटियों द्वारा भारतीय योग एव सूफि-

याना उपासना की विधिवत शिक्षा दी जा रही है। इस दिशा में भारतीय शासन द्वारा उपेक्षा लज्जात्मक गौरवदायी है।

विदेशी विद्वान इमर्सन ने लिखा है जिस देश मे धार्मिक उपासना की उपेक्षा हो वह देश क्या उन्नत होगा ?

७०० वर्ष पहले की मौलाना रूम की लिखी पुस्तक मसनवी गीता और उपनिषद का सार मालुम देती है इस पर हठवादी मुल्ला मौलानाओ ने रूम की निन्दा किये है। सर सैयद अहमद खां इस्लाम परस्त थे किन्तु खुद को हिन्दू कहलाने में गौरव मानते थे।

एकेश्वर के उपासक हिन्दू और मुस्लिम सन्तो मे एकात्मता थी। दिल्ली के पीर हजरत निजामुद्दीन औलिया ने फर्माया था कि मीसाक-जमीन पर भेजते वक्त अल्लाह ने हिन्दवी जबान मे मुझसे बात की है। इस से जाहिर है कि अल्लाह भेद रहित सर्वज्ञ है। बीजापुर मे आदिलशाह के मंत्री एवं महल मे बादशाह को नियमित भगवद् कथा सुनाने वाले पं० महीपतिदास को सूफी सन्त शाहतुंग ने प्रसिद्ध योगीराज भास्कर स्वामी का शिष्य बनवाकर सन्त का अमर पद दिलवाया है। अचलपुर में नदी के दोनो तटों पर सांई इस्माइल शाह एवं तपस्वी भारती मे प्रगाढ़ मैत्री थी दोनो ही सन्त उफनती नदी पर से आ जाते थे। भारती के श्राप से एक बाज़ीगर इसी नदी मे लकड़ा बना पड़ा है। अब्दुल्ला मीया की दर्गाह का मुजावर महाराष्ट्रीय ब्राह्मण है। बाबा रामदेव पीर से मुस्लिम पीरो का मिलन प्रसिद्ध है। डिग्गीपुरी देवस्थान को मुसलमान कलिया पीर मानते है।

अन्वेषणो से ज्ञात हुआ है कि वैदिक धर्म से पारसी धर्म, पारसी से यहूदी धर्म, यहूदी से ईसाई धर्म, ईसाई से इस्लाम धर्म उत्पन्न है।

फिरदौसी हजरत साज रहमानी बाबा ने लिखा है कि—हिन्दू धर्म ही ससार मे सबसे प्राचीन धर्म है। कोई भी शोधकर्त्ता इससे प्राचीन धर्म की खोज नही कर सका, इससे सिद्ध होता है कि सब धर्मो का मूल हिन्दू धर्म है। सभी धर्मो ने किसी न किसी अंश मे इस

हिन्दू माँ का दुग्धमृत पान किया है, ऐतिहासिक प्रमाण है कि इस्लाम का आधार हिन्दू धर्म है। हिन्दू और इस्लाम एकेश्वर में अरबी सभ्यता ही भेद का कारण है। भारत में अरबों ने शारिरिक विजय पायी किन्तु सहस्रो शताब्दियों से सुसंस्कृत मजे हुए प्राचीन इस्लाम से हुई टक्कर मे नवीन इस्लाम की पराजय हुयी।

हजरत साज रहमानी के विचारों के समर्थन में मौलाना अन्ताफ हुसेन हाली की काव्य पंक्तियों मे से चार-वह दीने हिजाजी का वेबाक वेडा, निसां जिनका अक्साए आलम मे पहुँचा। किये पै सफर जिसने सातो समन्दर, वह डूवा दहाने में गंगा के आकर। हाली साहव ने डटे रहो (इस्लामी) नीति पर भी व्यंग किया है। गुनाहो से होते हो गोथा मुवर्रा, मुखालिफ पे करते हो जब तुम तवर्रा। विभाजन के पहले अमरावती मे किंग एडवर्ड कालेज के प्रोफेसर, भारत के प्रसिद्ध चहेते शायर मंजूर हुसेन शोर की लोक प्रिय नज्म "नागन" के १८ छन्द मे से पांच पंक्ति—

होंठ पर तस्वी सीने में वजीफों के गुदाज
कैमे कैमे साँप डस जाते है पढ़-पढ़ कर नमाज
मजिदो में ऐंठते हैं कितने डसने वाले नाग
मसनदों पर लोटते रहते है कितने काले नाग
त्वाफे कावा करने वाले साँप शब वेदार साँप

ऐसी और पंक्तिया भी हैं। यह दशा सभी धर्म और समाज में पायी जाती हैं। इस प्रकार के विचार अन्य व्यक्तिओं के भी हैं। किन्तु सभी धर्मो के गुमराह सेनापतियों ने दूरियाँ नही घटने दी।

आज इस्लाम में ७२ शाखा हैं। अरब में मदिरा और व्यभिचार पुनः तरक्की पर है।

उस पवित्र स्थल मक्का शरीफ की एक सौ दस दरवाजे और सात मीनारवाली मजिद, जिसमें करीव एक लाख यात्री नमाज पढ सकते हैं। इसकी शाहाना इमामत छीनने, कफी तादाद में गोलियां,

गोले, रायफल, मार्टर तोप, पिस्तौल, मशीनगन और खुराक पानी साथ लिये (१२ जनांजों में छुपाकर) ई० १९७९ नवम्बर २० की सुबह की नमाज के वक्त मजिद मे दाखिल हो करीव ढाई सौ हमलाबर हथियार लिये पूरी मजिद में चौतरफा तैनात हो अपने चहेते मोहम्मद बिन अब्दुल्ला को नया प्रगट होने वाला "इमाम-मेहंदी" के नाम से घोषित किये। हज के वक्त इस ववाल पर काबू पाने सऊदी सेना पहुँची लेकिन हज के बाद अटके हुये हाजी और नमाजियों की बजह से दोनो खुलकर मुकाबला नही कर सके। बारह दिन हथियार बाजी हुयी, गोलियां चली, जनता को बचकर बाहर निकल भागने का मौका मिल जाता था इमामे काबा पोशाख (वेष) बदलकर जनता के साथ बाहर निकल सके। हमलावरो ने सेना का एक हेलीक्राप्टर मजिद के आंगन में मार गिराया था। सेना के ६० जवान और ७५ हमलावर मारे गए। १७० हमलावर बन्दी बनाए गये। नकली इमाम मारा गया। तेरहवें दिन हमलावर काबू में किये गये। हमलावर कुरैश, खैतिबा, अल्फिया कबीले के थे, जूता पहने हुये थे। यह घटना अरबियों द्वारा अरब में हुई। किसी शरारती ने कश्मीर से हजरत बाल चुराया था तब पूरे भारत में हगामा आक्रोश छाया था फसादियो ने हैद्राबाद, कलकत्ता वगैरा मे मूर्तिया तोड़े। १९६५ के पहले ही समूचे चीन में अधिकांश मजिदे मालगोदाम और सरकारी आफिस बना दी गयी। कहीं हो-हल्ला कुछ नही हुआ। यह जलालत हिन्दुत्व में नहीं है। अरब युरोपिय-भौतिक उन्नती और विलासी सभ्यता ने विश्व को हर क्षण अशान्ति और विनाश का दिया है, दे रही है इस के विपरीत—

हिन्दुत्व ने—विश्व के मानव मात्र के लिए एकात्म बोध चारित्रिक आध्यात्मिक नैतिक उदात्त मानवता का शान्तिमय सुखद प्रशस्त पथ दिया है, देता रहेगा।

विभाजन के समय पाकिस्तान मे कई स्थानों पर मन्दिर गुरुद्वारे धर्मशाला, आश्रम, भवन आदि अनेक स्थल तोड़े लूटे और जलाए

गए। इसके बाद भी करांची (देरावल) पेशावर, स्वात, चकेसर, वनेर, लाहौर, चिगलई आदि कई स्थानों पर हिन्दुओं में हिन्दुत्व निष्ठावश हिन्दू मन्दिर आज भी व्यवस्थित है। यह समस्त भू-क्षेत्र अभी राजस्थान मे था। हिन्दू पठान और अफगनी हिन्दू की भाषा भूषा शुद्ध पश्तो है। किन्तु उनमे उनकी वंश परम्परागत हिन्दुत्व निष्ठा आज भी अटूट है।

सिन्ध के प्रसिद्ध अमरकोट के सोढ़ा राजपूत रतन राणा जिसके गीत राजस्थान में गाए जाते है उसका वंशज राजा चन्द्रसिंह अपने तीस हजार सिन्धी राजपूत सैनिको के साथ बेखटके रहता है। किन्तु पाकिस्तान सरकार को इसकी ओर मे खटका बना रहता है।

अंग्रेजो और आधुनिक कुछ भारतीय नेताओं की तरह पाकिस्तान सरकार भी पाकिस्तान में बस रहे सात लाख हिन्दू (सफाई कर्मचारी) हरिजनों की अन्य हिन्दुओ से अलग करने की कोशिश करती है किन्तु ये हिन्दू हरिजन खुद को कट्टर वाल्मीकी हिन्दू मानते है तथा हिन्दुत्व पर अडिग हैं। लाहौर के अनारकली और मोचीगेट के हरिजन मन्दिर में भजनपूजन आरती आदि शुद्धतापूर्वक होती है देवी के जस और ध्यानूभगत के गीत श्रद्धापूर्वक सुने जाते हैं। यह है वशानुगत दृढ हिन्दुत्व।

'ऋ १०।६।१२ ब्राह्मणोस्य मुखमासी द्वाहू सूत्र से स्पष्ट है कि वैदिकयुगारम्भ से चार वर्ण है। ब्रह्माण्ड पुराण, विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण, मार्कण्डेय पुराण, गीता, महाभारत, हरिवंश आदि मे भी वर्णचार है। जीवन व्यवस्था के लिए मानव क्षमतानुसार की गई वर्ण व्यवस्था को उस युग मे जन कल्याण हेतु सभी ने स्वीकारा है। ऊँच नीच छूत आदि का भेद नही है। अस्पृश्यता शौचप्रधान थी। जातिगत अस्पृश्यता का विरोध सनातन, नाथ, जैन, बौद्ध नानक आदि सभी पंथ तथा जगद्गुरु शंकराचार्य, ज्ञानदेव, दयानन्द आदि अन्य अनेक महात्माओ ने भी किया है। वैदिक युगारम्भ से अद्यावत भारतीय सभी धर्म परोपकार, अहिंसा, सत्य निर्वैर, त्याग, निर्भेद एवं ईश्वरोपासना के प्रवर्तक हैं।

महाभारत, अनुशासन पर्व अ ४८ में अंत्यज को खराश्वगज भोजितं मृतचैलप्रतिच्छान्न, भिन्न भाजन भोजिनम् लिखा है अर्थात मृतपशु मांसभक्षण एवं मुस्लिम शासनकाल में अंत्यजों द्वारा प्राणभय वश घृणित सेवाकार्य ने शौच प्रधान छूत को जातिप्रधान छूत बना दिया है। जो परिस्थितियों वश सम्भव है।

आर्य, हवन सनातन मूर्तिपूजा जैन बौद्ध सिक्ख यहूद पारसी इसाई इस्लाम आदि उपासना के विभिन्न पथ है किन्तु मूल में वैदिक एकेश्वर ही है। हजरत ईसा मसीह भारतीय बौद्ध विद्यालय मे ज्ञानार्जन किये है इनका प्राणी में आत्मबोध अपनत्व ममत्व दया मूलतः वैदिक है। इस्लाम का एकेश्वर मूलत वैदिक है। परोपकार त्याग उपासना का महत्व संसार के सभी धर्मो मे है। भारतीय विभिन्न धर्म हिन्दुत्व के अन्तर्गत है। [हिन्दू जाति या धर्म (उपासना) नही है; किन्तु हिन्दुत्व कठिन आचरण धर्म है। इसकी व्यापकता वश भारत हिन्दुस्तान कहलाया है विश्व मे इसकी तुलना कही नही है] हिन्दू की व्यापकता का कालिका पुराण भविष्य पुराण मेरु तंत्र वृद्ध स्मृति, बृहस्पति आगम, हेमन्त कवि कोष, राम कोप अद्भूतरूप कोष माधव दिग्विजय आदि ग्रन्थों में वर्णन है—जिनका समर्थन टिलक एवं सावरकर ने भी किया है। शब्द कल्पद्रुम, पारिजात हरण, शारंगधर पद्धति, गीता, यांज्ञवल्क ये भी इन्ही ग्रन्थो में से है। विभिन्न ग्रंथमत———

हिनस्ति तपसा पापान् दैहिकान् दुष्ट मानसान्।
हेतिभिः शत्रु वर्गं च स हिन्दुरभि धीयते॥

हीनच दूषयस्येव हिन्दूरित्युच्यते प्रिये। हीनं दूषयति इति हिन्दु। हिनस्ति दुर्वृत्ती. इति हिदु.। श्रुत्यादि प्रोक्तानी सर्वाणि दूषणानि हिनस्तीति हिन्दु.। हिन्दु दुष्टो न भवति ना नार्यो न विदूषक.। सद्धर्म पालको विद्वान श्रौत धर्म परायण। इत्यादि का सारांश— दुष्टता रहित, हीनता रहित दुर्गुण-रहित हो जिसमें कोई बुराई न

हो अनार्य न हो सत्कर्म कर्ता तथा शत्रु का भी नीति सम्मत हितैषी हो श्रेष्ठ आचरणवाला, ईश्वरानुरागी हो वह हिन्दू है।

आर्य की परिभाषा—

निवारणार्थम् अर्तानाम् अतु म योग्यो भवेत् तु यः अर्यते सतत-श्चार्तः स आर्य इति कथ्यते (अज्ञात) जो दुखियों का दुःख दूर करने में निरन्तर तत्पर हो वह आर्य है।

अद्वेष्टा सर्व भूतानां मैत्रः करुण एव च ॥ निर्ममो निरहंकारः सम दुःख सुखः क्षमी । परोपकारः पुण्याय पापाय पर पीडनम् । आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत याज्ञवल्क अहिंसा सत्यमस्ते यं शौचं-मिन्द्रिय निग्रहं: दानं दया दमः क्षान्ति सर्वेषां धर्म साधनम् । दूसरों से द्वेष रहित सभी से मैत्री भाव हो माया मोह अहंकार न हो शुद्ध आचरण हो जितेन्द्रिय हो, क्षमाशील, दुखसुख को समान मानने वाला हो। परोपकार ही पुण्य है दूसरे को दुख देना पाप है। अपने लिए जो व्यवहार पसन्द नही वैसा ही औरों के प्रति समझो। सत्य-मार्गी हो। दानदाता हो। धर्म के यही साधन है। महाराज रन्तिदेव समग्रराज सम्पदा दान दे दे कर पत्नि एवं २ पुत्रों सहमथवासी वन ४८ दिन निराहार विताए ४९ वें दिन किसी ने पायस दिया वह भी याचक को दे दिया। प्राणान्त निकट जानकर ईश्वर से याचना किया कि ईशदर्शन, मोक्ष, स्वर्ग या राज्य नही चाहिए मुझे दुखियों के हृदय मे निवास देना कि मैं उनका दुख. वहन कर लूँ। यह अद्वितीय त्याग एवं परोपकार है। धन्य है इस दानवीर की राजरानी सहिष्णु सह-चारिणी पत्नी को। ऐसे असंख्य उदाहरण है। धर्मं यो बाधते धर्मो न स. धर्मः कुधर्म तत्—किसी भी धर्म को बाधा पहुँचाने वाला धर्म "कुधर्म" है। अविरोधी तु यो धर्मः सधर्मः सत्य विक्रम. ॥

किसी धर्म का विरोधी न हो वही सच्चा धर्म है। यही भारतीय हिन्दू धर्मनीति है। ऐसे अनेक विधान है। इसी प्रकार की अनेक महानताओ का स्वाभाविक आचरणयुक्त परोपकारी मानव धर्म ही

हिन्दू धर्म है। इन आचरणों वाला व्यक्ति चाहे किसी भी देश धर्म या जाति का हो वह हिन्दू कहलाने योग्य है अर्थात क्रूर हिंसक निर्दयी दुष्ट दुर्गुणी अहंकारी लोभी स्वार्थी कृपण लम्पट दुराचारी दुर्मति विलासी द्वेषी कुमार्गी ईशद्रोही आदि आचरणवाला व्यक्ति हिन्दू कहलाने योग्य नहीं है। चाहे वह कोई भी हो।

उपरोक्त पंक्तियों में मूर्तिपूजा हवन शैव शाक्त जैन बौद्ध सिक्ख आदि किसी भी पंथ की उपासना या जाति दर्शकता नहीं है। केवल सात्विक आचरण का ही उपदेश है जिनका मूल नम्रता हैं—कुरान, सूरा १७ आ० ३७ व ला तम् शि फिल्अर्जि मरहन् इन्नकलन्—धरती पर अकड़कर मत चलो, वगैरा (ऐसी आयत्त और भी हैं)

पारसी धर्म ग्रंथ अवेस्ता यस्नहा ३४ यूरा—योईथाई द्रिगुम युष्माकम् भ्रर वो वीरू पाइश जो नम्र है उन पर तेरी कृपा रहती है।

भगवान महावीर—कोहं माणं च मायंच लोभंच पाप वड्ढण—क्रोध, मान, माया, लोभ यह चारों त्याग दें। शेष नम्रता ही रहेगी।

भगवान बुद्ध—सक्को उजूच सूजूच सुबचौचस्य मृदु-अनतिमानी सरल मृदुभाषी नम्र हो। ईसा मसीह—ब्लेसेड आर द मीक फॉर दे शेल इनहेरिट दि अर्थ—जो नम्र हैं वे ही धन्य हैं।

ईसा मसीह ने जीव दया को महत्व दिया है, हिंसा या जीव पीड़ा को कतई महत्व नहीं दिये।

गुरु नानक—नानक नन्हे ह्वै रहो जैसी नान्हीं दूब, दूब की तुलना नम्रता की पराकाष्ठा है।

बौद्ध ग्रंथ धम्मपद में लिखा है—गावी नो परमा मित्ता गावो नो परमं धनमं गऊ जैसा मित्र और धन अन्य नहीं है। भगवान बुद्ध, ऋषभदेव, बाहुबली, महावीर स्वामी, सम्राट अशोक आदि विशाल राज्याधिकारी थे किन्तु सर्वस्व सुख वैभव त्याग कर कष्टयुत सन्यास स्वीकारे। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। यह हिन्दू संस्कृति का परिणाम है। बौद्ध के चार आर्य सत्य एवं अष्टांग के आठ अंग, जैन मत में

अहिंसा एवं अपरिग्रह एवं ईसा मसीह मे करुणा का मूल-आधार वैदिक वाङ्गमय है।

खालसा पंथ के स्थापक गुरु गोविंद सिंह अपने पिता एवं दो पुत्रों को औरंगजेब की धर्मान्धता पर बलि चढवा दिये किन्तु तीनो पीढी अपने धर्म पर अटल रही है । गुरु गोविंद सिंह का संकल्प था-गऊ घात का दोष जग से मिटाऊं तथा जगै धर्म हिन्दू सकल भण्ड भाज़ै । ऐसी द्रढ़ निष्ठा हिन्दुत्व के प्रति उनमे थी ।

हिन्दू-हिन्दुस्थान नामक आक्रामक मुसलमां-मुगल या अंग्रेजों ने दिये है । यह मत एकदम गलत है तथा ब्राह्मण वैश्य क्षत्रीय आदि ही हिन्दू है अन्य नही है यह मत भी अभारतीय है द्वेषोत्पादक हे दुर्ष्टता पूर्ण है सत्य तो रंच मात्र भी नही है। हिन्दू नाम विशेप जाति या धर्मवाचक नही है भारतीय हर नागरिक हिन्दू है तथा हिन्दू आचरण वाला कोई भी व्यक्ति हिन्दू है ।

अरबी शायर लबी की ३७०६ वर्ष पहले की कविता मे हिन्द् नाम स्पष्ट है तथा वह कविता वेदो की प्राचीनता का एक प्रमाण भी है । सिकन्दर से पहले का पारसी धर्मग्रथ शातीर एवं अवेस्ता मे वैदिक शब्द अनेक है तथा हिन्दू शब्द भी है । यहूदी मे शूरवीर को हिन्दू कहते हैं अरबी ग्रंथ सोहब मो अलक्क मे लिखा है-भाई बन्धु का अत्याचार हिन्दु तरवार से अधिक घातक है । हिन्दू जवाब यानि शत्रु पर कड़ी चोट करना । बॅबीलोन मे उत्तम बाग (गार्डन-बगीचा) को सिन्धु बाग कहते है । सरहिन्द, तवरहिन्द, हिन्दवार, हिन्दुकुश, सिकन्दर के पहले से हैं ।

पाश्चात्य लेखक-सी० ओ० हॉस, एफ० टी० ब्रुक्स, राबर्ट जिमरसन, गोल्डस्टकर, ऑर्थर एवलन, जी० ए० जेकब, ऑटल, आटोश्राडर ए० बी० कीथ, आटो वार्टलिंग, पाल, जॅयसन, हार्मन ओल्डेन वर्ग, ई० ह्यूम, मेक्स मूलर अल्वर्तन वेबर मेकडानल आदि अन्य कई विद्वानो ने उपनिषदो की टीका जर्मन फ्रेंच और अंग्रेजी भाषा मे किये हैं ।

फ्रांस में फ्रेंच भाषा में तीन अनुवाद महाभारत के प्रकाशित हुए है।

मेक्समूलर ने वेदों की टीका भी की है इनका पूर्ण जीवन वेदाध्ययन मे बीता है। इन विद्वानों का विचार सार है कि—संसार में उपनिषदो जैसा स्वाध्याय अन्यत्र नहीं है जो आत्मा को उन्नत कर सके, समस्त मानव का एक दिन यही धर्म होगा।

काउन्ट जॉन्स जेनी—भारत केवल हिन्दू धर्म का ही घर नही है वह संसार की सभ्यता का आद्य भण्डार है।

डफ—भारतीय विज्ञान इतना विस्तृत है कि योरोपियन विज्ञान के सभी अंग उसमें मिलते है। इन्ही डफ ने मिर्जापुर के घाट पर खुले मैदान दिन के उजाले में गुरु एवं शिष्य को योगविद्या द्वारा तेज बहती नदी के जल पर चलते हुए, फिर आकाश की ओर उड़कर अदृश्य होते हुए प्रत्यक्ष देखा है।

जयसन ने जर्मन भाषा में साठ उपनिषदो का अनुवाद प्रकाशित किया था। ह्यूम ने अंग्रेजी में तीस तीस उपनिषद प्रकाशित किया है। शाहजहा के पुत्र दाराशिकोह ने अनेक उपनिषदों का फारसी अनुवाद करवाया था, दारा के हस्ताक्षर की प्रति लदन संग्रहालय में है। मेक्स मूलर लिखते है कि ईसा से ४०० वर्ष पहले सुकरात के समय एथेंस नगर में भारतीय दार्शनिक विद्वान आते थे।

मिस्टर किंग ने लिखा हैं—पोली नेशियन गाथाओं में वैदिक भाव मिलते हैं। एलफिस्टोन ने स्वीकारा है कि ग्रीक साहित्य से दुगना साहित्य संस्कृत में है।

मिस्टर रैंडी ने पोली नेशियन-रिलीजन पुस्तक में लिखा है कि इन गाथाओं में वैदिक भावों की स्पष्ट समानता है। विश्व प्रसिद्ध जर्मन विद्वान शोपेन हार का दृढ़ विश्वास है कि विश्व में उपनिषदों से बढ़कर स्वाध्याय साहित्य अन्यत्र नही है "उपनिषद उच्चतम बुद्धि की उपज है, एक न एक दिन जनता का यही धर्म होगा।"

डॉ० जीन प्राजीलुस्की ने शोध किया है कि ईरानी साधक 'मानी' (Mani) ने भारत में रहकर आध्यात्मज्ञान का गहन अध्ययन किया था ई० २४० मे स्वदेश लौटकर धर्मप्रचार मे लगा था । इसी के पास ग्रीस क्षेत्र के प्लाटीन्स (प्लेटो) ने ज्ञानार्जन किया है । प्लेटो के री पब्लिक एवं फ्रेंड्स ग्रंथ मे भारतीय दर्शन शास्त्र है ।

शार्व, विन्टरनीज, मेक्समूलर, इमर्सन, ई० जे० डविक, विलियम राल्फ इंगे आदि पाश्चात्य विद्वानों ने स्पष्ट लिखा है कि प्लेटो, हेराक्लीट्स, एम्पेडीकल्स, एनेक्जागोरस, डीमाक्रीट्स, एपीक्यूरस, पीथागोरस, प्लाटीन्स आदि की दार्शनिकता भारतीय दर्शनशास्त्र की प्रतिछाया है । राल्फ, ग्रिफ्त, मॉनियर, अलेक्जेंडर, कनिंघम, व्हीलर, हापकिन्स ओल्डवर्ग आदि ने भी भारतीय वैदिक ज्ञानार्जन करके शोध साहित्य सृजन किये हैं ।

पेरिस वि० वि० के प्रो० लुइ रिनाउ का कथन है कि भारत बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक सम्पदा का धनी है, इसी कारण भारत के प्रति प्रेम और श्रद्धा हैं ।

फ्रेडरिक, शेलिंग, रोम्यारोला, विक्टर क्रोसिन भी भारतीय दर्शनशास्त्र के प्रशंसक हैं ।

एम० लुई जेकोलियट श्रद्धावनत हो लिखते है कि हे प्राचीन भारत भूमि श्रद्धा, ' म, कला की जन्मदात्री, पाशविक अत्याचारों से नष्ट न होने वाली तुझे प्रमाण है ।

प्रो० पी० जॉर्ज का अनुभव है कि भारतीय करोडों व्यक्ति साधु, सन्तों जैसा सात्विक, सरल, निष्कपट जीवन जीते है ।

कवि सेम्युअल जॉन्सन का भी मत है कि हिन्दू लोग भक्त, धार्मिक सत्यवादी, कृतज्ञ, न्यायप्रिय होते हैं ।

लार्ड विलिग्टन का मत है कि भारतीय राजा हो या गरीब हो शील सम्पन्न, दयालु, कृतज्ञ और न्यायप्रिय होते हैं ।

क्रिप्लिन का मत है कि हिन्दू नीति सम्मत बोलता है ।

बर्नार्ड शा लिखते हैं कि हिन्दू में बनावटी पन नहीं है।"

अबुल फजल ने अनुभव किया है कि हिन्दू दयावान, निर्वैर होते है।

रोम्यां-रोला का आत्म विश्वास है कि यूरोप और एशिया के अनेक धर्मों मे हिन्दू धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है।

पौलेण्ड की कुमारी दिर्नोवास्का का अध्ययन है कि हिन्दुओं में जन्म जात एकात्म बोध रहता है।

सन् ८६ मे कलकत्ता में दिवंगत ७२ वर्षीय विदेशी विद्वान प्रोफेसर ऑर्थर एल० वाशम हिन्दू धर्म के प्रति अति आस्थावान थे। हिन्दू दर्शन शास्त्र के विद्वान एव द वाण्डर दैट वाज इण्डिया तथा स्टडीज इन इण्डियाज हिस्ट्री एण्ड कल्चर ग्रंथ के लेखक थे। भारत विद्या विश्वकोष नामक महत्वपूर्ण ग्रंथ का लेखन व सम्पादन कर रहे थे, यह अपूर्ण रह गया है।

प्रसिद्ध ब्रिटेनी उपन्यासकार सामर सेट माम के घनिष्ठ मित्र ब्रिटेन में जन्में क्रायस्टोफर ईशखूड ने १९४० से हिन्दू धर्म मे दीक्षित हो दक्षिण कैलीफोर्निया की वेदान्त सोसायटी में सभ्यस्त रह गीता, पातंजलि कृत योग सूत्र, शंकराचार्य एवं रामकृष्ण पर पुस्तकें लिखी हैं।

वृन्दावन में हरे कृष्ण (यूरोपियन) मन्दिर मे यूरोपियन अनेक परिवार शुद्ध वैष्णव वेश भूषा में रह भजन कीर्तन करते है। विदेशों मे भौतिक भूत से दुखी असख्य परिवार आत्मशान्ति पाने हेतु वैदिक आध्यात्म या वैष्णव भक्ति के प्रति निरन्तर आस्थावान हो रहे है। सुप्रसिद्ध महेश योगी संस्थान भी विदेश मे वैदिक प्रचार मे व्यस्त है।"

डॉ० जेम्स कजिन्स ने भारतीय संस्कृति को आदर्श एवं मानव मात्र के लिए कल्याणकारी माना है।

याकूबी नामक विद्वान ने नौवी शती मे लिखा है कि बुद्धि, विचारशीलता, गणित, फलित ज्योतिष एवं चिकित्सा विज्ञान में भारतीय सभी से ऊंचे है।

डॉ० थीबो–रेखागणित के लिये संसार भारत का ऋणी है। यूनान का नही। प्रो० वेवर–अरव में ज्योतिष विद्या का विकास भारतवर्ष से हुआ है। कोलब्रुक–चीन एवं अरव को अंकगणित भारत ने दिया है। अन्य किसी ने नही। प्रो० कॉक (अमेरिका)– पन्द्रह सौ वर्ष पहले आर्यभट्ट द्वारा वनाए गए गणित सूत्र कम्प्यूटर के लिये उपयोगी सिद्ध हुए हैं। व्रह्मगुप्त, जयदेव एव भास्कर (२) की गणित रीति अधिक सरल है। पश्चिमी देशों मे भारतीय गणित ग्रंथो का अध्ययन मनन किया जा रहा है।

ए० ए० मेकडानॉल्ड ने लिखा है–विज्ञान मे यूरोप भारत का वहुत ऋणी है। रेखागणित, अंकगणित, वीजगणित, चलन कलन, अंकों, भिन्नों, शून्य, धनात्मक, ऋणात्मक, संख्याएं, सरल समीकरण से लेकर वर्गात्मक समीकरण भारतीय मस्तिष्क की उपज है, विवेचन आश्चर्यप्रद है।

भारतोत्पन्न अंक एवं दशमलव पद्धती विश्व में व्याप्त है। सूर्य सिद्धान्त, पंचसिद्धान्तिका, सिद्धान्त-शिरोमणि एवं वाराही संहिता खगोल विज्ञान के महत्वपूर्ण ग्रंथ अद्यावत अकाट्य है।

वेद, शिव पुराण, देवी भाग्वत, मार्कण्डेय पुराण, महाभारत, विष्णु पुराण, श्रीमद् भागवत, वा० रामायण आदि ग्रंथों मे भी रितु मास, अयन ग्रह राशि आदि का वर्णन है।

सूर्य चन्द्र ग्रहण, उदय, अस्त, संक्रान्ति, ग्रह गति, स्थिति, स्थान, दिशा काल, परिणाम आदि तथा व्रह्माण्ड की स्थिति समयज्ञान नक्षत्र रूप एवं सम्वन्धित विभिन्न यंत्रो का वर्णन इन ग्रथो मे हैं। वेद पुराणादि ग्रंथ हजारो वर्ष पुराने हैं, आधुनिक नही है, यह सर्वत्र मान्य है। सिद्धान्त शिरोमणि ग्रंथ मे भास्कराचार्य ने लिखा है— आकृष्टि शक्तिश्च मही तथा यम् स्वस्थं गुरु स्वाभिमुखं स्व शक्त्या आकृष्यते तत्पतती अर्थात पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति ऊपरी वस्तु को अपनी ओर खींचती है, जिसे वस्तु का गिरना हम कहते हैं। इस

शोध का मिथ्या श्रेय बाद मे जन्मे न्यूटन को दिया जाता है जो मित्थ्या है। विश्व विख्यात गणितज्ञ श्री निवासन के गणित प्रश्नों का उत्तर विश्व मे चर्चित रहा है। विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक रामन के (१९२८-३८) शोध रामन प्रभाव (युग) के नाम से प्रसिद्ध हुए थे उनका महत्व बढा दिया है, आधुनिक "लेसर" के शोध ने। मुस्लिमों द्वारा अनेक ग्रथागार एवं हजारो ग्रथ नष्ट किये जाने बाद भी उपलब्ध शेष अंशात्मक साहित्य भी भारतीय ज्ञान को सर्वोच्च सिद्ध करता है। वैशेशिक दर्शन शास्त्र के रचयिता महर्षी कणाद नें सर्व प्रथम द्रव्य की अविनाशिता प्रतिपादित की है। पदार्थ का सूक्ष्मकण परमाणु अविभाज्य एवं अविनाशी है, अर्थात्त परमाणुवाद के प्रणेता भारतीय ऋषी कणाद है।

छादोग्य की एक कथा का सारांश है कि वट वृक्ष के फल मे वहुत छोटा सा बीज होता है, उसके नही दीखने वाले अणुतम भाग में विशाल वट वृक्ष है।

भारतीय वैज्ञानिक जगदीशचद्र वसु ने अपने आविष्कृत यंत्रों द्वारा प्रयोग कर सिद्ध किये है कि स्थावर जंगम मे चेतन शक्ति व्याप्त है। यह भारतीय दार्शनिक सर्वात्मवाद की सत्यता का प्रमाण है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर०पी० थत्ते ने सगर्व दृढता से कहा है कि वेदो मे भूत, भविष्य, वर्तमान की परिस्थितियों का चित्रण है। वर्तमान विज्ञान मे ३७५ रेड़िओ फ्रीवग्वेसी खोजने की वात कही जाती है उसका वर्णन भी वेद मे अपने ढंग से है। वेदो का प्रत्येक शब्द सार गर्भित है।

डॉ० रिक ब्रिग्ज (अमेरिकन कम्प्यूटर इंजीनियर)—व्याकर्णियों द्वारा सस्कृत श्लोक रचना पद्धती की समानता ही कम्प्यूटर भी करता है।

फिनलैण्ड के डॉ एस्क्का मौला का शोध है कि विज्ञान की जन्म भूमि भारत है मिश्र या मेसोपोटामिया नही। आठवी शती में अल

अल जहीज ने लिखा है—भारतीय ज्योतिप, गणित, आयुर्वेद, वास्तु-शास्त्र, चित्रकला, काव्य, दर्शनशास्त्र, तथा नैतिकता हिन्दुओं मे पूर्णता पर है, इनमें स्वच्छता, वीरता और विवेक है। ध्यान प्रणाली के जन्मदाता है। ई० १९८५ से १५८० वर्ष पहले ई० ४०१ से ४१० तक चीनी यात्री "फाहियान" भारत भ्रमण कर अनुभव लिखा है। कि भारतीय नगर वहुत वड़े है और सम्पन्न है, अशोक के राजमहल के पत्थरो पर तक्षण शिल्प इतना सुन्दर है कि जैसे देवता ने बनाया हो। शासन अच्छा है प्रजा सुखी है व्यापार उद्योग अच्छा है जनता सदाचारी विद्या और धर्मप्रेमी है, धार्मिक अत्याचार नही है धर्मों का आदर है, राजा वैष्णव है किन्तु वौद्ध मठो को पर्याप्त दान देता है शिकार का शौक नही है अहिंसक है। मांस की दुकाने नही है सूअर मुर्गे का पालन नही है, वडे-वडे भवन, मन्दिर वनाए जाते है, यात्री हेतु धर्मशाला एव मुफ्त भोजन प्रवन्ध है, कई जगह औपधालय है, गरीव का उपचार मुफ्त होता है।, व्यापार मे ईमानदारी है सर्वत्र सुरक्षा है, गरीव को अन्न मिलता है, सोना चांदी के सिक्के हैं, कौडियो का भी चलन है, मार्ग पर छायादार वृक्ष हैं कई जगह कुएँ है (इन्ही प्राचीन व्यवस्थाओ को शेरशाही निर्माण वतलाया गया है)

प्रो. विल्सन—गोलो का आविष्कार सवसे पहले भारत मे हुआ है। कर्नल रशव्रुक विलियम—भारत मे तोप, वन्दूक एवं शीशे की गोली का प्रयोग वैदिक काल से है। अथर्ववेद में सूत्र है।

युवानश्वाङ्ग भारत मे १५ वर्ष अध्ययन रत रहा नालन्दा पाच वर्ष रहा था भारत से ६५७ हस्तलिखित ग्रथ अपने देश ले गया था। भारत मे यत्र तत्र उसको राजकीय सम्मान मिला था।

ई० ६३० से ६४५ तक भारत के अनेक नगरों मे भ्रमण तथा नालन्दा विश्वविद्यालय मे अध्ययन करने वाला प्रसिद्ध चीनी यात्री "ह्व—एन सांग" के अनुभव का सारांश है—भारतीय कृतज्ञ होते हैं, शरणागत की रक्षा करते है ब्राह्मग वहुत विद्वान और सदाचारी है,

इनकी संख्या कम है, वैदिक धर्म का बहुत आदर है, विद्या और धर्म का प्रचार करने समुद्र मार्ग से एशिया मे जाते है, बौद्ध भी बहुत है, नालन्दा विद्यालय मे पन्द्रह हजार छात्र रहते है, सभी धर्मों का आदर है। जनता धर्मान्ध नही है, धर्म प्रेमी है, शिक्षा नि शुल्क है, स्त्रीशिक्षा भी है, पर्दाप्रथा नही है, "समाज मे जाति और छुआ-छूत का विचार कम है" मुख्य व्यवसाय कृषि है, व्यापार उन्नत है देश समृद्ध है, जनता सरल एव ईमानदार है, सड़के बडी और चौड़ी है मार्ग पर छायादार वृक्ष है। उपरोक्त अनेक विद्वानों के स्वानुभव से वर्णित वर्णन मे ठोस प्रमाण है कि भारत विद्या विवेक वैभव मे समृद्ध एवं सुसस्कृत देश था तथा शेरशाह और मुगलो द्वारा करवाए गए निर्माण की बाते पूर्णत गलत है तथा कथित महल किले उद्यान मकवरे मार्ग आदि समस्त निर्माण पूर्व कालिक राजाओं की सम्पदा का बाह्या-वरण परिवर्तित कर उनका मुस्लिमीकरण किया गया है मूल से नवनिर्माण नही हुआ है नितरन्तर युद्ध रत मुस्लिम शासको को स्थापत्य निर्माण का अवसर ही नही मिला।

बाल्मीक ऋषि राम के समकालीन थे, सीता द्वारा सहयोग पाकर ही वे रामकथा लिख सके है। रामायण में लिखा है—अयोध्या १२ योजन लम्बी एवं तीन योजन चौड़ी हे, चारों ओर परिघा है विशाल प्राचीर है द्वार है, अश्वगज रथ शस्त्र सज्जसेना है, सैनिक विद्यालय है, सेना को वेतन एवं सुविधाएँ प्राप्त होती है, उच्च शिखराकृति राजप्रासाद है, मार्ग पर जल प्रक्षेप होता है, मार्ग दीप रहते हैं, पुष्पवाटिका है, वस्त्राभूषण उत्तम हैं, अपराधी पुत्र को क्षमा निर्दोष व्यक्ति को दण्ड नही देते है, असावधान शत्रु पर प्रहार नही करते है इत्यादि। ऐसे वैभव सम्पन्न राज्य एवं नगर भारत मे थे (इन्हे काल्पनिक बतलाने वाले कल्पना काग ही है।)

वा. रा. बा. कां. अ. ५ प्रासादै रत्न विकृतै पर्वतैरिव शोभिताम। सर्वरत्न समाकीर्ण विमान गृह शोभिताम्—पर्वत जैसे विशाल भवन

(महल) रत्नजडित शोभायमान थे यह हमारे पुराण–इतिहास मे स्पष्ट उल्लेखित है। द्वारका की लम्बाई चौडाई ४८ कोस थी। सुवर्ण रत्नादि जड़ित भवन थे।

ईसा पूर्व यूनानी विद्वान स्ट्रैवो ने भारत में देखा कि भारतीय लोग मकानो को ताला नही लगाते है, जवानी बात पक्की मानते हैं।

ईसा से तीनसौ वर्ष पहले पश्चिम एशिया के ग्रीक (यूनानी) नरेश सेल्यूकस निकेटर के राजदूत "मेगास्थनीज" ने सम्राट चन्द्रगुप्त की सभा में कई दिन रह कर अनुभव किया कि शासन प्रवन्ध अच्छा है, हिन्दुओं की ईमानदारी की तुलना कही नही है। हिन्दू ताला चावी नहीं जानते है। कृपक शान्त स्वभाव है। नगर में नही जाते हैं, या कम जाते है, इन्हें युद्ध से मुक्ति है, निकट ही युद्ध होता रहे किन्तु कृपक को कोई भी पक्ष हानि नही पहुँचायेगा। अमेरिकी प्रोफेसर विल डुरेन्ट ने लाइफ आफ ग्रीस मे लिखा है कि ग्रीक आदि देशो मे युद्ध समय नगर, नागरिक, उद्यान, फलवृक्ष, फसल एवं कृषि वीज तक नष्ट कर देते है। भारतीय सजातीय भी परस्पर जूठा भोजन नही करते है, भोजन मे पवित्रता रखते हैं, व्यवसाय नही वदलते है, दास प्रथा नही करते हैं। अन्तर्जातीय विवाह मना है, ब्राह्मण ३५ वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्याश्रम मे रह अध्ययन अध्यापन करता है इनकी संख्या कम है, राजा दिन मे नही सोता है, दिनचर्या करते हुए भी राजप्रवन्ध मे व्यस्त रहता है, (आज ऑफीसर आराम चाहता है) वैद्य वंध्यत्व निवारण, पुंसवन और विष निवारण मे प्रवीण है, स्त्रियां भी शास्त्र चर्चा करती है, ब्रह्मचारिणी रह तपोवन मे रह सकती है। (उस युग में नारी शिक्षा उत्तम थी. एव तपोवन के एकान्त में भी सुरक्षित थी अर्थात चारित्रिक नैतिकता सुदृढ़ थी आज रक्षको मे ही असुरक्षित है यही अरव और यूरोपीय सस्कृति की भारत को देन है।)

आधुनिक-विद्वान विल्सन, कोल ब्रुक, जॉन्स, ग्रीफिथ, सेरिंश, टौर्न, जेम्सटॉड, कांडयेल, मेनियर, विलियम्स, मेक्समूलर मार्टिन आदि ने लिखा है कि—सती स्त्रियाँ केवल भारत में है, आर्य स्त्रियो जैसी स्त्रियां अन्यत्र नही है । भारतीय स्त्री के जैसी चारित्रिक नैतिकता, व्यवहारिकता संसार की अन्य स्त्रियों में नही है।

वाल्मीक एवं तुलसीदास की रामायण तथा अन्य हिन्दू ग्रंथ पत्नी (नारी) को सर्वोच्च त्यागमयी मानते है ।

राठोड मालदेव की पत्नी उमादे विवाह समय विरक्त हो गई थी किन्तु सती हुई थी । पाबूजी की पत्नी अर्धविवाहित रही किन्तु सती हुई हे । कोडमदे, नारायणी, ढाँढण आदि अनेक सती वन्दनीय हुई है । भावी पति तोगा अवश्व ही जूझार होगा यह निश्चित जानकर ही कुमारी बाला भटियाणी ने तोगा को वरण कर हिन्दू सतीत्व का प्रमाण सरे मैदान दी है। सतीत्व रक्षण हेतु हजारों महिलाएँ जौहर की है। सकटग्रस्त पति की मनः पूर्वक सेवा की है।

हू एन साग ने कृषक को शूद्र लिखा है, समाज व्यवस्था के लिए शारीरिक क्षमतानुसार मानव जाति के चार वर्ग बनाए गए, ताकि कार्यक्षमता व्यवस्थित रहे । चारों एक दूसरे के पूरक रहे तदर्थ व्यवहारिक नियम बनाए गए;किन्तु विदेशियों के आने के बाद परिस्थितियों ने छुआ छूत उत्पन्न कर दी और अब प्रगति के नाम पर नियमों की उपेक्षा मे आचरण भ्रष्टतावश अनैतिकता का उबाल निरन्तर तीव्रता पर है। इसके अन्तराल मे विनाशक लावा है। महा भा. अनु. ४८ चाण्डालात्पुल्क संचापि खराश्वगज भोजिनम् मृतचैल प्रतिच्छन्नं भिन्न भाजन भोजिनम ॥२४॥ आहार तथा उपार्जन भी निम्न स्तर का था । हजारों वर्ष पहले के युगानुसार बनी आचार संहिता उस युगानुसार उचित थी, उस युग मे किसी शूद्र या अन्त्यज ने कभी विरोध नही किया । सीमा नहीं लाँघा, जबकि अन्त्यजो को ज्ञात हो कि ब्राह्मणवाद बुद्धिबल का था। यवनों की तरह शस्त्र-

वल से नही लादा गया था। उस युग मे अल्पतम संख्या में ब्राह्मण थे, किन्तु तपोवल, विद्यावल, त्यागवल के धनी होते थे। उस ब्रह्म शक्ति पुंज को राजा, महाराजा, और देवता भी श्रद्धात्मक नमन करते थे, अपनी उन त्रय शक्ति से रहित हो रहा ब्राह्मण यंदुवशी और रघुवंशी क्षत्रियो (राम-कृष्ण) को नित वन्दन करता है, अत: व्यक्ति का महत्व कम है व्यक्तित्व का महत्व ही मुख्य है। ब्राह्मण आज की तरह पथभ्रष्ट नही थे इसी कारण उस युग में चारो वर्ण अपनी सीमा मे सन्तुष्ट थे। आज चारो वर्ण दिग्भ्रमित पथभ्रष्ट उन्मुख विचर रहे हैं। फलतः सर्वत्र स्वैराचार, अशान्ति एवं मर्यादा-हीन आसुरी वृत्ती द्रुत गतिमान है। राज और समाज व्यवस्था और सुरक्षा के प्रति चारो वर्ण भारत मे मुसलमां मुगलो के आने के पहले परस्पर निर्विवाद निष्ठा एव सौहार्द्य रखते थे। उस युग मे छुआ छूत भेद भाव इस यूग मे है वैसा नही था। दलित, अछूत, अस्पृश्य यह द्वेपमूलक भेद नीति आधुनिक है। सत्तालोभ ने इसे अधिक दूषित करने सद्भावयुक्त सौमनस्य से विमुख कर दुर्भावयुक्त वैमनस्य के रणक्षेत्र पर झोका है।

वावा साहेव अम्वेडकर धन्यवाद के पात्र है कि उन्होंने वौद्ध (सात्विक, अहिंसक, सेवा प्रधान) धर्म स्वीकारकर अपने समाज को विधर्मी होने से वचाये है।

मेगास्थनीज, फाहियान, ह्वेनसाग की भारत यात्रा मे सदियों का अन्तर है, इन तीनों मे से एक ने भी छूआ छूत का उल्लेख नही किया है। शौचाचार का ही उल्लेख किये है।

मनु १०।१२३ विप्र सेवैव शूद्रस्य-शूद्र ब्राह्मण की सेवा करे। १०।१२६ न शूद्रे पातकं किंचिन्न-उच्चिष्ट का दोष शूद्र को नही।

१०।१२७ धर्मेप्स वस्तु धर्मज्ञा-धर्म कर्म का इच्छुक शूद्र

मंत्र सह धर्म कर्म कर सकता है। किन्तु सेवा कर्म भी पुण्य एवं मोक्ष दाता है।

१०।११० प्रति ग्रहस्तु क्रियते शूद्रादप्यन्त्यजन्मन:—
—ब्राह्मण-शूद्र-अन्त्य जादि से प्रतिग्रह ले सकता है।
शाक्त-ब्रह्माणी सर्व कार्येषु, जयार्थे नृप वंशजाम्
लाभार्थे वैश्य वंशोत्थां सुतार्थे शूद्र वंशजाम्
दारुणे चान्त्य जातीयां पूजयेद्विधिना नरः

सभी कार्यों के लाभार्थ ब्राह्मण कन्या का पूजन, विजय के लिये क्षत्रिय कन्या का पूजन, द्रव्य लाभ हेतु वैश्य कन्या का पूजन एवं सन्तान प्राप्ति हेतु शूद्र कन्या का पूजन तथा दारुण कार्यों के लिये अन्त्यज कन्या का पूजन करने का विधान है, पूजा निर्विकार मन से हो तो लाभ देगी, अतः छूआ छूत किस प्रकार थी यह विचारणीय है।

उपरोक्त सूत्रों से ज्ञात होता है कि उस युग मे छुआ छूत शौच प्रधान थी. जाति गत नही थी।

मनु० अ २।५७-५८ अज्ञानी ब्राह्मण केवल नाम का ब्राह्मण है जैसे काठ का हाथी अर्थात तपोनिष्ठ विद्वान निर्लोभी मानव हितैषी गुण युक्त ब्राह्मण ही वास्तव में ब्राह्मण कहलाने योग्य होता है।

ज्ञानहीन ब्राह्मण को मनु ने काठ का हाथी बतलाया है। अतः मनु को पक्षपाती कहना व्यर्थ है तथा मनु का कृत युग बीते लाखों वर्ष हो चुके है। मनु की मान्यता कृत युग मे थी कलि मे पाराशर स्मृति प्रधान है।

मनु ने ब्राह्मण को भी नियम बद्ध किया है, आजाद नही छोड़ा है, किन्तु अब ब्राह्मण भी नियम विरुद्ध हुये जा रहे है। महावीर स्वामी ने भी कहा है—कम्पुणा चम्मणो होई कम्पुणा होई स्वत्तियो अर्थात कर्म से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र होते है।

चतुर्वर्ण–वृक्ष, रत्न, धातुएं, ग्रह आदि पर भी है जो उनकी उपयोगिता का परिचायक है।

ई० १९३० के पहले हिन्दू एक थे, एकात्मभाव था, वर्णभेद में अस्पृश्यता शौचाचार प्रधान थी जो परिवार में भी समयानुसार रखी जाती है।

जो सवर्णो में भी रही है। अव भी है। शूद्र वर्ग मे भी जाति भेद है। किन्तु मुगलों के आने वाद अस्पृश्यता को वृद्धी विकृती एव स्थायी रूप मिला है। साठ वर्ष पहले की मराठी काव्य की एक पंक्ति-झाले भ्रष्ट भटोवांचा विघडला ताल रै मनु के वाद कलौ पाराशर स्मृति मे लिखा है—लवण मधु तैल च दधि तक्रं घृतं पयः न दूष्येच्छूद्र जातीनां कर्यात् सर्वेषु विक्रयम् समय ने नियम वदल दिया है। मुगलो द्वारा भारत मे यत्र तत्र निरन्तर प्राणी संहार होता रहा है, अकवर के समय ई० १५५५—५६, ७३—७४, ८३—८४, ९५—९६ मे भयानक अकाल पड़े थे। वदायूनी लिखता है कि इन्सान को इन्सान खाने लगा था, लाशें वड़ी वीभत्स दीखती थी। मुल्ला अव्दुल हमीद लाहोरी की लेखनी से भी विदित होता है कि शाहजहा के समय गुजरात और दक्षिण मे विकट अकाल पड़ा था कि रास्ते लाशो से भरे पड़े थे, इन्सान–इन्सान का गोश्त एव हड्डियां खाने पर मजबूर हो रहे थे। औलाद और कुत्ते का गोश्त भी नही छोडे।

पाठक कल्पना करें कि कितना घोर, घृणित, वीभत्स दृश्य था वह। ऐसे घोर घृणित स्थलो की सफाई तरवार के वल पर श्रमिको से मुगल सैनिक करवाते थे, मौत के भय से मजवूर श्रमिक–शूद्र–कृषको ने घृणित स्थलो की सफाई का कार्य किए। तथा तरवार के वल पर ही हजारो हिन्दुओ को मुस्लिम वनाया जा रहा था।

उक्त महान घिनौने दृश्यों को देखकर तत्कालीन मुगलिया मनसवदार शासक सामन्त सरदार ओहदेदार आदि ने शाही गर्वोन्मतत हो उन हिन्दू श्रमिको से घृणा सह छूत का अभिनय किया है, इनका अनुसरण जनता भी करने लगी और तव अस्पृश्यता ने विकृत स्थायी रूप लिया है। किन्तु आधुनिक फूटपरस्त विदेशी टुकड़खोर इसे गलत रूप से जनता मे फैलाकर परस्पर लड़वाने मे श्रमशील है। मनु स्मृति ३००० वर्ष पहले की है तीन हजार वर्ष वाद ससार मे हुए परिवर्तन पर विचार आवश्यक है।

सामयिक परिस्थितियो दश अनुशासन हेतु विधान वनते है। मनु पराशर शुक्र याज्ञवल्क एव औरो के विधान उस युग की आवश्यकता नुसार वने थे। जिन्हे चारो वर्णो ने माना है। उसी अनुसार जीवन जीया है। नियमो का पालन अवश्य हो इसलिये कठोर दण्ड के नियम वने। शूद्र वेद श्रवण करें तो उसके कान मे गर्म शीशा भर दो। सुनाने वाले ब्राह्मण की जबान काट दो। याने दण्ड दोनो के लिये है। किन्तु किसी दण्डित का उदाहरण नही मिला। हजारो वर्ष पहले के नियम ८०% समाप्त हो गये। हो रहे है। हिन्दू वन्धुओं मे द्वेष की खन्दक विस्तृत करने का कुटिल यत्न वर्षो से हो रहा है। प्राचीन वर्ण व्यवस्था को द्वेशोत्पादक रूप में प्रचारित कर राष्ट्रीय एकता को विघटित किया जा रहा है। अर्धसदी के पहले हिन्दू एक हिन्दू था उपासनाए भिन्न थी। किन्तु कुटिल धूर्तो के दलालों ने हिन्दू के पाच टुकडे कर दिये हैं। सख्या वडी तादाद मे घटा दी है। घटाने के यत्न मे है। हिन्दू पजा (सनातन, आर्य, जैन, बौद्ध, सिक्ख) एकात्म हो गया तो राष्ट्र सशक्त बन जायेगा इसलिये इसे निर्वल रखने हेतु जातीय प्रान्तीय धार्मिक आदि अनेक विवाद उत्पन्न कर राष्ट्रीय सगठन एव प्रगति मे वाधा पहुँचाई जा रही है। शूद्रो से छुआ-छूत का नियम काफी घट चुका है यह सभी जानते है तथा जातिगत सीमा शूद्रो व अन्त्यजो मे भी प्रचलित है।

हू एन साग ने लिखा है कि समाज में जाति और छूआ-छूत का विचार कम है। यह सु-स्पष्ट ठोस प्रमाण है कि वैदिक-पौराणिक युग मे अस्पृश्यता शौचाचार प्रधान थी। राजा हरिश्चन्द्र, डोम की नौकरी किया, भीष्म का पिता शान्तनु ढीमर की पुत्री से विवाह किया, राम ने भीलनी के जूठे वेर खाये, रईदास चमार के यहां गोरखनाथ गुरू पानी पीते थे, गुरू नानक देव, बौद्ध, जैन तीर्थंकर, महात्मा गांधी आदि ने छुआ छूत नही मानी है ऐसे अनेक उदाहरण है। उपरोक्त तथ्यो से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि शूद्र अछूत नही था कृषी कर्मी

श्रमशील था। शूद्र से अस्पृश्यना रही होती तो वैदिक विराट पुरुष का सवल अंग शूद्र नही कहलाता वल्कि शरीर से अलग रखकर कोई घृणात्मक नाम शूद्र का रहा होता।

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्—वौद्धिक कार्य, वाहू राजन्यः-क्षात्र कर्म सैनिक रक्षण (रंजिताश्च प्रजा.-प्रजा का हितैषी) उरु तदस्य यद्वैश्यः —जीवनोपयोगी वस्तुओं का प्रवन्धकर्ता वैश्य, इन तीनो की आवश्यकताओ की पूर्ती का भार वहन कर्ता शूद्र याने शरीर का भार पैरो पर है। इस एकात्म विराट शरीर की कल्पना ब्राह्मण ग्रथ वेद मे है। यह कल्पना पशु, पक्षी, वृक्ष, भवन आदि पर नही की हैं, मानव शरीर पर की है। व्यक्ति को स्वयं का शरीर प्यारा है, उसी तरह चारो वर्ण में अपनत्व एवं सद्भाव रहे यह आर्यो (हिन्दू) मे एकात्मता का वैदिक प्रमाण है। ऋगवेद १/१६१/२ स गच्छध्व स वदध्व-सभी को एकता के लिये आदेश है। सामवेद २१।१।६ स्वस्तिन इन्द्रो-सभी के लिए मंगल कामना है, किसी एक वर्ण के लिये नही है, तव यह सही है कि भेद भाव छुआ छूत भारत मे मुस्लिम आक्रमणो के कारण हुए हैं।

मंत्रोच्चारण मे दोष होने से हानि न हो, इसलिये वेदाध्ययन श्रवण की मनाई मे द्वेश नही है, देश हित रहा है।

वैज्ञानिक डॉ० डार्लिंगृन ने रक्त शोध से सिद्ध किया है कि ब्लड ग्रुप का प्रभाव उच्चारण पर अवश्य होता है, "ओ" ग्रुप एव अन्य ग्रुप द्वारा "द" के उच्चारण मे प्राय. अन्तर होता है। रक्त की सात शाखा मे वीस हजार भेद हैं। ऋगवेदीय श्लोक सं गच्छध्व का अर्थ है—हम सभी मे एकता हो वाचा, मनसा, कर्मणा मे भेद न हो, समाना हृदयानि व.—सभी एक दिल हो। इतनी आत्मीयता और संगठन का उल्लेख वेद मे है। यजुर्वेद—मित्रस्य चक्षुपा समीक्षा महे—परस्पर मित्रता की द्रष्टि रहे। अथर्व वेद—मा नो द्विक्षत कश्चन—हमारा कोई भी द्वेषी न हो, ऐसे अनेक सूत्र वेदो मे है, जिनसे मानवता

उन्नत होती है, सगठित्त होती है। अन्य वैदिक ग्रंथों में भी ऐसे सूत्र हैं किन्तु विदेशियो के बहकाने मे हमने अपने वैदिक वांङ्मय की उपेक्षा कर अपनी ही हानि की है, कर रहे है।

ऋ १।११४।१ विश्वं पुष्ट ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्–विश्व समृद्ध हो, ग्राम मे कोई दु खी न हो।

अथर्व ९।१०।१४ यज्ञो दिश्वस्य भुवनस्य नाभिः–विश्व रूपी भवन का स्वस्थ जीवन केन्द्र नाभि रूप हवन है। प्राकृतिक, शारिरिक, मानसिक, बौद्धिक प्रदूषण को नष्ट करने के लिये हवन ही एक मात्र उपाय है। हवन के अभाव से ही विश्व मे विविध प्रदूषण व्याप्त हो रहा है।

कुछ वराह नन्दन हवन एवं धार्मिक कृत्यों पर मर्कटीय उन्माद ग्रस्त प्रलाप करने लगते है, ताकि साम्प्रदायिक द्वेष उग्र होता रहे। जबकि यज्ञ का लाभ समस्त विश्व को मिलता है, यज्ञ मे होमित खाद्य सामग्री विश्व का वायुमण्डल शुद्ध कर प्रदूषण घटाती है। हवनों के अभाव एवं यान्त्रिकी धूंए के दुष्प्रभाव से जन मानस उग्र एव रुग्ण हो रहा है १९८५-८६ एक वर्ष मे भारत मे अढाई अरब सिग्रेट, वनी, रुट आदि भी कम नही बने। शासकीय रक्षण मे लाखों टन अन्न सडता है, इन हानियो पर किसी विवेकान्ध ने कलम नही चलाई। नक्षत्रों पर पहुँचकर कोई लाभ नही होगा, वही खरबो रुपया धरती पर मानव हित मे उपयोगी सिद्ध होगा।

भारतीय अभिवादन का सगर्व तिरस्कार करने वाले अशान्ति प्रिय विदेशी गुलामों को ज्ञात हो कि विश्व मे हिन्दू अभिवादन विधि बहुत महत्वपूर्ण है। प्रणाम, दण्डवत, चरण वन्दन, नमन, आलिंगन आदि परस्पर सौहार्द्र मय अपनत्व वर्धक तथा द्वेषावरोधक है। किन्तु आज स्वाधीन देश की आधुनिक तुष्टिकरण शिक्षा ने भारतीय संस्कृति सह गुरु शिष्य परम्परा के पाठ्यक्रम समाप्त कर छात्रों को उच्छृंखलता के चक्रवात मे झोंका है। भगवान राम एवं कृष्ण राज-

पुत्र थे, किन्तु गुरु आश्रम गरीब सहपाठियों के साथ समभाव से शिक्षा पाते थे। गरीब-अमीर का भेद नही था।

वैदिक ज्ञान भण्डार जैसा ज्ञान धन विदेशियो के पास नही था इसलिए कुछ विदेशी लोग वैदिक वाङ्मय पर कीचड उछाले है।

मुस्लिम अत्याचारो के कारण सामयिक परिस्थितियो वश छूआ छत, भेदभाव उत्पन्न हुआ है, किन्तु दोष ब्राह्मण या ब्रह्म ग्रथो को दिया जाता है, जो गलत है। विद्वज्जन इस पर अनुशीलन करे।

ब्राह्मण वर्चस्व महाभारत काल से समाप्ति की ओर वढा. चाणक्य के वाद लगभग समाप्त हो गया। ब्राह्मण कम थे, धन एव सत्ता लोभी कम थे, बुद्धिमान तपोनिष्ठ अधिक थे। राम और युधिष्ठिर द्वारा दिये गए ग्राम दान कई ब्राह्मणो ने लौटा दिये थे। वशिष्ठ, चाणक्य, समर्थ रामदास, स्वामी राजगुरु थे, किन्तु राजलोभी नही थे। दान में मिला खण्डेला राज्य ब्राह्मण ने वापस राजा को ही लौटा दिया था।

महाराणा सांगा ने चित्तौड राज्य हरदास चारण को भेंट में दे दिया किन्तु हरदास ने नही लिया। महाभारत युद्ध मे कई ब्राह्मण मारे गए। दुर्जन क्षत्रियो का सहारक परशुराम कभी शासक नही वना, सुयोग्य क्षत्री राम को परशुराम ने अपना शस्त्र दिया है जो महापण्डित किन्तु महामविप्ठ ब्राह्मण रावण के विरुद्ध उपयोगी हुआ। रावण के ब्राह्मत्व को नमन कर रावण को उसके कुटुम्बीय लाखो ब्राह्मण सह राम ने मौत के घाट उतार दिया इस कार्य का प्रमुख सहायक ब्राह्मण हनुमान सन्यासी ही रहा। राम ने भी विजित स्वर्णपुरी लंका पर अधिकार नही जमाया, नेय स्वर्णपुरी लंका रोचते मम लक्ष्मण। ऐसे सैकडो उदाहरण हैं, इस वीसवी सदी मे भी अनेक उदाहरण हैं। करीब पचास वर्ष पहले वांगड़ ने एक सौ एक मकान साज सामान सह ब्राह्मणो को दिया था। कलकत्ता के एक सेट की

माता एक लाख रुपया देखना चाही। पुत्र ने कल्दार की ढेरी लगवा दिया उसे वापस न रख मां के हाथ मे दान करवा दिया। पर्वशणान हेतु अन्य ब्राह्मण नदी गए थे। घर के रसोइया ब्राह्मण को एक लाख लेने को कहे, उस रसोइया ने खुद के ५ रु० एक लाख मे धर के कहा कि यह सब किसी और को दे दे। अचलपुर के अग्रवाल केदारमल, एव झूमग्लाल तथा कामठी के रामनाथ लोहिया फर्म द्वारा दिए जाने वाले मकान सुवर्णादि दान लेने से पं. घासीराम मिश्र ने इन्कार किया और अचलपुर के मोतीलाल अग्रवाल के लिए ढाई वर्ष नियमित गायत्री के २४ लाख जाप्यकर एक पुरश्चरण की दक्षिणा मे पाच तीफन याने लगभग २० बीघा जमीन मिली थी। किन्तु मोती लाल के हितैषियों ने व्यंग किये कि पारिश्रमिक मे बम्मन ने मोती को ठग लिया, यह बात सुन घासीराम ने प्रतिज्ञा घोषित किया कि जब तक वह जमीन मोतीलाल वापस नही लेगा तब तक अन्न ग्रहण करूं तो गो मांस खाये समान और जल गऊ रक्त पीये समान होगा दो दिन दो रात बीतने पर समाज में व्यग्रता हुई। पति निराहार तो पत्नी भी निराहार हो गई, बणियों ने क्षमा याचना कर लिए, अन्तत. मोतीलाल ने वह बीस बीघा जमीन वापस लिया कि कही दो ब्रह्म हत्या का पाप न भोगना पड़े। ऐसे और भी उदाहरण है।

विश्व के हर समाज मे बुरे और भले व्यक्ति होते है। किन्तु किन्ही दुर्गुणियो के कारण पूरा समाज दोषी नही है। हम अपना साहित्य छोड कुटिल विदेशियो द्वारा हमारे प्रति लिखा दूषित साहित्य पढ खुद को हीन समझने लगे यह विवेक हीनता है। विदेशी साहित्य जाल मे खुद को भूलना बिडम्बना है। आप अपना साहित्य पढकर ही गौरवान्वित हो सकेगे। समग्र पुराण साहित्य हमारा इतिहास ही है। पुराण रामायण महाभारत भागवत आदि ग्रथों को धार्मिक मान्यता इसीलिए दी गई कि उन्हे प्राण पण से सुरक्षित रखा जाय श्रद्धा पूर्वक सुना जाय ताकि पूर्वजों का गौरव हमे प्रेरित करता रहे।

पुराणानुसार कैप्टन स्पॅक ने नूविया (कुशद्वीप) जाकर नील नदी का उद्गम खोजा तव पुराणो का वर्णन विश्वास पाने लगा।

उन्नीसवी सदी के आरम्भ मे विल्सन ने विष्णु पुराण का अंग्रेजी अनुवाद किया तव अन्य विदेशी विद्वान भी पुराणो के मनन मे लगे। पुराणो का गहन अध्ययन कर पार्जीटर ने ऐतिहासिक सामग्री प्रस्तुत किया। स्मिथ ने मत्स्य पुराण मे आन्ध्रो का, विष्णु पुराण मे मौर्यो का और वायु पुराण मे गुप्त राज्यों का इतिहास वर्णन विश्वस्त माना है। भारतीय सभी धर्म ग्रथ प्राणिमात्र के हितकारी है। विदेशी वाग्मयानुसार जीवनचर्या नैतिकता की घातक है। विदेशी वन्दर के वंशज डार्विन के कहने से हम वन्दर के वशज क्यो वने? हमारा पूर्वज मनु स्वस्थ शुद्ध मानव था। विश्व मे शार्दूल, ड्रेगन——आदि प्राणी लुप्त है। उन्ही के समय का मानव जैसा पूंछधारी प्राणी था जो अव लुप्त हो चुका है। यदि वानर से मानव वना है तो परिवर्तन आगे भी होते रहना था। भगवान राम के समय वनवासी वनराज वानरराज कहे गये है। कुछ विदेशिओ द्वारा खुद की हीनता छुपाने, कुछ गद्दार भारतीयो को सुनहरे टुकड़े डालकर भारतीय श्रेष्ठताओ को हीन चित्रित करवा, भारतीय एकात्मता मे परस्पर द्वेष-फूट पैदा करने का योजनावद्ध कुटिल प्रयास गतिमान हैं।

यह कुटिल प्रहार श्रेष्ठताओ के केन्द्र राजस्थान पर अधिक हुआ है। सुमन और शूल सर्वत्र होते हैं। हर स्थान का अपना गौरव होता हैं। समग्र भारत भूमि तीर्थ है वन्दनीय व्यक्ति भी भारत मे सर्वत्र हुए हैं। उसी तरह राजस्थानी धरती भी पुण्य भूमि है।

विश्व को—"राजस्थानी-देन"

विश्व का प्रथम ज्ञान ग्रंथ वेद ब्रह्माकृत अ-पौरुपेय माना गया है। ब्रह्म से प्राप्त मन्त्रों पर जिन ऋपियो ने सिद्धी पायी उनके नाम सह छन्द संकलित हुए। मधुच्छन्दा, गुत्समद, विश्वमित्र, अत्री, वामदेव, भारद्वाज, वशिष्ठ, आदि ऋपि संख्या लगभग २०० है।

काश्यप के समय वेदमंत्र ५००४६६ थे, व्यास के समय १२००० रहे थे। ऋगवेद मे अब मण्डल १० सूक्त १०२८ मंत्र १०६०० पक्ति ४०००० है। इनका शृजन-संकलन राजस्थान में सरस्वती तट पर हुआ है।

सतयुग के आरम्भ मे अब से अनुमानत: अड़तीस लाख नकद ९० हजार वर्ष पहले ब्रह्मा ने पुष्कर मे यज्ञ किया था। एक योजन (आठ मील) भूमि पर देवता एव ऋषि, पण्डितों की आवास व्यवस्था थी। इसमे यज्ञ की अति विशालता स्पष्ट समझ सकते है। पुष्कर के चारों ओर नाग, स्वर्णचूडा नीलगिरी एव रत्नगिरी पर्वत है। इसी क्षेत्र मे ज्येष्ठ पुष्कर मध्य पुष्कर एव कनिष्ठ पुष्कर है।

यज्ञ समय लक्ष्मी, पार्वती एव इन्द्राणी के आने की प्रतिक्षावश सावित्री यज्ञ स्थल पर अति बिलम्ब से पहुँची। मुहूर्त बीत ना जाये इसलिए स्थानीय एक कन्या को गऊ द्वारा शुद्ध कर गायत्री नाम रख ब्रह्मा की पत्नी का स्थान दे यज्ञ आरम्भ किया गया। यह देख सावित्री ब्राम्हणो को श्राप दे पर्वत पर जा बैठी। सरस्वती वही अदृश्य हुई थी। रत्नगिरी का वह भाग सावित्री शैल कहा जाता है।

श्राप के कारण यज्ञ कार्य रुक गया तब उन्हे श्राप मुक्त करने गायत्री के प्रभाव से सावित्री शैल से पाच जल श्रोत प्रवाहित हुए। प्रभा, सुधा, कनका, यह तीन झरने ज्येष्ठ, मध्य एव कनिष्ठ पुष्कर मे समाए. नन्दा और प्राची ये दोनों लगभग १०–१२ मील आगे बढ़ कर नान्द ग्राम से आगे को मिल कर गोविन्दगढ के पश्चिम से लूणी-शुभ्रमती-साबरमती रूप लिए। नान्द ग्राम के निकट यह नन्दा सरस्वती कहलाती है। सम्भव है वशिष्ठ की नन्दोत्री नामक गऊ के कारण भी उक्त नाम हों।

इस यज्ञ समय देवगण, ऋषीगण एवं प्रकाण्ड पण्डितगण बड़ी संख्या में एकत्र हो कई दिन निबास किये है। अवकाश के समय ज्ञान यज्ञ—बौद्धिक विचार-मन्थन से नवनीत वेद संकलित हुए इसी एक

योजन क्षेत्र में सरस्वती तट पर वैदिक दार्शनिक ब्राह्मण ग्रंथो का श्रृजन होना युक्ति संगत है क्योकि यज्ञ मानिनी गायत्री को वेद माता कहा जाता है।

गायत्री मंत्र के एकाग्र चित्त २४ लाख जप करने से साधक में दैवी शक्ति का संचार आरम्भ होता है तथा निरन्तर ६० वर्ष या इससे कम समय में ५७६००००० जप करने वाला साधक दैवी शक्ति सम्पन्न हो सकता है। इसीलिये गायत्र्या ना परो मंत्रो कहा गया है।

छोटे पुष्कर निकट "गया" कुण्ड है। पुत्र मोह वश राजा दशरथ की आत्मा मोक्ष नही पायी थी, तब राम ने इसी गया कुण्ड पर श्राद्ध कर पिता दशरथ को मोक्ष दिलवाये थे। चतुर्थी मंगलवार हो तब उक्त कुण्ड से गया तीर्थ का फल मिलता है। इस जल के स्पर्श से श्णान से भूत प्रेत बाधा नष्ट होती है।

सरस्वती से द्रवद्वती पर्यन्त का भू-क्षेत्र ब्रह्मावर्त कहा गया है। सरस्वती के तटवर्तीय भाग मे लुदवा तक अडतालीस सौ स्थानो पर नगर ग्राम देवालय एव पकी ईंट से बने तीन सौ किलो के अवशेष मिले है। राजा एवं राज्य वैदिक शब्द है चन्द्रवशी, यदुवशी, अग्नि-वशी अनेक राज्य एव राजा ऋषियों द्वारा तथा स्वयं भी स्थापित यहां हुए है। इसलिये राजस्थान कहा जाना स्वाभाविक है। स्वाराज्यं वो राज्यं आदि का उद्घोष यहाँ से हुआ है।

आबू शैल माला में अम्बाजी से तीन मील पर कोटीश्वर शिवालय के निकट से प्रवाहित जलधारा, गिरनार से प्रवाहित जलधारा एव आ-राधन पुर के निकट की सरिता भी सरस्वती नाम से प्रसिद्ध है। तथा कच्छ होकर अरब सागर में मिलती है।

जैसलमेर मे ब्रह्मासर भी ब्रह्मा का यज्ञस्थल कहा जाता है। इस का उल्लेख प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ में है। यह ब्रह्मा का साधा-

रण दूसरा यज्ञ स्थल रहा है। लाखों वर्ष बीतने पर प्राकृतिक प्रकोप से भौगोलिक धरातल परिवर्तित होना असम्भव नही है।

(१) ब्रह्मा द्वारा वर्णित, ऋषियों द्वारा साधित वेदमंत्र ब्रह्मा के यज्ञ समय एकत्र हुए विद्वान ऋषियो के विचार मंथन का संकलन नवनीत वेद है। वर्तमान युग मे, विविध वैज्ञानिक चमत्कारी नव-निर्माण (आविष्कार) के सूत्र वेद मे है जो विश्व को राजस्थानी देन है। वेद का प्रथम भाष्य रावण ने किया है। चम्वल, वनास, गभारी, कौञ्च, वागां, लूणी, नदी तट आवासीय थे। जयपुर से ५२ मील पर पौराणिक मत्स्य राजधानी विराट नगर है, इसी क्षेत्र में भीम डूंगरी है। भीम द्वारा कीचक वध एव दुर्योधन अर्जुन युद्ध यहां हुआ है। जन श्रुति है कि चित्तौड़ दुर्ग भीम ने वनाया है। गढ पर भीमरोन तालाव है।

(२) चित्तौड़ से सातमील पर नगरी माध्यमिका भूगर्भ से १२३ शस्त्र पाषाण युग के मिले है तथा एक लाख बीस हजार वर्ष पहले से यहां सभ्य वसाहत के प्रमाण मिले हैं। आड़ावला पर्वत हिमालय से अधिक पुराना है। सरस्वती घाटी, आहड (उदयपुर) नगरी, कोटा, बून्दी गिलुन्डनोह अल्वर टोंक जयपुर पाली अजमेर, जोधपुर, भील-वाड़ा, बयाना, चित्तौड, रैढ, भरतपुर, कालीवंगा, वैराट, रंगमहल, बालोतरा, तिलवाड़ा, सांभर, आदि २५ स्थानो के भूगर्भ से मोहन जोदड़ो जैसे नगर मकान तथा अन्य वस्तुए मिली है। पाषाण कालीन एवं पूर्व पाषाण कालीन प्रणाण तथा हडप्पा से अधिक पुरानी सौथी संस्कृति के प्रमाण मिले है। यहा नोहर एवं सौथी नगर थे। पर्वतसर तहसील मे खुडी ग्राम से मिले ताम्रपत्र ईसा से १५०० वर्ष प्राचीन ईरानी ताम्रपत्रों जैसे है। आहड भूगर्भ से प्राप्त मृद्भाण्ड एवं तत्का-लीन सोआल्क ईरानी वस्तु में बहुत समानता है। यहां ताम्वे का चलन भी था यह भूभाग ताम्वावती कहलाता था। यहाँ ४००० पं सेव अधिक पुराने अवशेष मिले है। गुजरात में लोथल एवं जामनगर जिले

के भूगर्भ से भी हडप्पा जैसे अवशेप मिले है। काली वंगा के भूगर्भ से प्राप्त प्रमाण सिन्धु सभ्यता से अधिक पुराने है। पश्चिमी वीकानेर क्षेत्र मे सरस्वती द्रपद्वती नदी प्रवाहमान थी जो सिरसा के पास अब घग्गर कहलाती है। इन्ही नदियो के माध्यम से गंगा यमुना तथा कुरुक्षेत्र सीमा में यह सरस्वती घाटी सभ्यता वैदिक सस्कृति पहुँची है। वेडच, वनास एव चम्वल के सहारे ४००० वर्ष पुरानी मेवाडी सभ्यता वाहर पहुँची है। गभीरी नदी एव बाडमेर पाली क्षेत्र मे लूणी नदी के तट पर मध्य पापाण युग की वस्तुएं मिली है।

(३) रावण को वन्दी वनाने वाला पँवार-हय हय वशी कृतिवीर्य सहस्रार्जुन महिष्मित नरेश राजस्थान का था।

(४) महासती कहलानेवाली मन्दोदरी माण्डव्य ऋषिस्थल मण्डोर की थी। यहां रावण चोरी नामक स्थान भी है।

(५) श्रीकृष्ण का जन्मस्थल, शिक्षा स्थल, लीला भूमि कुरुक्षेत्र से गुजरात तक कभी राजस्थान था। कौरव पाण्डव यादव, परमार, पँवार, परिहार, चालुक्य, सोलंकी, चौहान, सीसोदा, राठोड आदि चंद्रवंश एव अग्नि वश का उत्पति स्थान राजस्थान है। कृष्ण योगेश्वर थे। इनकी योगशक्ति के अद्भुत चमत्कार भारतीय परम योग शक्ति के विलक्षण प्रमाण है।

(६) मंगलग्रह का जन्मस्थल क्षिप्रा निकट उज्जैन में है।

(७) ज्योतिप का महत्वपूर्ण नक्षत्र "कृतिका" की उत्पत्ति कपिलायतन मे हुई है।

(८) विश्व प्रसिद्ध गायत्री, वाल्मीक रामायण, गीता एवं भारतीय इतिहास का सृजन स्थल राजस्थान है।

(९) सव तीर्थो की नानी, देवयानी का मन्दिर एवं मृणाल कुकुलित तालाव भारत मे केवल साम्भर मे है।

(१०) महाभारत युद्ध का रणस्थल कुरुक्षेत्र राजस्थान मे था।

(११) विक्रम सम्बत प्रवर्तक विक्रमादित्य उज्जैन—राजस्थान में हुआ है।

(१२) शक सम्बत प्रवर्तक शालीवाहन कृष्ण का वंशज राजस्थान का है।

(१३) पोरस–सिकन्दर युद्ध राजस्थान मे झेलम तट पर हुआ था।

(१४) पृथ्वीराज चौहान—शहाबुद्दीन गोरी का तराईन युद्ध राजस्थान में हुआ था। प्रसिद्ध वीर आल्हा ऊदल भी राजस्थानी धरा के गौरव है। उस समय वह क्षेत्र राजस्थान मे था। गाधी पुत्र, (कन्नौज) विश्वामित्र, परशुराम के ममेरे भाई थे।

(१५) अग्रवालो के पूर्वज अग्रसेन का राज्य अग्रोहा राजस्थान में था, सिकन्दरी युद्ध के समय नष्ट हुआ।

सिन्धु से नर्मदा तक गंगा से गुजरात की बाहरी पश्चिमी सीमा तक राजस्थान का क्षेत्र राजपूत काल तक था। ग्रीयर्सन के ग्रंथ, लिग्वेस्टिक सर्वो आफ इण्डिया मे इस विशाल क्षेत्र की भाषा साम्युता वर्णित है। दक्षिण पजाब, हरियाणा, हिसार, भिवानी, सिरसा, गुड़गांव, सिन्ध, सौराष्ट्र, कच्छ, मालवा, होशंगाबाद का दक्षिण क्षेत्र व्रज एवं गुजरात पर्यन्त का विशाल भू-क्षेत्र राजस्थानी भाषा का है जालोर के उद्योतन सूरी ने ई० ७७८ मे कुवलय माला ग्रंथ मे १८ भाषा में मरू भाषा का भी उल्लेख किया है। अतः ई० ७७८ से कुछ सदी पहले से याने पांचवी सदी में राजस्थानी भाषा विद्यमान थी। छठवी सदी से लेखन हुआ है, इसी कारण आठवी सदी में १८ भाषा में स्थान पाई है। ई. १४५५-५६ मे लिखित जालोरी कवि पद्मनाभ के ग्रंथ नागदमण की भाषा पर गुजराती साहित्यकारों में १९१२ मे विवाद उठा कि नागदमण की भाषा राजस्थानी है या गुजराती है। ई. १७३१ में प्रेमानन्दजी द्वारा लिखित नागदमण में वांधूनाग दमण गुजराती भाषा यह राजस्थानी से गुजराती की भिन्नता का प्रथम

हवाला मिलता है। सोलहवी सदी में गुजरात, राजस्थान, हिसार तक एक ही भाषा थी।

अठारहवी सदी तक गुजराती एवं राजस्थानी भाषा मे साम्यता थी। वडोदा ओरिअंटल रिसर्च इन्स्टीट्यूट के डायरेक्टर डा. भोगी लाल सांडेसराने गुर्जर इतिहास एव संस्कृति मे लिखा है कि विद्वानो के मतानुसार अपभ्रंश की नीव गुजरात एव राजस्थान की देश भापा मे है।

ई० १९४३ में ठक्कर पसनजी माधवजी व्याख्यान माला मे विद्वान जेव्ररचंदजी मेथाणी ने सगर्व हर्षपूर्वक कहा था कि—आपणी मातृ-भाषा राजस्थानी मेड़तानी मीरां एमा पदो रचती ने गाती ए पदोने सौराष्ट्रना छेल्लुका सीमाड़ा सुधीना मानवीओ गातांने पोतानां करी लेता। चारण नो दूहो राजस्थान नी कोई पण सीम मांथी राजस्थानी भाषा मां काया धरतो ने काठियावाड़ ना नेशड़ां मा जरातरा लेवास वदलीने घर-घराङ वनी जतो। नरसैयो गिरनारनी तलेटी मा प्रभु पदो रचतो, अे पदो यात्रिकोना कंठमां मालो नाखी ने जोधपुर उदेपुर चाल्याँ जता कच्छ-कठियावाड़थी प्रयाग पर्यन्त ना विस्तृत भूखण्ड पर पथराई रहेली एकज प्रगट यशे एवी व्यापक कथ्य वाणी नूं नाम जूनी राजस्थानी। एने खोले थी छूटी पड़ेली पुत्रिओज ते पछी व्रजभाषा गुजराती अने आधुनिक राजस्थानी एवा नामे स्वतन्त्र वनी।

पुरानी राजस्थानी, गुजराती एवं डिंगल एक ही भापा थी गुज-राती की लिपी देवनागरी थी। वाद मे परिवर्तन होने से इसमे कैथी मिलाकर गुजराती लिपि चली है राजस्थानी भापा पचास वोलियों का मिश्रण है। मराठी भापा में भी राजस्थानी शब्द मिलते है। दोनो की लिपी समान है। किसी समय वलख, वुखारा, कावुल, गजनी, समरकन्द, इस्कन्दरिया, सायरोपोलिस उट्टार तक आर्य शासन था। मुल्तान, सिन्ध, पंजाव (पाचाल), पाकपाटण, वहावलपुर, अहमदपुर,

अमरकोट, ऊँच्छ, कुरुक्षेत्र, देरावल (करांची), हिसार, भटिंडा, कालिंजर, काल्पी, कन्नौज, चन्देरी, (महोबा) खुरजा, खजुराहो कोईल (अलीगढ़) सिरोंज, झांसी, दिल्ली, गाहड़वाल, सीकरी, आगरा, मथुरा, घारभुज, नडियाद, माण्डवी, हलवद, गोधरा, ग्वालियर पर्यन्त राजस्थान का क्षेत्र का। भोपाल और वहां का ताल राजा भोज द्वारा निर्मित है। किष्किन्धापुरी, निषाद क्षेत्र, (बीकानेर मण्डल) चम्पापुरी, गन्धमादन, हेमकूट, नील शैल, मत्स्य राजस्थानी धरा पर है। सरस्वती, गंगा, यमुना, नर्मदा, क्षिप्रा, सिन्धु, सतलज, झेलम, चिनाव, व्यास, रावी, वेत्रवती (बेतवा) चर्मण्वती, (चम्बल) तथा अन्य कुछ लघु नदियां राजस्थानी धरा पर किलोल करती थी, कुछ नदियां अब भी हैं।

ब्रह्मा, वसिष्ठ, अगस्त्य, कपिल, दधीची, गौतम, विश्वमित्र, गालव, उत्तंग, भर्तृहरी, भृगु, परशुराम, माण्डव्य, कण्व, पाराशर, हारीत, गुरु मत्स्येन्द्रनाथ, गोरक्षनाथ, जालन्धरनाथ, गोपीचन्द, भक्त पूर्णमल, बाल्मीक मुचकुन्द अम्बरीष एव सीता आदि की तपोभूमि राजस्थान है। ऋषभदेव महावीरजी, नेमीनाथ, नानकदेव एवं गोविन्दसिंह भी राजस्थानी धरा को पवित्र किए है बालमीक आश्रम उद्वेगित झरना है। यहां ही २ मील के क्षेत्र में सीताबाड़ी के आम्रकुंज के आम निःशुल्क खूब खाइये किन्तु बाड़ी की सीमा के बाहर ये आम २-३ घंटे में विकृत हो जाते है। लव-कुश का जन्म एवं सीता का भू-विलय यही हुआ था: यहां लक्ष्मण की आमदकद वीर मूर्ती है। लोहार्गल मे सूर्य एवं इंद्र ने तपस्या की है। यहाँ परशुराम ने विष्णु यज्ञ किया है। यहा ही सूर्यकुण्ड एवं शक्रतीर्थ भी है। रावणेश्वर शिवालय है। यहां रावण ने शिव को स्वयं शिर चढाकर शिवाराधना किया है। यहा रावण को भी नमन किया जाता है। पाण्डवों को गुरु एवं गोत्रज हत्या के पाप से मुक्ति यहां ब्रह्मकुण्ड मे स्थान से हुई थी। भीम की गदा यहा गल गई थी।

कोटा निकट केशवराय पाटन में परशुराम, मित्रावरुण एवं दया-द्रं दानी रन्तिदेव की तपोभूमि है । कन्सवा कण्व आश्रम है शकुन्तला एव दुष्यन्त पुत्र भरत का जन्म स्थान है। पाली और सिरोही के मध्य गौतमेश्वर का वार्षिक मेला होता है । मकर संक्रान्ती के ९० दिन बाद तीर्थ के निर्धारित मीन सक्राति के समय में मन्दिर निकट गगा कुण्ड से निश्चित बेला में ही जलश्रोत उत्पन्न होता है, यह कुल ३० दिन ही प्रवाहित रहता है । जो-हजारो तीर्थयात्रियो को गंगा श्णान का लाभ देता है । लोद्रवा मे चिन्तामधि पार्श्वनाथ मन्दिर भी अद्वितीय है । यहां पीले पत्थर पर तक्षण कला विमुग्धकारी है। कल्प-वृक्ष की रचना भी दर्शनीय है। वहां सदियो से एक नागराज निरापद रह-रहे हैं। इन्हे मन्दिर द्वारा नियमित दूध पिलाया जाता है ।

आबू में वशिष्ठ की तपोभूमि एवं युद्ध भूमि, जनमेजय का नाग-यज्ञ स्थल "नाग-दह-नागदा," मत्स्य, वैराट पांचाल कुरु मथुरा, द्वारका, अवन्ती, महंकाल, महाकाली, कालभैरव, दधिमति, अम्बाजी, भद्रकाली, महामाया (राजस्थानियो मे विवाह समय महामाया की स्थापना एव पूजन अवश्य होती है।) नारायणी रक्त दंतिका, शाकम्भरी, त्रिपुर सुन्दरी, जयन्ती, भ्रामरी, वैष्णवी, ज्वालाजी, चिन्तपूर्णा (कांगडा), हिंगलाज (बलोचिस्तान) स्कन्द पुराण हिंगुलाद्रि खण्ड उत्तर सहिता मे हिंगुलाद्रि क्षेत्र, हिंगुल तीर्थ, हिंगुला देवी, का वर्णन है। हिंगुला देवी ही हिंगलाज कहलाने लगी है । इस से यह भी प्रमाणित होता है कि मूर्ती पूजा हजारो वर्ष से प्रचलित है । सेतु-बन्ध समय राम ने शिव पूजन किया । रावण ने पूजन करवाकर राम को विजय का आशीर्वाद दिया है । यह ब्राह्मण के नैतिक कर्त्तव्य पालन का उच्च उदाहरण भी है। हिंगलाज के निकट सिन्धु के मुहाने की ओर दधीची आश्रम तथा कुछ तीर्थ होने का उल्लेख है। भगवान राम भी हिंगुला देवी के दर्शनार्थ पहुँचे थे । हिंगुलाज का प्रबंधक एवं पुजारी वर्ग मे बलोचि मुस्लिम भी है।

दधीची आश्रम सम्भव है वर्तमान कराची के निकट देवल या देरावल क्षेत्र मे कही लुप्त हो । शक्तिपीठ (भ्रामरी जीणमाता प्रतिदिन प्रातः ढाई प्याली मदिरा पीती है, आप चाहे तो बैरल पिला दे) उज्जैन में कालभैरव की मूर्ती के समक्ष धरी मदिरा लुप्त होती है। बड़ौदा से तीस मील पर चम्पानेर के ध्वंसावशेष हैं यही पावागढ में महाकाली है किन्तु यहाँ बलि प्रथा नहीं है । बड़ौदा से कुछ दूर भद्रकाली एवं भुज मे रुद्राणी मन्दिर है । अम्बाजी मे ईडर की ओर बारह मील पर चामुण्डा पर्वत पर पाँच मील विस्तार का सरोवर है । यहाँ चामुण्डा का सिद्ध स्थान है । आरासुर अम्बाजी पर कृष्ण का मुण्डन संस्कार हुआ है। आबू पर गुहा मे अर्बुदा देवी पीठ है । दिल्ली के योगिनीपुर मे कृष्ण की सहोदरा महामाया का मन्दिर युधिष्ठिर द्वारा पूजित है। यहा कालिका मन्दिर में अर्जुन ने देवी से विजयवर पाया है। ओंकारेश्वर, एकलिगनाथ, सोमनाथ, लोहार्गल, सूर्यकुण्ड (कुरु) पावन तीर्थ हैं, महावीरजी, ऋषभदेवजी, गोपाचल, च्यवन ऋषी की तपस्थली ढोसी, कौरव, पाण्डव, यादव, आदि अनेक योद्धाओं की लीलाभूमि, कृष्णार्जुन, कर्ण, बलराम, द्रोणादि अनेक वीरो की जन्मस्थली मुचकुन्द की विश्राम गुहा कोलायत (कपिल) गौत्तमेश्वर, श्यामबाबा, महँदीपुर एवं सालासर का वालाजी, नाथद्वारा, चारभुजा, कांकरौली, डिग्गी मे कल्याण जी, कैलादेवी, सल्लादेवी, करणीदेवी, ७० भर्तृहरी के पहाड़ी मार्ग में सिह तो बकरी समान मिलेगा डरावने सर्प और बिच्छु भी बाबा के सेवक है।

द्वारका में जन्मे तीर्थंकर नेमीनाथ का तपस्थल एवं निर्माण स्थल, गिरनार शत्रुंजय पर्वत कलात्मक ८६३ मन्दिरों की नगरी पालीताना कभी राजस्थान में थे। गिरनार पर्वत पर सनातनी दत्तात्रय सिद्ध पीठ है । इन चरण चिन्हों को जैन महावीर स्वामी का एवं मुसलमान हजरत आदम का मानते है। ख्वाजा मोहियोद्दीन, निजामुद्दीन, सरमद दिल्ली अहमद सरहद्री, गलियाकोट, रतननाथ

पीर (पाकिस्तान मे) अछूतोद्धारक बाबा रामदेव पीर गोगा, तेजा, पावू, आदि अनेक स्थान दैवी शक्ति सम्पन्न चमत्कारिक हैं, वन्दनीय हैं।

सूर, कवीर, तुलसी आदि से भक्ति शक्ति में अधिक उन्नत "भक्त मीरा" द्वारका धीश मे वि० सं० १६२३ मे सशरीर विलीन हुई थी। वंगाल के कृष्ण भक्त चैतन्य महाप्रभु एवं महाराष्ट्र के कृषक सन्त तुकाराम का शरीर भी ईश्वर मे लुप्त हुआ है। मीरा ने तुलसी से पूछा कि हम क्या करे? यह प्रश्नोत्तर तुलसी के चाटुकार की कल्पना है। तुलसी के पहले ही मीरा समाप्त हो गई थी। सशरीर ईश्वरलीन होना सन्त नागरीदास और प्रियादास ने भी लिखा है। मीरा के भजन सुनने वादशाह अकवर कभी नही आया। भजन सुनने प्रसिद्ध माण्डू का सुल्तान आया था।

इसी ने मीरां की सेवा में कुछ धन अर्पण किया था। भक्त नरसी मेहता, सुन्दरदास, पूरण भक्त, रज्जव रईसदास, धन्ना जाट, दादू, सूरदास, हरिदास रहीम, कवीरदास, कर्मावती, सहजो, नाभादास, चन्द्रसखी आदि कई भक्त हुए है। वल्लभ, रामानुज, रामसनेही, विष्णोई, दादूनाथ, नानक आदि पथो की धरती। प्रसिद्ध शीसदानी जगदेव पँवार जिसे कंकाली ने पुनः जीवित की है राजस्थान का है—
वि० ११९१ चैत तीज रविवार सीस कंकाली भटट नें जगदे दियो उतार।।

जैसलमेर मे तीन जोहर हुए हैं। यहां की सूक्ष्म तक्षण कला एवं चित्रकला का सौन्दर्य अलग ही है। स्मरण रहे कि पानी पर तैरने वाले पत्थर के प्याले एवं तश्तरिया जैसलमेर के शिल्पी ही वनाते हैं। सम्भव है लंका पर चढाई के लिए नल नील द्वारा निर्मित सेतु वन्ध में इसी पाषाण का उपयोग किया गया हो। प्रसिद्ध भक्त कवीरदास की उपासना स्थली यही है। स्विटजरलेण्ड से वडा एवं संसार का सवसे वड़ा जिला जैसलमेर है।

लोद्रवा, जैसलमेर, रणथम्भौर, जोधपुर, उदयपुर, जयपुर, कुम्भलगढ, नागदह (सहअबाहु-सासबहु), चित्तौड, बीकानेर, आगरा, दिल्ली, सीकरी, ग्वालियर, भरतपुर, बयाना, बागोर-खेतड़ी, नागोर, मेडता, सिवाना आदि अन्य कई किले एवं कलापूर्ण दर्शनीय भवन तथा अनेक संग्रहालय राजस्थान में है । वाराह मिहिर की २७ कोण नक्षत्र दर्शक विश्व की प्रथम वेधशाला "मिहिर" यानी सूर्य का भ्रमण-दर्शक स्तम्भ, मिहिरावली अब कुतुबमीनार है । सवाई जयसिंह निर्मित तत्कालीन विश्व मे भरतीय स्थापत्य एवं विज्ञान का अद्वितीय श्रृजन दिल्ली, वाराणसी, उज्जैन, मथुरा एवं जयपुर में वेधशाला है । जयपुर का सम्राट यंत्र एक सेकंड का दसवां भाग दर्शाता है । विश्व मे ज्योतिष विद्या का जन्म भी भारत मे ब्रह्मा द्वारा हुआ है । इनके बाद ऋषियुग में सतह प्रमुख विद्वानो के बाद भास्कराचार्य ब्रह्म गुप्त, आर्य भट्ट, वराहमिहिर, केशव, गणेश आदि अन्य अनेक विद्वान हुए है । पाराशर आज से ३३७७ वर्ष पहले हुए है । तथा वाराह मिहिर आज से १५०० वर्ष पहले हुए है । इनका जन्म उज्जैन के कापित्थक ग्राम में हुआ था । मेवाड में हारित ऋषी हुए है । ईसा से कुछ वर्ष पहले यह विद्या ग्रीक में पहुँची । वहां पीथा गोरस ने इसे प्रचारित किया ।

ई० १५० में ग्रीक नरेश टालमी ने आलमाजेस्ट ग्रंथ लिखा एवं अलेक्जेड्रिया मे वेधशाला बनवाया । ई० ७०० के करीब मुस्लिमो ने अलेक्जेड्रिया का विशाल ग्रंथालय जला दिया । अरेवियो एवं जेहादियो ने यत्र तत्र ग्रंथ एवं ग्रंथालय जलाए हैं शायद इसलिए कि उनका पूर्व इतिहास अज्ञात रहे । कृष्ण गो भक्त था न्याय का पक्षधर था, इसके विपरीत हिंसा प्रधान जीवन धर्म इस्लाम में निहित है ।

ई० ७३३ मे बगदाद में खलीफा के दरबार में भारतीय ज्योतिषी था ।

ई० ८०० मे हिन्दू ज्योतिष अंक गणित, वीजगणित का मुस्लिमो ने अरवी में अनुवाद किया। ई० ८२७ मे टॉलमी के ग्रथ का अरवी अनुवाद हुआ। इनसे फ्रांस ने ई० ६०० मे यह ज्ञान प्राप्त किया एव ई० १३०० मे यूरोप मे यह ज्ञान पहुँचा। ई० १५०० मे तैमूरलग के नाती उलूगबेग ने समरकन्द में टॉलमी के ग्रथ का सशोधन किया एवं वेधशाला वनवाया।[1]

हिमालय से अधिक प्राचीन पर्वत अर्बुदाचल–आवू की दुर्गम ऊंचाई पर अणहिलवाडा के विमलशाह लूणशाह वन्धु द्वारा ई० १०३१ में निर्मित ऋषमदेव मन्दिर १८ करोड ५३ लाख रुपयो से से बना था। इसमे ५८ कक्ष है सभी स्तभ शिल्पाकित है। प्रत्येक द्वार पर निर्माता का नाम एवं समय उत्कीर्ण है। मुख्य सभा मण्डप की अर्ध वृत्ताकार छत विशेष दर्शनीय है कि सूक्ष्मतम शिल्पाकित संग-मरीय पापाण खण्ड छत मे तीन फीट लम्वे झूमर की तरह अधोमुख शिखराकार इतने समरस चिपकाए है कि जैसे एक ही शिलाखण्ड हो। यत्र तत्र देवी देवता लता पुष्प वृक्ष रामायण एव महाभारत की पंक्तिया तीर्थंकर, पंचकल्याण महोत्सव, कालियानाग दमन, नृसिंहा-वतार, रामलीला, कृष्णजन्म, आदि अनेक दृश्य उत्कीर्ण है। सप्तधातु की ऋषमदेव की मूर्ति १०८ मन की है। ललाट पर हीरा जडित है।

यही पर चन्द्रावती के वास्तुपाल तेजपाल वन्धु द्वारा ई० १२३० मे १२ करोड ५३ लाख की लागत से निर्मित पार्श्वनाथ मन्दिर भी शिल्पांकन से परिपूर्ण है। मुख्य सभामण्डप मे दाए वांए देवरानी जेठानी द्वारा सवालाख रुपयो से बनवाए गए दो गोखे भी शिल्प समेटे हुए है वावीसवे तीर्थंकर पार्श्वनाथ का चरित्र, देवी देवताओ की मूर्ती जहाजी वेडा हाथियों पर वादको सह शोभा यात्रा आदि स्पष्ट उत्कीर्ण है।

ऋषमदेव–केसरिया जी–उदयपुर से ४० मील पर वीहड सघन पहाड़ी वन मे ई० सन् १४३८ मे १० करोड़ रुपयो से बना तीन मजिला

मन्दिर सूक्ष्म शिल्प का मोहक निर्माण है इसके स्तम्भ ४० फीट लम्बे है।

राणकपुर—फालना स्टेशन से २० मील पर बीहड सघन पहाडी वन मे ई० १४९८ में नन्दीपुर के धरणाशाह ने महाराणा कुम्भा के सहयोग से ९९ लाख रुपयो से चौ मुखा तीन मंजिला मन्दिर बनवाया है। इसमें रंग मण्डप २८ शिखर ८५ भू-गृह १८४ देव कुलिका ८४ स्तम्भ १४४४ है प्रत्येक के शिल्प में भिन्नता है। मण्डपो मे बांसुरी घुंघरू सह नृत्यागनांए उत्कीर्ण हैं। आठ पुतलियाँ सोलह नर्तकियां विशेष द्रष्टव्य है। जैन तीर्थंकर हाथी घोड़े पशु पक्षी लता पुष्प आदि अनेक शिल्प द्रश्य नयनाभिराम है। ऐसे शिल्पी राजस्थान में आज भी हैं।

जूनागढ गिरनार मन्दिरो की नगरी पालीताणा, कुम्हेर, कोटा, बून्दी, बीकानेर, हमीरपुर, सांगानेर, जोधपुर, अल्वर, अहमदाबाद, आग्रा,दिल्ली, सीकरी, आमेर, चित्तौड, उदयपुर, अजमेर आदि अनेक स्थान शिल्प मुखरित है कि इन पर स्वतंत्र ग्रथ बन सकता है।

आमेर महल मे शिल्प भज्ज सभा भवन मंत्रणा कक्ष कृत्रिम जल प्रपात शीश महल दर्शनीय है एक ओर सीढियां एवं दूसरी ओर ढलान मार्ग दूसरी मजिल के लिए उल्लेखनीय है। यहा ही शिला-सल्ला देवी के मन्दिर में भी शिल्प दर्शनीय है। किन्तु द्वार पर लगे केले के हरे दो स्तम्भ सजीव भासते है जो संगमरवर के बने है। जगत शिरोमणि का मन्दिर भी शिल्प छटा का धनी है। जोधपुर निकट मण्डोर मे प्राचीन अनेक मूर्तियां रक्षित है।

उदयपुर से ३७ मील पर जगत ग्राम में अम्बिका मन्दिर का शिल्प सौन्दर्य महत्वपूर्ण है। शिल्प शोधकों का विश्वास है कि यह स्थान खजुराहो का पूर्वज है इसीलिए खजुराहो में राजस्थानी कला की छाया है यह खजुराहो के लक्ष्मण मन्दिर पर अधिक स्पष्ट है।

अनेक नगरों में वस रहे व्यापारी किराड़ समाज के पूर्वजो का स्थल वाडमेर क्षेत्र मे प्रसिद्ध किन्तु ध्वस्त नगर किराड्रू अन्तारावं एवं उगड़ा भाणेज तथा सांखका वीरो की भूमि पर शिल्पमय पाषाण निर्मित विशाल काय अनेक मन्दिर थे, रामायण एवं महाभारत की कथाए भी उत्कीर्ण थी। जिन्हें अभावग्रस्त धर्मान्ध कलाघाती मुस्लिमो ने क्रूरता पूर्वक ध्वस्त किये है फिर भी पाँच मन्दिरो के अवशेष शिल्प कौशल्य का प्रभाव दे रहे हैं। आज भी एक मन्दिर के कलात्मक स्थूल काय स्तम्भ मन्दिर की भव्यता के साक्षी है। विष्णु मन्दिर जैन मन्दिर, शिवग्राम का मन्दिर कोरडा [किराडू] दुर्ग की मूमल की नक्काशीदार आकर्षक खण्डित मैडी। वाडमेर के जैन मन्दिर मे चित्रकारी एव कांच की पच्चीकारी मनोवेधक है। इसी क्षेत्र मे खेड और कानाना गाव है जहां प्रसिद्ध राठोड वीर राव मल्लीनाथ राव-कल्ला, वीर जगमाल (इसी जगमाल ने अहमदावादी शहजादी गिंदोली को विवाहा था) वीर दुर्गादास राठोड़ आदि हुए है। जूना वाडमेर दुर्ग दस मील की परिधी मे था। इसी ओर मे प्रसिद्ध गडरा रोड, चोहटन एवं कच्छ का रन है। चोहटन मे कपालेश्वर मन्दिर भी शिल्प युक्त है। सूर्यकुण्ड, भीमकुण्ड, सोताकुण्ड, भीम गोडा स्वर्ग-सेरी एव सुइया दर्शनीय स्थल है। अजमेर सस्कृत विद्यालय २॥ दिन का झोपडा कहाता है। अर्णोराज सागर पर वारादरी आगरा मे चन्द्रमौलि (ताजमहल) मन्दिर, विष्णु (एतमादुद्दोला) मन्दिर शिल्पमंण्डित है।

'ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इन्डिया' पुस्तक मे जेम्स टाड ने आवू मन्दिरो की तुलना मे ताजमहल माना है जो सशक्त नही है। दोनो का अन्तर प्रत्यक्षदर्शी समझ सकते है।

प्यासे जैसलमेर की रेगिस्तानी धरती पर विशाल छह भवन जिन पर वडी वारीकी से शिल्पाकन हुआ है। जैसलमेर मे जालिम-सिंह की हवेली छह मंजिल की है, वैरीसाल का भवन सातमजिला

है । जयपुर में १७९९ में बना हवामहल भीतर से नौ मंजिला है । बाहर से पाँच मंजिला दिखता है । इसकी दीवारे बहुत संकरी है । ईसरलाट और चन्द्रमहल भी सात और पांच मंजिला है । ई० १४४८ में महाराणा कुम्भा निर्मित जयस्तम्भ नौ मंजिला है । चित्तौड मे ई० ९७१ मे बना जैन कीर्ति स्तम्भ सात मंजिला है । कुम्भा निर्मित जयस्तम्भ पर बाहर भीतर परिपूर्ण शिल्प अंकित है । इसकी तीसरी और आठवी मंजिल पर अरबी मे "अल्लाह" अंकित है यह ठोस प्रमाण है कि मेवाड इस्लाम विरोधी नही था तथा राजस्थान (भारत) सहस्राब्द पहले से बहुमंजिली इमारत बनाना जानता है । बडे बड़े शिला खण्डो से आज भी भवन निर्माण होते है । (नालन्दा का पुस्तकालय नौ मंजिला ९० फीट ऊंचा था) आगरा किले मे स्नानागार की दीवार से मृदंग ध्वनि की जाती थी । डीग का बादल महल घनगर्जन सह वर्षा का वास्तविक दृश्य दिखाता था । विश्व की कृत्रिम झीलो मे जयसमद का दूसरा स्थान है ।

"चित्रकला मे" राजस्थानी वैशिष्ट्य अलग झलकता है । मेवाड़ मे बिजोलिया निकट ४०००० वर्ष पुराने भित्ति चित्र मिले है तथा कोटा क्षेत्र मे १०००० वर्ष पुराने शैलचित्र मिले है चम्बल तट से लगे मोरी केदारेश्वर हिंगलाजगढ, इन्द्रगढ़, सीताखरदी मे भी प्राचीन भित्तिचित्र मिले है । आधुनिक युग मे नाथद्वारा मेवाड बीकानेर जयपुर एवं किशनगढ शैली उल्लेखनीय है । किशनगढ़ शैली अधिक कलात्मक है कि झीने घूंघटकी ओट में मुख दिखता है । इस शैली के प्रर्वतक किशनगढ नरेश सावन्तसिंह है ये ही वल्लभ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध संत नागरीदास है । चित्रकारी की तरह राजस्थानी लोक-कला में, कई प्रकार के माण्डणा भी रेखा प्रधान मांगलिक चित्र शैली है भूमि एवं दीवार पर चितराते है । अजमेर में नसियां नामक जैन भवन ई० १८६५ में ८०-४० फुट में बना है इसमे अनेक चित्र और मूर्तियां सुवर्णजल एवं काच की पच्चीकारी से शोभित है ।

राजस्थानी लोकगीत, लोकगाथा, लोकनृत्य एव हस्तकला भी समृद्ध है । कत्थक नृत्य का जन्मदाता राजस्थान है, यहां से प्रयाग होकर यह कला अवध मे वाजिदअली के परदादा के सहयोग से पहुँची है । राजस्थान मे कुछ विशेष जातिया नर्तक पेशा है किन्तु सभी परिवारो मे नृत्योत्साह रहता है । तेराताली, भवाई, घटावेनदा, डाडिया, घोडो, फाग, घूमर, पणिहारी गणगोर छात्रों का चौक चादनी नृत्य विशेप प्रचलित है । गोगाजी एवं भैरूजी का नृत्य भोपा करते है । जसनाथी सम्प्रदाय वाले दहकते अगारो पर नाचते हैं । नट और कत्थक नृत्य मे मोर, बताशा, पाणी, दीपक नृत्य, गुलाल पर चित्र नृत्य, तरवारो पर नृत्य वहुत रोमांचक होते हैं । कत्थक नृत्य मे असख्य घुंघरुओ की पूर्ण झकार को घटाकर केवल एक घुघरू का स्वर सुनाना एव एक ही पैर से चक्कर लगाते हुए मोहन नर्तक को मैं देखा हूँ । ढोलणियो के गीत-नृत्य भी मोहक होते है । भीलो के नृत्य, शिकार, विवाह आदि मागलिक अवसर पर होते हुए मैं देखा हूँ । इन के नृत्य इन्ही को लुभाते है ।

(२६) अल्वर का राजमहल सिली सेढ जलाशय पर सातमजिला वना है । इस की दो मजिलें अव पानी मे डूवी रहती है । महल के संग्रहालय मे हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथो के अलावा हजरत अली को मिश्र से भेट मिली तलवार भी है । माचेड़ी की बनी नौ दुर्गा वन्दूक नौ प्रकार से प्रहार करती है इस की नली पर लगा इस्पात धनुष वनता है । १८२६ के करीव नन्दकिशोर बढई के द्वारा निर्मित चांदी की डायनिग टेवल मे कृत्रिम दो नहरो का चौक प्रवाह उन मे तैरती रंगीन मछलियां पिंजरे में धरे पक्षियो की चहक चित्ताकर्षण है । १८८८ में सग्रहालय का मूल्य वीस लाख पौण्ड आंका गया था ।

(२७) लोहा, ताम्वा, चांदी, सुरमा, टीन, जस्ता, सीसा रांगा, पन्ना, तामड़ा, नीलम, लसनी, क्वार्टज, अभ्रक, सगमरवर,–सफेद काला पीला भूरा लाल हरा, संगेज राहत, कैलासाइट, सिलिकासेण्ड

सेता (कांच बनाने की) बैरीलियम, एस्वेस्टस, फैल्सपार, ग्रेनाइट, सिस्टसस्लेट, स्लेट, इमारती भूरा पत्थर, सज्जीखार, नमक, शेखावाटी नदी में अल्पतम सुवर्णकण खनिज सम्पदा है । जावर चान्दी खदान राणा लक्खमसी ने आरम्भ कीथी । उदयपुर जिले मे यूरेनियम मिला है । सिन्दरी खाद कारखाने को तथा अन्यत्र भी "जिप्सम" राजस्थान से मिलता है । डूँगरपुर जिले मे फ्लोराइट बड़ी मात्रा मे है । बास-वाडा मे मैगनीज, चूना, और सीमेन्ट पाषाण बहुत है । सोप स्टोन एवं पायरोपीलाइट भी है । भीलवाड़ा एवं जावर मे सीसा और जस्ता है । बीकानेर मे कोयला एवं कोटडा मे मुल्तानी मिट्टी तथा खेतड़ी और अल्वर है ताम्बा भण्डार है । भूगर्भ से कैरोसीन एवं गैस भी मिली है ।

(२८) गीत संगीत निर्देशन प्रकाश आदि में प्रदर्शित राजस्थानी कठपुतली का खेल आधुनिक फिल्म सिनेमा का मूल है ।

(२६) खयाल, नौटंकी, सांग, रास, तुरा, कलगी पड़ फड़ के नाम से सदियो पहले से राजस्थान में प्रचलित है आदरित है । राजस्थानी कताई, बुनाई, छपाई, आभूषण, लाख, मिट्टी, कांच, लकडी, चमडा पत्थर, सीग, हाथीदांत, तावा, पीतल, कांसा लोहा आदि विभिन्न धातुओं एवं रूई, ऊन, जवाहरात आदि से बनी अनेक वस्तुएं विदेशों में भी लोकप्रिय हैं । राजस्थान मे प्रतिवर्ष तीन करोड पौण्ड से कुछ अधिक वजन में ऊन का उत्पादन है । गडरा रोड के कम्बल एवं बालोतरा तथा सांगानेर की छीट छपाई प्रसिद्ध है । राजस्थान मे प्रतिवर्ष १३६ पशु मेले होते है इनमे वारह करोड़ रुपयों से कुछ अधिक का व्यापार होता है ।

(३०) राजस्थानी रासो, ख्यात, कहाणी, वेली, बात, गीत, संगीत, नृत्य, चित्रकला, लोकगीत, लोकसाहित्य की शैली अपना विशेष महत्व रखती है । (प्रत्येक विधा पर डौक्टरेट की जा सकती है ।), उजवेकिस्तानी कपड़ा अतलस राजस्थानी गीतो में गुँधा है ।

समरकन्द, अरब, बलखबुखारा काबुल गजनी रूमसूम देशों का और कई नायको का वर्णन राजस्थानी साहित्य में सहजता से है । रूसी दूतावास के अधिकारी गैरमन ने राजस्थानी गीत गोरवन्द लूंबालो सुनकर कहा कि यह धुन तो हमारे देश की है । [भारत का विदेशों से बहुत पुराना सम्बन्ध है ।

(३१) अनहलवाडा पट्टन, कुम्हेर, अलवर, जयपुर, उदयपुर, कोट, बीकानेर मे प्राचीन हस्तलिखित हजारों ग्रंथ हैं । इनमें ताड-पत्रीय ग्रंथ भी बहुत है । इनकी चमकदार एवं सुनहरी स्याही आज भी ताजा आभासती है ।

(३२) बप्पा रावल का ब्रह्मक्षत्रीय गहलौत-सीसोदा वंश ई० ५६५ के लगभग से ई० १६८३ की एकात्मरथयात्रा तक हिन्दुत्व के के लिए जूझने वाले तथा विश्व को स्वाधीनता का अमर मंत्र एवं घोर संकट मे भी अडिगता, बलशाली को पछाड़ने, भूमिगत छापामार रण-नीति, प्रजा में भेदभाव, रहित, अपनत्वपूर्ण संगठन से अविश्वसनीय सफलता का मार्ग राजस्थानी (भारतीय) देन है ।

(३३) विश्व है प्रथम शॉर्टहैन्ड मुडिया लिपी का सृजन राजस्थानी टोडरमल ने किया है, तदर्थ दोहा भी है कि—

देवनागरी अति कठिन स्वर व्यंजन व्यवहार
ताते जग के सुगम हित मुड़िया कियो प्रसार (प्रचार)

राजस्थानी मुहावरा पचास हजार से ज्यादा है । राजस्थानी दोहा २३ प्रकार के हैं अन्य भाषा मे २-४ से अधिक नही है । रघुनाथ रूपक एवं रघुवर जस प्रकाश में २०५ प्रकार के छन्द हैं ।

प्रसिद्ध ज्योतिषग्रथ ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त का रचयिता ब्रह्मगुप्त एवं महाकवि माघ भीनमाल के हैं । भर्तृहरी, महाकवि कालीदास, वररुचि, शारंगधर, भोज, शीला-पण्डिता, घाघ, भड्डरी, चन्द्र-वरदाई, कुम्भा, रायसिंह राठोड, पृथ्वीराज राठोड़, रहीम, वृन्द, मतिराम, बिहारी, नैनसी, अबुल फजल दुरसा आडा, पद्मा चारणी, झीमी चारणी: अबदुल कादर बदायूनी, पद्माकर, सूर्यमल्ल, ७० ग्रन्थ का

रचयिता मुस्लिम कवि जान भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, गौरीशंकर ओझा, भारतरत्न डा. भगवानदास, श्री श्रीप्रकाश, कन्हैयालाल सहल, झावरमल शर्मा, जगदीशसिंह, सुखवीरसिंह, रघुवीरसिंह, नारायण सिंह, भाटी, भार्गव, देवकोठारी, शम्भुसिह, मधु, विजयदान देथा, मनोहर शर्मा, गोपीनाथ शर्मा, दशरथ शर्मा, अगरचंद नाहटा, श्रीराम शर्मा, रेड, मोतीलाल मेनारिया, वद्रीप्रसाद सांकरिया, राष्ट्रीय कवि गणेशीलाल उस्ताद, देवीलाल, पालीवाल, लक्ष्मीकुमारी चूडावत, राजस्थान की महादेवी राजलक्ष्मी साधना, रामेश्वर टाटिया, चन्द्रधर गुलेरी, कुलपती मिश्र, निरंजननाथ आचार्य, गोपाल आचार्य, विष्णु जोशी, गोविन्द अग्रवाल, यादवेन्द्र, "चन्द्र", शम्भुदयाल सक्सेना, जनार्दन सयनागर, शिवचंद्र भरतिया, सरूपसिंह चूडावत, सत्यकेतु विद्यालकार, यशपाल जैन, कन्हैयालाल सेठिया, गिरधारीसिह परिहार, किशोर कल्पनाकान्त, रामचंद्र महेन्द्र, ओकारनाथ "दिनकर" सरनामसिह "अरुण", देवराज उपाध्याय, रामगोपाल शर्मा दिनेश, जगन्नाथ रत्नाकर, बालमुकुन्द गुप्त, गुलाबराय, वासुदेवशरण अग्रवाल, रामबल्लभ सोमाणी, मोहनलाल व्यास, रावत सारस्वत श्रीलाल जोशी, अम्बु शर्मा आदि एवं अन्य एव अन्य सहस्राधिक साहित्य मनीषी राजस्थानी धरा पर हो चुके है। आज भी है।

राजस्थानी धरा पर राजस्थानी इतिहास संकलित कर यूरोपिय, जेम्स टॉड, प्रसिद्ध हो गया है। तथा राजस्थानी भाषा और साहित्य पर शोधाध्ययनकर्ता इटालियन लुई जीपियो टॅस्सो टोरी राजस्थानी माटी में खो गया।

राजस्थान का जैन साहित्य भी अधिकाश राजस्थानी भाषा में लिखा है। गौरीशंकर ओझा रचित पुस्तिका "प्राचीन लिपी माला" लिपी ज्ञान के लिए विश्व की प्रथम प्रामाणिक पुस्तक है। इस पर ब्रिटिश सरकार ने इन्हे महामहोपाध्याय की उपाधि से सम्मानित किया है।

संस्कृत, डिंगल, राजस्थानी (समुह) व्रज, हिन्दी एवं उर्दू, अंग्रेजी भापा में प्रचुर साहित्य शृजन राजस्थान में हुआ है। हो रहा है। वीकानेर के राजा रायसिंह ने ज्योतिष रत्नाकर ग्रथ लिखा है।

जोधपुर नरेश कृत भापा—भूपण ग्रथ प्रसिद्ध है। पृथ्वीराज रासो पृथ्वीराज विजय, हरकेलि नाटक, ललित विग्रह, कान्हड, दे प्रवन्ध, हस्ताकर रत्नावली, स्वर सागर, राग चद्रिका, राधा गोविंद, सगीत सागर, राग रत्नाकर, सगीत रत्नाकर, सगीत कल्पद्रुम, सचित्र राग रागिनी संग्रह, रागचंद्रोदय, राग मजरी, नर्तन निर्णय, लक्ष्मण मंजरी, नक्षत्र सारिणी, सिद्धान्त कौस्तुभ, तारासारिणी, द्रक पक्ष ग्रन्थ धर्म प्रदीप, भक्ति रत्नावली, सिद्ध भैषजय मणिमाला, अमृत सागर, माधव स्वातंत्र्यम्, आयुर्वेद विज्ञानम् गद्यभारतम्, सज्जनमनोनुरंजनम्, धर्म सग्रह, भारतेति वृत्तसार, बुद्धचरित, वृद्धनवकार, खुमानरासो, विजयपाल रासो, नैणसी री ख्यात, अबुलफजल कृत, महाभारत का सचित्र-फारसी रूपान्तर तथा अन्य सैकडों ग्रन्थ राजस्थानी धरा पर लिखे गए है। प्रसिद्ध विद्वान कवि सोमदेव एवं जयनक ने अजमेर में साहित्य सृजन किया है। वीर विनोद वश भास्कर सुरजन चरित्र, हमीर महाकाव्य, रासो, छाडा, हमीरायण, बीसलदेव रासो, जगतसिंह रासो एवं काव्य, पाडित्य दर्पण, राजरूपक, सूरज प्रकाश, नागदमण आदि कई ग्रन्थ साहित्य के रत्न है। जयपुरेश सवाई जयसिह ने ज्योतिप ग्रन्थ रचा है तथा शोधपूर्वक कई ग्रन्थ लिखवाया, विदेशो मे विद्वान भेजा, विदेशी विद्वान यहां बुलवाया पाच नगरो मे वेधशाला वनवाया, ज्योतिष का मार्ग प्रशस्त किया है।

(४०) वर्तमान सदी मे भी राजस्थानी गणक मनीराम शर्मा, भवानीप्रसाद शर्मा, दीनानाथ चुलेट दिवाकर पचांग, घासीराम मिश्र सुधाकर पंचांग, हरदेव शर्मा त्रिवेदी विश्व विजय पंचांग, भोलाराम शर्मा चड्डू पंचाग, (शक्तिधर शर्मा मार्तण्ड पचांग कुराली कभी राजस्थान मे था) ईश्वरदत्त शर्मा सरस्वती पचांग। इनके

अलावा भी ज्योतिष विद्या में पारंगत अनेक विद्वान राजस्थान में हुए है।

(४१) शताब्दियों पहले से राष्ट्रधर्म और प्राणि सेवा मे राजस्थानियों द्वारा यत्र तत्र अरबों रुपया व्यय एवं सेवाभावी सहयोग देना अनुकरणीय है।

(४२) कर्नल जेम्स टॉड के शोध का अंश है—राजस्थान की भूमि में कोई ऐसा फूल नही उगा जो राष्ट्रीय वीरता और त्याग की सुगन्ध से आप्लावित होकर न झूमा हो। वायु का एक भी ऐसा झोंका नही उठा जिसकी झझाके साथ युद्धदेवी के चरणो में साहसी युवकों का प्रयाण न हुआ हो। ऐसी एक भी कुटी नही थी जिसमे माताओं की गोद में निस्वार्थ समर्पण और वीरता की ममत्वभरी लोरिया न गाई गई हों ऐसा एक भी घर नही था जिसमे ऐसे वीर की सृष्टि न हुई हो जिसने अपने देश के तूफानों का डटकर सामना न किया हो। थर्मापोली जैसे रण क्षेत्र तैयार करने वाले वीर सैनिक कवियों से भी राजस्थान का साधारण से साधारण गाव भी खाली नही रहा है। हल्दी घाटी थर्मोपूली युद्ध के समान है एवं दिवेर-घाटी युद्ध माराथान युद्ध के समान है।

(४३) रवीन्द्रनाथ टैगौर का विश्वास है कि राजस्थान ने अपने रक्त से जो साहित्य निर्माण किया है उसकी जोड़ का साहित्य और कही नही पाया जाता है राजस्थानी कवियों ने कठिन सत्य के वीच, युद्ध के नगरों के बीच अपनी कविताएं वनाई थीं प्रकृति का ताण्डव रूप उनके सामने था राजस्थानी भाषा मे भाव और बेग उसका अपना है कवियों के अन्तः स्थल से निकला काव्य प्रकृति के वहुत समीप है संसार के कल्याणार्थ प्रकाशित कराना चाहिए। क्षिती मोहन द्वारा हिन्दी काव्य का आभास मिला था, किन्तु आजमैंने राजस्थानी काव्य सुना मुझे साहित्य का एक नवीन मार्ग मिला है।

(४४) कर्नल वाल्टर का अध्ययन है कि—धर्म की स्वतन्त्रता एवं कुलमर्यादा की रक्षा मे जो वीरत्व तथा गौरव का परिचय राजस्थान ने दिया है वैसा विश्व के किसी अन्य देश के इतिहास मे नही है

(४५) आचार्य चतुरसेन शास्त्री का अध्ययन है, कि अत्यन्त पुरातनकाल के वाद साहित्य तैयार करने का गौरव केवल राजस्थान को है। राजस्थान का सौ वर्ष पहले का साहित्य प्रेरणाप्रद हैं।

(४६) भारतीय प्रतिरक्षा मंत्री कैलाशनाथ काटजू का स्वानुभव है कि राजस्थान वीरो का देश है। यहां के वीर काव्य के प्रकाशन से देश को शक्ति मिलेगी एवं सैनिको मे जोश वढेगा।

(४७) रामकृष्ण मिशन के प्रमुख लोकेश्वरानन्द का विचार है कि वंगाल मे अधिकांश साहित्य सृजन राजस्थानी कथाओ पर हुआ है। भारतीय संस्कृति के निर्माण मे राजस्थान का प्रमुख स्थान है।

(४८) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का शोध है—हिन्दी साहित्य मे पद्य का श्री गणेश राजस्थानी भाषा से हुआ है।

(४९) प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष धीरेन्द्र वर्मा ने "हिन्दी भाषा और लिपी" नामक पुस्तक मे लिखा है कि अव से हजार वर्ष पूर्व हिन्दी भापा का अस्तित्व ही सदिग्ध है। इससे भी प्रमाणित होता है हिन्दी के पहले राजस्थानी भाषा में साहित्य सृजन हुआ है।

(५०) आचार्य तुलसी का कथन है—राजस्थानी भाषा समृद्ध है तेरापथी साहित्य अधिकाश राजस्थानी भाषा में है। श्री जयाचार्य जी के साढे तीन लाख छन्द राजस्थानी भाषा में है।

(५१) ई० १८१७ एवं १८२१ से हिन्दी-साप्ताहिक पत्र सज्जन कीर्ति मुधार मेवाड उदयपुर से निकला था। ई० १८३५ फरवरी २ को लार्ड मेकाले ने अंग्रेजी माध्यम लागू किया। ई० १८४४ में ब्रिटिश शासन मे नौकरी कर्ता को अंग्रेजी अनिवार्य किया किन्तु

(५२) ई० १८८३–८४ खेतड़ी नरेश अजीतसिह ने अपने राज्य मे उर्दू एवं अंग्रेजी के बदले हिन्दी को प्रधान भाषा बनाया। यह सस्कृतिनिष्ठ राजा था।

(५३) ई० १८८४ मई १२ को जोधपुर राज्य ने अपने बावीस परगने एव फौजदारी विभाग को आदेश जारी किया कि समस्त राजकार्य स्थानीय भाषा राजस्थानी–हिन्दी-देवनागरी लिपि में हो।

(५४) ई० १९०८ दिसम्बर मे अल्वर नरेश जयसिह ने एक भाषण में कहा था कि नीति और धर्म का पालन तथा उसका अभ्यास उन्नती का कारण है जो मातृभाषा ही नही जानता वह अपने यहां की नीति और धर्म क्या जानेगा कोई अंग्रेज यातुर्क जर्मन या ढूंढने पर भी ऐसा नही मिलेगा जो अपने देश की भाषा अंग्रेजी या जर्मनी या तुर्की न जानकर अन्य भाषा या हिन्दी भाषा ही जानता हो। लेकिन हजारों भारतीय सपूत ऐसे मिलेंगे जो अंग्रेजी आदि भापाओं के पण्डित होगे किन्तु मातृभाषा हिन्दी के शुद्ध शब्द भी नही जानते होगे क्या यही देशोन्नती है। इससे बढ़कर लज्जा की बात और क्या हो सकती है।

(५५) इसी राजा जयसिंह ने १९१९ से धार्मिक शिक्षा अनिवार्य किया, राजपद, उद्यान, वाटिका, भवन, मार्ग आदि के हिन्दी नाम रखे। भारतीय भाषा हिन्दी को बढ़ावा देने निःशुल्क हिन्दी शिक्षा का प्रबन्ध किया एव—

(५६)-१९२७ में आदेश जारी किया कि देवनागरी इस देश की है वह भली भाति फले फूले। हिदी भाषा से अनभिज्ञ को शासन में नौकर नही रखा जाए।

(५७) १९४३ फरवरी में जयपुर राज्य ने भी हिन्दी को प्राथमिकता देने का आदेश जारी किया था।

(५८) ऐतिहासिक सुदृढ सम्पन्न मातृभाषा राजस्थानी को गौण रख, राष्ट्रभाषा के लिए हिन्दी का बहुमत सिद्ध करने ई० १९६७ नवम्बर १ को वल्लभभाई पटेल के समक्ष राजस्थान ने राजस्थान की

मातृभाषा हिन्दी बतलाकर हिन्दी भापा को राप्ट्र भाषा का पद दिलवाने मे त्यागमय अत्यंत महत्वपूर्ण सहयोग दिया है, यह भी ऐतिहासिक 'राजस्थानी देन' है। स्मरण रहे कि प्रचलित राप्ट्र भाषा हिन्दी किसी भी प्रात की वपौती नही है यह समूचे राप्ट्र की भाषा है।

(५६) रामनरेश त्रिपाठी ने कविता कौमुदी मे लिखा है कि हिन्दी हालावाद और छायावाद मे ही रह गई है। धन्य है राजस्थानी कि जिसमे अनेकों मरसिए लिखे हैं।

तेरा पंथी आचार्य जीतमल रचित भगवती सूत्र री ढालां ६० हजार श्लोक मे है जिनहर्ष भी एक लाख श्लोक के रचयिता है।

राजस्थानी साहित्य मे चारणीय डिंगल साहित्य, जैन साहित्य, लोक साहित्य वहुत वडे प्रमाण मे हैं। ग्रथागार एव परम्परागत परिवारो मे कई लाख ग्रथ रक्षित है। हिन्दी' का वीर गाथा काल राजस्थानी साहित्य ही है। वीर रस के डिंगल गीत एक लाख से अधिक हैं। दोहा सोरठा तो कई लाख है। प्रवन्ध रचनाए भी हजारों की सख्या मे है। नीति, भक्ति, शृंगार, इतिहास का साहित्य भी प्रचुर प्रमाण मे है। राजाओ ने कवियो को उच्च सम्मान गाँव, भूमि, भवन रत्नाभूषण, गौ, गज, अश्व, अडब (अरब) पसाव, कोड़ (करोड़) पसाव, लाख पसाव (तत्कालीन स्थानीय सिक्का) पुरस्कार दिये है।

बंगला भाषा के वर्तमान प्रसिद्ध साहित्यकार विमल मित्र ने एक सभा मे हार्दिक सत्य व्यक्त किया है कि बंगाल राजस्थान का ऋणी है। राजस्थान की वीरता, त्याग, देश प्रेम, भक्ति आदि से प्रेरित हो कर वगला साहित्य की हर विधा समृद्ध हुई है।

दो लाख शव्दो से अधिक शव्दो के राजस्थानी शब्द कोष के प्रति-हजारीप्रसाद द्विवेदी, राप्ट्र कवि दिनकर, भगवत शरण उपाध्याय, राहुल साकृत्यायन, सेठ गोविन्ददास, मुख्यमत्री सुखाडिया, प्रधानमंत्री लालवहादुर शास्त्री आदि ने कहा है कि इतना जानकारी पूर्ण कोष अन्य किसी भी भारतीय भाषा मे नही है। भाषा मर्मज्ञ

ग्रीयर्सन, टॅस्की टॉरी, सुनीतिकुमार चाटुर्जी धीरेन्द्र वर्मा, वावूराम सक्सेना, बाबू सुन्दरदास प्रबोध पण्डित, भोलानाथ तिवारी, राष्ट्र कवि दिनकर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, मदन मोहन मालवीय, किशोरीदास के०एस० मुन्शी आदि विद्वानो ने समर्थ राजस्थानी भापा के प्रति मनः पूर्वक आदर व्यक्त किये है।

दि० २७।१।८१ को प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी ने मत व्यक्त की हैं कि—हमारे देश के सास्कृतिक और पारम्परिक मूल्यो की रक्षा करने में राजस्थानी साहित्य का अमूल्य योगदान रहा है। यहां के लोक गीत आज भी सारे देश मे गाये जाते है जिन में सद्भाव और सौहार्द्र की झलक मिलती है।

दि० ३०।१।८१ को गृह मंत्री ज्ञानी जैलसिह ने विचार व्यक्त किये थे कि—राजस्थान राष्ट्रीय एकता साम्प्रदायिक सद्भाव तथा लोक तांत्रिक मूल्यो को अक्षुण्ण बनाये रखने मे सदा अग्रणीय रहा है।

दि० ७।२।८६ को कलकत्ता सभा मे राष्ट्रपति ज्ञानी जी द्वारा दिये गये उद्घाटन भाषण का कुछ सारांश—मारवाड़ी जहां गये वही के हो गये, वहां की भाषा भी अपनाये, अपनी संस्कृती कायम रखे। अस्पताल स्कूल कालेज बनवाये जिसका इलाके वालो को एक जैसा लाभ हुआ। कलकत्ता में सबसे पहले इण्डस्ट्री आई मारवाडी भी आये उन्होने इस शहर को इतना रौनक वाला इतनी आवादी वाला बनाने मे सहयोग दिया। मारवाड़ी भाइयो मे सब्र बहुत है वे संतोषी है शान्ति प्रिय है वहुत कम बोलते है। मेरा मारवाड़ी भाइयो से सम्पर्क करीब तीस साल से है। कमाई भी करनी है तो ऐसे कि किसी को नुकसान न लगे। ऐसी खूवियां आप जहा जहां गये वहां फैलती गई। परमात्मा ने सोचकर ही मारवाड को गरीब वनाया है ताकि आप वहां से उठ कर सारे भारत मे फैल जाये। आप का समाज हिम्मतवाला है वहुत अच्छी तरह शालीन ढंग से काम करता है। ये खूबिया आप मे कायम रहे इन खूबियों को आप बढ़ाये।

बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान डॉ० नीहार रंजन राय ने एक सभा में कहा था कि—राजस्थान की वीरता, त्याग, प्रेम, भक्ति, साधना, एवं वलिदान आदि के महान इतिहास और परम्परा को आधार बनाकर बंगाली भाषा के गौरव मुकुट रमेशचद्र दत्त, वकिमचन्द्र, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि ने ऐतिहासिक उपन्यासों का श्रृजन किया था। अंग्रेज साम्राज्य वादियों के विरुद्ध १८५७ के स्वाधीनता युद्ध के पहले ही प्रथम शखनाह १८३२ में राजस्थानी भाषा के माध्यम से ही फूंका गया था। राजस्थान की वीर प्रसव भूमि मे देश की आजादी के लिये सशस्त्र संघर्ष और विद्रोह हुए तथा क्रातिकारी साहित्य भी लिखा गया। राजस्थानी मे लोक गीत, लोक गाथाएं, लोक साहित्य, लोक सगीत और सन्त साहित्य का भण्डार भरा पड़ा है। इसकी चारण गाथा बंगाल मे लोक प्रिय है। राजस्थानी डिंगल काव्य, मूर्तिकला, चित्रकला, स्थापत्य, शिलालेख आदि उज्ज्वल सांस्कृतिक धरोहर हैं। जिस पर हम सभी भारतवासी गर्व कर सकते हैं। यह कई विद्वानो ने स्वीकारा है। सवसे वडी जवर्दस्त वात यह है कि बंगला आदि प्रादेशिक भाषाओ के वहुत पहले ही राजस्थानी भाषा मे वारहवी शताव्दी मे ही गद्य साहित्य के लेखन की गौरवमय परम्परा का पता लगता है।

[पूर्वोक्त विधाओ पर विस्तृत स्वतंत्र ग्रंथ विद्वज्जन ही लिख सकते हैं। मैंने केवल सकेत मात्र लिखा है यह सहश्राश भी नही है। (धनाभाव ने पृष्ठ संख्या सीमित करदी है) दर्शनीय स्थलो का सौन्दर्य देखकर ही अनुभव करने योग्य है। व्यक्ति नाम, स्थलनाम विषयनाम वहुत से छूट गए हैं, वह उपेक्षा से नही छूटे है वह तो मुझ प्रवासी की अल्पज्ञता वश छूटे है।]

राजा, राज्य, राजधर्म का श्रृजन यहां हुआ इसलिए यह क्षेत्र राजस्थान कहा गया, राज्य सीमा घटती वढ़ती रहती है फिर भी

राजस्थानी (आर्य वैदिक) राज सीमा पूर्व वर्णित किन्तु आधुनिक विदेशों तक दूरातिदूर पर्यन्त रही है।

मरणोत्सव मे प्रतिस्पर्धा करने वाले दीवाने करोड़ों रणबांकुरे वीरों की धरती, स्वत्व रक्षा में निःसंकोच सोत्साह स्वयं की आहुती देने वाली हजारो वीरांगनाओं की धरती। जिसका कण-कण लहू से सींचा गया, कदम कदम पर यहां वीर निछावर हुए है। लन्दन की गोलमेज सभा मे अंग्रेजो के एक विचार का करारा जवाब महात्मा गाधी ने दिया था कि—यूरोप मे केवल एक ही थर्मोपली बन पाई है, जबकि खुद अंग्रेज इतिहासकारो ने भारत के एक भाग अकेले राजस्थान की हर घाटी को थर्मोपली माना है, जहाँ राजपूतो ने हजारो युद्ध लड़े है। अर्थात शौर्य प्रशसा विदेशी भी किए है।

[किसी समय गजनी बलख बुखारा समरकंद तक आर्य शासन था] उसी वृहत राजस्थानी धरा पर आधुनिक युग मे स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी जन्मे, प० जवाहरलाल नेहरू के वश मे भी राजस्थानी दुग्धांश है।

ऐसी अनेक विशेषताओं से गौरवान्वित विशाल राजस्थानी भू-क्षेत्र और उसकी जनता के प्रति हीन कथानक रचना कुटिलता है, ताकि भारतीयों में परस्पर फूट उत्पन्न हो। किन्तु कई विदेशी विवेकशील विद्वानों ने निशपक्ष नि.सकोच हृदय से भारतीय ज्ञान विधाओं की सराहना और समर्थन किये है, क्योंकि—

वैदिक विज्ञान

भारतीय श्रष्टि सम्वत् १९५५८८५०८७

रामसम्वत	१२५६९०८७	चीनी	९६००२२८४
कृष्ण सम्वत्	५२१२	मिश्र	२७६४०
युधिष्ठिर सम्वत्	५०८७	मूसाई	३६९०
विक्रम सम्वत्	२०४३	ईस्वी	१९८६
शालिवाहन सम्वत	१९०८	हिजरी	१४०६

भारतीय गणक ने एक सेकण्ड का ३४००० वां भाग नापा था उसे "कृति" कहा गया है।

हजारों वर्ष पहले विश्व में सर्वप्रथम अत्यन्त सूक्ष्मतम् तौल भारत ने तौला है।—

जालान्तर्गते भानौ यत्सूक्ष्मं द्रष्यते रज:
तस्य तृंशत्तमो भाग: परमाणु' स उच्यते ।। आदि

एक गुंज-रत्नि का १०३६८० वां भाग होता है, "परमाणु भाग"।

छप्पर के छिद्र से सूर्यरश्मि के प्रकाश में तरंगित रजकण का तीसवां भाग परमाणु होता है । ३० परमाणु १ त्रसरेणु । ६ त्रसरेणु १ मरीचिका । ६ मरीचिका १ राई । ३ राई १ सरसो । ८ सरसो १ जव । ४ जव १ गुंज । यानें १०३६८० परमाणु का १ गुंज अर्थात १ गुंच का १०३६८० वाँ भाग भारतियो ने ऋषियुग मे तौले हैं । शताब्दियों पहले उक्त रजकण को पकड कर उसका तीसवा भाग तौलना वर्तमान यान्त्रिकीय वैज्ञानिक युग मे हास्यास्पद अविश्वसनीय भले ही कोई माने, किन्तु सत्य तथ्य का परीक्षण कर देख ले।

कुछ निन्दकाचार्य प्रलाप करते है कि वैदिक ज्ञान की शेखी वखानना वकवास है। प्रत्यक्ष करके कोई देखा है क्या ? इन उन्मादानन्दो को ज्ञात होना चाहिए कि महाभारत युद्ध से (युग से) भारतीय विज्ञान का ह्रास आरम्भ हुआ है । वैसे शस्त्र बाद मे नही वने । मुस्लिम आक्रमण काल मे हजारो ग्रथ नष्ट हुए एवं विदेश भी ले जाये गये है। इन कारणो से गुरुजन ज्ञान गुप्त ही रखने लगे थे।

विश्व को चिकित्सा ज्ञान भारतीय वैदिक शास्त्र से ही मिला है—

वाली एव साइवेरिया मे पावन गगाजल का अति आदर है । वाली, साइवेरिया, सीलोन मे आयुर्वेदीय चिकित्सा ही मुख्य है । साइवेरिया मे अष्टाग आयुर्वेद ग्रथ प्रधान है । इस की फोटो कॉपी नयी दिल्ली के सरस्वती विहार मे रक्षित है।

ग्रीस–यूनान की यूनानी चिकित्सा आयुर्वेदीय चिकित्सा ही है । शरीर रचना, शरीर क्रिया, शव परीक्षा, प्रसूती तंत्र, शल्यं (सर्जरी) शास्त्र, विशोप विष, जरा निवारण, स्त्रीरोग, नेत्ररोग, आदि तथा पशु-पक्षी, जीव, जन्तु, कृमि, खनिज, धातु, उपधातु, रत्न, उपरत्न, वनस्पतियों के अंग-प्रत्यंग, समग्र खाद्य वस्तुओ से लाभहानि, दिनचर्या स्वस्थ जीवन आदि का शोध्रपूर्ण अकाट्य वर्णनसहश्रों वर्ष पहले आयुर्वेद ने किया है, वह नीव का अडिगप त्थर आज भी सुद्रढ है। सहश्राब्दियों से विधर्मी विदेशियो द्वारा निरन्तर घोर आक्रान्त रहकर भी भारतीय धर्म और संस्कृति की विद्यमानता से सिद्ध है कि इसका मूल अति सुद्रःढ है ।

यज्ञ भारतीय वैदिक शोध्र है—

विश्व मे प्रदूषण घटाने के लिए यज्ञ ही एक मात्र सर्वोत्तम साधन है । यज्ञ से तामस, उग्रता, रोगाणु दैवि प्रकोप घटते हैं । सात्विकता, शान्तता, स्वास्थ्य, धैर्य, विवेक एवं श्री बृद्धि होती है ।

बीस वर्ष पहले गुजरात में विश्व शान्ति हेतु होने वाले विशाल यज्ञ का आयोजन गुजरात सरकार ने खाद्य सामग्री का दुरुपयोग रोकने के बहाने से बन्द करवाकर समस्त यज्ञ सामग्री जब्त कर ली थी ।

यह है धर्म निरपेक्ष शासन की न्यायप्रिय आदर्श नीति ।

धार्मिक जनकल्याणकारी यज्ञ को रुकवा कर तो खाद्य सामग्री को दुरपयोग से बचाने की तत्परता शासन ने त्वरित दिखाया, किन्तु स्टेशनो पर एवं गोदामो में लाखों मन खाद्य वस्तुएं प्रति वर्ष नष्ट होती हैं, वहां बचाने का प्रयास नही होता है ।

इस के अलावा मूक-दुधारू पशु, कुर्बानी के नाम पर भारत में प्रति वर्ष लाखों की संख्या में नष्ट किये जाते हैं । यज्ञ बन्द करवाने की तरह पशु वध को भी दुरुपयोग कह कर बन्द करवाने का न्याय प्रिय नैतिक साहस यदि शासन करे तो जन स्वास्थ्य वर्धक दूध-घी

सर्व साधारण के दुर्बल निर्वल वालको को भी सम्भव है कभी कभी उपलव्ध हो जाय। इस से वे वालक इतने वलिष्ठ नही होगे कि जिस से खुर्ची कम्प का भय हो सके।

रोमन फिल्म क्लिओ पेट्रा में रोमन सम्राट ज्यूलियस सीजर के दरवार मे यज्ञ का द्रश्य चित्रित है।

वाइविल के डेनियल मे आशय है कि प्रातः साय हवन की प्रथा का जो वर्णन तुम्हें दिया है वह वैसा ही होगा (याने हवन चालू रहेगा)। दैनिक प्रार्थना मे यहूदी ईश्वर से प्रार्थना करते है कि हमारे घरों में भी यज्ञाहुति आरम्भ करो। येरुशलम यज्ञशालेयं का अपभ्रंश भासता है जैसा कि टाटा मे यज्ञशाला को जुगलसाई एव विष्णुपुर को विष्टुपुर कहा जाता है। अमेरिका मे अग्निहोत्र विद्यालय स्थापित हुआ है एवं वेस्ट जर्मनी मे भी यज्ञ शिक्षा दी जा रही है। इस में भारतीय शासन को लज्जित नही होना चाहिये।

अथर्व ९।१०।१४ यज्ञो विश्वस्य भुवनस्य नाभिविश्व जीवन के लिये हवन नाभि की तरह आवश्यक है। सभी प्रकार के प्रदूषण नष्ट कर उत्तम खाद्य वस्तु एव स्वस्थ जीवन दाता सरल सर्वोच्च साधन हवन है।

भारतीय, जर्मन, अमेरिकी आधुनिक विज्ञान कसोटी ने इस सत्य को स्वीकारा है। किन्तु कुछ वर्ष पहले का समाचार है कि लास एंजिल्स में प्रतिवर्ष मोवाइल से २० करोड़ पौण्ड कार्वन मोनो आक्सा-इड पैदा होकर वायु दूषित करता है। भारत में प्रति माह ५० अरव सिगरेट एवं १७५ अरव वीड़ी पीते है। प्रति वर्ष पाच अरव पौण्ड तमाखू का धूंआ उठता है। यह है अरवी वावर एवं अंग्रेजो की विश्व को सौगात। भारतीय शंख ध्वनि वायु में तरंगित हो रोगाणु नष्ट करती है। शिशु को शख माल पहनाने से नजर दोप एवं वाणि दोष नही होता है।

प्रातः निराहार "तुलसी गंगाजल" लेना रोगाणु नाशक एव स्वास्थ्य प्रद है। (चाय कॉफि हानीप्रद जरूर है) इसीलिए भारतीय धर्म संस्कृति ने किसी भी जलाशय को किसी भी प्रकार से दूषित-गन्दा करने को पाप कहा है ताकि वे शुद्ध ही रहे।

चौदहवी सदी में इब्न बतूता ने लिखा है कि मु. तुगलक के लिए दौलताबाद नियमित गंगाजल जाता था। अबुल फजल लिखता है कि बादशाह का भोजन गंगाजल से बनता है घर और यात्रा में गगाजल ही पीता है। फ्रांसीसी यात्री बर्नियर का अनुभव है कि औरंगजेब खानपान में गगाजल ही वापरता है। एग्वारियो को भी गंगाजल दिया जाता है। एडवर्ड मूर ने देखा है, सवन्नर के नवाब के लिए नियमित गगाजल पहुँचता था। पेशवाओ के लिए भी काव-डिया गंगाजल जाता था। भारत में सर्वत्र गंगा एव गगाजल अति उपयोगी एवं वन्दनीय है। किन्तु भारतीय शासन ने प्रगति के नाम पर गटर एवं कारखानों की घोर गन्दगी समुद्र एवं नदियो में प्रवह-मान करवा रखी है।

बाली—हिन्देशिया मे गगाजल का अत्यन्त आदर है, विशेष कार्यों में गगाजल प्रक्षेप आवश्यक है। हिन्देशिया की मेडिकल फॅकल्टी के डीन डा. नूरूह १९७० में भारत आए तब उनकी पत्नी ने उनसे गगाजल लाने का आग्रह की थी। बर्मा सरकार ने आयुर्वेद को मान्यता दे रखी है। वहा गुरु परम्परा ही है। १९७० मे ४०,००० वैद्य संख्या थी। श्री लंका मे आयुर्वेद ही प्रधान है, आयुर्वेद फैकल्टी है। लका की गिरिगुहा मे रावण का शरीर (ममि) रक्षित कहा जाता है। कोलम्बो शासकीय अस्पताल में आयुर्वेद की सभी विधियाँ व्यवहृत है, रुग्ण शैयाएँ भी है।

भारद्वाज, जनक, दशरथ के समकालीन सुश्रुत (विश्वामित्र के पुत्र) रचित शल्य शास्त्र के सूत्र आज भी अकाट्य है। बौद्ध ग्रन्थ मोहावग्ग से ज्ञात होता है कि शल्य कर्म से रोगी को पीड़ा होती है।

इसलिये उस पर प्रतिवन्ध लगाया था। अशोक ने सार्वजनिक मानव एवं पशुओं हेतु औषधालय बनवाये थे इनके ७०० वर्ष बाद पेरिस मे सार्वजनिक औषधालय खोला गया था।

काश्मीरी विद्वान बृद्धवल ने आठवी सदी में चरक का संशोधन किया था। इसी काल मे ईरानी भाषा मे एवं इसके बाद अरबी भाषा में अनुवाद हुआ था। ईसा से सदियो पहले मिश्र के प्राचीन यूनानी ग्रंथ में द्रव्यगुण आयुर्वेदोक्त वर्णित है। पश्चिमी हिप्पोक्रेटीज के ग्रंथ मे कुन्दरु, जटामासी, काली मिर्च, श्रृगवेर आदि भारतीय वस्तुएँ समाविष्ट है।

ई० १८६४ मे प्रकाशित चिकित्सा शास्त्र लुप्त हो रहा है। बगदाद और दमिष्क मे यूनानी फली फूली वह भी लुप्त है किन्तु आयुर्वेद के साथ भारत में जीवित है।

ऐलोपैथी एव आयुर्वेदीय शरीर रचना में काफी समानता है। दोनों में नेत्र गोलक में चार पटल लिखे हैं, शल्य अस्त्र भी मिलते जुलते है। समयानुसार संशोधन परिवर्धन स्वाभाविक है।

आयुर्वेदीय सर्जरी ने गणपति को गजानन, दक्ष को अजानन बनाई है। राजगृह की साल्वती द्वारा कूड़े पर फेंके गए शिशु को बिंबसार के पुत्र अभय ने पाला था। उस बालक ने तक्षशिला मे शल्यायुर्वेद पढा था। इसने राजगृह की सेठानी के (ब्रेन) मस्तिप्क का आप्रेशन कर कृमि (कीडे) निकाल कर शिरशूल दूर किया था। बौद्ध ग्रन्थ मोहा वग्ग, सती गुम्ब जातक, चुल्ल हंस जातक मे इस वैद्य (सर्जन) का जीवक नाम से वर्णन है। आयुर्वेद को कृमि का ज्ञान भी आरम्भ से ही है। वर्तमान अद्भुत चमत्कारिक कहे जाने वाले विज्ञान, साइंस द्वारा टयूब से बच्चा पैदा करना अभूतपूर्व नही है। हजारो वर्ष पहले भारत में कृत्रिम प्रयोगों द्वारा हजारों बालक पैदा किये जा चुके है। महाराजा सगर के ६०,००० पुत्र तुम्बी (ट्यूब) द्वारा हुए थे। महा पण्डित रावण द्वारा मिथिला भू गर्भ में कुम्भ में प्रयोगित उत्पन्न

कन्या सीता जग प्रसिद्ध है तो यज्ञोत्पन्न पायस सेवनोपरान्त राम, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न का जन्म प्रसिद्ध है। मंत्रित जल पी लेने से सम्राट युवनाश्व ही गर्भित हो प्रसिद्ध मान्धाता को जन्म दिया है। घृत कुम्भ मे निर्मित गांधारी के सौ पुत्र कौरव थे। पवन से हनुमान सूर्य से कर्ण तथा सुभागा को शिलादित्य हुआ सीसोदा। इसी वश के हैं। कूड़े पर भस्मी से गुरु गोरखनाथ जन्मे। सूयोग्य वैध भ्रूण को लड़का या लड़की अवश्य बना सकता है। एव वन्ध्यत्व निवारण तथा सहज ही वन्ध्याकरण भी कर सकता है जब कि बन्ध्याकरण पर सरकार करोड़ों रुपया खर्च कर रही है। उसकी तुलना अन्य पैथी मे नही है। ऐलोपेथी की आत्मा सर्जरी का मूलोद्गम आयुर्वेद ही है। सत्यप्रमाण के लिए आयुवेद के ऋषी ग्रन्थ पढिये। आठवी सदी मे सुश्रुत ग्रन्थ की शिक्षा अरब एवं कम्बोडिया में होती थी। यूनान के प्राचीन इतिहास में लिखा है कि—भारतीय विद्वान यूनान में आकर बसे। विद्या और वैद्यक का खूब प्रचार किये, सभ्य बनाए, उन्होने इतना ज्ञान अगाध श्रम शोध लगने से पैदा किया होगा। आलस्य, आसक्ति और अहंकार से वे दूर रहे होगे।

यूनानी विद्वान एरियन ने लिखा हैं—भारत से आकर यूनान में बसने वाले लोग देवता के वंशज थे, उनके पास विपुल सोना था, रेशमी कामदार ऊनी दुशाला ओढते थे, बहुमूल्य रत्नहार पहनते थे, हाथी दाँत की वस्तुएं उन्हे प्रिय थी।

कई शताब्दियो से किसी भी शासक ने वैदिक-विज्ञान के पुनरुत्थान का प्रयास कभी नही किया। वर्तमान शासन द्वारा भी उपेक्षा है। मैने स्वयं महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात एवं केन्द्रीय शासन को "गर्भ निरोध" एवं क्षतारि यह विश्वस्त दो योग देना चाहा किन्तु मेरी पहुँच के बगैर पहुँच नही हुई, देश मे आज भी अनेकों चमत्कारिक वनौषधि एवं योग हैं जिनका सकलन विश्वहित में उपयोगी होगा, देश के लिए गौरवशाली भी होगा। शालिहोत्र, हस्त्यायुर्वेद आदि ग्रंथ पशु चिकित्सा के लिये उपयोगी है।

यूनानी और जर्राही चिकित्सा आयुर्वेद का रूपान्तर है। आयुर्वेद की सर्वोच्चता के समर्थक विदेशी अनेक विद्वानो में से एक चार्ल्स क्रेटन ने सौ वर्ष पहले लिखा है कि आर्य लोग बहुत पुराने जमाने से शल्य क्रिया एव शल्ययंत्र निर्माण मे "उच्चतम" सफल थे।

शरीर रचना, शरीर क्रिया, एव शल्य क्रिया मे सुश्रुत ग्रंथ अपने समय का विश्व मे वेजोड ग्रंथ है, उसके सूत्र भी आज तक अकाट्य है, यथावत सिद्ध है। हृदय सम्बन्धी शोधकर्ता सुश्रुत एवं भाव मिश्र है, हार्वे नही है।

सुश्रुत मे शवच्छेद क्रिया द्वारा शरीर रचना की शिक्षा वर्णित है, किन्तु शल्य क्रिया बौद्ध के समय से अद्यावत दमन में दबी है।

चिकित्सा मे चरक ग्रन्थ, निदान मे माधव निदान, औषध–निर्माण मे भाव प्रकाश, रासायनिक निर्माण मे नागार्जुन एवं पारद सहिता तथा और भी अनेक ग्रन्थ महत्वपूर्ण है। धातु, उपधातु, रत्न, उपरत्न, विष, उपविष, खनिज, प्राणिज, वानस्पतिक वस्तुओ का शोधन मारण गुण धर्म योग निर्माण उपयोग आदि समस्त प्रक्रिया वैज्ञानिक परीक्षणों से उत्पन्न है, १००% सत्य है, इसी सत्यता के वल पर यूनानी (मुस्लिम काल) एव ऐलोपैथी (अग्रेज एवं स्वराज्य काल) के प्रचण्ड प्रहारो को सहते हुए आज भी आयुर्वेद अडिग है। स्वयं की श्रेष्ठता के वल पर अब विदेशो मे भी आदर पा रहा है। ऐलोपैथी पर मुक्त हस्त से जितना रुपया भारतीय शासन वहा रहा है, उस का आधा भाग आयुर्वेद पर व्यय किया होता तो विश्व को स्वस्थ जीवन एव रोगो से अधिक प्रमाण मे मुक्ति मिली होती, किन्तु भारतीय शासन द्वारा भारतीय ज्ञान यहा उपेक्षित है।

आयुर्वेदीय वचनानुसार संसार मे सभी नये पुराने रोगों की चिकित्सा आयुर्वेद में है, रोग का नाम हो या न हो। त्रिदोषानुसार औषध योजना वैदिक युग से प्रचलित है सुद्रढ सिद्धान्त हजारो वर्ष वाद भी दिल्ली के लौह स्तम्भ सा अटल है।

वाग्भट सू०अ० १२ श्लो ६४ विकार नामा कुशलो न जिह्लीयात कदाचन अर्थात रोग का नाम नही मिले तो उसमें मत उलझो श्लोक ६६ तस्माद विकार प्रकृती रधिष्ठानान्तराणिच बुध्वा हेतु विशेषांश्च शीघ्रं कुर्या दुपक्रमम् अर्थात त्रिदोषज प्रकृती दोषानुसार शीघ्र उपचार की योजना करनी चाहिये। यह त्रिदोष सिद्धान्त बिश्वोपयोगी है। सर्व व्यापी है।

गर्भ में पुत्र है या पुत्री है, तथा लिंग परिवर्तन करना, अवरुद्ध या मृत प्रसव को वनौषधि द्वारा सहज करना आयुर्वेदज्ञ के लिये कठिन नही है। ग्राम्यौषधी की २॥ पत्ती खिलाने से शरीर में धंसा शल्य बाहर निकल जायगा। आज भी कायाकल्प नवदन्तोत्पादन एवं नव यौवन कारी कल्प किये जा सकते है, ऐसे और भी प्रयोग है।

ई० १९४१ में वैद्य कृष्णपाल शास्त्री ने महादेव भाई देसाई, ठक्कर बापा. एवं जुगलकिशोर बिड़ला के समक्ष सोलह सौ तोले पारद का सुवर्ण बनाए थे, जिसके मूल्य का (७५,०००) रुपया कॉंग्रेस को अर्पित किया गया था।

विश्व में तहलका मचाये हुए आधुनिक विज्ञान की पुत्री ऐलोपैथी भोपाली प्रचण्ड घातक गैस का जहर हरने में सफल नही रही किन्तु अवैज्ञानिक खरल घोटा धोती छाप कहे जाने वाले आयुर्वेद ने भोपाल में चमत्कारिक यश (ऐलोपैथी से) जीता है कि जिसे देख डॉक्टरो ने भी आयुर्वेदीय औषधियां ही अपने विषाक्त रोगियो को देना स्वीकारे थे। भोपाल गैस पीड़ितों का सफल उपचार नागपुर के श्री आयुर्वेद महाविद्यालय के प्रमुख वैद्य शिवकरण शर्मा छांगाणी, गुलराज शर्मा, गोपीनाथ तिवारी, एवं पी० डी० गुप्ता ने किया था।

वर्तमान युग के अण्वास्त्र का निर्माण रख रखाव घातकता युत है। पौराणिक युग के अण्वास्त्र विभिन्न रूप से जबरदस्त विनाशक थे किन्तु उनसे अपघात कभी नहीं हुआ। इन को पीठ पर लादे दौड़ना या प्रक्षेपण करना सफल था । ऐसे वाण धनुर्वेद के विधान मे बनते

थे । इस वीसवी सदी मे भी इस ज्ञान के ज्ञाता वस्ती निवासी पं० धनराज जी को एक लाख वीस हजार श्लोक कण्ठस्थ थे । किन्तु किसी धनराज ने धन खर्च कर वे श्लोक लिपिवद्ध नही करवाए ।

कई वर्ष गुरू की सेवा मे श्रमशील रहकर केवल धनुंवाण से निशाने वाजी ही नही सीखते थे वस्तुतः वाण को विविध विनाशकारी वनाने हेतु मत्र एवं वैज्ञानिक रासायनिक योग (फार्मूला) सीखते थे, इन योगो को कृत्या कहते है । बाण छूटने पर हवा के घर्षण से विनाश उत्पन्न होता था, अग्निवर्षा, जलवर्षा, वायुप्रकोप आदि किन्तु महाभारत यद्ध में भयानक विनाश को प्रत्यक्ष देख उन वैज्ञानिको ने अण्वास्त्रो की विद्या ही नष्ट करवादी ताकि महाभारत जैसा विनाश कही भी न हो सके ।

राम को अनेक अमोघ अस्त्र अकेले विश्वामित्र ने दिया था--दण्ड-चक्र, धर्मचक्र, कालचक्र, विष्णुचक्र, ऐन्द्र चक्र, । शिव का शूलवत, इन्द्र का वज्रास्त्र, व्रह्मा का व्रह्म शिर, व्रह्मास्त्र, ऐपिकास्त्र । गदा-मोद की एवं शिखरी । धर्म पाश, कालपाश, वरुणपाश । दो अशनि पिनाक, नारायणास्त्र, आग्नेयास्त्र, वायव्यास्त्र, हय शिरा, क्रौंच, ककारा, मूसल, कपाल, किंकिणी, नन्दनास्त्र, मोहनास्त्र, प्रस्वापन, प्रशमन सौम्य, वर्षण, शोपण, सन्तापन, विलापन. मादन, मानवास्त्र तामस, सौमन, संवर्त, मौसल, सत्य, मायामय, तेजप्रभ, शिशिर, दारुण, शीतेषु, विश्वामित्र ने दिये थे । इनके अतिरिक्त व्रह्मपाश, नागपाश, सुदर्शन चक्र, पर्जन्यास्त्र, पशुपतास्त्र भी प्रबल विनाशक थे । किन्तु इन सभी के प्रतिकार की क्षमता वशिष्ठ के मंत्रसिद्ध दण्डास्त्र (लाठी) मे थी, जिस से युद्ध मे स्वय विश्वामित्र पराजित हुए थे ।

चोरी से धनुर्विद्या का ज्ञान सीखे हुए एकलव्य को प्राणदण्ड गुरु द्रोणाचार्य दे सकते थे किन्तु गुरु ने एकलव्य का अंगूठा मात्र कटवा दिये थे ताकि बाण की गति कम रहने से एकलव्य वाण का दुरुपयोग करने मे असमर्थ रहेगा । द्रोण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, कर्ण, अर्जुन

आदि प्रचण्ड धनुर्धरों ने कितना नियम, संयम रखा है वैसा संयम रखने वाला ही धनुर्ज्ञान पाता था। बाण विद्या के प्रकाण्ड विद्वान भारद्वाज माने गए हैं।

अनाधिकारी को मिले ज्ञान का दुरुपयोग-दुष्परिणाम की झलक-वर्ल्ड मिल्ट्री एण्ड सोशल एक्स्पेंडिचर से ज्ञात होता है कि बीसदी सदी में १९८५ तक २०७ युद्धों मे ७ करोड ८ लाख व्यक्ति मारा गया। दूसरे विश्व युद्ध से अण्वास्त्रो पर ४० ००० अब्ज रुपया लगा। विद्यमान अण्वास्त्र ४९३९३, ५९०० करोड प्राणियों के संहार के लिए पर्याप्त है। विश्व का वार्षिक सैनिक (युद्ध) व्यय ८०० अब्ज है। दूसरे महायुद्ध बाद हुए १२० युद्धों में ८० लाख सैनिक एवं निर्दोष नागरिक २ करोड मारा गया। पाकिस्तान- बांग्लादेश, भारत श्रीलंका इन में १९४५ के बाद के युद्धों मे १५ लाख २८ हजार सैनिक एवं १८ लाख ५२ हजार निर्दोष नागरिक मारा गया। अगस्त ६ को हिरोशिमा एवं अगस्त ९ को नागासाकी का नापाम बॉम्ब द्वारा मूलोध्वंस विश्व इतिहास में शैतानियत का काला दिन मानवता को याद रहेगा।

उक्त युद्ध में मृतको के अलावा घायल एवं बेसहारा होने वालों की संख्या भी करोडो में रही होगी। भारतीय युद्ध नीति, निर्धारित रणक्षेत्र पर शस्त्रधारी से ही युद्ध करने की रही है। निवास एव निःशस्त्र पर आक्रमण वर्ज्य रहा हैं।

आज विश्व मैं ६०% वैज्ञानिक विनाशकारी युद्ध सामग्री के शोध और निर्माण मे व्यस्त है किन्तु अकेले अमेरिका में ही ६.००० वैज्ञानिक जिनमें १५ व्यक्ति नोवल पुरस्कार विजेता है। विनाशक कार्यो का बहिष्कार किये बैठे है। संसार में सर्वोच्च युद्ध व्यापारी अमेरिका है। ग्रहों पर पहुँचने मे अरबो खरबों की सम्पदा नष्ट किये जा रही है। किन्तु धरती पर लाखों व्यक्ति भूख से पीड़ित है। दक्षिण अमेरिका में प्रतिदिन १४.००० बालक भूख से मरने का समाचार लाखों

ने पढा सुना होगा। यह है पाश्चात्य वैज्ञानिक सभ्यता की देन । इस के विपरीत भारतीय संस्कृति भूखे को भोजन देने की है। इस महंगाई मे भी कई जगह अन्नसत्र नियमित क्रियाशील हैं। हरिद्वार, ऋषीकेष गुंजरात में जलाराम, सताधार, तुलसीश्याम आदि अनेक स्थान हैं। जहां भेद भाव रहित भोजन सभी को निःशुल्क वितरित किया जाता है, यह है भारतीय वैदिक सभ्यता की देन।

वैदिक ग्रथो मे वर्णित योग्यता के यान आधुनिक विज्ञान अद्यावत नहीं बना पाया है। पुष्पक एव तीन नगर यान मय निर्मित त्रिपुर यान अद्भुत क्षमता के थे। भारतीय ग्रथो मे अनेक यानों के वर्णन है। महाभारत शान्ति पर्व मे अध्याय ३३६ से ३४४ तक नारद प्रवास एव दूसरे दल एकतश्च, द्वितश्चैव, त्रितश्चैव महात्मना का वर्णन है। मेरो रूत्तर भागेतु, क्षीरोद्श्वेत द्वीप, स देशो तप्त तप. परम दारूण। वरेण्यं सूर्य सहस्रस्य आदि। सूर्य नीलं, मूंगा, वैडूर्य, पन्ना, मुक्ता, माणिक आदि विभिन्न रंगो का ज्वाला समूह था। जाल पाद षष्टि दंतावष्ट दंष्ट्री। तत्र ये पुरुषा श्वेता पचेन्द्रिय विवर्जिता: ऊर्ध्ववाहु रूदङ्ग मुख.। पंजे जुडे हुए, साठ दाँत, आठ दाढ, श्वेत वर्ण, ऊपर हाथ मुंह किये आदि वर्णन पेग्विन का प्रतीत होता है। एक स्थान का वर्णन है—न तत्र सूर्यस्तपति न सोमोभि विराजते, न वायुर्वाति देवेश, जहा सूर्य का ताप, चन्द्र एवं वायु नहीं है। ऐसा है ऋषियो का शोध एव वहां तक प्रवास साधन। उत्तर ध्रुव पर पचास सेर भार उठाना कठिन है। दक्षिण ध्रुव पर दो सौ सेर का भार सहज उठा सकते है। दक्षिण ध्रुव, उत्तर ध्रुव, सहारा रेगिस्तान, अफ्रीकी वन इनकी परली सीमा अज्ञात है दक्षिण ध्रुव हिम प्रदेश में चालीस वर्ष पहले ४०००० मील तक जाने बाद भी अन्त नही दीखा। आर्य मतानुसार दृश्य विश्व ब्रह्माण्ड का सौवा भाग है। इसके परे दूसरे लोक हैं सम्भव हैं उड़न तश्तरी वही से आती है किन्तु मानव का उनके प्रदेश मे पहुँचना असंभव है। मेरू पर्वत (अटलाई) से उत्तर में श्वेत

द्वीप ३२०० योजन दूर है। एक योजन ३२००० क्यूबिट या ९११ मील के बराबर होता है यूनानी मे योज़न को स्टेडिया कहते है।

ई० १९१० के पहले बड़ोदा नरेश सयाजीराव गायक्वाड़ की सहायता से महाराष्ट्रीय दम्पति ने वायुयान वनाकर धरती से पन्द्रह सौ गज ऊंचा उड़ाकर बम्बई नगर के चारों ओर घुमाया था। इस पर अंग्रेज शासन ने वन्धन लगा दिया था इससे दुखी हो निर्माता की मृत्यु हो गई थी। उसके कागजात जर्मन ले गए। अतः राइट्स बन्धु को प्रथम वायुयान निर्माता कहना मिथ्या है।

कुछ विदेशियो के दासानुदास भारतीय यान विद्या को कल्पना मानते हैं यह उनको डाले गए टुकड़ो का दोष है। वारह सौ वर्ष विदेशियो से आक्रान्त रहे इस देश मे एकलाख से अधिक हस्त लिखित ग्रथ यवनो द्वारा जलाए जाने पर भी शेष उपलब्ध साहित्य भारतीय वैदिक वाग्मय को सर्वोच्च प्रमाणित करता है। विदेशियो ने भारतीय ज्ञानाश्रय से भारतीय कल्पना साकार की है अत. मूलोदगम् भारत से है। ऋ अ० १ तमूहथुर्नाभिरात्मन्वति भिरन्तरिक्ष प्रुद्धिर पोदकाभि.—शीघ्र आवागमन हेतु वायुयान (अन्तरिक्ष) तथा (उदक) जलयान वनाये जांय जो पानी मे गले नही शीघ्र टूटे नही।

ऋ ५।४१।६ प्र वो वायु रथं युजं कृणुध्वं—रथ मे वायु को जोड़ना वायु से चलाना।

ऋ ३।१४।१ विद्यु द्रथः सहसस्पुत्रो अग्निः शोचिष्केशः पृथिव्यां—विजली से चलनेवाला रथ।

ऋ ९।१४।१ सिन्धोरूर्मावधि श्रितः। "कारं" विभ्रत्पुरूस्पृहं—समुद्र पर "कार" चलाना आधुनिक कार शब्द वैदिक है।

ऋ १९८।२०२ यमश्विना दद थुः श्वेतमश्व मघाश्वाय—जल अग्नि से उत्पन्न वाष्प श्वेत अश्व है थकता नही है (चौपाया सफेद घोड़ा नही)।

ऋ. २०२

त्रिर्नो अश्विना यजता दिवे दिवे परि त्रिधातु पृथिवी मशायतम्
तिश्रो ना सत्या रथ्या परावत आत्मेव वात स्वसराणि गच्छतम्

त्रि धातु लोहा ताम्वा चान्दी से वना यान जल थल नभ में गमन योग्य हो आत्मेव वात मनसा गति याने कल्पना करते ही कल्पित स्थान पर पहुँचा सके ऐसी गति का यान अभीतक विश्व में नही बना है।

ऋ ७३० यास्ते पूषन्नावो अंत' समुद्रे हिरण्ययी, रन्तरिक्षे चरन्ति। पनडुव्वी समुद्र के भीतर तथा अन्तरिक्ष गामी हो।

वा. रामायण सुं०कां०—जाल वातायनैर्यु क्तं कांचनै स्फाटिकै रपि, पुष्पक में सुवर्ण एवं स्फटिक की जाली खिडकी आदि शोभित थी।

एक प्राचीन ग्रंथागार में ऋषी प्रणीत वैज्ञानिक यान ग्रंथों में अगस्त का शक्ति सूत्र, भारद्वाज का अंशुम तंत्र, आकाश शास्त्र, यंत्र सर्वस्व, शाकटायन का वायु तत्व प्रकर्ण, ईश्वर का सौदामिनी कला, नारद का वैश्वानरं तंत्रम धूम प्रकर्ण, नारायण का विमान चन्द्रिका, शौनक का व्योम यान तंत्र, गर्ग का यंत्र कल्प, वाचस्पति का यान विन्दु, चाक्रायणि का खेट यान प्रदीपिका, धुण्डिनाथ कृत व्योम यानार्क प्रकाश ग्र थ मुख्य है। भोजदेव रचित समरांगण सूत्रधार के ३१ वें अध्याय में २२३½ श्लोक यंत्र विद्या के है।

हस्त लिखित जीर्ण शीर्ण अवस्था में यंत्र सर्वस्व ग्रंथ के चाली-सवे अधिकरण में वायुयान 'विषय मे वर्णित यान विशेषताएं आँग्ल चरण शरणानन्दनों के तिर्यङ्ग मुख मे चिरायता चूर्ण प्रतीत हो अस्तु उक्त ग्र ंथ में वर्णित विशेष योग्यता पूर्ण यान विश्व मे अभी तक नही बने हैं। उक्त ग्रंथ के यान खण्ड मे आठ अध्याय एक सौ अधि-कार पाँच सौ सूत्र है।

ग्रंथ में वर्णित यान विशेषता ऋपी युग की है। मुगल पूर्व की तो अवश्य ही है अंग्रेज युग की नही है यह निश्चित है। (भारद्वाज का वृहद् विमान शास्त्र प्रकाशित हो चुका है।)

यान कैसा हो—पृथिव्यप्स्वन्तरिक्षेषु खगवद् वेगतः स्वयम्। यः समर्थो भवेद् गन्तुम स विमान इति स्मृतः- जल थल नभ मे पक्षी की तरह सहज वेगपूर्वक गमन करे वह विमान सही है।

चालक—विमान रचने व्योमारोहणे चालनें तथा स्तम्भने गमने चित्रगति वेगादिनिर्णये— विमान रचना, आकाश मे चढाना, चलाना, स्थिर रखना, आड़ी तिरछी गति से वेग से चलाना आदि का ज्ञाता हो।

कृतक रहस्य—यान बनाने का ज्ञान

गूढ रहस्य—सूर्य किरणान्तर्गत तमश्शक्तिमाकृष्ण्य-यासा वियासा प्रयासा नामक वायु एवं सूर्य की अन्धकार शक्ति द्वारा यान को अद्रश्य करना।

अपरोक्ष रहस्य—रोहिणी विद्युत का प्रसार कर सामने की वस्तु देखना।

सर्प गमन रहस्य—दण्ड वक्रादि सप्तविध मातरिश्वार्क किरण शक्तिराकृष्ण-सीधी, तिरछी, लहराती आदि सात प्रकार की गति मुख्य हैं।

पर शब्द ग्राहक रहस्य—दूसरे यान व स्थान की वार्ता अपने यान में सुनना इससे प्रमाणित होता है कि ट्रासमीटर जैसा यत्र भी था।

रूपाकर्षण रहस्य—दूसरे यान एव स्थान की वस्तुएँ एवं गति विधी देखना। यह टेलीविजन एवं टेलिस्कोप का सयुक्त शक्तिवान रूप है।

दिक् प्रदर्शन रहस्य—दिशाम्प्रति यन्त्र से दूरस्थ यान का मार्ग जानना, यह आधुनिक राडार से अति लघु रहने के कारण यान में लगा रहता था।

स्तब्धक रहस्य—शत्रुयान पर ऐसी वायु (गैस) छोडना जिससे शत्रु निश्चेप्ट हो जाय।

कर्षण रहस्य—विमानाभिमुखस्थ वैश्वानर नालांतर्गत ज्वालिनी प्रज्वालनं कृत्वा-यान में लगी वैश्वानर नलिका द्वारा शत्रु यान पर ज्वाला फेकना, चक्रद्वय कीली चालनात्-दो पेच घुमाने से, तथा सप्ताशीति लिंक प्रमाणोत्पणं (ताप मापक यन्त्र भी था) वर्तुलाकारेण ज्वाला गोलाई के आकार में फेकी जाय इत्यादि। ऐसी विशेषताएं और भी वर्णित हैं।

इसी प्रकार वैदिक युग से छत्रपति शिवाजी तक जलयान नाविक बेडे थे वाराही संहिता, भोज कृत युक्ति कल्पतरु, कौटिल्य अर्थशास्त्र आदि ग्रंथों मे भी विवरण है। वृक्षायुर्वेदानुसार-क्षत्रिय जाति की लकडी वजन में हल्की और मजबूत होती है यही उपयोगी है।

भोज—न सिन्धुगाद्याहति लौह बन्धं तल्लोहकान्तै ह्रियतेचलौहम् जलयान के तल मे लोह बन्ध नही होना अन्यथा मिट्टी पानी क्षार से शीघ्र सडेगा, चुम्बक से अवरोध भी होगा। ऊंचाई चौडाई, लम्बाई मस्तूल संख्या मुखाकृती, शृंग आदि का विवरण भी है।

तेरहवी सदी मे यात्री मार्को पोलो ने लिखा है कि भारतीय जहाजों की जुडाई दुहरे तख्त की होती है ५००० से ६००० तक बोरा लादा जाता है। रहने की उत्तम व्यवस्था है। एक समय मे ३०० मल्लाह तक लगते हैं। जहाज का तल सड जाय तो उस पर दूसरी तह जोड़ देते हैं ऐसी छह तह तक जोड लेते हैं।

पन्द्रहवी सदी के यात्री निकोलो कांटी का लेख है कि—हमारे जहाजों से भारतीय जहाज बहुत बडे होते है। तूफान को सहने के लिए तिहेरा तख्त जडते हैं किसी जहाज का तल भी तिहेरा होता है कि निचला तल सडे तो ऊपरी भाग से काम चल सके। भारतीय जहाज पन्द्रह सौ टन तक थे विदेशी जहाज अधिकतम छह सौ टन तक होते थे। ई० १८११ में लेफ्टिनेन्ट वाकर ने लिखा है कि ब्रिटिश जहाज

की मरम्मत हर बारहवें वर्ष करवाना पड़ता है किन्तु भारतीय जहाज बिना मरम्मत पचास वर्ष से ज्यादा काम देता है। ईस्ट इण्डिया कं. के पास दरिया दौलत नामक भारतीय जहाज सत्यासी वर्ष चला था।

ई० १८११ मे इ. इण्डिया कं को कर्नल वाकर ने सलाह दिया कि ब्रिटिश वेडे मे भारतीय जहाज अधिक उपयोगी रहेंगे। ये कम खर्च वाले सुदृढ होते हैं।

१८११ मे ही फ्रासीसी पर्यटक वाल्टजर साल्विन्स ने "ले-हिन्दू" नामक पुस्तक मे लिखा है भारतीयो से अंग्रेजों ने जहाज बनाने की कई बातें सीखी।

अठारहवी सदी में सवा लाख टन वजनतक का जहाज हुगली मे बनने लगा था।

डॉ टेलर एवं सर विलियम डिग्वी ने विचार पूर्वक लिखा है कि—यूरोपियनो ने भारतीय नौ निर्माण कला को दबाने के लिए कई प्रयास किये हैं।

इसी तरह थल यान रथादि का वर्णन भी भारतीय ग्रन्थों में है—

ऋ ३।१४।१ स वेधा. विद्युद्रथः। ६।१४।१ कारं विभ्रंत्पुरूस्पृहम्। ५।४१।६ प्र वो वायुं रथ युज कृणुध्वम्। १।१२०।१० अश्विनो रसन रथमनश्वं वाजिनीवतोः—बिजली या वायु (वाष्प) से चलने वाले जिनमे अश्व नही लगे किन्तु अश्व के जैसा वेगवान रथ हो। हार्स पावर वैदिक देन है यह ध्यान रहे ऐसे और भी सूत्र है।

अल्बरूनी ने इण्डिया पृ. ४०७ पर लिखा है कि प्रलय के ९०० वर्ष बाद मिश्र पर हिन्दू शासक था जिसने जंगी रथों का निर्माण किया था।

महर्षी दयानन्द ने भी ऋग्वेदादि भाष्य में वायुयान, जलपोत, रथ, तार, परिवार मानव समाज, राज धर्म, प्रजा धर्म, उपासना, वर्ण, पुनर्जन्म, आदि की व्याख्या स्पष्ट किए हैं।

वैदिक ज्ञान के प्रति–विदेशी विश्वास

विश्व प्रसिद्ध विद्वान मैक्स मूलर ने बायोग्राफिकल एशिया मे लिखा है—वेदों मे हर प्रकार का वर्णन है अति नवीन आधुनिक आविष्कारो-यथा स्टीम इंजिन, विद्युत, तार, वेतार का तार, मारकोनोग्राम आदि के सूत्र मूल रूप मे अवश्य है।

अमेरिकन विदुशी "व्हीलर विल्लाक्स" ने सब्लिमिटी आफ धी वेदाज में पृष्ठ ८३ पर लिखी है—भारत अत्यन्त महत्वपूर्ण वेदो की भूमि है जिनमे आदर्श जीवन के धार्मिक तत्व हैं एव उन सच्चाइयो का भी निर्देश है जिन को समस्त विज्ञान ने सत्य प्रमाणित किया है वैदिक ऋषियो को विद्युत, रेडियो, इलेक्ट्रान, एयरोप्लेन आदि का ज्ञान था।

मि. जेकोलियट—ईश्वरीये धर्म ग्रथों मे केवल वेद ही आधुनिक विज्ञान के साथ पूर्णतया सही सिद्ध हो रहा है यह आश्चर्यजनक है।

नोवल पुरस्कार विजेता मेटर लिंक—केवल वेद ही ज्ञान के भण्डार है जिनकी तुलना हो ही नही सकती। वेदो मे मत्र रूप से सभी विद्याओ का उपदेश है।

डॉ० जेम्स कजिन–वैदिक आदर्शों पर चलकर ही संसार स्वर्गीय सुख पा सकता है। लार्ड मॉर्ले–वेदो मे जो कुछ है वह अन्यत्र नही हैं।

फादर मॉरिस फिलिप्स ने टीचिंग ऑफ दी वेदाज मे लिखा है—वाइविल के प्रथम भाग ओल्ड टेस्टामेन्ट का इतिहास एंव कालक्रम के वारे में जो आधुनिकतम शोध हुआ है उस मे ऋग्वेद ही प्राचीनतम ग्रंथ है। ऋग्वेद केवल आर्यों का ही नही अपितु समग्र मानवो का प्राचीनतम ग्रंथ है।

प्रा· विल्सन–वेदों मे कला विज्ञान, आभूषण, कवच, अस्त्र, शस्त्र, औषधियाँ उन का प्रतिकार, समय विभाग, न्याय, नियम आदि सभी कुछ है। गोलों का अविष्कार सवसे पहले भारत ने किया है।

प्राध्यापक कील–वेद समग्र ज्ञान का आदि और अन्त है।

अगस्तस श्लेगेल–आद्यतम भारतियों को दैवी ज्ञान प्राप्त-था, उन के भावों से दैवी शक्ति का साक्षात्कार होता है, अन्य किसी साहित्य में यह बात नही है।

ईश्वरीय शक्ति का एक प्रमाण–रूस में कम्युनिष्ट शासन ने धर्म कार्यो पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। जर्मने के वार के समय स्टॉलिन-ग्राड एव मास्को तक विजय पाती जर्मन सेना के पहुँचने से दुखित रूसी नेताओ ने विचार विमर्ष कर रूसी विजय ने लिये ईश्वर से प्रार्थना करने अपनी प्रजा से निवेदन किये फलतः रूस में हर्षोल्लास उमड़ पड़ा। सामूहिक प्रार्थना की पहली विशाल सभा मास्को मे हुई थी। इस का वृत्त चित्र रूस मे एक माह तक दिखाया गया था। जर्मन हारा, रूस जीता अर्थात ईश्वरीय शक्ति है।

चालीस वर्ष पहले फ्रांस की वैज्ञानिका मैडम फिनेलांग ने विद्युत परीक्षा बोर्ड पर भैरव स्त्रोत के पाठ से हार्दिक भाव का भैरवचित्र उभरा हुआ देखी थी।

हिस्ट्री आफ इंडिया में लिखा है–निः सन्देह सारे विश्व में हिन्दू राष्ट्र प्राचीनतम है। ग्रीस एवं इटली वनचर था तब भारत समुन्नत था।

ई० १८८२ में प्रा० वेब्रर ने लिखा है साहित्य में भारत का प्राचीन साहित्य विपुल है।

प्रसिद्ध एनी बेसेन्ट ने चालीस वर्ष धमाध्ययन करने बाद हिन्दू धर्म को ही सर्वोच्च स्वीकारी है।

डा० कार्ड वर्थ (विशप)–हम ऐसे विचारों को ईश्वरीय ज्ञान मानने मे संकोच नही करते।

डॉ० अल्फ्रेड रसेल वॉलेस–वेद पवित्र और उच्च है। मिल्टन, शेक्सपीयर एवं टेनीसन के विचारों की अपेक्षा वैदिक सूत्र सर्वोन्नम है, उच्च विचारकों से बढ़कर है।

कँगी–वेदो में मानवता के लिये प्रकाश है।

डब्ल्यू० डब्ल्यू० हन्टर—ऋग्वेद पूजनीय अज्ञेय अपरिमित है।

डब्ल्यू० डी० ब्राउन—वैदिक धर्म एक ईश्वर की सत्ता मानता है। वैज्ञानिक धर्म है, इसमें विज्ञान और धर्म दोनो हाथ मिलाकर चलतेहैं।

मिष्टर थौरी—वेद सार्वदेशिक, सार्वकालिक, सार्वजनिक है। ज्ञान विज्ञान है वेद ईश्वर का पवित्र ज्ञान है।

सन्त एडवर्ड कार पेन्टर—शोपेनहार का दर्शनशास्त्र एवं ह्विटमेन के धर्मोपदेश सभी मे वेदों के ही विचार मिलते है। वेदो से बढकर ज्ञान विज्ञान प्रतिपादक ईश्वरीय ग्रथ दूसरा नही है।

प्रो० ब्लूम फील्ड—शताब्दियो से हमारे भाव भाषा- धर्म बदलने के बाद भी वेदो मे हमारे लिए बहुत कुछ विद्यमान है। (इन्होने ऋषियों को पूर्वज माना है)।

श्रीमती ब्लावेत्सकी—वेद ईश्वरीय ज्ञान है।

बी० जी० रेली—वैदिक ग्रंथ विविध विषयो पर लिखे गऐ ग्रंथ है।

मॉरिस फिलिप—वेद सारे संसार का प्राचीन धर्म ग्रंथ है, संसार की सभ्यता का आदि श्रोत है। वेद ईश्वरीय है। अ—पौरुषेय है।

विशप हीरो—मानवता को प्रकाश देने मे ऋग्वेद जैसा बहुमूल्य साहित्य ग्रीस या रोम मे नही है।

काउंन्ट जॉन्स जेनी—भारत केवल हिन्दू धर्म का ही घर नही है, वह ससार की सभ्यता का आदि भण्डार है।

डफ—भारतीय विज्ञान इतना विस्तृत है कि योरोपीय विज्ञान के सभी अग उस मे मिलते है। इसी डफ ने मिर्जापुर के घाट पर खुले मैदान जन समुदाय के समक्ष दिन के उजाले में गुरु एव शिष्य को योग बल से तेज बहती नदी के जल पर चलते हुए फिर जल पर से ही आकाश की ओर उड़कर अद्रश्य होते हुए स्वय देखा है।

विन्टर निञ्ज—संस्कृत साहित्य में सभी विषय लिखे है। फैडरिके, रोलिंग, रोम्या, रोला, विक्टर कोसिन भी भारतीय दर्शन शास्त्र के प्रपसक है।

उपरोक्त तत्थ्य भारतीय वैदिक ज्ञान की सर्वोच्चता प्रदान करते है। प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर. पी थत्ते रिसर्च स्कालर ने व्याख्यान में कहा है—हजारों वर्ष पूर्व रचित वेदों में आधुनिक विज्ञान और उसके सिद्धान्त छिपे हुए है। जो अनुसंधान आज तक हुआ है तथा आगे होगा उन सब का वर्णन वेद में है। इस विज्ञान युग मे ३७५ रेडिओ फ्रीक्वेंसी खोजने की जो बात कही जाती है उसका वर्णन भी वेद में अपने ढग से है।

कर्नल रेश ब्रुक विलियम—भारत में तोप, बन्दूक, शीशे की गोली का प्रयोग वैदिक काल से है। अथर्व वेद मे सूत्र है।

रूसी प्रसिद्ध विद्वान डॉ० ए० ए० गोरबोवस्की ने बुक आफ हाइ-पॉथिसिस में लिखा है—सम्भव हैं ब्रह्मास्त्र का विकास एवं उपयोग एक ऐसी संस्कृति ने किया था जो बाद में लुप्त हो गई। पुस्तक में महाभारत के कई उद्धरण दिये है। ब्रह्मास्त्र से उत्पन्न प्रचण्ड ताप-मान, सर्वत्र अग्नि प्रज्ज्वलित हो गई। सूर्य ढँक गया, अन्धकार व्याप्त हो गया, संसार जलने लगा। जो अति दूरस्थ थे उनके नख और केश झुलस गए। विश्व मे खाने योग्य पदार्थ नही बचे, सर्वत्र दूषितता थी। चार हजार वर्ष पुराने कंकाल मे रेडिओ धर्मिता पायी गई है। जो साधारण से कई गुना अधिक है। ब्रह्मास्त्र एव अणुवम मे विनाशक समानता है। ब्रह्मास्त्र एवं दक्षिण अमेरिकी "मिश मैक" के वर्णन में अत्याधिक समानता हैं। प्राचीन भारत के लोग अणुबम से अन-भिज्ञ नही थे। समरागण सूत्रधार से सिद्ध होता है कि प्राचीन भारतीय लोग विमान बनाना भी जानते थे किन्तु अयोग्य लोगो के हाथ यह ज्ञान न पड़े इसलिये उन्होंने इसे गुप्त रखा। "उक्त लेखक का सत्यानुसन्धान सराहनीय है।

मोनियर विलियम्स—बीजगणित और रेखा गणित का आविष्कार हिन्दुओं द्वारा हुआ है। डॉ० थीवो रेखा गणित के लिये संसार भारत का ऋणी है। यूनान का ऋणी नही है।

प्रो० वेवर—अरब में ज्योतिष विद्या का विकास भारत से हुआ है।

कोल ब्रुक—चीन एवं अरब को अंक गणित भारत ने दिया है। अन्य किसी ने नही दिया।

प्रो० कॉक (अमेरिका) पन्द्रह सौ वर्ष पहले आर्य भट्ट द्वारा बनाये गए गणित सूत्र, कम्प्यूटर के लिये उपयोगी सिद्ध हुये हैं। भारतीय गणित ग्रथो का अध्ययन पश्चिमी देशो मे हो रहा है।

डॉ० रिक् ब्रिग्ज (अमेरिका, कम्प्यूटर इजिनियर) व्याकरणियों द्वारा संस्कृत श्लोक रचना पद्धती की ही समानता कम्प्यूटर करता है।

पश्चिमी विद्वान वेली, लॅपलेस, प्ले फेअर, विलियम जेम्स ने भारतीय ज्योतिष एवं गणित को ईसा पूर्व का स्वीकारे हैं। हर्मन हेकल ने ब्राह्मणों को बीज गणित का शृष्टा माना है। शतोत्तर गणना भारतीय देन है।

यजुर्वेद अ० १७ मं० २ मे दस खरब याने तेरह अक की संख्या है। ईसा से दो सौ वर्ष पहले पिंगल के छन्द सूत्र मे शून्य का प्रयोग है। ईसा से सौ वर्ष पहले बौद्ध ग्रथ ललित विस्तर मे गणितज्ञ अर्जुन से बुद्ध के सम्वाद मे एक कोटि के बाद सौ कोटि की संख्या है, सौ के चौबीसवें योग की संख्या १० पर ५३ शून्य की तल्लाक्षण संख्या है। ईसा से सौ वर्ष पहले के जैन ग्रथ अनुयोग द्वार सूत्र मे १० पर १४० शून्य की संख्या है। ब्रह्म सिद्धान्त में एक संख्या का वर्णन यूं है— परिवर्ता ख चतुष्टय शराब्धि रस गुण यम द्वि वसु तिथयः १५८२२३६४५०००० । पहले रेखाओं द्वारा सख्या लिखते थे। अंक लिपि, शून्य, दशमल पद्धती भारत ने विश्व को दी है यह सभी मानते है। बखशाली ई० २००। पचसिद्धान्तिका ई० ५०५ में शून्य प्रयोग है। जिनभद्र ई० ५२६ ने शून्य प्रयोग माना है। भास्कर की महा भास्करीय मे तथा आर्य भट्टीय मे शून्य प्रयोग है।

बोथियस (ई० ५००) की हस्त ज्यामिती में सर्व प्रथम हिन्दू अङ्क लिखे हैं। मध्य एशिया का "ख्वारिज्मी" भारतीय शून्य, बीजगणित

एवं आर्य भट्ट की त्रिकोण मिती का अध्ययन कर ई० ८२० के करीब बगदाद में हिसाब अलहिन्द नामक पुस्तक लिखा। इब्न वहशी ई०८७५ जहीज ई० ८६० । अब्दुलअल मसूदी ई० ९४३ ने स्वीकारा है कि अंक लिपि हिन्दुओं की देन है।

ई० ७७३ मे बगदाद में खलीफा अल मन्सूर के दरबार मे गये भारतीय विद्वान ने ज्योतिष की सारणियां, शतोत्तर गणना, एवं आर्य भट्ट के ग्रथो का प्रदर्शन सह प्रचार किया था। ई० ५३४ के करीब फारस के नौशेरवां के राज्य में भारतीय विद्वान बुजुर्ग मेहर नामक था इसी की आज्ञा से विष्णु शर्मा के पंच तंत्र का वहा अरबी अनुवाद हुआ था उसमें वाराह मिहिर का नाम भी है।

ई० १३ वी सदी के आरम्भ में पिसा के लियो नार्डो ने मिश्र, सीरिया, यूनान, इटली आदि कई राज्यों का भ्रमण कर वहां की अंक लेखन शैली देखा अन्ततः हिन्दू लेखन विधि सुगम मान कर इसी का प्रचार उसने किया।

जोड, गुणा, त्रैराशिकी, वर्गमूल, घनमूल, बीजगणित आदि भारतीय ज्ञान है। आर्य भट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, श्रीपति, महावीर आदि गणित के प्रकाण्ड मर्मज्ञ विद्वान थे। आर्य भट्ट ने वर्गमूल गणित की जो रीति ई० ४९९ मे दी थी वह पन्द्रहवी सदी में यूरोप मे प्रचलित हुई। भास्कराचार्य कृत समभुज, समकोण, ३, ५, ६. ७, ८, ९ भुज आदि के गणित सूत्र लीलावती मे है। भास्कराचार्य ने एक सेकण्ड का ३४००० वां भाग नापा था उसे "क्रति" कहा है। भास्कराचार्य ने सिद्धान्त शिरोमणि ग्रंथ में लिखा है कि जो पदार्थ पृथ्वी पर गिरते हुए मालुम देते है वह पृथ्वी का आकर्षण है। किन्तु इस शोध का मिथ्या श्रेय सदियो बाद जन्मे न्यूटन को देते हैं। विदेशियो की इस बकझकी में कुछ इण्डियन टुकड़खोर भी शामिल है। आर्य-भट्ट ने प्रथम शोध किया है कि दिन रात होने का कारण पृथ्वी का घूमना है। सूर्य के प्रकाश से अन्य ग्रह प्रकाशित होते है स्व प्रकाशमान नहीं हैं। ग्रहण होने का कारण भी

उन्होंने प्रतिपादित किया है इनके हजार वर्ष वाद उक्त वातों को ही यूरोपीय कोपार्निक ने दोहराया है। शोध कर्ता आर्य भट्ट है यह ध्यान रहे।

चौथी शताद्वि के ग्रंथ सूर्य सिद्धान्त मे त्रिकोण का क्षेत्रफल उसकी भुजा से निकालने की विधी है तहां सोलहवी सदी मे क्लौवियस द्वारा यूरोप को यह ज्ञान मिला है सूर्य सिद्धान्त मे त्रिकोण मिति, ज्या, कोटिज्या की विधी है तहा यह ज्ञान सोलहवी सदी मे व्रिग्ज द्वारा यूरोप को मिला है। वैदिक युग से भारत मे जामित के आधार से हवन कुण्ड या वेदी वनाई जाती है। ईसा से ८०० वर्ष पहले से भारतियो को जामिति शास्त्र का ज्ञान था आपस्तम्वीय शुल्व सूत्र एवं वोधायन मे प्रमाण है। ईसा से हजारों वर्ष पहले से खगोलीय ज्ञान भारत मे समुन्नत था। रावण ने ग्रहो पर शासन किया। राम और कृष्ण की जन्मकुण्डली मे ग्रह वर्णन आज से हजारो वर्ष पहले का है। वाल्मीक रामायण–राम जन्म समय सूर्य, मंगल, शनि गुरु शुक्र उच्च राशि पर थे कर्क लग्न मे चन्द्र गुरु साथ थे। लक्ष्मण शत्रुघ्न के जन्म समय आश्लेषा नक्षत्र कर्क लग्न सूर्य उच्च राशि पर था।

अर्थात हजारो वर्ष पहले से खगोल का सम्यक ज्ञान भारतीयों को था।

वेली का भी यही मत है। लेप लेस का मत है कि ईसा से ३००० वर्ष पहले से ग्रहो का स्थान एक विकला तक भारतीय शोध लेते थे। इसका समर्थन प्ले फेअर ने भी किया है। विलियम जेम्स का मत है कि ११८० के पहले से भारतीय विद्वान ग्रहो की सही गणना कर लेते थे।

उपरोक्त कुछ उदाहरण वैदिक ज्ञान विज्ञान की देन है। उन वेदों का यश गान विदेशियों ने मुक्त कण्ठ से किया है। उन आदि ज्ञान-विज्ञान ग्रंथों पर भारतियो को गर्व होना स्वाभाविक है। (लेखक की

"हिन्दु गौरव" पुस्तक पढ़िए) उन वेदों का सृजनस्थल राजस्थान है राजस्थानी देन है।

विश्व विज्ञान का मूल वैदिक ज्ञान ही है, हमारे प्राचीन ग्रन्थ विदेशी ले गए किन्तु शासन सकलन करवाए तो जनता के पास आज भी विलक्षण ज्ञान भण्डार मिलेगा। हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थ तीस हजार से अधिक सख्या में आज भी हैं किन्तु हमारे शासन मे विदेशी साहित्य का आदर और अपनी ज्ञान सम्पदा का निरादर हो रहा है। किन्तु विश्व मे मर्वोच्च स्वस्था जीवन व्यवस्था देने मे भारतीय प्राचीन साहित्य ही सक्षम है, सदैव रहेगा भी।

देश विदेश में सहश्राब्दियो से आर्य—हिन्दुत्व की जन कल्याण कारी श्रेष्ठताएं आदरणीय रही है। विश्व की उस आद्य भारतीय सुसंस्कृति पर प्रताप सगर्व मुग्ध था, उसकी रक्षा में सर्वस्व सहज अर्पित करना प्रताप का पैतृक और नैतिक कर्तव्य था जिसे महाराणा प्रताप ने कठोर कई कष्ट सहकर द्र.ढतापूर्वक निभाया है। यह प्रताप पर आर्य-हिन्दू संस्कार का परिणाम है।

भारतीय गौरव गाथा के अत्यन्त अल्पतम परिचय की आंशिक झलक मात्र ही प्रसंगवश प्रस्तुत है किन्तु इससे स्पष्ट जानकारी मिलती है कि भारत में एवं विदेशो मे तुलनात्मक मानवता एवं दान-वता का वातावरण कब कैसा था पाठक सत्यान्वेषण करलें।

———

सिन्धुनरेश दाहिर की कन्याओं का शौर्य

ई० ७१२ में सिन्धु—देवल के निर्दोष राज्य पर मुहम्मद बिन कासिम द्वारा हुए आक्रमण मे सिंधुराज ब्राह्मण दाहिर मारा गया, महिलाओ नें जौहर किया, वौद्ध जनता अधिक थी, तटस्थ रही दर्शक थी, कत्ल कर दी गई किन्तु दाहिर की दो युवा पुत्री वन्दी वनाकर वगदाद ले जाई गई एवं वगदादी शासक खलीफा—वलीद की सेवा मे दोनों लडकियां भेंट मे दी गयी। विदेश में, शाही भवन मे पूर्णत. निर्दयी क्रूर शत्रुओ से घिरी हुई दोनों वहनो ने "मुहम्मद कासिम" पर वलात्कारी दोष लगाकर "मुहम्मद कासिम" को मृत्युदण्ड दिलवाई। मुहम्मद कासिम की मृत्यु वाद मुहम्मद कासिम को निर्दोष वतलाकर अपने देशधर्म का सगर्व गुणगान कर दोनो वहनो ने खलीफा से सहर्ष मृत्युदण्ड पाया था। क्योंकि इन कन्याओ को हिन्द और हिंदू धर्म प्यारा था।

दोनो वहनों की चोटी घोड़ो की पूँछ तरफ बांधकर उन घोडों को उस युग की ऊबड़ खावड़ पथरीली सड़को पर शहर मे दौडाया गया था और तव तलक दौड़ाया गया, कि जव तलक उन दोनो लड़कियो के शरीर पूर्ण क्षतविक्षत हो, चिथडे-चिथड़े हो वगदाद की सडको पर टुकड़ो-टुकडो मे विखर न गये।

किन्तु विलक्षण साहसी उन दोनो नवयुवती वहनो ने मार्ग पर घसीटते हुए, मर्मान्तक दारुण पीडा सहन करते हुए नश्वर काया को धज्जियां उडवा ली किंतु उन वालाओं ने भारतीय हिन्दू वीरांगनाओ के सतीत्व गौरव को उन्नत रखने शत्रु से क्षमा याचना नही की।

उफ—वह कितना क्रूर दृश्य था जिसे देखकर वगदादी जनता खुश हुई होगी, लेकिन उस पर आज भी मानवता सखेद लज्जित है। नारी के प्रति यह शैतानियत अरब संस्कृति में रही हैं। भारतीय प्राचीन संस्कृति मे नही थी।

दमिष्क मे खलीफा हारूं रशीद के पौत्र मुताविकेल की मृत्यु के बाद (ई० ८५० के बाद) वह वगदाद साधारण वस्तु की तरह नीलाम हुआ था।

इस्लामी जेहाद के नाम पर सत्ता लोभ

यादव राज्य गजनी, शालिवाहनपुर, तन्नोट आदि पर यवन अधिकार हो चुका था ई० १००१ से १०२७ तक महमूद गजनवी द्वारा भारत पर सत्रह वार आक्रमण किए गए एवं अनेक मन्दिर तोड़े गए। कन्नौज, मथुरा, सोमनाथ, थानेश्वर आदि लूटे गए। महमूद ई० १०२६ में सोमनाथ (रत्नेश्वर) मन्दिर लूटने वढा तब लाहौर और मुल्तान के राजा इसके साथ थे पचास हजार सेना साथ थी। नाई जाति का तिलक नामक व्यक्ति प्रमुख सिपहसालार था। मार्ग में चौहान गोगाजी की छोटी सी जागीर थी "नब्वह वर्षीय" गोगाजी के ४५ पुत्र ६० भतीजे ७४ पौत्र १२५ प्रपौत्र थे। वयोवृद्ध गोगा अपने ९०० सैनिक एवं पुत्र पौत्रादि सहित महमूद का मार्ग रोकने रणक्षेत्र पर महमूद से टकरा गए। ७०० महिलाओ ने जौहर किया। गोगा का पौत्र सज्जनसिंह महमूद को भ्रमित कर रेगिस्तान की ओर ले गया। वहां रेतीले अन्धड़ से महमूदी सेना की तगड़ी हानि हुई। मार्गदर्शक सज्जनसिंह मग्ने के लिए ही अगवा था। अन्धड़ में समा गया उसे अपनी योजना की सफलता पर खुशी थी। ११०० चौहानो ने २०००० महमूदी मार डाले महमूद बीस हजार सैनिक खोकर तीस हजार सेना सह सोमनाथ पहुँचा। गुजरात नरेश सोलंकी प्रथम भीम देव कंथा दुर्ग से निकलकर १०२३ में सोमनाथ की रक्षा में महमूद के

हाथों मारा गया था। सोमनाथ के पुजारी कर्मचारी आदि कुछ भी नही कर सके। मन्दिर में लगी २०० मन सुवर्ण की जंजीर एव घटियां ठोस सुवर्ण के ५६ स्तम्भ, तथा एक कक्ष रत्नभंडार और अन्य उपकरण आदि लूट कर ले गया। सोमनाथ का नाम रत्नेश्वर भी है।

ई० ११९२ में पृथ्वीराज चौहान, अपनों के असहयोग एव शत्रु शहाबुद्दीन गौरी की धोके बाजी के कारण पराजित हो वन्दी अवस्था में मारा गया।

इसी शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज ने कई बार पछाडा था। शहाबुद्दीन को कभी परास्त करने वाला जयचन्द राठौड पृथ्वीराज की दशा देख भीत हुआ। रणक्षेत्र मे शहाबुद्दीन का वन्दी होने की अपेक्षा गगा की गोद मे समा गया। ११९४ मे आत्महत्या कर लिया। क्योंकि पृथ्वी राज को निरन्तर कठोर यातनाएं देकर मारा गया था।

ई० १२२१ मे चगेजखां द्वारा भारत मे जवरदस्त लूट खसोट और क्रूर हिसा का तूफान मचाया गया, करोड़ों रुपयो की सम्पदा भी ले गया।

ई० १२९०-९१ मे छह महीने तक रणथम्बोर का किला, जलाबुद्दीन खिलजी घेरे रहा, निराश हो लौट गया।

अपने चचा जलालुद्दीन और उसके दो पुत्रो की हत्या करके शासक वने हुए अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर ने १२९३ मे पाण्ड्य राज के वीर धवल नगर पर आक्रमण किया तव पाड्यराज का मत्री मलिक तकीउद्दीन अपनी सेना सह मुकावला किया था। राज्य का साथ देने ईरानी तथा अन्य मुसलमा भी आए थे।

अलाउद्दीन खिलजी की मराठा वेगम चिमना का प्रेमी अलाउद्दीन का सेनापति मुहम्मदशाह मंगोल, रणथम्बोर मे हमीर चौहान की शरण मे था।

हमीर का रुष्ट मन्त्री भोज खिलजी की शरण मे था, इसने खिलजी को हमीर पर आक्रमण करने प्रोत्साहित किया तब ई० १३०१ में अलाउद्दीन ने रणथम्बोर पर चढाई किया। कई महीनों तक किला घेरे रहा किंतु अलाउद्दीन सफल नही हुआ। तब हमीर के सेनापति रणमल और रतिपाल को प्रलोभित कर खिलजी ने इन्हें अपना सहयोगी बना लिया। अपने विश्वस्त सहयोगियों द्वारा विश्वासघात एव एक वर्ष किला शत्रु ने घिरा रहने के कारण किले मे खाद्य सामग्री का घोर अभाव होने से संकटवश महिलाओं ने जौहर किया एव वीरो ने केसरिया धारण कर शत्रु से प्रचण्ड संग्राम कर वीरगति पाई। हमीर ने अपना शीर्श स्वयं काटकर शिवार्पण कर दिया था। एक शरणागत मुसलमान की रक्षा मे हिन्दू हमीर ने अपना रणथम्भोर राज्य सपरिवार नष्ट करलिया किन्तु शरणागत की रक्षा से विमुख नही हुआ। अलाउद्दीन किले पर पहुँचा, घायल मुहम्मद शाह से पूछा कि तुझे दुरुस्त करवा दूँ तो तू क्या करेगा। मुहम्मदशाह ने अलाउद्दीन को सगर्व उत्तर दिया चचा और भाइयो के हत्यारे तुझे मार कर मै राजा हमीर का तुझसे बदला लूँगा। यह जवाब सुनकर अलाउद्दीन ने मुहम्मदशाह को हाथी से कुचलवा दिया।

इसी अलाउद्दीन ने ईसवी १३०३ में रानी पद्मिमी को पाने के बहाने चित्तौड़ पर आक्रमण कर उमे जनहीन कर दिया था।

मुगलपुरा में शकावश तीस हजार व्यक्ति मरवा दिया था। ई० १३०८ तक जैसलमेर माण्डू धार चन्देरी उज्जैन आदि पर अधिकार किया। धारानगर मे महाराजा भोज निर्मित सरस्वती मन्दिर को कमाल मौला मस्जिद बनवाया।

अलाई आक्रमण से सिवाना का सीतलदेव चौहान लम्बे समय तक पराजित नही हुआ तक अलाई सेनापति उलूगखा ने सिवाना के नागरिक विक्रम से जंवाज को लोभ देकर किले का पेय-जल जहरी बनवा दिया इसलिए किले मे जौहर एव केसरिया हुआ।

जालौर का कान्हड़ दे चौहान अलादीन से बारह वर्ष युद्ध करता रहा तब अलादीन ने कान्हड़ दे के मित्र भीकम को लोभ देकर अमावस की रात्री में किले का द्वार खुलवा लिया, किले में तत्काल जौहर और केसरिया हुआ। मित्र के विश्वासघात ने जालौर का पतन किया था। किन्तु आश्चर्य है कि इस युद्ध मे वीरगति पाये हुए कान्हड़ के पुत्र वीरम के वीरत्व पर मोहित हो अलादीन की कन्या ने वीरम को मन से पति मान ली थी वह पिता की जानकारी में वीरमा के साथ सहर्ष सती हुई थी (दोनों विजातीय विधर्मी एवं शत्रु पक्ष के थे ।) इसी तरह मनोहरपुर (जयपुर) का राजपुत्र रायचंद्र काबुल युद्ध में वीरता पूर्वक मारा गया था। इसकी शौर्य प्रशंसा पर मोहित बगस की शहजादी जहांनारा भी कंवारी ही रायचन्द के साथ सती हुई थी अलाउद्दीन ने दक्खन मे देवगिरी के राजा रामदेव राय पर अचानक आक्रमण कर सुवर्ण ६०० मन चांदी एक हजार मन मोती सात मन, हीरे जवाहरात दो मन, रेशमी कपड़े के ४००० थान लूट कर ले गया।

खिलजी के सेनापति मलिक कपूर ने ई० १३११ में रामेश्वर मंदिर तोडकर मजिद वनाया। ई० १३१४ तक बाडमेर सांचोर भीनमाल अजमेर नागोर फतेपुर झुंझनू आदि पर मुस्लिम अधिकार हो गया।

ई० १३५० से १३८० तक फिरोजशाह तुगलक ने कई ब्राह्मण पण्डित जिन्दा जलवाया, हिन्दू धार्मिक कार्यो में कठोरतापूर्वक बाधा पहुँचाया एवं कई मन्दिर तथा जगन्नाथपुरी की मूर्ती तुड़वाया। सिकन्दर लोदी ने काश्मीर को दवोचा, अनन्तनाग पाण्डु पट्टण, मार्तण्ड नगर ध्वस्त किया, हस्तलिखित हजारो ग्रंथ झील में डुबाया कत्लेआम की हुई ल्हाशो के यज्ञोपवीत को तुलवाया था बजन सात मन हुआ था।

ई० १३९८ में तैमूरलंग ने भारत में पहुँचकर अत्यन्त क्रूरतम हिंसाचार किया। दिल्ली से तुगलकी शासन समाप्त हुआ तैमूरी सैय्यद दिल्ली का शासक वना तैमरी ने दिल्ली में एक लाख, भटनेर

में दस हज़ार एवं मेरठ जम्मू, हरिद्वार में भी घोर नरसंहार तथा जबरदस्त लूट खसोट आगजनी से क्रूरतम वीभत्स विनाश कर, पचास करोड़ का धन मयूरासन एवं अद्वितीय हीरा भारत से ले गया।

ई० १४८८ से १५२६ तक लोदियो के शासन ने हिन्दू और उनके अनेक देवस्थानों को नष्ट भ्रष्ट करने के हिंसक प्रयास निरन्तर किये है।

चित्तौड की शरण में रहा हुआ गुजराती बहादुरशाह ई० १५३५ में चित्तौड़ पर चढाई किया तब रानी कर्णवती ने सहायता के लोभ-वश हुमायूं को राखी भेजी जिसे हुमायूं ने राख कर दिया। हजारो महिलाओं ने जौहर किया, बाघजी के नेतृत्व मे मातृभू की रक्षा में हजारों वीर वीरगति पाए।

ई० १५४४ में जोधपुर नरेश मालदेव, शेरशाह सूर के कपट को नही समझा, एवं अपने साथियों पर अविश्वास कर रणक्षेत्र मे रात में पलायन कर गया किन्तु इस अविश्वास के कलंक को धोने मालदेव के जांबाज साथियो ने मरणयुद्ध कर शेरशाह को मुट्ठी भर बाजरा याद करवा दिया था।

मुगल भक्त भारमल के पुत्र भगवानदास ने, मारवाड़, वीकानेर, जैसलसेर से प्रिय अकबर को डोले दिलवाकर कृतार्थ हो क्षात्र धर्म को क्षत धर्म करके उक्त रजवाड़ों को अकबरी ग्रास बनाया है।

इस प्रकार के और भी अनेक पाशविक अत्याचार देश धर्म और समाज पर सदियों से निरन्तर हो रहे थे। इसके लिए विदेशियों को स्वार्थलिप्त कुछ भारतियो द्वारा निर्लज्जता पूर्वक सहयोग दिए जाने की घृणित घटनाओं ने हिन्दुत्वाभिमानी वीरवर महाराणा प्रताप के प्रचण्ड प्रतापी मन को सन्तप्त एवं मस्तिष्क को निरन्तर उद्वेलित रख उसे कर्तव्य की ओर सतत क्रियाशील अग्रसर करते हुए विधर्मी विदेशी अकवर के विरुद्ध प्रवल आक्रोशी एव दुर्धर्ष शत्रु वनाया है।

देश और धर्म पर निछावर होने वाले भारतीय पूर्वजो का शौर्य ही प्रताप का आदर्श था। जिसके अनुसार प्रताप अपने देश धर्म की रक्षा पर दृढ चित रह संघर्ष करता रहा।

प्रताप की उस उज्ज्वल कर्तव्यनिष्ठा एव देशभक्ति पर विदेशियो के प्रभाव मे भारतीय कुछ विद्वानो के विकृत विचारो के शुद्धीकरण की ओर यह अति अल्पतम प्रयास मात्र है। प्रसिद्ध अनेक इतिहासज्ञों ने—

हीन अकबर को महान एवं महान प्रताप को हीन चित्रित कर सत्य को अवश्य ही मिथ्याकृत किये हैं ऐसा ज्ञात होता है।

यथा—"प्रताप प्रभुसत्ता के लिये संघर्षशील था तब उससे प्रेरित हो कर कोई भी राजा उसके साथ नही आया। प्रताप की कितनी ही प्रशंसा की जाय किन्तु उसके सिद्धान्त अन्य राजाओ से भिन्न थे। अन्य राजा उसके सम्बन्ध मे उत्साही नही हुए। मेवाड़ के बडे शासको के सम्बन्ध मे उनका पूर्व अनुभव सुखद नही रहा। मानसिंह (कछावा) के परिवार वालो का मेवाड़वालो से सीमाविवाद पर कुल वैर था। यह कहना अविवेकपूर्ण होगा कि अन्य राजपूत कायर डरपोक हो गये थे। उन्होने भौतिक सुख उपभोग के लिये स्वतंत्रता बेच दी थी। अकबर ने उनके राज्य आत्मसात नही करना चाहा। उसने उनके धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्र मे हस्तक्षेप करना नही चाहा। वह तो उनकी वफादारी एव निश्चित सैनिको के साथ अकबरी राज की सेवा चाहता था। चारण भाटो के अलावा अन्य प्रमाण नही है कि राजपूतो पर वैवाहिक सम्बन्ध थोपना अकबर की नीति थी। अकबर हिन्दू एवं इस्लाम धर्मो का समन्वय वादी था। उसने दोनो से समान नीति रखी थी। अकबर के शासन मे विजेता का अधिनायकत्व नही था। राष्ट्रीय सुसंगठन था। उस समय अकबर जैसा विचारक विरला ही होगा। अशोक के बाद अकबर ही सबसे महान शासक था। दूरदर्शी, राजनीतिज्ञ, उदारमना मानवता वादी था। उसका

लक्ष्य भारत के सारे हिस्सों को एकीकृत कर शक्तिशाली बनाना, एक साम्राज्याधिकार करना चाहता था"। इत्यादि। अकबर मुस्लिमों के राज्य आत्मसात करलेता था यह तत्थ भ्रामक है अकबर शिया मुस्लिमों के राज्य हड़प लेता था, सुन्नी मुस्लिम राज्य को नही हड़पा है।

अपने देश और धर्म की स्वाधीनता प्रताप का सिद्धान्त अन्त तक रहा है। दूसरे रजवाड़ों का सिद्धान्त निःसन्देह भौतिक सुख वैभव एव पदलोभी था। अकबर ने राजाओं के राज्य हड़प नहीं किया क्योंकि 'गुड से मरे उसे जहर क्यो दे।' के अनुसार राज्य-हड़पे बगैर ही उन राज्यो की व्यवस्था अकबरी इच्छानुसार ही होती थी। तथा राजाओं को उनके राज्य से दूर ही रखा जाता था याने रोटी छीनकर टुकड़ा डाला जाता था। राजा की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी की नियुक्ती अकबरी मर्जी मुजब ही होती थी। अकबर उन राज्यों की सीमा भी प्रायः घटा देता था जिसे पुनः प्राप्त करने राजा ने अकबर के लिये कही विजय पाना जरूरी था। राजा से राजतिलक की मंजूरी के उपलक्ष में नजराना एवं अन्य अवसरो पर भी बादशाह बड़े प्रमाण में नजराना अवश्य लेता था। अकबर राजाओं के धन से प्रायः खुद का तुलादान करवाके वह धन स्वंय के खजाने में डलवाता था। राजाओं से सैनिक सेवा अवश्य लेता था। करोड़ी व्यवस्था एवं जजिया नामक टैक्स हिन्दू राजा एवं प्रजा से ही लिया जाता था। यात्रा, विवाह एवं युद्ध टैक्स भी था (औरंगजेब ने हिन्दू पत्र पर भी टैक्स लिया है।) कृषी आदि व्यवसाय में हिन्दू से तीसरा भाग एवं मुसलमान से दसवां भाग टैक्स लिया जाता था। अकबर उदार मानवतावादी नहीं था क्रूर बरबर था इसी कारण अकबर के प्रवास समय मार्ग की जनता घर के द्वार बन्द कर लेती थी। दौसा, इलाहाबाद, वाराणसी आदि में एक भी दर्शक नागरिक उसे नहीं दिखा। मन्दिर तुड़वाकर भ्रष्ट करना अकबर के लिये महान पुण्य काम था

चित्तौड़ में मन्दिर तोडा गया, कांगडा महल के मुख्य द्वार पर प्रार्थना कक्ष था उसे मस्जिद बनाया गया तथा विधीचन्द्र द्वारा अकवर को पॉच मन सोना दिया गया लेकिन डोला नही दिया गया इसलिये नगर कोट मे देवी के मन्दिर की दो सौ गऊ काटकर उनका रक्त जूतो से मन्दिर की दीवार पर मुगल सैनिको ने लगाया था। ज्वाला-देवी की ज्योति पर भारी तवा अकबर ने ढकवाया किन्तु ज्योति जलती रही तव ज्योति पर जलधारा डलवाया फिर भी ज्योति बूझी नही तव चमत्कार देखने खुद अकवर सवामन सोने का छत्र लेकर मन्दिर मे पहुँचा किन्तु श्यायद छत्र सोने की पॉलिस किया हुआ नकली था अकवर डर गया, कॉपा और उसके हाथ से (कन्धे से) छतर गिर कर टूट गया, देवी ने नकली छतर नही स्वाकारी (वह छत्र मन्दिर मे धरा है।)

अकवर के लाहोरी सूबेदार हुसैनखा ने हिन्दू को पोषाक से अलग रंग का टुकड़ा कन्धे पर सिलवाए रखने का नियम चलवाया था, ऐसी दुष्टताएं अकबरी स्वीकृति के वगैर होना असम्भव है। थानेश्वर मे साधुओ के दो दल पारस्परिक विवाद पर न्याय करवाने अकवर के पास गए थे, अकवर ने दोनो दलो को तरवारे दिलवाकर कहा कि युद्ध का फैसला करलो यूं अकवर ने दोनो दल कटवा दिया।

अकवर ने हिजाज–मक्का मे वाटने पॉच लाख रुपया एव सोलह हजार पोषाक भेजा किन्तु राज्य मे भीषण अकाल पीड़ितो की सहायता नही किया। श्रीनगर के अकाल समय अकबर श्रीनगर मे अकाल पीड़ितों का तमाशा देख प्रसन्न हुआ होगा, अकाल पीडित किन्ही परिवारो ने नन्हे बच्चो को सडक पर छोड दिया था जिन्हे पादरी उठा ले गए किन्तु अकवर तमाशबीन बना रहा था। शाहजहाँ ने वीसकरोड रुपया सीमावर्ती युद्धों मे फूंका था। अलादीन एव शेरशाह की तरह घोड़े दागने की प्रथा भी चालू रखा ताकि उस घोडे का सवार सैनिक हो या मन्सवदार उसे घोडे वाला दाग जाहिर करता रहेगा कि यह सवार अकबर का सेवक सैनिक है।

पुर्तगाली चार सौ ईसाई बन्दियों को इस्लाम स्वीकारने बाध्य किया गया था। हल्दीघाटी युद्ध में आसफखां से बदायूनी ने पूछा कि मुगलिया हिन्दू और मेवाडी सैनिक मे क्या भेद है, इसके उत्तर मे आसफखां ने कहा कि तुम तीर चलाए जाओ किसी भी पक्ष का हिन्दू मरे हमारे लिये सवाब है।

ऐसी दोगली नीति अकवर की गुप्त स्वीकृति पर ही मुगलो मे प्रचलित थी ताकि हिन्दू संख्या घटती रहे।

धर्म समन्वय दीन-ए-इलाही भी अकबरी फरेब था, धोका था। हिन्दू धर्म में हस्तक्षेप था जो अकबर खुद के धर्म के प्रति निष्ठावान नही था वह हिन्दू एव ईसाई धर्म का क्या आदर करेगा। अकवर की माँ हमीदाबानो एव बुआ गुलवदन ने इस दीन ए इलाही नाम से धर्म मे परिवर्तन का विरोध की है।

अकबर निरकुश, स्वेच्छाचारी, चरित्रहीन, व्यभिचारी, नशेबाज, क्रूर, हिसक, अहंकारी, प्रवल महत्वाकांक्षी था।

काजी मुल्ला उलेमाओं की, धार्मिक हिदायतों तथा हदीस दवं कुरान के नियमों की उपेक्षा अकबर ने सदैव की है।

अकवर निरन्तर शराब पीता था। अकबर के लिए विशेष मादक द्रव्यों से शराव बनाई जाती थी। जिसे सबरस एवं कुकनार कहा जाता था।

अकबर कामान्धता के लिए मोमयाई तिला एवं पौष्टिक बटियो का आदी था। [दुग्ध पापी शिशु का एकान्त में पालन कर उच्चतम पौष्टिक आहार खिलाकर योवनोन्मत्त युबक से मोमयाई बनती है, सफल सुखकारी होती है, लेखक नें मुगलकालीन मोमयाई और उसके गुण देखा है।]

अकवर की पत्नियां चार से अधिक थीं, पहली पत्नी अकवर के चचा हिन्दाल की पुत्री रुकैया थी, दूसरी पत्नी अबदुल्ला की वेटी थी, भारमल की बेटी हरखा भी पत्नी थी, गुरू बहराम की बेवा को भी

हूरम में डाल रखा था, अब्दुलवासी की सुन्दर बीबी को अपहृत करवा लिया था, खानदेश के मिर्जा मुबारकशाह की बेटी, बीकानेर, जैसलमेर तथा जोधपुर की बेटी को, रानी दुर्गावती की बहन एवं वधू आदि को हरम में डाला है, इनके अलावा राजपूती अन्य लडकियो को भी पत्नी बनाया है। अबुल फजल के अनुसार ५,००० ओरतें अकबर के हरम में थीं। [जहाँ तहाँ से बन्दी बनाकर या अपहृत कर लाई हुई ५००० महिलाएं हरम में नही कैद मे रही होगी ।] याने अकबर पक्का वहशी-जिनाकार ऐयाश था ।

शुक्ल पक्षीय नौरोजा मीनाबजार अकबरी बलात्कार का साधन था । पराश्रित हर राज्य पर दबाव डालकर डोला प्राप्त करना नीचता का प्रमाण है। मन्दिर बनवाने तथा जीर्णोद्धार पर प्रतिबंध था । तीर्थयात्री टैक्स भी था । अकबर हिन्दू से साष्टाग दण्डवत करवाता था किन्तु मुशलमान को प्रणाम भी नही करने देता था। अकबर खुद का चरणधोवन केवल हिन्दुओ को बाटता था ।

अकबर का सही नाम बदरुद्दीन है किन्तु नाम बदलकर जलालुद्दीन अकबर रखा तथा अभिवादन में सलाम के बदले अल्लाहो अकबर कहना जारी किया। अकबर ईश्वर को कहा गया है किन्तु यहां जलालुद्दीन का आशय स्वय को ईश्वरीय अकबर कहलाने का दम्भ है। सही नाम बदरुद्दीन था जलालुद्दीन नही है, "अकबर" विशेषण है नाम नही। याने अल्लाह के बाद बादशाह अकबर को स्मरण करिये। दीन-ए-इलाही मुजब ईश्वर एक है अकबर पैगम्बर है। ख्वाजा मोहियुद्दीन का नाती शेख हुसेन हज से लौटा तब अकबर को अकबरी तरीके से झुककर फर्शी सलाम नही किया इसलिए उसे भक्खर भेज दिया क्योकि मदान्ध अकबर अपने सामने हर शख्स को नत मस्तक चाहता था। ऐसा दम्भी था ।

दीन-ए-इलाही मे अकबरी वचन था—मांस खाना बन्द करना चाहिए। किन्तु खुद अकबर जीवन भर माँस खाता रहा । सूर्य तथा

अग्नि पूजा करना चाहिए। बादशाह को सिजदा या साष्टांग प्रणाम करना चाहिए। अकवर द्वारा कुरान की उपेक्षा किये जाने के कुछ प्रमाण उपरोक्त हैं। अकबर रोजे और नमाज का पाबन्द नही था। दीने इलाही में नियम बनाया था कि वहेलिया, कसाई, मछुआरो के साथ भोजन नही करना क्यों कि ये लोग जीव हत्या करते है। किन्तु खुद अकबर ने लाखों जीव हत्या करवाया है।

उक्त बहेलिया आदि के साथ भोजन नही करना नियम बनाना यह प्रमाणित करता हैं कि अकबर के पहले भारतीयो में विशेष छुआछूत नही थी, छुआछूत का विष अकवर की देन है।

ई १५६८ मे चित्तौड़ विजय की खुशी में कछावाही राज्य आमेर मे अकबर ने मस्जिद बनवाया; किन्तु मन्दिर कही भी नही बनाया अर्थात समन्वय केवल नौटंकी था। अकबार द्वारा तिलक और माला धारण करना भी वहुरूपियापन था सत्यांश नही था।

उस युग मे धनवल एवं सैन्यवल मे अति सम्पन्न घोर महत्वाकांक्षी-अकबार ने क्रूर तानाशाही के दवाव में कुरान में कुछ हेर फेर करवाया हो तो आश्चर्य नही है। अकबार की माँ हमीदावानो एवं बुआ गुलबदन धार्मिक परिवर्तनो के विरूद्ध थी। इस्लाम और हिन्दू धर्म के समन्वय की आड़ मे हिन्दू और मुसलमान दोनों से अकबर ने खुद को पुजवाना चाहा था, यह दोनो धर्म पर अकवरी हमला था किन्तु सफल नही हो सका।

सीकरी,-आगरा के महलो में हरखा या जोधावाई द्वारा हवन पूजन के लिए कक्ष बने थे यह बात सत्य से परे है। अन्य हिन्दू बेगमें भी हवन पूजन कर सकती थी केवल हरखा या जोधावाई को ही हवन पूजन का अधिकार क्यों मिला क्योंकि यह सत्य नही है। वस्तुतः हरषा या जोधाबाई आगरा जिस कक्ष में रहती थी, उसके लघुकोष्ठ में स्वस्तिक बल्लरी भित्ति चित्र पाण्डव कालीन है, यह एकान्त में होने के कारण मुस्लिम आक्रमण से वचा रह गया। हरखा या जोधा

अन्यत्र जहां रही वहा ऐसे पूजागृह क्यों नही वने ? अतः स्पष्ट है कि स्वस्तिक वल्लरी, वज्र कुण्ड आदि हिन्दू चिन्ह मुस्लिम पूर्व के है, क्योंकि दिल्ली, आगरा, सीकरी, गोलकुण्डा औरंगाबाद आदि के महल किले आदि सभी मुस्लिम-मुगल पूर्व के है। उस युग के समस्त मकवरे और मज्जिद भी इसी तरह मुस्लिम पूर्वका निर्माण है जिनका वलपूर्वक इस्लामीकरण किया गया है। जेम्स. टॉड एवं डब्ल्यू. हंटर का शोधमत है कि भारतीय भवनो (शिल्प) को देख कर तुर्की यूनानियो ने अपने देश मे भवन वनवाए है।

अकवर ने देवस्थानो को आदर या सहायता दिया हो ऐसा कोई ठोस प्रमाण नही है। आगरा कक्ष मे स्वस्तिक चित्र रहना अकवरी हिन्दू प्रेम का प्रमाण नही है। अकवर ने स्वजनो से अपनो से सहिष्णुता नहीं रखा वह औरो से सहिष्णुता रखेगा यह कल्पना ही व्यर्थ है

अकवर क्रूर दानव था, मानवतावादी नही था। अकवर अनचाहे व्यक्ति को मरवा देता था, विष द्वारा मारने हेतु वैतनिक कर्मचारी (हत्यारा) नियुक्त था। अकवर की अनुपस्थिती मे किये गए आक्रमण, अत्याचार, समझौता आदि अकवर के निर्देशानुसार होते थे। रणथम्वोर के अभेद्य दुर्ग पर सैन्य विजय असम्भव मानकर सुरजन हाड़ा से खुद अकवर ने मजवूर हो नर्म समझौता किया था किन्तु कश्मीरी शासक युसुफखाँ मे भगवानदास ने समझौता कर लिया था। उस समझौते को ठुकराकर अकवर ने युसुफखां को वन्दी वनवालिया था। याने भगवानदास की इज्जत अकवर के मन मे नही थी केवल स्वार्थी गठजोड़ था।

अकवर ने अपने गुरु वहराम को मरवाकर उसकी वेवा को हरम में ले लिया था।

उड़ीसा राजमहल का शासक दाऊदखां पठान पराजित हुआ तव दाऊद का सिर मगर के जवड़ेनुमा औजार से तोड़ा गया था एवं वंदी सैनिक वड़ी संख्या में कत्ल किए गए थे।

बहादुरी के प्रदर्शन की आड़ में किसी वीर राजपूत से शेर की लड़ाई का आयोजन बडी प्रसन्नता से देखता था कि शेर युवक को मार खाएगा किन्तु उस भूखे चौपाए शेर को दो पाया राजपूत शेर पछाड़ देता था। इस तरह लड़वाए जाने वाले नरभक्षी शेर को भूखा भी रखा जाता था ताकि वह अत्यधिक हिंसक आक्रामक बने। अकबर की आरामगाह का द्वारपाल ऊंघने लगा था यह देख अकबर ने उसे छत पर से धरती पर फिकवा दिया था।

अकबर की आरामगाह मे गद्दी के निकट एक थका कर्मचारी दुर्भाग्यवश नीद मे पड़ा था, इस बदनसीब को भी महल की छत पर से जमीन पर सिर के बल पर फिकवाकर उदार-दयालु अकबर ने मरवा दिया था।

इसी तरह अकबर को पालने वाली माहं अंगा के पुत्र आदमखां को भी महल की छत पर से धरातल पर फिकवाया था किन्तु वह बेशर्म नहीं मरा तब उसे दुबारा छत पर से फिकवाकर मरवाया गया क्योकि आदम ने पराजित माण्डू राज्य से बन्दी बनाकर लाई गई औरतों मे से कुछ को खुद ही रख लिया था अकबर को नही दिया था, यही अपराध था।

खानजमां के साथी "मीराक" को लगातार पांच दिन हाथी से उछलवा २ कर मारा गया था।

सूरत के हमजबान की जबान काट दी गई थी।

मिर्जा मसूद हुसैन की पलकें सिलवा दिया था।

हुमायूं के भाई कामरान के पुत्र कासिम को ग्वालियर के किले मे कैद रख उसकी आखे फुड़वा दिया फिर उसका क़त्ल भी करवा दिया। (हुमायूं ने भी सगे भाई कामरान की आंखें फुड़वाकर नमक नीबू डलवाया था।)

माण्डू विजयबाद माण्डू के क़ाजी मुल्ला मुसलमान निर्दोष नागरिक भी मार दिए गए, प्रवाहित रक्त को देख कातिल खुश हुए थे।

जैन साधू हीर विजय सूरी के आग्रह पर गुजरात—काठियाबाड में जजिया टैक्स हटाने का फरमान अकबर ने जारी किया किन्तु टैक्स लागू रहा इसलिए दो वर्ष बाद ई० १५८७ में शान्ति सूरी, जजिया हटवाने अकवर से मिले, जजिया हटाने का फरमान फिर जारी कर दिया किन्तु फिर भी जजिया टैक्स नही हटा, लागू रहा। इससे यह स्पष्ट है कि अकबर कपटी- दोगला था। उसकी कथनी करनी में अन्तर था।

काश्मीरी शासक यूसुफ को एवं असीरगढ के मीरन बहादुर को अभय वचन देकर धोके से वन्दी बनाया है। यह दोगलेपन का ठोस प्रमाण है। शहजादा सलीम मानसिह को चालाक भेडिया कहता था किन्तु मानसिह अकबरी हुक्म का ताबेदार था चालाक भेड़िया वास्तव में अकवर ही था। हिन्दू और मुसलमान तथा इस्लाम और हिन्दू धर्म एवं अकवर के लिए जां निसार करने वाले शख्स के प्रति अकबर मे हार्दिक अपनत्व, निष्ठा, सहिष्णुता कृतज्ञता नही थी केवल स्वार्थ-मय लुलता थी।

पानीपत लूकरोई अहमदावाद कत्ल हुए व्यक्तियों के सिर की मीनार वनाकर खुश होने वाला अकवर। चित्तौड़, बीनागढ, असीरगढ, ब्रह्मणपुर में कत्लेआम करवाने वाला अकबर। परोख (एटा) में विरोधी नागरिक एक हजार जिन्दा जलवाने वाला अकवर। थानेश्वर मे न्याय मांगने आए हुए साधुओ को तलवारे दे कर परस्पर कटवाकर कुटिल मुस्कान वाला अकवर। युद्ध में घायल हुए हेमू का सिर काटने वाला एवं रेवाड़ी निकट माचेड़ी में हेमू के निर्दोष वृद्ध माता पिता को कत्ल करवाने वाला बहादुर अकबर अत्यन्त घोर कुटिल हिंसक तानाशाह था दयालु नही था। इसी नन्ही सी पुस्तिका में विस्तार असम्भव हैं किन्तु उपरोक्त संक्षिप्त वर्णन से स्पष्ट प्रमाणित है कि अकवर वास्तव में बुराइयो का जबरदस्त सैलाब था याने अकवर महान हीन था, उसकी हीनताओं को छुपाने उसकी

मिथ्या प्रशंसा करना सत्य की हत्या करना है अतः अकबर को—
Akbar the great was worst लिखना-कहना सर्वथा उचित है।

खूंरेज तानाशाह मगरूर अकबर के निजी एकाधिकार शासन को राष्ट्रीय संगठन कहना इतिहास का उपहास करना है।

अकबरी आदेश निर्विरोध पालन किया जाता था, उपेक्षा या विरोध करने वाले व्यक्ति बुरी तरह कुचले या जान से मार दिए जाते थे। हिन्दू मन्सबदार, सूबेदार नवरत्न आदि से दिखावटी सलाह लेता था, किन्तु उन पर अमल नही करता था या बहुत कम करता था, बहुचर्चित नवरत्नों की उसके दिल मे इज्जत नही थी। अकबर ने कहा हैं कि—शुक्र है मुझे विद्वान (योग्य) सलाहकार कोई नही मिला वर्ना लोग सलाहकार की तारीफ करते।

अकबर के वंशज ही शासक बने, उनके आदेश पालन करना अनिवार्य था, आक्रमण या समझौते से अकबर के अधीन हुए रजबाडे मुगल शासन के लगभग दास के समान हुए है। राष्ट्रीय सगठन की धूमिल कल्पना भी किसी ने नही की थी, अकबर का शासन क्रूर तानाशाही था। राष्ट्रीय संगठन रंचमात्र भी हर्गिज नही था। राष्ट्रीय संगठन आधुनिक लेखकों की हवाई उड़ान मात्र ही है।

अकबर सहिष्णु, दयालु, न्यायप्रिय, मानवतावादी नही था। महान क्रोधी, जिद्दी, मगरूर, क्रुर, निर्दयी तानाशाही था।

मुगल सेना में फरगना, काबुल, कंधार, बलखबुखारा की तरफ के निपट जाहिल, स्वभाव से ही आक्रामक, गंवार, खूखार आवारा सैनिक ही अधिक रहते थे, भारतीय सैनिक केवल राजपूतों के साथ थे।

उस समय बिखरे हुए एवं शक्ति से क्षीण राजागण भौतिक सुख वैभव के निपट लोभ में एवं अकबरी क्रूरताओं से भय ग्रस्त होकर ही अकबर की शरण में दौड़े है।

मुगलिया क्रूरताओं के भय से आतंकित जनता ने अकबर का कही भी स्वागत नही किया है । हिन्दू-मुस्लिम का समन्वयकारी, महान, भारत हितैषी उदार कहलाने वाले अकबर महान को दौसा प्रयाग वाराणसी पहुँचने पर स्थानीय नागरिक एक भी नही दिखा, घर के द्वार खिडकियां वन्द कर नागरिक जहां तहा छुप गए थे। यह अकवरी क्रूरता का स्पष्ट प्रमाण है। जवकि हिन्दू राजाओ के प्रवास मार्ग में सर्वत्र जनता उस राजा की जय जयकार करती एवं अनुग्रह पाती थी। पराजित राज्य की प्रजा अभयदान पाती थी। किन्तु अकवरी प्रवास-रूपी, ग्राम एवं प्रजा को रौंदता कुचलता आगजनी लूट अपहरण हत्याएँ करता, पराजित राज्य की जनता को कत्ले आम या वन्दी वनाकर गुलाम वनाता या वेचा करता था।

अकवर की नीति हिन्दू-मुस्लिम से समान व्यवहार या दोनों के समन्वय या राष्ट्रीय सगठन की कर ई नही थी। यदि रही होती तो अकवरी प्रवास में मार्ग की प्रजा जय जयकार से अकवर का स्वागत करती। दौसा, प्रयाग, वाराणसी प्रताप का राज्य नही था कि अकवर का स्वागत करने के लिए प्रजा को प्रताप ने मना कर दिया हो।

उक्त प्रवास मे अकबर को एक भी नागरिक नही मिला इससे पाठक स्वयं निर्णय करलें कि अकबर चगेज-तैमूर से क्रूरता मे कम नही था। यात्रासमय अजमेर के निकट पुष्कर मे श्णान, प्रयाग मे त्रिवेणी श्णान वाराणसी मे गंगा श्णान एवं बावा विश्वनाथ के दर्शन अकवर ने किया है ऐसा उल्लेख अबुलफजल, वदायूनी, निजामुद्दीन अहमद, वा अन्य लेखक वे कही नही किया है।

अकवर ने मस्जिद वनवाया तथा मन्दिर नष्ट-भ्रष्ट करवाया ऐसे प्रमाण अवश्य है।

क्या यही राष्ट्रीय सुसंगठन एवं हिन्दू-मुस्लिम समन्वय का अनोखा आदर्श प्रयास था, कदापि नही। अत. देश धर्म और मानवता

द्रोही अकबर की घृणित नीतियों का विरोधी प्रताप था किन्तु ऐसे प्रताप को हीन एवं राष्ट्र द्रोही भी लिखा गया है। यथा—

पूर्व आधुनिक राजस्थान के पृष्ठ ७८ पर लिखा है—पाठक ध्यान दें-

"भारतीय स्वाधीनता के उपासको तथा अदम्य साहसी देशभक्तो ने, भारतीय एकता और राष्ट्रीय सुसंगठन का भरसक विरोध कर" छोटे से मेवाड की स्वाधीनता के लिये लड़नेवाले प्रताप को अपना आदर्श स्वीकारा।"

अर्थात अकबर के भारतीय एकता एवं राष्ट्रीय सुसंगठन का विरोध करने वाला प्रताप राष्ट्रद्रोही हुआ, किन्तु भारतीय एकता एवं राष्ट्रिय संगठन मुगल शासन में कभी नहीं हुआ इनकी कल्पना ही कभी किसी मुगल शासक ने नही की। अकबर के मुस्लिम लेखको ने भी अकबर द्वारा राष्ट्रीय संगठन करने का विचार मात्र का भी उल्लेख कही नही किया है।

महाराणा प्रताप पर लगाए गये समस्त मिथ्या लांच्छनो पर विवेकशील पाठक सत्यान्वेषण करले।

मूर्धन्य इतिहासकारों ने लिखा है—

(१) प्रताप के पूर्वजों से अन्य राजाओ के सुखद अनुभव नही थे।

(२) मानसिह के परिवारवालो का मेवाड़वालों से सीमा विवाद पर कुल बैर था।

(३) मुगलो से राजपूतो ने वैवाहिक संबध किए इसलिये उनसे प्रताप को घृणा थी।

"उक्त तीनों ही कथन अत्यंत क्षीणकाय है।"

मण्डोर के राव चूण्डाराठोड़ की पुत्री "हंसा" मेवाड़ के वयोवृद्ध महाराणा लाखा से विवाही, यह हंसा रणमल की बहन एवं जोधपुर बसाने वाले राव जोधा की बुआ थी।

राव जोधा की पुत्री श्रृंगारदेवी का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल के साथ हुआ। जोधा के पिता रणमल की हत्या कुम्भा के कारण तथा

कुम्भा के ताऊ चूण्डा का निष्कासन एवं ताऊ रघुदेव की हत्या रणमल के कारण हुई किन्तु उक्त वैवाहिक सम्बन्धो से कटुता मिठास बन गई।

राव जोधा के प्रपौत्र राव गांगा की बहन धनसी का विवाह रायमल के पुत्र एव प्रताप के दादा राणा सांगा के साथ हुआ था। इसका पुत्र रतनसिंह मेवाड़ का शासक बना, किन्तु शिकार समय परस्पर घात प्रत्याघात में बून्दी के सूरजमल हाड़ा के हाथ से मारा गया।

बून्दी के नर्मद हाड़ा की पुत्री सूरजमल की बहन कर्णवती (कर्मवती) भी राणा सागा की पत्नी थी इसी के पुत्र राणा विक्रमसिंह तथा राणा उदयसिंह थे। ई० १५३५ मे हुमायूं को राखी भेजने वाली एव जौहर मे प्रधान यही थी।

राणा सांगा की पुत्री लाजकुंवर जैसलमेर के भाटी रावल लूणकरण को विवाही थी। इसी की पुत्री प्रसिद्ध भटियाणी उमादे जोधपुर के राव मालदेव को विवाही थी। यह विवाह के समय से ही पति से विरक्त हो गई थी। आजीवन सन्यस्त रही तथा सती हुई थी।

राणा सांगा की पुत्री आमेर के कछवा राजा हरिभक्त पृथ्वीराज को विवाही गई थी। यह पृथ्वीराज खानवा के युद्ध मे सागा का सहयोगी था। घायल सागा को वसपा ग्राम भिजवाते समय इसीका सहयोग था।

चन्द्रसेन राठोड़ की पत्नी चन्दा सीसोदण थी।

चन्द्रसेन राठोड़ की पुत्री कर्मवती राणा उदयसिंह को विवाही थी।

बीकानेरी कल्याणमल द्वारा अकबर को डोला दिये जाने के बाद कल्याण का पुत्र रायसिंह अकबरी सेवा मे अटक मे सफल हुआ तथा अहमदाबाद मे अकबरी आक्रमण के समय अहमदशाह के हाथी पर रायसिंह ने तलवार का ऐसा वार किया कि हाथी की सूंड, बड़े दोनो दाँत और निचला जबडा कटकर गिर पडे, हाथी लुढक पडा, हौदे से कूदकर अहमदशाह भागा किन्तु रायसिंह ने शाह को दबोच कर बन्दी

बना लिया था। इस वीरता पर प्रसन्न हो राणा उदयसिंह ने अपनी पुत्री जसवांदे रायसिंह को विवाह दिया था "पग पग पैड़ी दीना नाग" पंक्ति इसी विवाह समय की है। वीकानेर स्थापक कांधल का साढ़ू ढीगसर का राजू खां नवाब था।

आमेरी मानसिंह कछवा के पोते महासिंह को राणा उदयसिंह की पोती (प्रताप की भतीजी) दयमन्ती विवाही गई इसका पुत्र ई० १६११ मे मिर्जा राजा जयसिंह हुआ है।

ई० १८०० के आरम्भ में महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णा का रिश्ता जोधपुर के राजा भीमसिंह से तय हुआ था किन्तु भीम की मृत्यु असमय हो जाने से कृष्णा का रिश्ता जयपुर के जगजीत से करना तय हुआ इसे जोधपुरी राजा मानसिंह अपना अपमान समझकर युद्ध करने आमादा हुआ, मेवाड़ धनहीन होने से सैन्यवल नही के समान था।

जोधपुर के राजा मानसिंह राठौड के मिथ्या अहकारी दबाव के कारण ई० १८१० मे कुमारी कृष्णा को विषपान करवाकर विवाद समाप्त करना पड़ा था।

महाराणा प्रताप के पहले और बाद में भी राजस्थानी रजवाड़ो में विवाह सम्बन्ध परस्पर हुए हैं तथा सीमा के लिये भी उल्लेखनीय संग्राम सीसोदियो मे कछवा राठोड आदि का नहीं हुआ है, छुटमुट लड़ाइयो का महत्व नही था अस्तु प्रताप के पूर्वजो से अन्य रजवाडों के सुखद अनुभव नही थे या सीमा विवाद के कारण कुल बैर था यह दोनो ही बात मिथ्या है।

वस्तुतः राणा सांगा के बाद मेवाड़ी शासक क्रमशः रतनसिंह, विक्रम, वनवीर एवं उदयसिह के समय (ई० १५६८) तक मेवाड निरन्तर बलहीन होता गया। ई० १५३५ एव १५६८ में चित्तौड़ी जौहर एवं कत्लेआम हुआ इसलिये धन-जन से क्षीण मेवाड़ की

उपेक्षा करके विवेकहीन वैभव लोभी राजागण क्रूर आतंकवादी अकबर की शरण मे दौडे है।

यवनों से कछवा राठोड़ आदि राजाओ ने विवाह सम्बन्ध किये इसलिए इनसे प्रताप को घृणा थी यह तर्क भी मृत है।

यवन राजपूत विवाह पहले भी हुए हैं—

जोधपुर के संस्थापक रावजोधा राठोड़ की पत्नी भटियाणी पूरां की पुत्री भागवती का विवाह नागोरी नवाव सलैखां (सरखेल खां) से हुआ था। साला कटारी के दस्तूर में नवाब ने साले करमसी को खींवसर एव रायपाल को आसोप गाँव दिया था।

राठोड़ गांगा के चाचा शेखर ने भी सरखेलखाँ को पुत्री दिया है।

उक्त संवन्धो के कारण कुम्भा का पुत्र रायमल एवं सलेखां, तथा राणा सांगा एवं सलैखां साढू भाई हुए।

मारवाड़ के राठोड़ मालदेव की पुत्री कनकावती गुजरात के मुहम्मदशाह को तथा दूसरी पुत्री रत्नावती हाजीखां पठान को दिया था।

आसकरण से आमेर का राज्य छीनने में सहायता पाने हेतु कछावा भारमल ने अपनी पुत्री किसनावती हाजीखां पठान को ई० १५५६ के पहले ही दिया है।

माण्डू के होशंगशाह के पुत्र उमरखां को सैनिक सहयोग राणा कुम्भा ने दिया है। नागौर के शम्सखां को भी राणा कुम्भा ने ही सैन्य सहायता दिया है।

ई० १५२५ में राठोड़ गांगा ने गाजीखां को सैन्य सहयोग देकर जालोर का राज्य दिलाया है।

ई० १५४१ मे मालदेव राठोड़ ने हुमायूं को शेरशाह के विरुद्ध २०००० सैनिक देना चाहा किन्तु हुमायु नही ले सका।

एक वर्ष वाद ई० १५४२ मे हुमायू सहायता पाने मारवाड़ आया किन्तु अब मालदेव सैन्य सहयोग नही दे सका फिर भी मालदेव ने

एक सुसज्जित घोड़ा तरवार पोशाख एवं अशर्फियों से लदा एक ऊंट हुमायूं को सादर भेंट मे दिया है। बीकानेर भी दिया था किन्तु हुमायूं रुकने का साहस नही कर सका। शेरशाह से खदेड़ा गया हुमायूं भटकता रहा। इसकी गर्भिणी पत्नी पर रहम करके सिन्ध में अमरकोट के सोढ़ा राजपूत राजा ने हुमायूं को आश्रय दिया, यही १५४२ मे शीघ्र ही अकबर का जन्म हुआ।

हाजीखां पठान की सहायता करने हेतु महाराजा उदयसिंह एवं राठोड़ राव मालदेव परस्पर दो बार युद्ध किये है।

माण्डू नागौर, जालोर, सिर्वाना, सांचोर, गुजरात, गागरोन, अजमेर, अल्वर टोंक, मन्दसोर, वेदनोर, माण्डल आदि राज्यों पर मुस्लिम शासन हो गया था।

अन्य राज्यो से मेवाड के वैवाहिक सम्बन्ध तथा राजपूत मुस्लिम वैवाहिक सम्वन्ध के उपरोक्त विवरणो से ज्ञात होता है कि इन रजवाडों में परस्पर शस्त्र संघर्ष एवं सहयोग होता रहा है। इनमे स्थायी कटुता कभी नही रही। अतः भारमल ने अकबर को पुत्री दिया, इसलिए मानसिंह से प्रताप घृणा करता था, यह तर्क अति दुर्बल है।

दूत- मानसिंह के साथ महाराणा प्रताप ने भोजन नही किया इसका मुख्य कारण दोनों के प्रद मे अत्यन्त विषमता ही है। वैवाहिक कारण मुख्य नही है। मेवाड़ी सरदारो ने कटु शब्दों मे मानसिंह पर तीखा व्यंग सोद्देश्य किया था कि मानसिंह में स्वाभिमान जागृत हो ताकि मानसिंह विदेशी विधर्मी अकवर का साथ छोड़ अपनों मे लौट सके। राज्यसत्ता के भौतिक लोभवश मुगलराजपूत विवाह अकबरी षड़यंत्र के दबाव मे किए गए तथा राजपूती शक्ति एवं सम्मान घटाते हुए राजपूतों द्वारा विदेशी विधर्मी अकबरी शासन को स्थिरता सम्पन्नता एवं विस्तृत बनाने मे समर्पित होने वाली नीति का विरोधी प्रताप था। किसी धर्म या जाति का विरोधी प्रताप नही था।

अकबर एवं इसके वंशजों की राजपूतों ने विवश हो राजलोभ में लड़कियां दिए है, सोत्साह प्रसन्नचित्त से नही दिए। ये मुगल राजपूत विवाह, हिन्दू मुस्लिम मे समन्वय के लिए अकबर ने आरम्भ किया था यह कथन मूर्खतापूर्ण है जनता को गुमराह करना है।

हिन्दू-मुस्लिम याने मुगल राजपूत पारिवारिक सम्बन्ध बनाने हेतु अकबर ने ये मुगल-राजपूत वैवाहिक रिश्ते नही किया था क्योकि समस्त विवाह सम्बन्ध आदि से अन्त तक केवल एक पक्षीय ही हुए हैं। एक भी मुगल कन्या राजपूत को नही दी गई। देने की कल्पना भी नही की गई।

राजपूत लडकियों के डोले ही दिए गए हैं। विवाह सही रूप मे निकाह सलीम से भगवानदास की पुत्री मानबाई का हुआ है। किन्तु यह विवाह कछवा राज्य आमेर मे नही हुआ। लाहौर में हुआ था १५८५ फरवरी में। वरवधू पर रत्न निछावर किये गए १०० हाथी दास-दासी, सोना-चांदी के वर्तन आदि मूल्यवान दहेज दिया गया था। दो करोड का मेहर तय हुआ। उच्च बरातियों को अर्बी तुर्की ऐराकी घोडे रत्नजडित सुवर्णमय जीन सहित दिए गए। इससे यह प्रमाणित होता है कि ई० १५६२ में अकबर शरण गया हुआ कछवा राज्य भौतिक साधन सम्पन्न केवल २२ वर्ष मे हो गया तथा अधिकांश सम्पदा भारतीय राज्यो से लूटी हुई है।

मुगलो से सभी राजपूत लडकियो के विवाह लड़की के पैतृक नगर से बाहर ही कही हुआ है। ये डोले जीवित मासूम कन्याओ के जनाजे की तरह थे इसलिए प्रजा और समाज के विरोध का भय पितृ पक्ष को होता रहा होगा।

"इन विवाहो के लिए अकबर ने दबाव डाला हो इसका प्रमाण अन्यत्र नहीं है, केवल चारण भाटों के ग्रंथ में ही है। इस तरह झूठ लिखकर सत्य को छुपाना, सड़ी लाश पर मखमली चादर ढांकना है। किन्तु दुर्गन्ध तो उभरती है। अत. विवाह के लिए अकबरी दबाव

डाला जाता था यह प्रामाणिक सत्य है। जो प्रमाण हैं वे सशक्त है अकाट्य है।

(१) रणथम्बोर के राव सुरजन हाडा से अकबरी सन्धि मे शर्त है कि हाडाओ सें "डोला" नहीं मागा जाएगा।

(२) कांगडा के विधीचन्द्र ने डोला देने की शर्त पूरी नही किया तब इसके महल के द्वार पर मस्जिद बनाई गई एवं देवी मन्दिर में दो सौ गउ काटी गईं जबकि पांच मन मुवर्ण एवं बहुमूल्य वस्तुएँ. अकबर को भेंट कर चुका था।

(३) राणा प्रताप के समकालीन जैन विद्वान द्वारा वि० १६४६ ई. १५८९ मे रचित ग्रंथ जगदगुरु का यह श्लोक स्पष्ट प्रमाण है कि—केचिद् हिन्दू नृपा बल श्रवणस्तस्य स्व पुत्री गणं गाढाभ्यर्थन या ददत्य· 'विकला' राज्यं निज रक्षितुम्। उपरोक्त पंक्तियो का लेखक किसी भी रजवाड़े का चारण, भाट, पुरोहित, आश्रित मेवक या कृपा प्राप्त व्यक्ति नही है। ये है प्रसिद्ध जैन कवि पद्मसागरजी महाराज।

(४) इसी प्रकार चित्तौड़के तीसरे जौहर ई० १५६८ के पचास वर्ष बाद याने प्रताप के युग मे ही लिखा गया ग्रन्थ "हीर विजय सूरी रास" के लेखक जैन श्रावक कवि ऋषभदास ने उवत ग्रन्थ में प्रसंगवश चित्तौड के अन्तिम जौहर समय अकबर के सन्धि दूत एव राठौड जयमल मेंड़तिया का सम्वाद लिखा है क्योकि उस युग मे उन्हे वे बाते महत्व की लगी थी।

कवि ऋषभदास भी किसी कें चारण भाट दास नही है। इसलिए इनका लेख भी पूर्ण सत्य है विश्वस्त है। संवाद के अश की दो पक्ति

मुगल दूत—दीजे धिया निज खिदमती घणी। जयमल का उत्तर—धिय आपे जुव्धु धिक्कार।

उपरोक्त चार प्रमाणों पर मे स्पष्ट होता है कि अकवर ने दबाव देकर डोले मांगे। इन प्रमाणो पर सन्देह करना इन्हे मित्थ्या कहना ज्ञानान्धता ही होगी। ई० १५५६ मे दिल्ली मे विगड़ैल हाथी से अक-

वर की प्राण रक्षा भारमल ने किया एवं ई० १५५८ में अजमेर पर मुगल आक्रमण समय सहयोग देनेवाले भारमल को अहसान फरामोश अकवर ने भारमल की पुत्री का डोला पाने के वाद ही अनधिकारी भारमल को भतीजे सूजा का अधिकार छीनकर आमेर का राज्य हथियाने मे पूर्ण सहायता दिया है।

(५) अजमेर के अकवरी सूवेदार मिर्जा शरफुद्दीन द्वारा आमेर के अधिकारी "सूजा" की मदद के वहाने से अनधिकार कब्जा जमाए वैठे भारमल पर सैन्य दवाव डलवाकर चगताई (दलाल) के माध्यम मे भारमल से डोला लेने वाद ही अकबर ने भारमल को आमेर पर अधिकारी वनने में अनैतिक सहयोग दिया है। अर्थात अहसान फरामोश अकबर मे नैतिकता नही थी अन्यथा डोला नही लेता बल्कि १५५६ में हाथी से अकवरी प्राणरक्षा जो भारमल ने की थी उसके वदले मे भारमल को आमेर का राज्य दिलवा सकता था। किन्तु अकवर ने डोला लिया है अर्थात डोला प्राप्त करने अकवरी दवाव डाला जाता था। अकबर के दवाव मे दवकर ही राजलोभी भारमल ने अकवर को डोला दिया है यह सवल स्पष्ट प्रमाण है।

उपरोक्त पांच प्रमाण अत्यन्त सशक्त और सुस्पष्ट है कि अकवर ने पूर्ण दवाव डालकर ही डोले हासिल किया है। तथा भौतिक सुख वैभव राजैश्वर्य के उत्कट लोभवश क्षात्र गरिमा को गर्त में धकेल कर ही अनेक राजपुत्रो ने अकवर को डोले दिए है।

राजपूत और मुगल दोनो पक्ष मे सामाजिक समन्वय सद्भाव की आंशिक कल्पना भी कभी नही हुई। इन मुगल राजपूत वैवाहिक नापाक रिश्तो को किन्ही लेखाचारियो ने उचित सिद्ध करने के लिए समन्वय का सुन्दर नाम देकर सत्य पर कुठाराघात किया है, जो समाज और लेखनी के लिए कलंक है। तथाकथित समन्यय का शव परीक्षण देखिए—

(अ) मुगलों को विवाही गई राजपूत लड़कियों के हिन्दू नाम के बदले मुस्लिम नाम रखे गए।

(१) ई० १५६२ में भारमल की पुत्री हरषा अकबर को दी गई मरियंजमानी नाम रखा गया।

(२) अकबर को दी गई भारमल की दूसरी लड़की का नाम जीयारानी था।

(३) ई० १५७० मे बीकानेरी कल्याणमल ने भाई कान्हा की पुत्री का डोला अकवर को दिया।

(४) जेसलमेर के हरराय की पुत्री नाथीबाई का डोला अकबर के लिए भगवानदास लाया था।

(५) डूंगरपुर के रावल आसकरण की पुत्री का डोला अकबर ने लिया।

(६) आमेर के पहाड़सिंह की बहन का डोला अकबर ने लिया।

(७) भगवानदास की पुत्री मानबाई का विवाह सलीम के साथ लाहौर में हुआ। इसका पुत्र खुशरो था। अपमानित जीवन से दुखी हो मानबाई ने जहर खाकर आत्महत्या करली या जहांगीर ने हत्या करवा दिया।

(८) मानसिंह की पौत्री जगतसिंह की पुत्री भी सलीम को दे दी गई।

(९) मोटा राजा उदयसिंह राठौड़ की पुत्री भानमती उपनाम जोधाबाई सलीम को दी गई इसका पुत्र खुर्रम था जो शाहजहा कहलाया।

(१०) जैसलमेर-के कल्याणमल की भतीजी का डोला सलीम ने लिया।

(११) जहांगीर पुत्र परवेज जोधपुर के सूरसिंह की पुत्री मनभावती से विवाहा था।

(१२) गढा मण्डला की रानी दुर्गावती की बहन कमलावती अकबर के हरम में बलपूर्वक डाली गई।

(१३) रानी दुर्गावती की पुत्रवधू पूरनगढ की राजपुत्री भी अकवर के हरम मे डाली गई।

(१४) डूंगर पुर के शासक अलीराय की पुत्री का डोला सलीम को दिया।

(१५) बीकानेर के रायसिह की पुत्री सलीम को दी गई।

(१६) औरंग पुत्र आजम जैपुर विवाहा था। (१७) सुलेमान शिकोह भी मिर्जा जयसिंह की भांजी से विवाहा।

(१८) जोधपुर राठौड अजीतसिंह की पुत्री इंद्रकुंवर फर्रुखसियर को विवाही। जोधपुर राज्य ने छह पीढी तक मुगल राज को बेटी दी है। इन राजपूत बेगमो का अपने पति एवं पुत्र पर राजनैतिक या धार्मिक प्रभाव नही था। डॉ मनोहर शर्मा की पंक्ति सार्थक है—

आ रजकुल मैं जलम ले गई हरम मैं आय,
गंगा ज्यूं खारी भई सागर भाय समाय।

उपरोक्त कुछ रिश्ते उदाहरण के लिये पर्याप्त है। ऐसे डोला-झपट रिश्ते और भी हुए हैं इन रिश्तो मे सौमनस्य नही था। मुगलिया आतंक से राजपूती विवश सत्ता लोभ के रिश्ते हुए थे। किसी भी राजपूत ने मुगलिया रिश्ता सहर्ष सोत्साह नही किया। किसी भी मुगली लेखक ने इन रिश्तो को समन्वय की सज्ञा नही दी है। आधुनिक लेखको की काल्पनिक उडान ही समन्वयी वायुमण्डल है। अकवरी आतक मे इस प्रकार विवाह नीति की थोथी सराहना में समन्वय वाद का फूटा ढोल पीटनेवाले कलम बहादुर अन्धानुसंधानी बतलाएं कि अकवर मे अन्तिम वहादुरशाह जफर तक किसी भी मुगल शासक ने एक भी मुगल कन्या हिन्दू राजकुमार को विवाही है क्या ? अकबर ने ऐसे विचार कभी व्यक्त किया है क्या ? एक ही स्पष्ट उत्तर है कि एक भी मुगल कन्या राजपूत को नही दी गई देने की कल्पना तक नही हुई। हिन्दू और मुसलमा मे सौहार्द्य उत्पन्न करने हेतु मुगल कन्या का राजपूत से एक भी वैवाहिक सम्वन्ध अकवर ने नही किया। यह

स्पष्ट प्रमाणित है कि ये रिश्ते केवल एक पक्षीय थे। समन्वय के लिये कतई नही थे। अकबरी क्रूर आतंक एवं राजपूतों में राजलोभ ही एक मात्र कारण इन रिश्तो के होने में था। समन्वय तो रंचमात्र भी नही था। क्योकि मुगल घराने में लडकियां थी किन्तु राजपूत को नही दी गई। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है—

[१] हुमायूं की बहन 'गुलबदन' अकबर की बूआ कुंआरी हो बड़ी उमर मे गुजरी।

[२] अकबर की पुत्री 'शुकरुन्निसा' ई० १५९४ मे बदक्शा से आए हुए अकबर के चचेरे भाई शाह हरुख को विवाही गई।

[३] अकबर की पुत्री 'खान सुल्ताना' (शाहजाद) बड़ी आयु में कुंवारी ही गुजरी।

[४] अकबर की पुत्री 'आरामबानो' भी बड़ी उम्र मे कुंआरी ही गुजरी।

[५] जहांगीर (सलीम) की पुत्री खुसरो की बहन भगवानदास कछवा की नातिन 'सुल्तुन्निसा' बानो साठ वर्ष की आयु मे कुंआरी ही गुजरी।

[६] मुमताज के मकबरे की आड़ मे आगरा के 'चन्द्र मौलि शिव मन्दिर' को ताजमहल बनाने वाले झूटे आशिक शाहजहां की पुत्री 'जहानआरा' यूं तो कुंआरी ही मरी लेकिन यह पिता शाहजहा की रखैल थी।

स्मरण रहे कि दिल्ली आगरा सीकरी तथा अन्य सभी मुगल पूर्व के किले महल भवन आदि का मुगलीकरण ही अकबर ने किया है। उनका नवनिर्माता अकबर कतई नहीं था। कुमाऊं गढ़वाल की एक पाण्डुलिपि में लिखा है कि ई० १०६० वि० १११७ में राजा अनगपाल ने लालकोट (लालकिला) बनवाया।

कुतुबुद्दीन ऐबक एवं अल्तमश दिल्ली मे लालकिले मे ठहरे थे। किन्तु लाल किले के निर्माण का श्रेय अकबर को देते है, यह मिथ्या

लेखन भ्रष्टता ही है । भारतीय राजागण झोंपड़ी में नही रहे, महलों मे रहते थे । सुवर्ण रत्न जड़ित विशाल काय भवनों का वर्णन पुराणो में पढिये ।

मुल्ला अब्दुल हमीद लाहोरी ने बादशाह नामा के पृ० ४०३ पर लिखा है कि जयसिह के महल में मुमताज को दफनाया गया है । अर्थात यह ताजमहल हिन्दू भवन है । ताजमहल से चार मील दूरी पर वटेश्वर नामक स्थान से प्राप्त शिलालेख लखनऊ संग्रहालय मे सुरक्षित है, इसमे ३४ श्लोक है । श्लोक २६ की पंक्ति यूं है—कारयच्च स्फटिकावदा तमसाविदं मन्दिरमिन्दुमौली तथा श्लोक २५—प्रासादो वैष्णव स्तेन इन्दुमौलि—मन्दिर । अर्थात स्फटिक जैसे धवल पाषाण (संगमरवर) से निर्मित इन्दुमौलि (ताजमहल) शिव मन्दिर है तथा दूसरा विष्णु मन्दिर है जो अब एतमादुद्दौला का मकबरा कहलाता है । ऐसे है मुगलिया निर्माण कार्य । इन्दुमौलि याने चन्द्रमौलि—शशिशेखर नामक शिव मन्दिर को मकवरा वनाने वाले शाहजहां को शिवोपासक कहना चण्डूखाने की शुद्ध गप्प ही है ।

बिहार में मानभूम एवं सिंह भूम की स्थापना बिहार में सूबेदारी के समय कछवा मानसिंह ने की है । इसी प्रकार विदर्भ के ऐतिहासिक नगर अचलपुर (एलिचपुर) की प्राचीर मुगल अकबर के सूबेदार आमेरी कछवा मानसिंह द्वारा ई० १६०७ से निर्माण आरम्भकर कछवाह जयसिंह के समय ई० १६६७ तक पूर्ण हुई होगी ।

यह परकोट (प्राचीर) हैदराबादी निजाम के सूबेदार ने नही वनाया । क्योंकि नगर प्राचीर के मुख्य चारों द्वार हिन्दू दिशात्मक पूर्वादि से हैं । कमल, कलिका, कमल पुष्प तथा राजस्थान का प्रिय प्रतीक पक्षी "मयूर" इन द्वारों पर उत्कीर्ण हैं । शार्दूल जैसी आकृति भी है । खण्डित महल के सभा भवन मे शासकीय आसन दिल्ली, आगरा किलो के राज्यासन जैसा नक्काशीदार झरोखा है । इस पर बैठने वाले का मुंह पूर्व की ओर तथा पीठ पश्चिम याने कावा की

ओर रहती है। मुस्लिम धर्मानुसार पश्चिम की ओर मुंह होना था। यही लम्बकाय हौद फव्वारा युत है। आमेर के शीश महल की तरह यहां शीश महल भी था। महल से दो सौ फुट के करीब उत्तरमुखी सीताराम मन्दिर धरातल से १५–२० फुट ऊंचा है। जो महल के झरोके से दर्शनार्थ बना प्रतीक होता है। मन्दिर के समक्ष ही फव्वारा युत बड़ा हौद है। यहां यंत्र के बगैर नल योजना १९७० तक प्रवाहित रही है।

पूर्वीय द्वार पर दक्षिण मुखी हनुमान मन्दिर है। दक्षिण दिशा मे हनुमान मन्दिर सवाई जयसिंह का बनवाया हुआ है, पुजारी को भूवृत्ति मिली है। इस मुहल्ले को जयसिंह पुरा कहते है। नगर में ब्राह्मणवाडी, जीवन पुरा, हीरा पुरा, बारी पुरा, मालीबेस आदि हिन्दू नाम के मुहल्ले पूर्वकाल से है। अमीनाथ, समीनाथ का शिवालय एवं तापी भारती का आश्रम नदी तटपर शोभित है। रहमान शाह की दरगाह मे विट्ठलपन्त की बारादरी है, यह शोध का स्थान है। फमनिपुरा मे फूटी मजिद राम मन्दिर था, कलश पर कमलाकृति शिल्पित है।

इस मजिद मे दैव कोप से टूट-फूट अवश्य होती है। अश्रफपुरा की जरी मजिद भी देवालय है। हिन्दू भक्त समूह बाजा गाजा डिंडी के साथ गुरु पौर्णिमा को इस मजिद में प्रवेश कर भजन, कीर्तन, पूजन, कर उत्सव मनाते है। किले की मजिद नौ दुर्गा मन्दिर दो मंजिला है, छत पर दिलवाड़ा की तरह चतुर्थांश कुम्भाकार नौ आकृति है, प्रधान पीठ विशेष है। इस मजिद पर मीनार अंशमात्र भी नही है। तथा प्रवेश द्वार के ऊपर ही मंगल वादन कक्ष है। मजिद की सीमा में प्रसिद्ध चक्रधर स्वामी का आसन नियमित पूजित है। इसी के निकट से घुडसवार सुरंगमार्ग चिकलदरा गया है। ऐसा ही सुरंगमार्ग अमरावती अम्बा मन्दिर में है, तथा झासी किले मे भी शिवालय की ओर सुरंगमार्ग है। ये गुप्त मार्ग युद्ध समय उपयोगी होते थे। नगर

की पश्चिमी सीमा पर हौज कटोरा नामक जल महल अष्ट कोणीय पाँच मंजिला था, तालाव में कमल रहते थे। महल एवं तालाव भग्नावस्था मे हैं। जलमहल मे रुचि राजस्थानियो मे थी; इसके अन्यत्र प्रमाण लिखे है। महाकवि भारवी का जन्म स्थान अचलपुर है।

घर वाहर निरन्तर सघर्षरत अकवर, जहांगीर, शाहजहां, औरगजेव आदि सभी को नव निर्माण के लिये समय ही नही था प्राचीन हिन्दू स्थापत्य का वाह्यावरण परिवर्तित कर मुगलीकरण ही किये हैं। नवनिर्माण नही किये।

शाहजहां का दरवारी नागोर का अमरसिंह राठौड़ शाहजहा के प्रिय साले सलावत खाँ की अभद्रता पर क्रुद्ध हो आगरा दुर्ग मे शाहजहा की सभा मे अश्वारूढ ही पहुँचकर सलावत पर ऐसी कटार फेका कि कटार के प्रहार से सभा स्थल के दृढ खम्वे का वालिशभर प्लास्टर उखड़ गया था। शाहजहां और सलावत खां जनाने मे जाकर छुपे थे। घुडसवार अमरसिंह शाही रक्षको से खुद का बचाव करते हुये किले की दीवार फाद अपने महल मे वापस पहुँच गया था। इसे बाद मे धोके से मारा गया था। सभास्थल के उखड़े हुए प्लास्टर वाले खम्वे की मरम्मत उन्ही दिनो शाही कारीगरो ने की होगी किन्तु प्लास्टर समरूप नही बन सका, वह वदरंग दाग आज भी स्पष्ट दिखता है। मुगलिया कारीगर वह भवन बनाए होते तो वह प्लास्टर समरूप वना सकते थे। यह वालिश भर का वदरंग दाग सच्चाई का सवूत है कि मुगलो द्वारा किये गये समस्त निर्माणवाली बातें पूर्ण मित्थ्या है। इसी किले में एक दालान के सायेवान की पट्टी पर तोते–मिट्ठू उत्कीर्ण है, यह भी इस्लामी नियम विरुद्ध है। यही एक कक्ष में स्वस्तिक शृंखला भित्ति चित्र है।

जनाना हमाम के कमरे की तीन ओर की दीवार पर थालनुमा घेरे वने है। इनके मध्य थाप देने पर मृदग की ध्वनि गूंजती है अर्थात स्णान के आमोद-प्रमोद मे सगीत ध्वनि का स्थायी (अदृश्य)

प्रबन्ध था। यह संगीत की व्यवस्था भी मुस्लिम नियम विरुद्ध है। अर्थात समस्त निर्माण हिन्दूकृति हैं। मुस्लिम कृति नहीं है।

मुगलकाल में आधुनिक मशीनी साधन नही थे, एवं यातायात सुगम नही था। इस मशीनी युग में ई० १९०५ की बसन्त पंचमी से आरम्भित तंक्षण कलात्मक सगमरवरी शिल्पी की योजनानुसार आवश्यक प्राकृतिक रंगमय संगमरवर से निर्माणस्त ई० १९८४ मे अड़सठवे वर्ष में अड़सठ लाख रुपया केवल दो मंजिल में व्यय हुआ है आगे चालीस वर्ष में चालीस लाख रुपये से अधिक खर्च होने का विश्वास है। हां—सावधान रहिए बेल मे लटकते हुए अंगूरी गुच्छों से बालकों को दूर ही रखिये वर्ना ये बालक अंगूर तोड़ने मचल उठेंगे।

अर र र र हाथ मत लगाइए सख्त खट्टे अंगूर है। बस देख कर ही तृप्त होइए। यह आगरा दयालबाग का स्वामी मन्दिर है। वर्तमान युग की यह बेजोड़ अनूठी कलाकृति इस बात का भी सबूत है कि हजार वर्ष पहले की शिल्प कृतियां हिन्दूकालीन हिन्दू कृति हैं। राणकपुर का चौमुखा जैन मन्दिर १४४४ स्तम्भो पर, ७२२ चित्रांकन वाला मन्दिर शान्तयुग मे पेसठ वर्ष में बना है। आबू पर्वत पर ई० १०३१ में विमल वसही द्वारा निर्मित जैन मन्दिर पर अठारह करोड त्रेपन लाख रुपया लगा था। यहां १०८ मन की धातु की ऋषभदेव की मूर्ति है। मेवाड़ में माद्री पहाड़ी पर ई० १४३८ में बनी तीन खण्ड की ऋषभदेव की अटारी तंक्षण कला की अनुपम कृति है। दस करोड़ रुपया लगा था। आमेर की सल्ला देवी के द्वार पर केले के हरे स्तम्भ और चित्तोड़ का नौ मंजला जयस्तम्भ विश्व में बेजोड़ है। ऋषभदेव की अटारी के स्तम्भ चालीस फुट ऊँचे है।

उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित होता है कि समस्त भारतीय किले महल भवन (मकबरे) आदि हिन्दू राजाओ द्वारा निर्मित हैं समस्त बादशाहों को घर-बाहर निरन्तर युद्ध संघर्ष से ही अवकाश नही

मिला तब निर्माण के लिए उन्हें अवसर मिलना असम्भव है। आइए शाही हरम और देखिए—

(७) शाहजहां ने अपनी पुत्री चमन (बेगम) को भी रखैल बना लिया था। इस नीच कृत्य पर मौलवी मुल्लाओ ने विरोध किये। लेकिन शाहजहां ने उनके विरोध को ठुकरा दिया था।

(८) शाहजहां को रौशन आरा नामक पुत्री भी थी।

(९) गौहरा बेगम भी शाहजहा की पुत्री थी।

(१०) औरंगजेब की पुत्री थी।

(११) औरंगजेब की पौत्री भी थी।

मुगलवंश मे लड़कियां और भी रही है किन्तु अकबर से अन्तिम बहादुरशाह जफर तक किसी ने मुगल कन्या किसी राजपूत को देनें की कल्पना भी नही किया था।

अहमदाबादी शाह का अजमेरी सूबेदार मल्लूखाँ पीपाड से १४१ तीजणियां उठा ले गया था जोधपुर के राव सातलजी सौतेले भाई दूदा और बरजांग को साथ ले मल्लूखां पर आक्रमण कर १४१ तीजणियएं छुड़ा लाए साथ में मल्लूखा की लडकी को उठा लाए। तथा घूडेखां सेनापति का सर काट लाए थे जो शहर में घुमाया गया था। उसी के प्रतीक मे आज भी तीजणियां मटकी (घूडेखां का सिर) को घुड़ल्या के नाम से समाज मे घुमाती है उसकी याद दिलाती है। मल्लू खा की लडकी के साथ ही दो अन्य सरदारो की दो लड़कियां भी उठा लाये थे।

इसी तरह महुवा से १४० तीजणियो के अपहरण का बदला लेनें महुआ से ११० कोस दूर अहमदाबाद में महुआ के शासक जगमाल के सरदार भोपजी ने पचीस घुड़सवार साथ लेजाकर गणगोर यात्रा के समय महमूद बेग की शाहजादी गिंदोली को ललकारी आवाज देकर सरेआम उठा लाए थे। शाही सैनिक दौड़े पर रोक न सके। शाही घोड़े भी दौड़ने मे असमर्थ-रहे। महुआ के २५ जांबाज सवार

११०-११०+२२० कोस आवागमन यात्रा विश्रामरहित लगातार किये थे। जगमाल ने गिंदोली से विबाह किया था, बाडमेरा वश चला।

शाहजहां के दरबारी की अनारा बेगम राठोड़ गजसिंह पर मोहित हो जोधपुर आई थी। यह समन्वय नीति का कारण कदापि नही था, उपरोक्त वर्णनो से स्पष्ट है।

मुगल राजपूत वैवाहिक संबन्ध समन्वय या सौमनस्य हेतु नही हुए अतः यह मुगल-राजपूत (हिन्दू—मुस्लिम) समन्वय शब्दजाल चिल्मी गप्प ही है सत्य रंचमात्र नही है।

बेनीप्रसाद एवं गहलौत द्वारा हरषा-अकबर के विवाह की सराहना मित्थ्यान्वित है। अकवर की प्रधान बेगम रुकैया वेगम थी हरषा नही थी। रुकैया बेगम को पुत्र रहता तो राज्य का अधिकारी वही बनाया जाता, सलीम—जहांगीर नही बन पाता। हिन्दू बेगमों में हरषा वड़ी थी, इसी का पुत्र भी बड़ा था।

हरषा के कारण अकबर में धार्मिक सहिष्णुता उत्पन्न नही हुई थी हरषा का नाम मरियम जमानी रखा था अकबर ने। अकबरी वंश मे किसी का भी हिन्दू नाम नही रखा गया। फतहपुर सीकरी में हरषा द्वारा हवन पूजन किया जाता था यह बदायूनी शुद्ध गप्प है। सीकरी के हिन्दू देवचिन्ह यज्ञकुण्ड पूर्वकालीन है।

अकबरी दरबार परिवार आचार विचार पर अध्ययन रत प्रत्यक्ष दर्शी पादरी मनसर्ट एवं अक्वा वीवा ने इन हवन पूजन की बातो का उल्लेख अपनी स्मरणिका में नही किया है। हरम में झोंकी गई किसी भी राजपुत्री ने बाद में भाइयों को राखी भेजी हो या बाधी हो ऐसा वर्णन कही देखा नही है। ये राजपुत्रियां वेगम नही थी पुरगम थी, जिन्दा लाशे थी।

पाठको को सदेहरहित दृढ विश्वास हुआ होगा कि अकवर दि ग्रेट, ग्रेट बुराइयों में था अच्छाइयो में ग्रेट नही था।

जिस अकबर ने केवल खुद के एकाधिकार के लिए लाखो मानव कटवा दिया। मुग़लिया शाही हुकूमत के लिए हिन्दू और मुसलमान दोनो ही लाखो की संख्या मे मौत के मुँह में झोके गए। उनके परिवारो की दुर्दशा, औरतों बच्चों, अपाहिजों, बुजुर्गो की बदतर बदहाली। खूँरेज जग की मार से बसाहत की तबाही मुगलिया मगरूर सैनिको से फसले रौंदो जाना। विजित अविजित, एवं प्रवाम मार्ग की छोटी बड़ी बसाहतो मे लूट खसोट आगजनी अपहरण और कई तरह की जालिमाना जाहिली जुल्मोसितम के बदरग से बनी उस बदतर अकबरी हुकूमत की गन्दी तस्वीर पर झूंठी प्रशसा की जरजर पैवन्दी चादर ढाकने का मिथ्या प्रयास बा-मशक्कत- श्रमपूर्वक कुछ लेखको ने किया है। यह अत्यन्त सुस्पष्ट उपरोक्त विवरण से प्रमाणित हो चुका है।

राज्य वैभव के लोभवश राजपूती गौरव गरिमा को स्वार्थी गर्त मे डालकर अकबरी शरण मे दौड लडकियां देने वाले देशधर्म समाजद्रोही कलुषित राज्यो के सदस्यो ने पूर्वजो की कालिमा धुलवाने। उनके घोर घृणित कार्यो को सर्वश्रेष्ठ नीति सम्मत सिद्ध करवाने हेतु लोभी लेखको को पर्याप्त पारिश्रमिक देकर साग्रह मिथ्या प्रशसात्मक इतिहास लिखवाना असम्भव नही है। इस उद्देश्य की पूर्ति मे घृणित अकबर को सर्वोत्तम तथा देशधर्म की रक्षा मे तत्पर, असहनीय कष्टो को सहज सहने वाले त्यागवीर राजऋषी विजयी प्रताप को विवेकहीन एवं पराजित तथा हजारो राजपूतो को कटवा देने वाला, लिखाया गया है। यह सब अवश्य ही मिथ्या है। क्योकि ये लेखक मुगल लेखनी से पराजित हुए है।

इस्लाम में अकबर का अर्थ महान है—अतः बादशाह बद्रुद्दीन ने स्वयं को ईश्वर—पैगम्बर के मुकाबले प्रचारित कर अपने मजहब की तौहीन किया है, यह शख्स अकबर कहलाने योग्य नही था इसे बदरुद्दीन ही कहना चाहिए।

श्रद्धेय डॉ. रघुवीरसिंह ने अकबर का गुणगान पीड़ित मन से इस प्रकार किया है—यथाशक्ति प्रयत्न करने वाले एवं राजस्थान को सर्व प्रथम प्रान्तीयता के एक सूत्र मे बाधने वाले अकबर का उन्हे तब ख्याल तक नही आया। अर्थात—स्वाधीनता संग्राम के नेताओं ने प्रताप को आदर्श माना है, अक़बर को आदर्श नही माना है। इनकी भावना में अकबरी महानता भासती है। रघुवीरसिंह जी क्यों भटके पता नही। अकबर को राष्ट्र हितैषी एवं प्रताप को राष्ट्रद्रोही दर्शाकर सत्य को हलाहल में डुबोने की दुश्चेष्टा की गई है किन्तु स्वाधीनता सेनानियो के लिए प्रताप का 'प्रणवीर त्यागवीर कर्मवीर' जीवन ही वास्तविक आदर्श था इसी कारण वह स्वीकारा गया है जो ध्रुव सत्य है।

विदेशी विधर्मी आक्रामक तानाशाह अकबर मे किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता नही थी जो उसे आदर्श बनाती।

अकबर के समय राजस्थान प्रान्तीयता के सूत्र में नही बांधा गया सभी राज्यो की समस्या, सीमा, सेना, नीति, आदि उनकी अपनी थी। बल्कि अकबर ने राजस्थान में मुगलिया वर्चस्व के लिए राजस्थान को सात सूबो मे और विभाजित कर प्रजा को चूसने लगा था।

अकबरी लेखक बदायूंनी एवं अबुल फजल ने कही नही लिखा है कि अकबर ने संगठन या हिन्दू मुस्लिम समन्वय करना चाहा था बल्कि फ़जल ने तो लिखा है—बादशाह सलामत (अकबर) हिन्दू मुस्लिम शासकों का पूर्ण समर्पण एवं उन्हे अपने सन्मुख नत मस्तक (सरेखम—झुकेसर) चाहता था। इसका आशय यही है कि अपराधी गुलाम की तरह हाथ बाधे सर नीचे झुकाये रहे।

सुरजन हाडा से अकबर ने सन्धि किया उसकी अन्तर्ध्वनि से ज्ञात होता है कि इन राजाओ से अकबर और उसके अंग रक्षक डरते थे।

सन्धि के खास अंश—

[१] हाडा जजिया टैक्स नही देंगे, याने जजिया टैक्स अनिवार्य था।

[२] हाडा डोला नही देंगे, याने डोला देना अनिवार्य था यह प्रमाण है।

[३] हाडा महिला नौ रोजा मीना बाजार में नही जाएगी याने सामन्त की महिला ने मीना बाजर मे जाना अनिवार्य था।

[४] हाडा के घोड़े नही दागे जाएगे, याने दागदार घोडे का सवार अकबर का दास है यह प्रचार हो इसलिए घोड़े को गर्म लोहे से दागकर निशान बनाते थे।

[इसी पर कवि ने प्रताप और उसके अणदाग घोडे के यशगान मे लिखा है— अण दगिया तुरी ऊजले असमर चाकर हुवणन डिगियो चीत]

[५] हाडा दीवाना-ए-आम मे शस्त्र सज्ज पहुँचेंगे, शस्त्र रहित नही होंगे।

[६] हाडा कोर्निश (फर्शी सलाम) नही करेंगे याने जमीन की ओर झुककर अकबर को सलाम करने का नियम था। यह अकबर को सिजदा करना था जो इस्लामी धर्म के पूर्ण विरुद्ध है। स्वयं को पुजवाने के गरूर में इस्लामी धर्म की उपेक्षा अकबर ने की है, यह सबूत है।

[७] हाडा देवस्थान रक्षित रहेगे अपमानित नही होंगे, याने अकबर देवस्थान भ्रष्ट अवश्य करता था वरना शर्त क्यों रहती।

मातहत राजाओ के लिए अकबरी शर्तो मे से चार शर्तें देखिए–

[१] अकबर का मातहत राज्य अकबर का प्रभुत्व स्वीकारे।

[२] मातहत राज्य की विदेश नीति अकबर के नियंत्रण में रहेगी

[३] मातहत राज्य मुगल साम्राज्य को नियमित टैक्स देता रहे (जनता का दुहरा शोषण हुआ है।)

[४] मातहत राज्य निजीतौर से परिजनों सह मुगल साम्राज्य की सेवा के लिए तत्पर रहें। अर्थात अपने खर्च से मुगल सेवा में युद्ध करना सदैव सन्नद्ध रहना। इन कुछ शर्तों से स्पष्ट प्रमाणित होता है कि मातहत राजा अकबर के संभ्रात गुलाम थे कठपुतली जैसे थे। अकबर ने स्वयं का एकाधिकार ही सर्वत्र चाहा है यह स्पष्ट है। उसमें राष्ट्रीय भावना नही थी तानाशाही थी।

हिन्दू मुस्लिम समन्वय अकबरी कपट व्यूह था। दीन-ए-इलाही की आड़ में अरब संस्कृति और धर्म थोपने वाला 'अकवर' राष्ट्र हितैषी या राष्ट्रीय संगठक कतई नही था, समूचे भारत पर केवल मुगलिया अधिकार चाहता था। एवं भारत में राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक अरबीकरण के लिए प्रयत्नशील था। अकबरी सेवारत राजपूत तथा नव मुस्लिम स्त्री पुरुष मुगली वेषभषा रहन-सहन अपना रहे थे।

अकबरी विषैली इस धूर्तता को दूरदर्शी प्रताप ने समझ लिया था। प्रताप का अनुसरण अन्य राजाओं ने किया होता तो देश का घातक विभाजन और साम्प्रदायिक जहर भारत में व्याप्त न हुआ होता। लिखा गया है कि—प्रताप का अनुसरणी या प्रताप का सहयोगी कोई राजा नही बना है। हां—यह सत्य है क्योकि प्रताप का मार्ग अत्यन्त दुरूहकण्टकाच्छादित था। कुसुमाच्छादित नही था।

विदेशी विधर्मी कुटिल क्रूर अकबर मगरूर तानाशाह था इसलिए वह कुशल प्रशासक नही था। अकबर के सम्पूर्ण शासन काल में कही न कँही विद्रोही संघर्ष होता ही रहा है।

अकबर खुद लड़ाका वीर नही था। ई० १५६२ में मेवाड़ में वीरमती से हारने बाद अकबर किसी भी युद्ध में हरावल या खुद हाथ में तलवार ले शत्रु से नही लड़ा है। सैन्य शिविर में बैठ युद्ध (मुर्गे) लड़ाता रहा है। याने भाले से बाटी सेकता रहा। अकबर के अन्तः

पुर मे वीस अंगरक्षक पूर्ण शस्त्र सज्ज हो अकबर की रक्षा में सदैव तत्पर रहते थे।

अकबर अनपढ था किन्तु बुद्धिमान था, बारह वर्ष की आयु में शासन सम्हाला यह सराहना भी अद्वितीय नही है। अकबर को सैन्य-बल एवं धनबल पिता हुमायूं का मिला था (हुमायूं को बाबर का खजाना मिला था) सरपरस्त एवं मार्गदर्शक गुरु बहरामखां मिला था किन्तु अकबर की गलत नीतियो का विरोध करने पर इसे अकबर ने मरवा दिया था। अकबर के नौरत्नो मे मुख्य सलाहकार आठ थे ये अष्टग्रह देश के लिए हानिप्रद ही रहे है।

बारह वर्ष की आयु में महाराणा उदयसिंह, पृथ्वीराज चौहान आदि ने भी शासन सम्हाला है किन्तु अकबर को मात देने वाला है। पंजाब के छोटे से स्थान शुकर चकरिया का रणजीतसिंह, बारह वर्ष की आयु मे पिताहीन हो गया था। अपढ था सही की जगह अंगूठा लगाता था विद्वान एवं वीर था इसी कारण इतिहास में आदरणीय स्थान पाया है।

अनपढ सिपाही से सुल्तान बना मैसूर का हैदरअली हिन्दू मुस-लमां मे भेद नही माना दोनों धर्म का समान आदर किया, गोवध बन्द किया उसकी गौशाला मे पांच लाख गऊ थी। उसने कई मन्दिर बनवाया उन्हे जागीरे दी। खुद सादा जीवन जिया, दशहरे का उत्सव दस दिन तक मनाता। अत्यन्त न्यायप्रिय, सरल सुलभ शासक था, शंकराचार्य का पूर्ण सम्मान करता था, इस्लाम परस्त था। यह भी मुसलमान शासक था अकबर जैसा धूर्त, कपटी, मगरूर नही था।

अकबर अपढ क्रूर तानाशाह था अन्य मुस्लिम शासक भी खूंरेज हुए है। ताऊ जलालुद्दीन खिलजी एवं उसके दो पुत्रों को मारकर अलाउद्दीन खिलजी ने राज्य पाया है।

बाबर के पुत्र हुमायूं ने भाई हिन्दाल, कामरान एवं असगरी से खूंरेजी करके गजनी, कंधार, काबुल छीना है। सलीम ने पिता अक-

बर से विद्रोह किया है, सलीम ने खुद के सिक्के ढलवाया है। निजी सेना सत्तर हजार बना लिया था। सलीम का विद्रोह सफल नही हुआ तब सलीम ने अकबर को जहर दिलवाया था। इस कुकर्म पर पर्दा डालने के लिये लिखा है कि पौष्टिक गोली के भ्रम मे जहरीली गोली अकबर ने खुद खा लिया। किन्तु यह लिखना गलत है।

मरण शैया पर पडे अकबर के उद्गार हैं–शेखू बाबा तुमने ऐसा क्यो किया मेरे बाद सल्तनत तुम्हारी ही थी मेरा जीवन लेने अन्याय की आवश्यकता नही थी मुझ पर ऐसा आक्रमण क्यो किया मुझसे राज्य सहज ही मागे लेते।

अकबर के शब्दो से स्पष्ट है कि अकबर की हत्या सलीम ने करवाया है तथा यह भी प्रमाणित होता है कि अकबरी शासन एकाधिकारी था राष्ट्रीय सगठन नही था। सलीम याने जहागीर ने विद्रोही पुत्र खुसरो की पलके सिलवा दिया था। खुर्रम याने शाहजहां ने भाई खुसरो को मार कर राज्य पर एकाधिकार किया था। पिता शाहजहां को कैद कर राज्य हथियाने वाला पुत्र औरगजेब भाई मुराद दाराशिकोह, शुजा एवं भतीजो के लिये यमराज ही था। पुत्री जेबुन्निसा एवं पुत्र मुहम्मद को आजीवन कैद मे रखा था। पुत्र आजम ९ वर्ष कैद भोगा था। औरंगजेब का बूढा पुत्र मुअज्जम भाई आजम एवं कामबख्श को मारकर बहादुरशाह के नाम से पाँच वर्ष ही राज्य किया था, इसकी लाश लाहौर मे कई दिन कब्र के इन्तजार मे पड़ी रही। इसके बेटो ने पहले गद्दी हासिल करना जरूरी समझा था। बहादुरशाह के पुत्र जहांदारशाह ने अपने तीन भाइयो को मारकर गद्दी हासिल किया हैं। भतीजे फर्रुखसियर ने चचा जहादारशाह को मरवाकर शासन पाया था। बादशाह जहांदारशाह को पैरो से कुचलवा कर मारा था। इसका सिर बास पर लटका कर फर्रुखसियर के शाही जुलूस मे शहर मे घुमाया गया। जहांदार की लाश

लावारिस तौर पर तीन दिन वाद दफनाई गई थी। अकवर ने भी कामरान के पुत्र कासिम को ग्वालियर कैद में कत्ल करवाया था।

ई० १७३९ में ईरानी शाह नादिर ने दिल्ली क्षेत्र दो माह तक लूटा विपुल धन एकत्र किया। मयूरासन एवं कोहेनूर हीरा भी ले गया तथा दिल्ली मे कत्लेआम भी करगया जिसमे २५०००० मारे गए थे इसने तैमूर एवं चगेज को भी मात कर दिया।

ई० १७४८ से १७६८ तक अफगान अहमदशाह दुर्रानी (अब्दाली) दस मर्तबा भारत में धावे कर खूब लूट खसोट खूंरेजी किया उस समय मुगल शासक क्रमश: (१) 'अहमदशाह (२) आलमगीर (३) शाह आलम दिल्ली मे बिल्ली बने रहे किन्तु दुर्रानी के दमन का साहस कोई नही कर सका। क्योकि राष्ट्रीय भावना-राष्ट्रीय सगठन अकवर से अन्तिम जफर तक कोई नही कर सका। राष्ट्रीयता का उन्हे बोध ही नहीं था। तानाशाह मुगल शासकों को घर मे और बाहर भी विद्रोहो से निरन्तर जूझना पडा है।

अकवर के साथ उसके कई मुस्लिम (मुगल) साथियो ने विद्रोह किया है किन्तु अकवर का जवरदस्त विद्रोही उसी का पुत्र सलीम था। ट्राजिकशोनिया, तूरान, बगाल, दक्खन तथा दो मर्तबा मेवाड़ पर आक्रमण करने का हुक्म अकवर ने सलीम को दिया किन्तु सलीम ने अकवर का एक भी हुक्म नही माना। सम्भव है हल्दीघाटी युद्ध का प्रत्यक्ष विनाश देख सलीम युद्ध से वचने लगा हो। सलीम ने अबुल-फजल की हत्या करवा दिया था और भी उद्दण्डताएं किया है लेकिन अकवर ने सलीम को मामूली दण्ड भी नही दिया। जवकि मामूली अपराध पर लोगों को अकवर नें मौत के घाट उतरवा दिया है जिनका कुछ वर्णन पहले हो चुका है।

अकवर को राजपूतों पर मुसलमानो से ज्यादा विश्वास था। यह गुड की जलेवी है। क्योंकि अकवर मुसलमान को अपने शाही हरम मे नही जाने देता था कि किसी महिला-वेगम का अपहरण न हो जाए।

मुगली हरम में राजपूतो को जाने देता था क्योंकि राजपूतों में चारित्रिक नैतिकता थी तथा राजपूतों की बहन बेटियां हरम में थी राजपूत मुस्लिम महिला का अपहरण नहीं करेगा। यह विश्वास हिन्दुत्व की नैतिकता के कारण था। अकबर खुद चरित्रहीन था। वह अपने दरबारियो की चरित्र हीनता जानता था।

अकबर को राजपूत–हिन्दू एव मुसलमान किसी भी सामन्त सरदार सलाहकार मन्सबदार सूबेदार आदि पर सही विश्वास नही था बनावटी था। इसी कारण किसी भी महत्वपूर्ण सैनिक अभियान मे राजपूत एवं मुसलमान दोनों जाति के सेनापति साथ भेजा है तथा दोनों को परस्पर शंकित कर स्वयं का विश्वासपात्र (छलपूर्ण) प्रदर्शित करता रहा है। ताकि उनमें परस्पर अविश्वास रहे, अकबर के विरुद्ध कोई षडयंत्र न हो—या षडयंत्र की रूपरेखा कही बने तो गुप्त नही रह सके ताकि दमन मे विलम्ब न हो। दो का झगड़ा तीसरे का लाभ।

अकबर के 'चार सौ सोलह' मन्सबदार थे। ये सेनापति ही थे इन में राजपूत केवल सैंतालिस थे। इन सैंतालिस में तेंतीस मन्सबदार एक हजार जात व सवार वाले थे। एक हजार से अधिक संख्या वाले मन्सबदार कुल चौदह थे। इन सैंतालिस मन्सवदारो के अधीन त्रेपन हजार अश्व सेना थी। शेष तीन सौ उनसत्तर मुस्लिम मन्सवदारों के आधीन चार लाख सतहत्तर हजार अश्व सेना थी। कुल योग पाँच लाख तीस हजार हुआ अर्थात राजपूत मन्सूबदारों के पास इस कुल सैन्य संख्या का लगभग दसवां भाग था। अर्थात मुस्लिम हिन्दू से समान नीति एवं राजपूतों पर अकबर को अधिक विश्वास था कही जानेवाली घनघोर झूठ पर यह चमरौदा जूता लड़ाक। और—इन के अलावा—

खुद अकबर के आधीन चालीस लाख पैदल सेना थी तथा गज सेना पांच हजार थी। याने कुल सैन्य संख्या पैंतालिस लाख पैंतीस

हजार थी। भारतीय मन्सवदारो के सैनिक भारतीय थे। अकवर एवं तीन सौ उनसत्तर मुस्लिम मन्सवदारो के सैनिक मध्य एशिया के जाहिल क्रूर हिंसक वरवर मुस्लिम ही अत्यधिक थे। अर्थात अकवर की समस्त सैन्य संख्या में राजपूत सैनिक कुल १$\frac{1}{4}$ प्रतिशत से ज्यादा नही थे याने मुस्लिम सैनिक चारसौ मे केवल पाँच सैनिक हिन्दू-राजपूत सैनिक थे फिर भी विशाल मुगल सेना, शासन और शासक राजपूतो से शंकित ही रहते थे। किन्तु सौ मुगलो मे एक राजपूत नि शंक रहता था उपरोक्त प्रमाण यही है।

अकवरी राजभाषा फारसी थी भारतीय भाषा नही थी।

अकवर—हिन्दुओ पर अनेको टैक्स लगाकर अपार धन एकत्र किया है।

पराजित राज्यो से अतुल धन मिला है।

विधीचन्द से पाँच मन सोना एवं जवाहरात लिया है। अहमदाबाद के मखदुम उल मुल्क की मृत्यु वाद उसके साथ कब्र में दफनाई गई सोने की वहुतसी ईटो से भरी कई पेटियां कब्र खुदवा कर निकलवा लाया था।

सेखसलीम चिश्ती का भाई इब्राहीम गुजरा तव उसके खजाने से "पचीस करोड़" की सम्पदा वटोर लाया था। शाहवाज कम्वू को कैद से मुक्त करने सात लाख रुपया रिश्वत लिया था। पराजित राज्यो से लाये हुए वन्दी नापसन्द स्त्री पुरुषो को अफगान अरव आदि में वेचकर धन या घोड़े एकत्र करता था। अकवर खुद का तुलादान मन्सवदारो के धन से करवाकर वह धन अपने खजाने मे डलवा लेता था।

अकवर अपने समय का सर्वाधिक सम्पन्न, जमाखोरी में अत्यन्त लालची था खर्च करने में अत्यन्त कंजूस था। राष्ट्र हित या जनहित में कभी धन नही लगाया। भयानक दुर्भिक्ष मे प्रजा मरती रही, अकवर खुशी में जाम पीता रहा। अकवर की मृत्यु समय केवल आगरा

खजाने में दो करोड पौण्ड याने एक करोड़ सेर वजन में स्टर्लिंग (इग्लैंड का सुवर्ण सिक्का) धन जमा था।

इसी प्रकार छह राज्यो मे खजाना रखा जाता था। यह समस्त धन फरगना से नही आया था यह धन भारतीय जनता से क्रूरता पूर्वक एकत्र किया जाता था। अकबर अपने दरबारियो को बुरी तरह डाँट कर लज्जित बनाए रखता था ताकि वह व्यक्ति सबके सामने अपमानित होने से मानसिक दुर्बल बना रहे।

बदायूनी ने लिखा है दिन भर देखते रहो, किन्तु कुछ मत बोलो, चुप रहो। अर्थात अनाचारी अकबर की अनैतिकता पर सहमत नही होना संकट को निमंत्रण देना होता था। अकबरी दरबार के प्रत्यक्षानुभवी पादरी-मन्सर्ट, जेरोम जेवियर, एक्वा वीवा, आदि नें अकबर में किसी भी प्रकार की अच्छाई नही देखे, बल्कि अकबरी दुष्टताओ का अन्त नही देख, ये लोग अकबरी दरबार खुद ही छोड़ दिये थे।

पराजित वाजबहादुर का मालवा, मुजपफर शाह का गुजरात उदार अकबर निगल गया। किन्तु काबुल के अपने कुटुम्बी भाई मिर्जा हकीम के विद्रोह का दमन किया तब हकीम भाग गया था इसलिये हकीम की बहन को काबुल का शासन सौपा है। गुजरात, कश्मीर, मालवा आदि की तरह काबुल का भक्षण नही कियां क्योकि हकीम अकबर का वंशज एव काबुल भारतीय सीमा का प्रहरी था। इस्फहान के मिर्जा मुकीम एवं काश्मीर के याकूब को कत्ल करवा दिया था क्योकि ये शिया थे। अकवर सुन्नी मुसलमान था। अकबर शिया मुस्लिमो से क्रूर व्यवहार करता था। मुगलवंश के अलावा अन्य मुस्लिमों का दमन करने में उत्सुक रहता था। शिया मुस्लिम राज्यों को नष्ट करना अकबर का शौक था। विश्व में कई जगह धर्म भिन्नता है, साम्प्रदायिकता नही है किन्तु भारत में अकबर द्वारा अरबीकरण के प्रयास से उत्पन्न साम्प्रदायिक विषधर निरन्तर जहर उगलते

रहते हैं। उपरोक्त संक्षिप्त तथ्यो से प्रमाणित है कि अकबर का जीवन-चित्र अत्यन्त घृणित है। उसे उत्तम शब्दो के आवरण में ढाकने का प्रयास भी घृणित है, नैतिक पतन है, सत्य की हत्या है। इसलिये अकबर विरोधी प्रताप पूर्ण सही नीति पर था। एक इति-हासज्ञ ने लिखा है—निःसन्देह मेवाड़ के राणाओं ने हिन्दू धर्म की प्रतिष्ठा रखने का यत्न किया किन्तु मुगलो से लोहा लेकर राजपूत जाति के धन व जन का जो संहार करवाया यह सर्व विदित है। अर्थात गलत संहार कराया। यह गलत वाला आक्षेप ही खुद गलत है।

मेवाड़ ने जन-धन का संहार अपने देश धर्म की स्वतंत्रता के लिये किया यह मेवाड़ का वास्तविक नैतिक कर्तव्य था जिस पर वह अडिग रहा।

किन्तु मुगलो के लिये भाटी, हाडा, राठोड़, कछवा आदि ने समूचे भारत में (काबुल तक) हिन्दू धन-जन का जो महाघोर संहार निरन्तर करवाया है एव तव से हो रही देश की निरन्तर हानि का सत्य तथ्य सर्व विदित करवाने का मानवोचित भारतीय नैतिक कर्तव्य पालन किसी भी विद्वान ने नही किया है।

कछवा, राठोड़, भाटी, हाड़ा आदि अकबर शरण जाने की अपेक्षा राजपूत सगठन वना लेते एवं मुगलों के भक्त न वने होते तो भारत मे लोदी सैयद सूर की तरह मुगल राज्य भी समाप्त हो गया होता। भाटी एवं राठोड़ो की अपेक्षा कछवाहो ने मुगल शासन को दृढ करने मे भरपूर सहयोग दिया है। मुगलों को सहयोग देने वाले कछवा, भाटी, राठोड़, हाडा आदि राज्य भौतिक साधन सम्पन्न हुये तथा मुगल विरोधी मेवाड़ भौतिक सम्पदाहीन रहा किन्तु प्रताप के प्रताप ने सुयश रूपी अटूट कोप मेवाड़ को दिया है, भारत को दिया है, हिन्दुत्व को दिया है।

आइये भौतिक भक्तों के भवनो में क्षणिक अवलोकन कर लें।

राठौड़ :-

ई० ४७० में अजयपाल को जीतकर नयनपाल राठोड़ ने कन्नौज पर अधिकार किया तब से यह वंश कमधज कहलाया।

पृथ्वीराज चौहान का विनाश चाहने वाला कन्नौज नरेश जयचन्द राठौड़ शहाबुद्दीन गौरी से चन्दवार के मैदान पर ई० ११९४ मे पराजित होते ही गंगा में डूब आत्महत्या कर लिया था।। इसे भय हुआ कि पृथ्वीराज को कठोर यातनाएं देकर शहाबुद्दीन ने मारा उसी तरह यातना देकर उसे मारेगा इसलिये माँ गंगा की गोद मे पड़ लूँ तो, समाज, धर्म और देशद्रोह का पाप कुछ तो धुलेगा।

ई० १२१२ मे जयचन्द का वंशज "सीहा" मारवाड़ प्रवास पर भटकता हुआ पाली के निकट रुका था साथी भी साथ थे। पालीवाल ब्राह्मणो का अन्तरराष्ट्रीय समृद्ध व्यापार नगर पाली था। टैक्स के रूप मे लगभग पचहत्तर हजार रुपया वार्षिक आय नगर को थी। अरब चीन पर्यन्त आयात निर्यात था। किन्तु गोहिल, मोहिल, चौहान पाली को प्रायः लूटते थे। इन डकैतो से नगर एव वाणिज्य की रक्षा हेतु सशस्त्र सरक्षक (पहरेदार) के रूप मे दलसहित 'सीहा' को नगर श्रेष्ठी यशोधर ने नियुक्त कर लिया था। सीहा के दल ने सफलतापूर्वक पाली की रक्षा किया। सीहा के वंशज चूण्डा को इन्दा शाखा के परमारो से दहेज मे मण्डोर का राज्य मिल गया। राव चूण्डा की पुत्री हसावती का सम्बन्ध चित्तौड़ी राजकुमार चन्द्र से तय करने राठोड़ चित्तौड़ सभा मे पहुँचे तब चन्द्रसिह के पिता महाराणा लाखा ने सहज विनोद मे कहा था कि इस वृद्धावस्था में अब हमसे भला सम्बन्ध की बात कोई क्यो करने लगा? पिता के ऐसे विचार सुन राजकुमार चन्द्र ने पिता लाखा से हंसा का सम्बन्ध साग्रह करवा दिया। किन्तु इसके पूर्व लाखा एवं राठोड़ों ने चन्द्र को धमकी दी

कि हंसा को पुत्र हुआ तो राज्य उसे मिलेगा आपको नही। इस धमकी से चन्द्र डिगा नही वल्कि उसने वचन बद्ध हो शर्त स्वीकार लिया किन्तु हंसा मे विवाह न कर उसे मातृवत स्वीकारा है।

राणा लाखा को हंसा से मुकुल नामक पुत्र हुआ। यवनो से गया तीर्थ की रक्षा मे जूझने राणा लाखा प्रस्थान करने से पहले ज्येष्ठ पुत्र चन्द्र से परामर्श किये कि युद्ध से मेरा जीवित लौटना सम्भव नही है इसलिये मुकुल को कौनसा भाग (स्थान) दिया जाए। इसके उत्तर मे चन्द्र ने वालक मुकुल को तिलक कर निवेदन किया कि समस्त राज्य मुकुल का है। राणा लाखा गया तीर्थ की रक्षा मे निछावर हो गया।

वालक मुकुल का राज संचालन वड़ा भाई चन्द्र करता था। राव चूण्डा राठोड़ ने मण्डोर से पुत्र रणमल को निकाल दिया, सम्भव है मेवाड़ मे घुसने की यह चाल हो, रणमल मेवाड़ मे लाखा की शरण में धणला नामक गाँव पाया किन्तु लाखा की मृत्यु वाद रणमल चित्तौड मे वहन भाजे के पास रहकर राजकार्य मे हस्तक्षेप करते हुए वहन हंसा को भ्रमित कर हंसा द्वारा चन्द्र को राज्य से निकलवा कर खुद राज संचालन करने लगा था। वड़े पदो पर राठोडो को नियुक्त कर मेवाड़ियो को हटा दिया था। कुछ वर्ष वाद रणमल ने मेवाड़ी सेना के सहयोग से स्वर्गीय पिता की इच्छा के विरुद्ध भाई नरवद एवं सत्ता से मण्डोर कान्हा से मारवाड, सोनगरा से नागोर, सिंघलो से जैतारण दूलो से सोजत छीन लिया एव जालोरी हसनखां मेवाती को पराजित किया है स्वय के लिये, मेवाड़ के लिये नही।

राणा लाखा के भाई क्षेत्रसिंह की रखैल खातण (वढई) के पुत्र, चाचा एवं मेरा का अपमान मुकुल द्वारा अनजाने हो गया था। चाचा और मेरा मुकुल की हत्या करके भाग गए तव मुकुल का पुत्र वालक कुम्भा गद्दी पाया किन्तु शासन रणमल कर रहा था। काफी समय वाद महपा पवांर एवं एका ने रणमल की कुटिल नीति से कुम्भा को

सचेत किया किन्तु कुम्भा ने विश्वास नही किया। मेवाड़ में रणमल के बढते एकाधिकार के प्रति मेवाड़ी राज परिवार, सामन्त सरदार सभी शंकित हो चुके थे। राणा कुम्भा के छोटे ताऊ देशभक्त रघुदेव ने वर्षो तटस्थ रहने बाद जब रणमल का विरोध किया तब रणमल ने रघुदेव की हत्या करवा दिया। इस हत्या नें रणमल के विरुद्ध मेवाडियों मे उठी कुशंका को दृढ कर रोष व्याप्त कर दिया था। रघुदेव को राजद्रोही लिखना स्वयं के विवेक से विद्रोह करना है। रघुदेव राजद्रोही रहता तो उसका स्मारक किले पर नही बना होता। इनके नाम से वेदी बनाते है। रघुदेव राजयोगी, देश हितैषी था राज-द्रोही नही था।

राजमहिषी हंसा को भ्रातृमोह मेवाड़ के लिये विषधर प्रमाणित हो गया। रणमल द्वारा हत्या करा दिये जाने के भय से महपा पवार, एका एवं कुम्भा का भाई खेमा माण्डू की शरण मे चले गए। राज्य के प्रमुख पदों पर रणमल के विश्वस्त राठौड़ जमे थे। ऐसे संकट मे गहलोत शासन की रक्षा हेतु हंसा एवं सामन्त सरदारों ने गुप्त मंत्रणा कर राजमाता हंसा द्वारा मेवाड़ से निष्कासित चन्द्रसिंह को गुप्त निमन्त्रण भेजा गया।

मातृभूमि से निकाल देने वाली विमाता हंसा का आदेश पाकर तथा मेवाड़ मे घटित घटनाओं से संतप्त चन्द्र मालवा से अपने दो सौ कुशल लड़ाका साथियों के साथ दो चार छह के जत्थों में छद्म वेश मे, विशेष योजनानुसार सन्ध्या की श्यामलता में संबंधियों से मिलने आदि के बहाने चित्तौड़ मे प्रवेश कर योजनावद्ध मोर्चाबन्दी कर लिये। गढ़ मे रणमल का सशक्त प्रभाव था खुले रूप से रणमल का विरोध करने पर संघर्ष उग्र हो जाता, सफलता कठिन हो जाती या कुम्भा की हत्या हो जाती इसलिये राठोड़ों को अकस्मात दबोचने की नीति अपनाई गई।

आगन्तुक नये चेहरों पर रोष की छाया देख साथियो सह रणमल शंकित सतर्क हो विश्वस्त साथी एवं सैनिको के साथ पुत्र जोधा को आदेश दिया कि कोई तुम्हें कुछ भी कहे किन्तु किसी भी दशा मे तुमने गढ पर नही आना।

जोधा के साथ विश्वस्त राठोड सैनिक सात सौ थे। विश्वस्त कुछ सैनिक रणमल के निर्देश मे गढ़ पर भी थे। इससे प्रमाणित होता है कि रणमल के प्रति मेवाडी शंका सत्य थी। सहज मेवाड़ पर अधिकार करने मे रणमल सफल नही हो सका। नवागन्तुको से शंकित रणमल समझ चुका था कि अब भागकर वचना कठिन है।

चन्द्र और उसके वीर साथियो ने योजनानुसार रणमल और उसके साथियो पर रात्रि मे अकस्मात आक्रमण कर दिये। कई साथियो सह रणमल मारा गया। पूर्व योजनानुसार रणमल के हरकारे ने किले की दीवार पर से तलैटी पर आवाज देकर जोधा को सचेत किया कि—याँका रणमल मारिया जोधा भाग सके तो भाग। चित्तौड़ किला धरातल से पाँच सौ फुट ऊंचा, लगभग आठ मील की परिधी मे वना है। ढलान से, प्राचीर से तलैटी की दूरी सात सौ फुट होगी। रात्रि के गहन अंधकार मे प्राचीर से धरातल पर आवाज दे सूचित करने हेतु, स्थान, वक्ता, श्रोता पूर्व योजनाबद्ध थे।

पिता रणमल के मारे जाने से हताश पुत्र जोधा चाचा भीवा को नशे में धुत्त पडा छोड़कर अपने सात सौ सैनिको के साथ मेवाड़ से भाग निकला।

चन्द्र के मेवाड़ी दल ने किले से निकलकर तीव्र वेग से जोधा का पीछा किया। चित्तौड़ से आठ कोस पर पहली मुठभेड़ हुई। कपासन के पास भी दोनो दल टकराए। चितरौटी गांव के पास पुनः युद्ध किया। सोमेश्वर घाटे तक दो तीन बार खूनी झड़प हो गई। चार सौ राठोड़ मारे गये। इसलिये सोमेश्वर घाटे के पास से विश्वस्त आठ

दस राठौड़ो के संरक्षण में जोधा मन्डोर की ओर दौड गया शेष राठोडो ने मेवाड़ियों से प्राणान्त मोर्चा लिये। जोधा मण्डोर पहुँचा किन्तु मेवाड़ियों के भय से शीघ्र ही राठौड दल एकत्र कर बीकानेर (वर्तमान) के निकट काहूनी मे जाकर रहा। मौसी के सहयोग से मौसा रावत लूणा के एक सौ चालीस घोड़े ले भागा।

मण्डोर पर चन्द्र के सैनिक अधिकार कर लिये थे। जोधा कई बार आक्रमण किया किन्तु मण्डोर नही ले सका इन युद्धों में चन्द्र के पुत्र कन्टो एवं मुंज मारे गये। कुछ वर्ष बाद दादी हंसा के आग्रह वश राणा कुम्भा ने जोधा पर सैन्य दबाव कम कर दिया। यह संकेत चारण डूला से जोधा को मिला। जोधा ने रात्रि मे आक्रमण कर मण्डोर, चौकड़ी, कोसाणा पर अधिकार कर लिया फिर मेड़ता और सोजत भी ले लिया। जोधा ने वि० १५१५ में जोधपुर बसाया। जोधा का दामाद द्रोणपुर का अजीत मोहिल जोधपुर आया था। द्रोणपुर पर जोधा की नीयत थी। सास भटियानी से धोका होने की सूचना पाकर अजीत जोधपुर से निकल भागा। पलायन का पता लगते ही जोधा ने अजीत का पीछा कर मार्ग मे ही उसे घेर कर मारडाला (ऐसा राज-विस्तार लोभ था।) कुछ समय बाद जोधा और कुम्भा मित्र बन गए। जोधा की पुत्री श्रगार देवी का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल से हुआ। कटुता मिठास बन गई।

अधिकांश लेखकों ने चन्द्र (चण्ड) को भीष्म पितामह जैसा त्यागी लिखे है किन्तु एक लेखक ने चन्द्र को देशद्रोही तथा कुम्भा के इशारे पर रणमल की हत्या किये जाने की निन्दा एवं रणमल को मेवाड़ का हितैषी लिखा है जो निःसन्देह सत्य रहित है।

विमाता हंसा द्वारा तिरस्कृत मेवाड से निष्कासित चन्द्र द्वारा मेवाड के शत्रु राज्य माण्डव में शरण लेना न्यायोचित है। ऐसे समय में शत्रु राज्य मे ही शरण ली जाती है, मित्र राज्य मे घात होने का

भय रहता है। मेवाड़ से दूर मालवा में रहने पर भी चन्द्र को षडयंत्र कारी नेता गलत लिखा है क्योकि प्रमाण एक भी नही लिखा। चन्द्र मेवाड मे निष्कासित था, मेवाड़ मे रहने की आज्ञा नही थी। मेवाड में रहता तो सभी दोष चन्द्र पर थोपे जाते। रघुदेव की तरह चन्द्र की हत्या भी रणमल करवा देता। मुकुल की हत्या का बदला लेने भी चन्द्र नही आया है। बदला लेने यदि चन्द्र आता तो राठोड़ रणमल चन्द्र को मेवाड पर आक्रामक कह कर मेवाड़ी सेना से ही चन्द्र को समाप्त करवा देता। मेवाडी सेना रणमल की इच्छा से कुम्भा के आदेश पर माण्डू पर चढाई कर महमूद से शरणागत महपा और एका को मांगे लेकिन चन्द्र या खेमा को नही मांगे। महमूद ने मेवाड़ी सेना का मुकाबला करने चन्द्र से कहा तब चन्द्र ने महमूद से स्पष्ट कहा कि मैं रणमल से युद्ध कर सकता हूँ महाराणा (मेवाड) से नही। माण्डू के शासक ने महपा खेमा आदि को शरण दिया इस मे चन्द्र कतई दोपी नही है शासक चाहे जिसे आश्रय दे। माण्डू मे चन्द्र आश्रित था शासक नही था। रघुदेव या चन्द्र राजलोभी नही थे। स्वयं चन्द्र ने मुकुल को राजतिलक किया है। बंटवारे के लिये लाखा ने चन्द्र से पूछा तब चन्द्र ने स्वयं स्वेच्छा से सम्पूर्ण राज्य मुकुल को ही दिलाया है किसी अंश की माग नही किया। बड़े भाई चन्द्र जैसा त्यागी रघुदेव था। लाखा गयातीर्थ के रक्षा युद्ध मे मारा गया, उसी समय चन्द्र या रघुदेव वालक मुकुल की हत्या करके या करवा के राज्याधिकार सहज अवश्य ही प्राप्त कर सकते थे क्योकि पिता लाखा के समय से ही रघुदेव का सात्विक आदर एवं चन्द्र का शासकीय प्रभाव मेवाड़ राज्य में वृद्धि पर था। उस समय मेवाड़ मे राठोड़ी प्रभाव नही था। चन्द्र के निष्कासन वाद मेवाड़ पर राठोडी प्रभाव बढ़ा तब मुकुल की हत्या हुई थी। चन्द्र द्वारा प्रतिकार की अपेक्षा तटस्थ रहना ही उचित था हंसा एव कुम्भा द्वारा मेवाड़ की सहायता के लिये चन्द्र को बुलाए जाने पर चन्द्र गुप्त रूप से मेवाड़ पहुँचा है,

गर्वोन्मत्त हो दहाड़ता हुआ नही पहुँचा, रणमल और राठोड़ी वर्चस्व चन्द्र ने समाप्त किया उसी तरह चन्द्र कुम्भा को भी समाप्त कर राज्य ले सकता था किन्तु चन्द्र राजलोभी नही था यह उपरोक्त प्रमाणो से स्पष्ट प्रमाणित है ।

चन्द्र ने राज्य त्यागने की प्रतिज्ञा भली प्रकार निभाया है । इसी कारण चन्द्र को भीष्मपितामह की उपमा से विभूषित किया गया है । जो सर्वथा उचित है । चन्द्र की नि.स्वार्थ निष्ठात्मक राजसेवा पर मेवाड़ शासन द्वारा चन्द्र को वंश परम्परा हेतु युद्ध मे हरावल-(प्रथम मोर्चा) का अधिकार एवं सलूम्बर की जागीर दी गई । चन्द्र--चण्ड मेवाड़ का भीष्म पितामह अवश्य था । पाठको के समक्ष पुन· राठोड़ी चित्र प्रस्तुत है ।—

राठोड़ सीहा पाली की चौकीदारी करते हुए निकटस्थ 'खेड' ग्राम पर अधिकार करने का य-न करता रहा । सीहा के पुत्र आस्थान ने गोहिलो से खेड छीन लिया, पाली गिकट चौरासी गाँवों पर अधि-कार किया । भीलों को पराजित कर ईडर का राज्य छोटे भाई सोनिग को दिया था । आस्थान की आठ पीढी प्रयत्न करके भी मण्डोर नही ले सकी किन्तु इसी के वंशज वीरम के पुत्र चूण्डा को मण्डोर दहेज में मिला है । चूण्डा ने अजमेर, खाटू, नाडोल, सांभर, डीडवाना तक राज्य सीमा बढा लिया था । इससे पहले चूण्डा के पूर्वज डकैती भी करते थे ।

खेड मे रहकर सीहा ने मारवाड़ पर सत्ता जमाने का बीजारोपण किया मण्डोर से शासन कर चूण्डा ने इसे सीचा एवं मारवाड़ की राजधानी जोधपुर बसाकर राव जोधा ने राठोडी शासन को पल्ल-वित किया । जोधा के चौदह पुत्रो ने अपने पराक्रम मे अपने राज्य अलग बना लिये थे ।

जोधा के-पुत्र बीका ने जंगल-क्षेत्र में चौरासी गाँव पर अधिकार करके वि० १५४५ में बीकानेर राज्य स्थापित किया है । दिल्ली के सुल्तान का फौजदार सारंग खां मारवाड़ पर चढाई किया तब पिता

जोधा को वीका ने सहयोग देकर सारंग खा को पराजित किया था। इस खुशी मे जोधा ने वीका को स्वतन्त्र शासक मान कर छत्र-ध्वजादि राजचिह्न का अधिकार दिया।

राव जोधा ने राठोड़ राज्य को श्रमपूर्वक विस्तृत एवं सवल वनाकर अपने भाइयो को दाहिनी ओर स्थान दिया, पुत्रों को वाएं ओर स्थान दिया, सभी को अलग अलग जागीर दिया तथा शासन का सुप्रवन्ध किया है। यदि दामाद की हत्या का कलक नही लग-वाता तो जोधा का शासन प्रवन्ध उत्तम अनुकरणीय था।

जोधा का पुत्र राव गांगा भी विस्तारवादी था किन्तु जोधा की तरह वन्धु हितैषी नही था। राज्य शीघ्र पाने की लालसा में पिता 'गांगा' को पुत्र मालदेव ने झरोखे से धक्का दे गिराकर मार डाला था। किन्तु गांगा अफीम के नशे में गिर पड़ा यह प्रचार किया गया था।

सत्तारूढ होकर मालदेव भी पिता गांगा की तरह अपने कुटुम्बी राठौड़ों पर आक्रमण कर उनके राज्य से उन्हे भगाकर या मौत के घाट उतारकर उनके राज्य छीनने लगा था। पोकरण, ईडर मेडता, सोजत, सिवाना, जैतारण, भाद्राजून, फलौदी, बीकानेर आदि राठोड़ राज्यो को ध्वस्त करने मालदेव ने हजारों राठोड़ पर-स्पर कटवा दिया था मेड़ता को ध्वस्त कर वहां मूकी लगवाया था। ये हजारों राजपूत गलत उद्देश्य मे कटवाने वाले राठोड़ो को किसी लेखक ने दोष नही दिया। अतः मेवाड़ को राजपूतो की मृत्यु के लिये दोष देना दूषित मानस का विकार है। सत्य का सत्कार नही है। सैन्य सम्पन्न राठौड़ मालदेव सुमेल रणक्षेत्र में साथियो को चुप-चाप छोड युद्ध से मुखडा मोड़ रात के अन्धेरे में लगा गए दौड़। पचास हजार से अस्सी हजार तक अश्व सेना का स्वामी मालदेव था। मेड़तिया राठौड़ वीरम ने गांगा एवं मालदेव से विनम्र निवेदन किया था कि हम आपके वंशज है हमसे सेवा लो, लड़ो नही। माल-

देव नही माना मेडता को ध्वस्त कर दिया था। वीरम, शेरशाह की शरण मे जा पहुँचा।

ई० १५४४ मे शेरशाह सूर ने-मालदेव पर चढाई किया। शेरशाह घूघराघाटी तक पहुँचा, तब मालदेव अजमेर मोर्चे से अपनी सेना पीछे हटाकर सुमेल में जा ठहरा। शेरशाह और आगे वढा तब मालदेव सुमेल से हटकर गिररी में जा ठहरा। शेरशाह कुछ आगे और पहुँचा तब मालदेव पुनः पीछे हटने को अधीर हो उठा था किन्तु अब मालदेव के वीर सामन्त योद्धा जैता ओर कूंपा ने पीछे हटने से साफ इन्कार कर दिया। मजबूर मालदेव को रुकना पड़ा। गिर्री से बारह मील पर बावरा मे शेरशाह का पड़ाव था, मांगलिया वास मे भी कुछ सेना थी। सेना में बिहारी हिन्दू विशेज थे। शेरशाह मोर्चे पर आ रुका था। कुछ दिन बीत गए दोनो मे से किसी ने आक्रमण नही किया। मालदेव से पीड़ित कुछ राठौड़ मालदेव से बदला लेने शेरशाह के साथ थे। इनका नेता मेड़तिया वीरम था। शेरशाह आक्रमण का साहस नही कर पा रहा था।

कपट का सहारा लेकर शेरशाह सूर ने वीरम की सलाह से शेरशाही ढालो की गद्दी मे झूठे जागीर पत्र छुपाकर कम दाम में राठौड़ी खास सरदारों को भेजी गई तथा सूर सेना के लिए कम्बल और तरवारे खरीद देने के बहाने बीस-बीस हजार रुपया गुप्त-रूप से जैता और कूंपा के पास धरवाए एव मेड़तिया वीरमदेव के माध्यम से मालदेव को सचेत किया गया कि आप के सामन्त सरदार शेरशाह के साथी बन गए है, इनकी नई ढालो में जागीर पत्र छुपे हैं किसी को नगद-रुपया भी मिला है आप खुद जॉच करलें।

रात्रि में यह गुप्त सूचना मिलते ही मालदेव विवेकहीन हो शोध किया तब जागीर पत्र एवं रुपयो के बदरे उसे मिल गए। सरदारों ने शपथपूर्वक मालदेव को विश्वास दिलाना चाहा कि यह सब शेरशाह का फरेव है। किन्तु मालदेव नहीं माना तथा साथी सरदारों को

वताए वगैर भोर के धुंधलके में निजी सेना साथ लेकर जोधपुर भाग गया ।

मालदेव के पलायन की जानकारी सुवह् सामन्त सरदारो को हुई तव इन जाँवाज वीर साथियो को इस अविश्वास पर बड़ा दुख हुआ एव इस कलक से मुक्त होने मरण युद्ध का प्रणकर इक्कीस हजार राठौडी वीरों ने मारवाड राज्य की सशक्त दो भुजा जैता और कूंपा के नेतृत्व में शेरशाही मेना पर प्रचण्ड आक्रमण कर ५००० ने वीर-गति पाई १६००० वीर घायल हुए । किन्तु राठौडी सेना की अपेक्षा शेरशाही सेना अधिक प्रमाण मे मारी गई अपनी सेना के जवरदस्त विनाश को देखकर शेरशाह की आत्मा कराह उठी कि मुट्ठी भर वाजरे के लिए मै बादशाहत गँवा देता ।

मालदेव के पास धनवल एवं सैन्य वल शेरशाह से अधिक था । शेरशाह की सेना में पठानों से ज्यादा संख्या मे आरा वलिया के विहारी भोजपुरी हिन्दू अधिक थे, इन्हे देश धर्म और धन के प्रभाव मे मालदेव अपनी ओर कर सकता था किन्तु अहं ने विवेक को उठने नही दिया ।

शेरशाह जोधपुर की ओर वढा तव गढपति मालदेव जोधपुरगढ से भागकर पीपलण पहाड़ी क्षेत्र में जा छुपा था । कुछ महीने वाद शेरशाह की मृत्यु होने पर मालदेव जोधपुर ले सका था। किन्तु जोध-पुर लुट चुका था। कई मन्दिर ध्वस्त मिले । एक मन्दिर शेरशाही मस्जिद बना मिला था जो अव भी है। शेरशाह ने वीरम को मेड़ता दिलवा दिया था। अजमेर पर शेरशाह का अधिकार हो चुका था।

ई० १५५४ मे मालदेव ने मेड़ता पर आक्रमण किया किन्तु हार-कर भागना ही पड़ा था। राठौड़ राज्य मे सनातन और जैनधर्म का आदर था । केवल जोधा ने ही प्रयाग, काशी और गया तीर्थ की यात्रा किया है। इसके वाद चन्द्रसेन तक किसो ने यात्रा नही किया। मृत्यु से पहले मालदेव ने तीसरे पुत्र चन्द्रसेन को राज्य दिया, फलतः

चन्द्र का मझला भाई उदयसिंह एवं बड़ा भाई रामसिंह तथा चन्द्र तीनो में खूनी संघर्ष होता रहा।

ई० १५७० में नागौर मुकाम पर तीनों भाई अकबर से सहायता पाने पहुँचे। अकबर ने मझले भाई उदयसिह को रक्षण दिया। राम और चन्द्र निराश लौटे उदयसिंह बहुत मोटा था। मोटा राजा के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसने अकबर को डोला दिया, मस्जिद बनवाया। अकबर-से-मन्सबदारी पाया। इन कार्यों में भगवानदास कछवा मध्यस्त था।

मेवाड़ राज्य से राम की विमाता उमादे को कैलवा एवं चन्द्र को मुड़ाड़ा गाँव दहेज में मिले थे। संघर्ष में असफल रामसिंह कैलवा में रहने लगा था। मुगलिया सैनिक अभियान जोधपुर पर हुआ तब चन्द्रसिंह पीपलण पहाड़ी होकर सिवाना मे जा पहुँचा। मुगल सिवाना पहुँचे तब चन्द्र मेवाड़ मे मुडाडा गाँव में जा रहा था। इसी समय में भाटी रावल हर राय के पास एक लाख फदिया में पोकरण गिरवी रख दिया था। व्यापारी एवं प्रजा से टैक्स वढा कर तथा जबरन द्रव्य लेकर चन्द्र ने प्रजा को रुष्ट कर दिया था। इसलिए चन्द्र को प्रजा का सहयोग नही मिला।

चन्द्र ने सोजत और सिवाना वापस जीत लिया किन्तु सबराड में ठहरा तब मुगल सेना ने पुनः चन्द्र का पीछा किया और इसी भागमभाग मे चन्द्र संसार से विदा हो गया। बीकानेरी पृथ्वीराज राठौड़ (कवि) के अनुज अमरसिंह ने अकबर की उपेक्षा कर अपने गाँव मे विश्राम ले रखा था। इसे पकडने (वस्तुतः मार डालने) हेतु तीन हजार सेना सह हाजीखां एव आरबखां को भेंजा। पृथ्वीराज ने भाई को प्रोत्साहन भेंजा कि 'पानी' रख लेना। अमरसिंह आदतन अंफीम के नशे में गाफिल पड़ा था। मुगल फौज आई तव अमर को जगाने का साहस किसी ने नही किया। किन्तु आश्रित महिला कवयित्री पद्मा चारणी ने काव्य सुनाकर अमर को युद्ध के लिए जागृत की है। काव्य पंक्तियो मे से तीन

पंक्ति—कहर नर थारी कमाई, अम्मर अकबर तणी फौज आई, जाग हो जाग कलियाण जाया।

अमरसिह के पास दो हजार सैनिक थे घमासान युद्ध हुआ। अमरसिह अपने घोड़े पर से आरवखां के हौदे पर छलांग मारा कि इसी क्षण शत्रु की तरवार से अमर कमर से कट गया निचला भाग घोड़े पर जा गिरा किन्तु ऊपरी धड़ ने हौदे मे पहुँचकर आरवखां को जीवित नही रहने दिया।

नागौर के कसारी गाँव का जोरावर सिंह चांपावत के शरीर में हेनरी मार्टीन बन्दूक की ३६ गोली धंसी थी फिर भी अपने रक्त से सनी मिट्टी के पिण्ड बनाकर धरती को देने लगा था कि एक सैनिक ने जोरावर के गले से सोने की चेन (जजीर) निकालना चाहा तभी जोरावर ने तरवार के एक ही वार से सैनिक को समाप्त कर दिया था। और वह जजीर चारण को दे दिया था।

बीक़ानेर का पद्मसिह राठौड जिस तलवार को छड़ी के समान घुमाता था वह इतनी वजनदार है कि उसको उठाना सहज नही है। स्वामिभक्त वीर दुर्गादास राठौड़ का इतिहास भी उज्ज्वल है। ऐसे अनेक दुर्धर्ष राठौड़ वीर हुए हैं।

भारतीय वीर गाथाओ पर अनेक विशाल ग्रंथ है उन्हे पढने से आपको अपने गौरव का आभास होगा। मै तो आंशिक झलक ही प्रस्तुत कर सका हूँ।

कच्छवाह

दूबकुण्ड, ग्वालियर, नरवर, करोली कछवा राज्य थे। ई० १००० के लगभग नरवर के शासक सोढदेव की विधवा पत्नी, शिशु-पुत्र दूल्हराय की रक्षा के लिए उसे छुपाकर छुपती हुई ढूँढाड़ में 'खोह' नामक गाँव के राजा चान्दा आलणसी मीणा के रनिवास में रानी की सेवा में रही। कुछ समय वाद आलणसी को ज्ञात हुआ कि

नयी सेविका कछवाही रानी है तब उसे आलणसी ने बहन मानकर सम्मान से रखा । दूल्हराय बड़ा हुआ तब इस भान्जे को अपना विश्वस्त सरदार बनाया ।

इस भान्जे ने कुछ ही वर्ष बाद डूम की सलाह से राज्य पाने की लालसा वश दीपावली के दिन तर्पण करते हुए तालाब पर निहत्थे चान्दा पुरुष मीणों के समूह को कत्ल कर खोह का राज्य ले लिया । खोह में वह तर्पण ताल आज भी विद्यमान है ।

दूल्हराय का विवाह मोरां के चौहान राजा सिलारसी की पुत्री से हुआ था । चौहानी सहयोग से दूसरे श्वसुर बड़गूजर का दौसा राज्य हथिया लिया था, दूसरी पत्नी दौसा की थी इसी ने किले का गुप्त मार्ग बतलाई थी । इसके बाद माची, आमेर, झोटवाड़ा, गेटोर के मीणा राज्य दूल्हराय ने जीत लिया । इसका वंशज पंजून था यह पृथ्वीराज चौहान के पक्ष में महोबा युद्ध में तथा ई० ११९२ में तराइन युद्ध में लड़ा था तराईन में मारा गया । इसी वंश में शेखा ने शेखा-वाटी राज्य बसाया । पृथ्वीराज चौहान का बहनेउ एवं सामन्त पंजून था । आमेर की मुख्य शाखा में हरिभक्त-पृथ्वीराज शासक हुआ, तब अपने श्वसुर राणा सांगा के पक्ष में खानवा युद्ध में बाबर से लड़ा था ।

मृत्यु समय पृथ्वीराज ने, बड़े पुत्र भीम को राज्य न देकर दूसरे पुत्र पूर्णमल को राज्य दिया । ई० १५३४ में भीम ने पूर्णमल से राज्य छीन लिया । ई० १५३७ में भीम की मृत्यु बाद पुत्र रतनसिंह गद्दी पर बैठा । यह शेरशाह के अधीन हो गया । रतन का चाचा भारमल रतन के अनुज आसकरण को राज्यलोभ देकर उसके द्वारा रतन की हत्या करवा दिया एवं आसकरण पर भ्रातहन्ता दोष लगाकर सरदारों को अपने पक्ष में करके भारमल ई० १५४८ जून १ को आमेरी शासक बना । भतीजा आसकर्ण सूर सरदार हाजीखां पठान को आमेर चढा लाया तब अपना राज्याधिकार बचाने भारमल ने बहुत सा धन एवं पुत्री किसनावती हाजीखां को देकर सुलह किया है ।

"क्या यह राज्यलोभ नही था ।"

ई० १५५६ में हाजीखां ने हुमायूं के नारनोली सूबेदार मजनूखां पर चढाई किया तब उन दोनो में समझौता भारमल ने ही करवाया था। इस कार्य से खुश हो कर मजनू खा ने १५५६ मे ही भारमल को दिल्ली बुलवाकर अकबर से परिचय करवाया था । इन्ही दिनो मे अकबर की सवारी का हाथी बेकाबू हो गया था, मुगल बहादुरो मे भगदड मच गई तमाशबीन भाग छूटे थे। तब अपनी जान की परवाह न कर भारमल ने उस विगडैल हाथी पर काबू कर अकबर को मौत से बचाया है । यह अकबर पर भारमल का जबरदस्त अहसान हुआ था किन्तु अकबर जबरदस्त अहसान फरामोश रहा ।

अकबर का मंत्री शमसुद्दीन पालक बहराम खां, मिर्जा शरफुद्दीन चचा, सेरीमा चग़ताई आदि ने हाजीखां किसनावती विवाह सुनकर वैसे ही विवाह के लिये अकबर को प्रेरित किये है । ई० १५५८ मे अजमेर पर अकबरी अधिकार के आक्रमण समय मे मुगल सेना के साथ भारमल भी था। थोड़ी सी झड़प के वाद हाजीखा अजमेर से पलायन कर गया । अजमेर का सूबेदार मुगल शरफुद्दीन वनाया गया ।

ई० १५५८ में पूर्णमल के पुत्र सूजा ने अजमेरी सूबेदार शरफुद्दीन को आमेर पर चढा लाया तब भारमल पहाड़ मे जा छुपा किन्तु कुछ धन एव जमानत मे भारमल के पुत्र जगन्नाथ तथा भतीजे राजसिंह और खंगार को साथ ले शरफुद्दीन लौट गया। है ना मुगलिया एहसान फरामोशी ।

कुछ दिन वाद शरफुद्दीन आमेर पर पुनः चढाई करने की तयारी करने लगा। अवुलफजल ने अकवरनामा जिल्द २ पृ० २४१ पर लिखा है कि शरफुद्दीन आमेर पर आक्रमण कर भारमल को सपरिवार नष्ट करने की योजना में था। इसी अवसर में ख्वाजा की यात्रा के बहाने अजमेर जाते हुए अकबरी दल की सलाह से कलावती के पड़ाव से

चगताई भारमल को भ्रमित करने आमेर पहुँचा। अकबर दौसा होकर सांगानेर पहुँचा था यहां चगताई ने भारमल को अकबर से मिलाया था, अकबर ने भारमल को उपहार दे आदरित किया, एवं वहां चगताई के माध्यम से हुए समझौते के अनुसार अजमेर से लौटते समय ई० १५६२ फरवरी ६ को साम्भर में चगताई की व्यवस्था मे भारमल की पुत्री 'हर्षा' अकबर को विवाही गई। इसका नाम "मरियम जमानी" रखा गया। इस विवाह के बाद ही भारमल को अकबर से रक्षण मिला है। तथा भारमल का पुत्र एव दोनो भतीजे मुगल कैद से मुक्त हुए है। भारमल के पुत्रादि का परिचय अगले पड़ाव 'रतनपुरा' पर अकबर से कराया गया, यहां अकबर ने भारमल कछवाह को मन्सवदार तथा राजा का पद दिया। भारमल के पुत्र पौत्रादि भी अकबरी सेना मे स्थान पाए।

अकबर का मन्सबदार सूबेदार शरफुद्दीन अकबर की सलाह मुजब ही भारमल पर सैनिक आतंक डाला है स्वेच्छा मे नही डाला। स्वच्छन्द अधिकार किसी को नही था। अकबर का नैतिक कर्तव्य था कि भारमल को बिना शर्त रक्षण देता, क्योकि भारमल ने बिगडैल हाथी से अकबर की जान बचाया था, मजनूखां एवं हाजीखां में समझौता करवाया था, अजमेर पर मुगल अधिकार करते समय सैनिक सहयोग में खुद भारमल साथ था। किन्तु नैतिकता से गिरे हुए इन्सानियत से परे हुए अहसानफरामोश बद्रुद्दीन ने श्रेष्ठ अकबर नाम को बदनाम कर भारमल को अपने जाल मे फांस लिया।

राज्य लोभी भारमल अकबर की सेवा में साष्टाग समर्पित हो बोहनी कर दिया।

उपरोक्त शाही विवाह आमेर में नही हुआ साम्भर में हुआ, वर वधू दोनों पक्ष में आनन्दोत्सव, सहभोज, बक्षीस, निछावर, जश्न आदि कही कुछ नही हुआ इसी से ज्ञात होता है कि भारमल ने यह विवाह मजबूरी एव कुछ परिजनों की चोरी से किया है। एक ही

दिन में विवाह सम्पन्न हो डेरे तम्बू उखड़ गए। भाग भाग ऐसी कि भारमल पुत्रादि का परिचय अकबर से अगले पड़ाव पर करवाया गया। शायद अकबर को घिरने पिटने का भय रहा हो क्योंकि मेवाड़ में वीरमती से खुद पराजित हो लौटा था।

इधर शरफुद्दीन द्वारा भारमल पर सैनिक दबाव, इसी समय में अकबर की अजमेर यात्रा, एवं चगताई द्वारा भारमल को विवाह करवादेने हेतु विवश करना। यह समस्त घटनाएं निःसन्देह पूर्व नियोजित षडयंत्र था यह स्पष्ट ही है। पाठक मनन कर सत्य स्वीकार लें।

एक ग्रंथ में लिखा है—भारमल ने यह विवाह स्वेच्छा से किया था। वही पाद टीप मे लिखा है स्वार्थ कृतज्ञता एव बादशाह की ओर से आवश्यक प्रेरणा के कारण यह विवाह हो सका है। तहां एक जगह लिखा है— कई विद्वानों का मत है कि जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर आदि के राजवंशो ने व्यक्तिगत लाभ के लिए हिन्दू धर्म जाति एवं आदर्शों की हत्या की।

मुगलों से विवाह सम्बन्ध जोड़ने के कारण वे देशद्रोही कपटी कहे गये किन्तु उन्होने जयपुर राजवंश के इस कार्य को "निष्पक्ष दृष्टि' से नही देखा।

उक्त लेखक ने निष्पक्ष दृष्टि की व्याख्या कतई नही की है। केवल शब्दजाल है। आवश्यक प्रेरणा का तात्पर्य मुगल अकबर से विवाह करने दबाव डाला गया यही आशय होना चाहिये।

मेवाड़ ने अपने देश-धर्म की रक्षा के लिये जो धन-जन का संहार करवाया वह सर्वथा उचित है किन्तु जयपुर, जोधपुर, बीकानेर आदि राज्यों ने निजी सत्तालोभ मे मुगलो के लिये हिन्दू धर्म धन जन एवं राष्ट्र घात के लिये गुजरात, दक्खन वंग विहार, उडीसा, कश्मीर, राजस्थान आदि समग्र भारत में एवं काबुल तक हिन्दुओ का पक्ष विपक्ष में घोरतम संहार करवाए हैं। यह इतिहास ग्रन्थो में सुस्पष्ट

अंकित है। किन्तु इस कटु सत्य को ओझल रखवाने का यत्न किया कराया गया है। सत्यान्वेषी पाठक सत्य-असत्य का निर्णय कर लें।

एक ग्रन्थ में लिखा है-उन्होने (कछवा राठोड़ आदि ने) तय किया कि मुगलों से टक्कर लेने मे केवल देश के जन व धन की हानि होगी अतः उन्होने मुगलों की छत्र-छाया में देश की उन्नती करना उचित समझा। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर आदि के राजा नीति निपुण दूर-दर्शी थे। इस प्रकार मित्थ्या सराहना करना उक्त देश धर्म घाती तथा नीति भ्रष्ट अदूरदर्शी राजाओं के राष्ट्र और धर्म घाती दोषों पर मित्थ्या शब्द सज्जित चादर डालना भ्रष्ट लेखनी का धृष्ट जाल है।

इन राज्य लोभी रंजवाड़ों में केवल निजी वंशानुगत लाभ का लोभ था। इन्हें राप्ट्र एवं धर्म की चिन्ता नही थी अतः इन की सराहना मित्थ्या है। यदि ऐसा नही है तब तो पुरु ने सिकन्दर से, चन्द्रगुप्त ने सेल्युकस से, चालुक्य भीमदेव, सीतल देव, कान्हड़ दे, हमीर चौहान, कुंभा, सांगा, दाहिर, पृथ्वीराज आदि ने महमूद गजनवी, शहाबुद्दीन गौरी, कासिम, खिलजी, बाबर आदि से युद्ध कर महा मूर्खता ही की होगी। क्या इन्होंने आक्रामक उन शत्रुओ का पुष्पमाला से स्वागत करना था। उन्हें सादर सत्तारूढ करना था। क्या इन कछवा राठोड़ की तरह विदेशी विधर्मियों के हित में भारतीय धन जन का विनाश करने कराने में प्रतिस्पर्धी रहना था। तब तो— अकबर के रंगमहल मे सादर समर्पित न होकर मुगलों से स्वयं युद्ध कर अपने देश-धर्म पर निछावर होने वाली चांद बीबी एव वीरांगना रानी दुर्गावती पागल थी। नौरोजी मीना बाजार मे अकबर की छाती पर चढ़ नौरोजा बन्द करवाने वाली किरणावती मतिमन्द थी। खिलजी को समर्पित न होकर जौहर और केसरिया करने वाले भी मूर्ख ही रहे होगे। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी आदि ये लोग मुगल पक्षानुरागी लेखको के मत से भले ही मूर्ख हों किन्तु इन्ही

विभूतियों को आदर्श मानकर प्रवुद्ध मानव श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। हरपा या जोधावाई को, भारमल या उदयसिंह राठोड़ आदि को उनके वशज भी हार्दिक श्रद्धांजलि शायद ही दिये हो।

जोधावाई की मृत्यु पर अकवर ने शाही नाइयों को हुक्म दिया कि मातम में राजपूतों का मुण्डन कर दिया जाए। इस हुक्म का राजपूतो ने विरोध किया तव अकवर ने हुक्म दिया कि राजपूतों को वांधकर जवरन मूण्डा जाए। यह सुन राजपूतो में कुछ गैरत जागी, वे तरवारे खैंच मरने मारने पर आमादा हो गये। यह रोश देखकर अकवर ने अपना 'मुण्डन हुक्म' रद्द किया था। अकवर द्वारा सख्ती का राजपूतो द्वारा कडा विरोध होना यह- प्रमाण देता है कि मुगल राजपूत समन्वय सहयोग नही था दोनों में केवल निजी स्वार्थमय लिप्सा थी।

धिक्कारें या धन्य कहें उन लेखकों को जिन्होंने अपने देशधर्म की रक्षा में जूझने वाले 'राणाप्रताप' को देश के धन-जन का संहारक लिखा है। तथा निजी भौतिक स्वार्थवश मुगलों के लिये जिन राज-पूत राजाओ ने सहयोग देकर भारत मे मुगल शासन की जड़ मानव रक्त से सीचने समस्त भारत मे लाखों हिन्दुओ को, पशु पक्षियो को, मौत के घाट उतारे। लाखो महिलाओ को विधवा, सन्तान हीन, यतीम बनाए। हजारो स्त्री पुरुष गुलाम वनाकर अरव मे बेचे गए। हजारो अपाहिज बनाए गये। सैकडो नर-नारी अमीर उमराओ की सेवा में झोके। मुगलो द्वारा सैकड़ों मन्दिर तोड़कर मस्जिद व मक-वरा वनाए गए। किले महल आदि पर अर्वी उर्दू शिलापट्ट लगा-कर भारतीय शिल्प का मुस्लिमीकरण किया गया। अरवों खरवों की सम्पदा नष्ट हुई। मन्सवदार राजाओ के खजानों मे विपुल सम्पदा भरी गई। अकवरी सूवों में विभिन्न छह स्थानो पर लवालव भरे खजानो का वर्णन पहले किया हूँ। स्मिथ का शोध है कि अकवर ... विश्व में सवसे अधिक धनी था। उक्त तथ्य स्पष्ट

प्रमाण देते हैं कि—भौतिक सम्पन्नता लोभी मुगल भक्त एवं देशधर्म समाज को रौन्दने वाले उन राजाओं के जघन्य अपराधों को छुपाने उन्हे दूरदर्शी विवेकशील राष्ट्र हितैषी लिखना सत्य की हत्या करना है, देश धर्म और समाज द्रोह है। नैतिक पतन है।

अकबर के लिए कई राज्यों पर आक्रमण करने वाला मानसिंह बहुत बड़ी संख्या में सोना चाँदी जवाहरात लूटकर आमेर लाया था इसमे से जयगढ एवं मोती डूंगरी का धन वाहर हुआ है शेष बाकी है। मिर्जा राजा जयसिंह शाहजी भोसले को परास्त कर आठ हजार वैलगाड़ियाँ भरके माल जब्त कर लाया था। इसी जयसिंह ने दाउदखाँ को छह हजार सैनिकों के साथ महाराष्ट्र में गाँव लूटने किसान और गऊओ को बन्दी बनाने भेजा था। अकबर दबाव डालता तो मानसिंह इस्लाम स्वीकारने भी तैयार था। ऐसा था कछवाहो में देश धर्म का प्रेम। इसी तरह राठौड़ हाडा भाटी शेखा आदि भी मुगलों के लिये भारतीय राजाओं से लड़े तथा पराजित राज्यों को लूटकर अपने खजाने भरे, वैभव सम्पन्न हुए।

इनके विपरीत मुगल विरोध में रह भारतीय-हिन्दुत्व के गौरव की रक्षा में जूझने वाला मेवाड़ धन जन वैभव से क्षीण ही रहा है।

(१) सूरत पडाव पर मदिरा मदोन्मत्त अकबर राजपूतों से खुद की बहादुरी की डींग हांकता हुआ दीवार पर तरवार की मूठ अड़ाकर नोक अपनी छाती से दबाने लगा। यदि नोंक दबा लेता तो अकबर कब्र में तभी समा जाता। किन्तु मानसिंह ने वह छीनकर अकबर को मरने से बचाया था। इस प्राण रक्षा के पुरस्कार में अकबर ने मानसिंह को पटक दिया था। सम्भव है लात मारा हो।

(२) बडोदा—सरनाल माही नदी के पड़ाव पर तीन शत्रु सैनिक अचानक अकबर पर घातक आक्रमण करने झपटे तब लपक कर भगवानदास ने शत्रुओं को मारा, अकबर को बचा लिया वर्ना अकबर के टुकड़े-टुकड़े हो जाते

[३] एटा–परोख में देशभक्त नागरिकों के आक्रमण मे घिरा हुआ अकवर बोटी बोटी कट जाता किन्तु वहनेऊ भक्त भगवानदास ने दौडकर खुद के प्राणो की रक्षा छोड़, मौत के जबड़े मे फसे अकबर को वचाया और तव तत्काल मुगलसेना ने पहुँच कर लगभग एक हजार देशभक्तो को जिन्दा जला दिया था ।

[४] गुजरात मे ई० १५७२ दिसम्बर मे नशे मे घुत्त अकबर ने प्रिय मानसिह पर चुभता तीखा व्यंग किया था । मानसिंह की काया मे राजपूती अश सोडावाटर की बोटल के उफान जैसा उफना, मानसिह और अकबर मे तरवारे खिच गई किन्तु सैय्यद मुजफ्फर ने तत्काल दोनो को रोक कर समझा कर शान्त किया था । इस घटना ने मान-सिंह को प्रताप से हुई भेट के समय व्यग्र कर अकवर विरुद्ध प्रताप को अडिग रहने-का सानुरोध निवेदन करने वाध्य किया हो तो आश्चर्य नही है । यही से मानसिह प्रताप से मिलने गया था ।

[५] अनेक राज्यो को अकवर शरण ठेलने वाले आमेरी कछवाह प्रमुख है ।

[६] अकवर-सलीम आदि के लिये कई राज्यों से डोला खीच लाने वालो मे कछवाह आगे हैं ।

[७] चित्तौड़ में १५६८ मे कत्लेआम का हुक्म दिलवाकर करीब तीनलाख नरनारी मौत के घाट उतरवाने वाले आमेरी भगवानदास प्रमुख हे । भ्रष्ट लेखनी इन्हें देश धर्म समाज हितैषी लिखी है ।

[८] अकवर के आग्रह पर दीक-ए-इलाही धर्म न स्वीकार इस्लाम धर्म स्वीकारने मानसिह राजी था किन्तु क्रियान्वित नही हुआ । सलीम के विवाह का शाही वर्णन पहले हो चुका है । (९-१०-११) भारमल, द्वारा अकवर पर तीन अहसान का वर्णन पहले हो चुका है ।

दु साहसी वीर के वीरत्व से भयमुक्त होने हेतु अकवर उस वीर को कपट मौत मार देता था भूखे शेर से लड़वाना, पागल हाथी से लड़वाना, जहरीली पोशाख पहराना, गुप्त जहर दिलवाना, असाव-

धान पर गुप्त घातक आक्रमण करवाना ताकि मृत्यु का दोष अकवर को न दिया जाए।

मुगल राज्य में इन मन्सबदारी वफादार राजपूतों का जीवन कितना सम्मानित कितना अपमानित था इसका कुछ प्रमाण रावत सारस्वत द्वारा सम्पादित–"दलपत विलास" नामक पुस्तक के पृ० ६५ से १०५ तक उपलब्ध है । इस पुस्तिका में भी वैसे अंश सहज अंकित हुए है ।

मानसिंह पचपन वर्ष मुगल सेवा में रहा। मुगलों के लिए सतहत्तर युद्ध लड़ा, इन सतहत्तर युद्धों में हिन्दू बहुत वडी संख्या मे मारा गया। कई शहर लूटे गए। जलाए गए। कछवा भगवानदास, मिर्जा जयसिंह, रामसिंह, शिवसिंह, सवाई जयसिंह, ईश्वरसिह, माधोसिंह आदि ने भी मुगलों के लिए अनेक युद्ध लडे। भारतीय धन जन की अपार क्षति करवाये। अजमेर, चित्तौड, जसोर, हल्दीघाटी, मेडता, जोधपुर, बडोदा,सरनाल सूरत अहमदाबाद, बांदा,रीवां, बीजापुर,कूच बिहार, दिधोर, खेलना, पुरन्दर, कलिजर- खड्गपुर, रोहतास, गया, ढाका, गोलकुण्डा, काबुल, कन्धार, बल्ख, बदक्शां, बंगाल मण्डला, बह्लानपुर, थानेश्वर में साधुजमात, क्षिप्रा, रूपनगढ, नाथद्वारा, राणकपुर आदि कई युद्धों में कछवा प्रधान राठौड़ भाटी हाड़ा शेखा आदि ने ई० १५५८ से १७५० तक याने एक सौ बयानवे वर्ष तक लगभग निरन्तर ही मुगलों के लिए पक्ष विपक्ष के हिन्दू सैनिक एवं निर्दोष नागरिक तथा उपयोगी पशु "लाखों कीसंख्या मे" स्वयं या मौन सम्मति मे मौत के घाट उतरवा दिये। ये राजा गण राष्ट्र, धर्म, समाज हितैषी, नही थे. केवल निजी राज्य लोभी थे।

इन राजाओं को मन्सबदारी के अनुसार निजी सेना साथ लेकर मुगलसेवा में युद्ध पर जाना अनिवार्य था । यह निजी सेना हिन्दू सैनिको की रहती थी । शत्रु सैनिक भी प्राय: हिन्दू ही रहते थे। मुगलों के लिए हिन्दू से हिन्दू लड़े। मुगल सेनापति राजपूतों को युद्ध

की सफलता हेतु निजी रुपया भी खर्च करना पड़ता था। तदर्थ नगरों को क्रूरतापूर्वक लूटते थे। ऐसे महान थे।

मुगल सेना मे कछवा भगवानदास, टोडरमल, उदयसिंह राठोड, लाहोर में मरा, करनाल में कछवा भूपत एलिचपुर मे मानसिंह, बह्लानपुर मे जयसिंह, वालापुर में भाउसिंह, वंगाल मे दुर्जनसिंह मरा। राठोड़ जसवंतसिंह जमरुद मे मरा। वून्दी का रतन हाड़ा बालाघाट (द०) मे, अनिरुद्धसिंह अफगान मे। कछवा रामसिंह बिशनसिंह अफगान मे। मारवाड़ का शूरसिंह राठोड मेहकर मे। कछवा जेगतसिंह आगरा मे, बह्लानपुर मे महासिंह। बीकानेरी कर्णसिंह राठोड़ औरंगावाद मे, सूरसिंह अनूपसिंह रायसिंह वह्लानपुर में। कोटा का जगतसिंह किशोरसिंह दक्खन में। तीन भाइयो सहित मुकुन्दसिंह अर्जुन गौढ शाहपुरा का सुजानसिंह, साला दयालदास, धरमत मे। वून्दी का शत्रुसाल, किशनगढ का रूपसिंह सामूगढ़ में मारे गये। इनके अलावा और भी कही कई मारे गए होंगे। इनके साथ इनकी राजपूत सेना मुगलो के लाभ के लिए विपक्षी राज्यो की हिन्दू सेना से तथा कही मुस्लिम सेना मे भी युद्ध की है। इन युद्धो में लाखो हिन्दू मारा गया है, अरवो खरवो की सम्पदा नष्ट हुई है। इन राजाओ की विवेकहीनता, निजी भौतिक लालसा ही इसका मुख्य कारण है ये राजागण वीर थे कायर नही थे किन्तु दूरदर्शी राष्ट्र हितैषी कदापि नही थे।

अकबर की अनुपस्थिती में बंगाली अफगानो ने आगरा पर आक्रमण किया तव उन्हें भगवानदास ने पराजित कर राजधानी की रक्षा की है अन्यथा सम्भव है उस दिन अकबर राज्यहीन हो जाता।

ई० १५८५ मे भगवानदास ने कश्मीरी शासक यूसुफ से संधि किया, किन्तु सन्धि ठुकराकर अकबर ने यूसुफ को वन्दी वना लिया था। इस अपमान से दुखी हो भगवानदाअ ने खुद के पेट मे छुरी भोंककर आत्महत्या करना चाहा किन्तु वच गया।

भगवानदास की पुत्री मानबाई जहांगीर से लाहोर में विवाही, सुल्तुन्निसा वेगम कहलाई, यह बा-गम थी जहर से परलोक गई । शाही महल मे वेगम की मोत जहर से होना तथा कछवाहों ने मौन रहना, भौतिक लोभ मे डूबना ही है । ईस बेगम का मेहर दो करोड़ रुपया था। इस का पुत्र खुसरो भी बेमौत बेवख्त मरा था। हिन्दू बेगमों (राज पुत्रियों) के हिन्दू नाम बदलकर मुस्लिम नाम रखे जाना अकबर के समन्वय की धोके बाजी का प्रमाण है । अकबर ने हिन्दू बेगम मे जन्मे पुत्र का नाम हिन्दू नाम नही रखा सलीम नाम रखा था।

ई० १६३३ मे शाहजहां गज निरीक्षण कर रहा था कि एक हाथी बालक औरंगजेब पर दौड़ा अन्य सभी देखते रहे किन्तु मिर्जा राजा जयसिह ने लपक कर भाले का प्रहार कर हाथी के वार से ओरंगजेब को वचाया है। यह औरंगजेब भी अपने शासनकाल मे अहसान फरामोश रह जयपुर मे छैसठ (६६) मन्दिर तोड़ा है, कछवा राज्य को काफी रौन्दा है।

मुगल राज्य और वंश के वफादार रक्षक देशद्रोही कछवाहों के प्रति तैमूरी वंशज अकबर में अपनत्व रंचमात्र भी नही था केवल स्वार्थमय नाटकीयता थी।

जहांगीर मानसिंह को "पाखण्डी भेडिया" कहता था । अकबर ने प्रिय मानसिंह की हत्या करने पौष्टिक माजून के वहाने वैसी ही बनी हुई जहरीली गोली मानसिह को खिलाना चाहाकिन्तु सलीम के दबाव मे सेवक ने जहरीली माजून अकबर को खिला दिया था । इस जहर का उतार नही था। मृत्यु पूर्व अकबर कहता रहा शेखू (सलीम) बाबा मेरा जीवन लेने जहर क्यो दिया मुझसे राज्य यूँही माँग लेना था इत्यादि।

वफादार मानसिह को धोके से मारनेवाला अकबर खुद कब्र में खो गया किन्तु मरने के बाद भी अकबर को चैन नही मिला, भरतपुरी जाट नेता राजाराम ने ई० १६६८ मार्च में अकवर की कब्र

तोड कर उसकी हड्डियां वटोरकर आग में झोंक दिया तथा मकवरा लूट लिया। अकवर के भाग्य मे यही अन्त लिखा था।

अकवरी मन्सवदार राजाओ के कारण देश धर्म और जनता की जवरदस्त हानि हुई एवं अत्यन्त कष्टमय जीवन जीकर देश धर्म और हिन्दुत्व की रक्षा तथा भारतीय गौरव को समुन्नत जीवन दिया महाराणा प्रताप ने यह सुस्पष्ट प्रमाणित हो रहा है । पाठक अगले पृष्ठो पर ध्यान दे—

विजयी प्रताप

वैदिक सप्त सैन्धव सीमा

मान सरोवर, कैलाश, त्रिविष्टप, (तिब्बत) काश्मीर, गंगोत्री, यमुनोत्री क्षेत्र, प्रथम मानवोद्गम भूभाग माना जाता है। ओल्डहम का शोध है कि सैन्धव लवण शेल (पंजाब-पंचजन) के तल से प्राप्त भूगर्भीय पाषाणभूत जीवाश्म कैम्ब्रियन काल ५४० लाख वर्ष पहले की जीव सृष्टि का प्रमाण है।

"पचास वर्ष पहले विदर्भ में भूगर्भ से पाषाण भूत जीवाश्म मिले थे"।

पश्चिमोत्तर में हिमलन्त (हिमालय) श्रेणी, मूजवन्त, आर्जीक, शर्यणावत, सुसोम (ऋ८।७।२९ सुसोमे शर्यणा वत्यार्जिके) एवं सुमेरु दक्षिण मे थार (क्षार) सारस्वत समुद्र इस मे सरस्वती समाती थी। पूर्वी समुद्र। पश्चिमी (अरब) समुद्र शिलामान (सुलेमान) पर्वत। उत्तर मे हिमालय से बाह्य भू मध्य सागर था जिसका शेश बल्ख और ईरान के उत्तर मे कास्पियन सागर, कृष्णसागर, पश्चिम तुर्किस्तानी औरल सागर, बाल्कश झील, पूर्वीय तुर्किस्तान मे लोबनार झील। गंधार, हिन्दुकुश, पूर्वीय अफगान से काश्मीर विन्ध्य, एवं गंगा के बेसिन तक सप्त सैन्धव सीमा मानी जाती है

सिन्धु नदी की एक दिशा में वितस्ता (झेलम), आस्किनी (चिनाव), परूष्णी (रावी), विपाष (व्यास), शतद्रु (सतलज. यहा रूशम जन निवास मानते है), द्रशद्वती (घग्गर), सरस्वती, राका, असुनिता, सिनीवाली नदियाँ सिन्धु की सहायक है। सिन्धु की दूसरी दिशा में तृष्टामा (जास्कर) अनतिभा, सुसर्तु (सुरू), रसा-रन्हा (श्योक), श्वेता (काण्डिया), गौरी (पंजकोरा), आर्जकिया (हारो), श्वेत

यावरी (कोहात-तोह), हरियूपिया (ईर्याव), सरयू पश्चिमी (हरिरुद) कुषवा (कुनार), आपया (चितग), अक्षरा (लिन्ध्रा), कुभा (कावुल), सुवास्तु (स्वात), अफगन गोमती (गोमल), जोव, टोची, क्रुमु, मेहुल, सिता, ऊर्णावती, सुषोम, हरिभ्रमिया, यव्यावती, शुनासोरा, शिलमावती, विवाली आदि नदियां सिन्धु की सहायक है । देवासुर संग्राम सिन्धु और ईरान के मध्यवर्तीय भूभाग पर हुआ था हिरण्यकश्यप, प्रह्लाद, वीरोचन, बलि मुल्तान के राजा थे।

वेदानुसार पंचजना (पंजाव), कुरु, मत्स्य, शूरसेनी, सरस्वती द्रषद्वती का मध्यवर्ती भाग ब्रम्हावर्त है । इसी मे कौशिकी, रोहित, गंगा, यमुना भी सप्त सारस्वत मे है । यह सारस्वत मण्डल कहलाता है भागीरथ के कठिन परिश्रम द्वारा हिमालय से गंगा नदी प्रवाहित किये जाने के कारण सरस्वती के प्रवाह में अवरोध होने से सरस्वती लुप्त हुई हो । क्योंकि गंगा के पहले सरस्वती नदी ही महत्वपूर्ण थी, शिवालिक (हिमालय) मे निकल कर पटियाला होकर घग्गर, हाकड़ा, सोतार कहलाती हुई सारस्वत समुद्र मे समाती थी जो वाद में हनुमानगढ (वीकानेर) के पास लुप्त हुई है । उक्त सारस्वत मन्डल में देवता, व्रह्मा, प्रजापति, दक्ष, युधिष्ठिर, परीक्षित, जन्मेजय आदि के प्रसिद्ध यक्ष हुए हैं । वसिष्ठ, विश्वामित्र, आंगिरस, जमदग्नि, आदि अनेक ऋषी गणाधीश (दल-नेता) भी थे युद्ध और शस्त्र विद्या में दक्ष थे । सूर्यवंशी सुदाम को वशिष्ठ ने व्रह्मावर्त में राज्यारूढ किया था। सुदास द्वारा लडे गए दाशराज युद्ध मे ऋषीदल दोनो पक्ष में थे ऐसे और भी युद्ध हुए हैं । उक्त युद्ध में पक्त्थून (पख्त) भी साथी थे पख्त वैदिक युग से है कालान्तर मे सरस्वती के पूर्वीय भाग से सूर्यवंशी परिवार उत्तर प्रदेश एवं विहार मे जा कर वसे है । ऋ ८।३।१२, ८।४।२, ४।३०।१२-१५ रूमे रूशमे शब्दानुसार रूम रूस तक ऋषियो का निवास था ऐसा कुछ शोधमत है तथा फ्रेंझ क्यूमॉट के लेख से समर्थन भी मिलता है।

ब्रम्हावर्त के आचार, विचार, परम्परा, सभ्यता और भाषा समग्र देश में व्याप्त है । इस भाषा को देववाणी संस्कृत एवं लिपि को देवनागरी कहते हैं ।

हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इण्डिया मे थ्रॉट ने लिखा है—सारे विश्व मे हिन्द् राष्ट्र नि सन्देह प्राचीनतम है । वह आद्यतम और सर्वाधिक तेजी से उन्नत हुआ है कि जब नील (नाहल) के तट पर पैरामिड बने ही नही थे । आधुनिक सभ्यता के श्रोत कहे जाने वाले ग्रीस और इटली के प्रदेशो में जगली जानवर ही रहते थे उस समय भारत वैभव सम्पन्न राष्ट्र था। चीनी भापा मे थी-एन,चू याने भारत देवलोक है । कहते है ।

अगस्तस श्लेगेल—प्राचीन भारतीयों को परमात्मा का ज्ञान था। उनके सारे विचार कल्पना, सिद्धान्त, विश्लेशण, भाव आदि सब वडे शुद्ध सात्विक पवित्र है । परमात्मा सम्बन्धी उतना गहरा और स्पष्ट निवेदन अन्य किसी साहित्य में नही मिलता है । यूरोपीय लोगों का उच्चतम दर्शनशास्त्र जो ग्रीक साहित्य में आदर्श तर्कवाद कहलाता है वह प्राच्य आदर्शवाद के चकाचौंध कर देने वाले प्रकाश की तुलना मे इतना फीका दीखता है कि जैसे प्रखर सूर्य के प्रकाश में टिमटिमाता दीपक ।

भारतीय पणियों (व्यापारी) ने जलमार्ग से ईराक ईरान सीरिया एवं भूमध्य सागर के तटो पर बसाहत (नगर) बसाये तथा फिनीशिया, बेबिलोन, उत्तर अफ्रिका, मेसोपोटामिया, कुर्दिस्तान तक गए। वैदिक संस्कृति का प्रचार किये । उन भूभागों में अवशेश मिलते हैं।

फ्रेंच विद्वान डेल्वस का शोधांश है—जिस जीवन प्रणाली का आविष्कार भारत में हजारो वर्ष पूर्व हुआ है वह हमारे जीवन का अङ्ग बन गई है । सभ्य जगत के कोने कोने तक वह प्रणाली पहुँची हैं। अमेरिका हो या यूरोप हो हर प्रदेश में गंगा क्षेत्रीय सभ्यता का प्रभाव दीखता है.। भारत यरोप और स्केडिनेविया के क्षत्रीय एक ही

समाज के है, डेन्मार्क, नार्वे, स्वीडन, उत्तर यूरोप, स्केंडिनेविया-स्कन्ध नाभदेव सेनापति का क्षेत्र है।

ईरान विजेता परशुराम अग्नी पूजक था इसके वंशज या अनुयायी वर्ग अग्नी पूजक पारसी हो तो आश्चर्य नही। दक्षिण अमेरिका के घने जगलो मे मन्दिर महल भवन आदि के अवशेश विद्यशान है।

शोध मनीशी फ्रेंझ क्यूमांट ने लिखा है—चौथी सदी से डिसम्बर २५ को मनाया जाने वाला क्रिसमस नाम का त्योहार वास्तव मे प्राचीन परम्परा मे सूर्य (मकर संक्रान्ती) का त्योहार है। यहां मे सूर्य उत्तर की ओर गतिमान होता है, दिन वड़ा होने लगता है। इसी कारण वड़े दिन का त्योहार भी कहते है। "क्यूमांट ने डिसम्बर २५ लिखा है यह डिसम्बर २३ होना चाहिये भौगोलिक सिद्धान्तानुसार डिसम्बर २३ को उत्तरीय गोलार्ध की मकर रेखा पर सूर्य पहुँचता है, दिन वड़ा होने लगता है। यह मकर संक्रान्ती जनवरी १४ को भारत में मनाते हैं"।

क्यूमांट लिखते है–खगोल ज्योतिष गणित वैद्यक साहित्य विज्ञान आदि विभिन्न विद्याओं के प्रणेता पूर्ववर्ती (भारतीय) लोग है। यूरोपीय लोग ही सारे क्षेत्र में अग्रसर थे यह दम्भपूर्ण प्रतिपादन खोकला लगता है। उस युग में रोम साम्राज्य नही था पूर्ववर्तीय देशो द्वारा रोम स्थापित है। तीसरी सदी तक रोम मे मूर्ती पूजा प्रभावशाली थी किन्तु नव ईसा पंथियो ने पैगन पंथ और उनके अनेक ग्रंथ दमनपूर्वक नष्ट कर दिये। पूर्व इतिहास सब लुप्त हो गया। हिगिन्स का शोध है कि समरकन्द (रूस) में संस्कृत ग्रंथालय था।

उपरोक्त सप्त-सैन्धव-ब्रह्मावर्त-सारस्वत मण्डल के इतिहास जगत मे ध्रुवतारे जैसा प्रकाशमान है वीरवर राणा प्रताप।

विजयी प्रताप

आइये सत्यान्वेषी पाठक वृन्द—मेवाड की ऊबड़ खाबड कटीली धरा पर जिसके प्रतापी पानी ने हिन्दुत्व का पानी रखा । जिसके कर्मयोगी एक बेटे ने राजस्थानी शौर्य का उज्जवल गौरव रख विश्व को स्वतंत्र रहने का सफल मंत्र दिया उस प्रतापी प्रताप के प्रताप को भली भांति पढ कर सत्यामृत पान कर ले । चित्तौड मे कुल सत्रह जौहर हुए है किन्तु विशेश जौहर खिलजी के समय ई० १३०३ में एवं ई० १५३५ मे महमूदशाह के समय प्रचण्ड युद्ध एवं जौहर तथा ई० १५६८ में फरवरी २५ को अकबरी शासन में सवसे बडा जौहर एवं कत्ले आम जिसमें तीन लाख व्यक्ति कछवा भगवानदास की सलाह से मारे गये (नर नारी वृद्ध युवा) यज्ञोपवीत का वजन ७४।। मन तुका था इन मृत व्तक्तियो मे सभी यज्ञोपवीत धारी नहीं थे । इस भयानक विनाश के तीन ही वर्ष वाद ई० १५७२ फरवरी २८ को मेवाड का ध्वस्त राज्य प्रताप को मिला था ।

तत्कालीन मेवाड राज्य की उपरोक्त शोचनीय दशा एवं प्रताप की कर्तव्य निष्ठा पर पाठक अनुशीलन करें ।

ई० १५७२ सितम्वर में जलालखां कुरैशी मेवाड पर चढाई किया किन्तु असफल रह लौट गया । ई० १५७३ एप्रील मे मानसिंह, अक्टूबर में भगवानदास, दिसम्वर मे टोडरमल प्रताप से सन्धि करवाने मिले । प्रताप ने सभी का यथोचित स-कार करके उन्हे टाल दिया । मान हीन सन्धि नही किया । प्रताप के भाई जगमल, सगर, शक्तिसिंह, अकबरी शरण जा चुके थे ।

अकबर ने सिरोही का आधा राज्य जगमल को दिया, सिरोही का शासक सुरताण था सिरोही पर अधिकार करने जगमल को सुरताण से युद्ध करना पडा । जगमल युद्ध में मारा गया । अकबर ने सगर को चित्तौड दिया ताकि भाइयो में युद्ध हो किन्तु प्रजा ने सगर को सम्मान नही दिया ।

ई० १५७२ दिसम्वर में गुजरात में अकवर से अपमानित हुआ मानसिंह ई० १५७३ एप्रील मे सन्धि के वहाने प्रताप से मिला तव अपमान की चोट से पीड़ित मानसिंह प्रताप से गुप्त भेंट कर सानु-रोध निवेदन किया है, मेवाड़ को स्वतन्त्र रखने हेतु एवं तदर्थ गुप्त सहयोग देने हेतु भी। ताकि शेप स्वतन्त्र रहा एक मेवाड़ी मस्तक ही मुगल सत्ता के समक्ष सगर्व उन्नत रहा तो हिन्दू शौर्य का गौरवध्वज अजेय उन्नत रह जाएगा। अकवर के कराल गाल मे अन्य राजा फँस चुके है। आप अडिग नहीं रहे तो हिन्दु जाति का गौरव ही नष्ट हो जाएगा। हिन्दु किस पर गर्व करेगे। अकवर शहशाह-ए-हिन्दुस्तान वन जाएगा इत्यादि निवेदन करना स्वाभाविक आवश्यक था।

इस गुप्त भेंट को शत्रुदूत ने कही से देख लिया हो इस शकावश दूसरे दिन प्रताप द्वारा मानसिह को दिये गये प्रीती भोज में मानसिह द्वारा जानबूझ कर विवाद उत्पन्न किया गया था। क्योकि—

प्रताप से मानसिह की भेंट के वाद, भगवानदास एवं टोडरमल भी प्रताप से सन्धि हेतु मिले थे। इनके साथ प्रताप का कोई विवाद नही हुआ। प्रताप द्वारा मान का अपमान करना रहता तो मान के सम्मान मे भोज का आयोजन न हुआ होता। शत्रु को भी कार्यवश आमंत्रित कर अपमानित करना भारतीय नीति के विरुद्ध है, यह सभी जानते है।

राणा प्रताप सनातन संस्कार–सभ्यता से ओत-प्रोत सुसंस्कृत ब्रह्मक्षत्रीय परिवार का राजपूत (राजपुत्र) था। प्रतिष्ठित राज्य का स्वामी था। निपट लट्ठ गँवार नही था। कि सजातीय सम्मानित राजपुत्र-मुगलदूत का अपमान करके अपने आँगन मेवाड मे वे वक्त रणभेरी वजवा देना। प्रताप युद्ध का इच्छुक नही था। प्रताप ने युद्ध टालने का भरसक प्रयत्न किया है। युद्ध को अधिकाधिक आगे धकेलता हुआ निर्वल मेवाड़ को युद्ध के लिए शक्ति सम्पन्न वना रहा था ताकि आक्रामक से मेवाड़ अपनी रक्षा कर सके।

प्रताप नें मान का अपमान नही सम्मान किया है, भोजन विवाद मानसिंह की चाल थी। सत्य तथ्य मनन करिये—

प्रताप जन्म ई० १५४० मई ९ । अकबर जन्म १५४२ अक्टूबर १६। भामाशाह १५४७ जून २८ । मानसिंह जन्म १५५० दिसम्बर ६। अमर जन्म १५६० मार्च २६। प्रताप राज्यारोहण १५७२ फरवरी २८। मानसिंह का दादा भारमल १५७४ जनवरी २७ को गुजरा तव भगवानदास राजपद पाया है एवं मानसिह कंवरपद पाया है । भगवानदास कुंअर पद पर था इस समय तक कुंअर भगवानदास भी राणा प्रताप के साथ बैठने योग्य नही था, अमरसिह-कुंअर के साथ बैठने योग्य था । कुँअर अमरसिह से एक पद नीचे भँवर पद पर मानसिह था यह कुँअर अमरसिह के साथ भी बैठने योग्य पद पर नही था ।

राज मर्यादानुसार राजा के साथ राजा (बराबरी वाला हो तो) मंत्री के साथ मंत्री कुँअर के साथ कुँअर, भँवर के साथ भँवर बैठता है । भोजन समय निचले पद के भँवर मान के साथ ऊँचे पद के कुँअर अमरसिह को बैठाकर प्रताप ने मान को अधिक सम्मान दिया है। बल्कि-कुँअर अमर के साथ "मुगल दूत मानसिह" को बैठाकर इसे उच्च सम्मान दिया है।

महाराणा प्रताप से मानसिह मिला तब मानसिह राजा नही था भँवर एवं मुगल दूत था मानसिह भी राजवंश का था राजमर्यादा भली भाँति जानता था कि इस समय महाराणा प्रताप के साथ बैठने योग्य वह स्वयं ही नही है राजा भारमल भी दूत के रूप में आया होता तो दूतपद के कारण भारमल के साथ भी राणाप्रताप नही बैठता । यह मानापमान नहीं है, पदगरिमा रक्षण हेतु परम्परागत सुसंस्कृत भारतीय व्यवहार नीति है, इस का पालन आज भी होता है, सदा ही होता रहेगा।

प्रताप से की हुई गुप्त भेंट को मिथ्या सिद्ध करने हेतु भोजन

किये बगैर मानसिंह उठ गया और रोष प्रदर्शित कर प्रताप को चुनौती दिया तव भोज में उपस्थित मेवाडी सामन्त सरदारों ने भी मानसिंह को ललकारे कि अपने फूफा अकवर को भी साथ ले आना।

मानसिंह आयु एवं पद में छोटा था इसलिये इस पर व्यंगात्मक प्रहार किया गया है । ताकि राजपूतो मे स्वाभिमान जागे और वे मुगल आतंक से मुक्त हो देशधर्म की रक्षा हेतु विदेशी विधर्मी मुगल शासन को उखाड़ फेंकने सगठित होने का साहस कर सके।

मान के अपमान का भयानक परिणाम भी हो सकता है यह जानकर भी राजपूतो को चोट मारकर जागृत करने का दु.साहन मेवाड़ ने किया और परिणाम मे मिला "हल्दी घाटी से युद्ध का श्री गणेश।" उदयसिंह के समय पुर, माण्डल, चित्तौड़ अकवर ले चुका था । प्रताप के समय राजस्थान के प्रमुख एक्कीस राज्यो मे से बीस राज्य अकवर शरण हो चुके थे। अकेला इक्कीसवाँ राज्य एक मेवाड ही अकवर के विरोध मे निर्भीक डटा रहा । सर्वप्रथम ई० १५५६ मे भारमल ही अकवर से मिला था ई० १५६२ मे अकवर को डोला देने मे प्रथम यही था । ई० १५५८ से १५६३ एप्रील तक अजमेर जैतारण नागौर मेडता आमेर पोकरण मारवाड़ जोधपुर सिवाना भाद्राजून बीकानेर कोटा बून्दी सिरोही, माण्डूगढ, रणथम्वोर, जैसलमेर, डूंगरपुर, वाँसवाड, (वागड) कालिंजर, मांडलगढ, चित्तौड आदि अकवर के आधीन हो चुके थे। इस प्रकार चारो ओर से खूनी मुगल पजे मे घिरा हुआ ३०० मील की छोटी सी सीमा में बचा हुआ मेवाड़ उजड़ी दशा मे प्रताप को सामन्त सरदारो ने सौंपा । क्योंकि मेवाड़ी प्रजा को विश्वास था कि मुगलिया पंजे से प्रताप ही हमें बचा सकता है । ई० १५६८ मे मेवाड़ में तीसरा अन्तिम जौहर और तीन लाख मानव का कत्ले आम जिसने मेवाड़ को खोखला कर दिया था । प्रताप याने मेवाड़ तथा अकवर याने मेवाड़रहित विशाल भारत दोनो की सीमा, शक्ति, और व्यवस्था पर तुलनात्मक विश्लेषण—

महाराणा प्रताप	बादशाह अकबर
(१) मेवाडी सीमा—शत्रु से घिरा पहाड़ी क्षेत्र केवल तीन सौ मील बचा था।	(१) मुगल सीमा— काबुल, पंजाब, कश्मीर, बंग बिहार. उड़ीसा, गुजरात, उत्तर भारत, मध्य भारत, दक्खन, अर्ध मेवाड रहित राजस्थान का विशाल भू-क्षेत्र था।
(२) सैन्य बल अत्यन्त कम था।	(२) सैन्य बल विपुल था (संख्या अन्यत्र दी है)
(३) धन बल नहीं था।	(३) बाबर हुमायूं एवं खुद की लूट का अपार धन था।
(४) आय घट कर सीमित रह गई थी।	(४) विपुल आय के साधन थे।
(५) आयात निर्यात अवरुद्ध था।	(५) आयात निर्यात निर्बाध था।
(६) अनेक अभाव थे।	(६) अभाव नहीं थे (केवल मेवाड़ का अभाव था)
(७) मेवाड मुगल पंजे में जकड़ा हुआ था।	(७) मुगय राज्य चारो ओर से मुक्त था।
(८) मेवाडी प्रजा अभावग्रस्त जीवन से रुष्ट नही थी।	(८) मुगलिया हिन्दू प्रजा मान हीन जीवन से दुखी थी।
(९) नये टैक्स नही लगाये।	(९) कई नये टैक्स लगाये।
(१०) टैक्स नही वढाये।	(१०) टैक्स वढाये गये।
(११) राजस्व सभी से छटा भाग लिया जाता था।	(११) राजस्व हिन्दू से तिहाई भाग लिया जाता था। (यह कुरानी कायदे के भी विरुद्ध है)
(१२) प्रजा निर्भीक थी।	(१२) प्रजा भयातंकित थी।

(१३) न्याय नीति सभी के साथ समान थी।
(१४) मेवाड़ी प्रजा नही लूटी गई।
(१५) अपराध वन्द हो चुके थे।
(१६) मुस्लिम प्रजा पर "जजिया" जैसे टैक्स नही थे।
(१७) वन्दीगृह खाली पड़े थे।

(१८) केवल सन्देहवश अपराधी दण्डित नही हुआ।
(१९) विलासिता नही थी।

(२०) अफीम, भाँग, शराब आदि कोई नशा नही था।
(२१) नागरिक भेदभाव नही था।

(२२) प्रताप साधनहीन था।

(२३) प्रताप (मेवाड़) अकेला था।

(२४) इस्लाम धर्मियों पर कोई दवाव नही था।

(१३) न्याय नीति में सिया-सुन्नी-हिन्दु भेद था।
(१४) टैक्स एवं खाद्यान्न हेतु हिन्दू परिवार लूटे जाते थे।
(१५) अपराध निरन्तर होते थे।
(१६) केवल हिन्दू प्रजा पर 'जजिया' टैक्स था।
(१७) वन्दीगृह भरे रहते थे। गुप्त वन्दीगृह भी थे।
(१८) संदेहात्मक अपराधी कत्ल किये जाते थे।
(१९) विलासिता वंशानुगत थी।
(२०) सवरस - कुकनार नामक शराव पीता था।
(२१) हिन्दू मुस्लिम सीया-सुन्नी नागरिक क्रूर भेदभाव अवश्य था।
(२२) अकवर समस्त साधन सम्पन्न था।
(२३) अकवर को सभी राज्यों का सहयोग था केवल मेवाड़ को छोड़।
(२४) मन्दिर तोडा मजिद वनाया हिन्दुओ का दमन. शोषण करता रहा।

महाराणा प्रताप और अकबर इन दोनों में परस्पर तत्कालीन विषमताओं पर तुलनात्मक उपरोक्त सत्यान्वेषण सिद्ध करता है कि उस समय मेवाड़ की दशा अति दयनीय थी । किन्तु हाथी जैसा विशालकाय मुगल राज्त चीटी समान मेवाड राज्य को अंकुशरूपी महाराणा प्रताप के कारण नही रौद सका ।

बादशाह अकबर–क्रूर हिंसा दमन प्रलोभन भेद नीति आदि कुटिल प्रबल अनेक प्रयत्न करके भी मेवाड़ में सफल नही को सका । किन्तु अपनें उद्देश्य मे प्रताप अन्ततः सफल विजयी हुआ है ।

एक ग्रथ मे सु प्रसिद्ध प्रकाण्ड विद्वान ने लिखा है तथा दूसरे विद्वान ने उन पंक्तियो को दोहराया है–कि—

प्रताप मे अतुलनीय साहस और अद्वितीत वीरता थी किन्तु शतरंज की तरह बुद्धिबल पर सामुहिक रूप से लड़े जाने वाले आधुनिक युद्धो मे सेनापतित्व करने के उपयुक्त वह कदापि नही था । राणा प्रताप ने जीवन के अन्तिम दिन अपने कठिनाई पूर्ण दिनों की राजधानी चाँवड़ मे बिताए । राणा प्रताप ने अन्त तक अपना निश्चय निबाहा और अनेकों कठिनाइयों कष्टो एवं पराजयों को निरन्तर सहते रहने पर भी उसने प्राण रहते अकबर की आंशिक आधीनता तक स्वीकार नही किया । एक विदेशी विधर्मी विजेता का यो विरोध कर अपने परम्परागत मेवाड़ राज्य की स्वाधीनता को अक्षुण्ण बनाये रखना ही उसने अपना परम कर्त्तव्य समझा था । उसकी दृढता धीरज अडिग आत्मविश्वास तथा अनवरत प्रयत्न संसार के इतिहास की बहुत ही अनोखी और सर्वथा अनुकरणीय वस्तु है ।

स्वाधीनता के उपासकों को, राजस्थान को एकता में बांधने वाले अकबर का खयाल तक नही आया । राणा प्रताप के अनवरत विरोध तथा उसकी अडिगता को ही उन्होने अपना एकमात्र आदर्श बनाया । राणासागा के साथ ही मेवाड़ी सैन्य शक्ति का ह्रास हो गया । विरोधपूर्ण नकारात्मक नीति में हर प्रकार की रचनात्मकता का अभाव सुस्पष्ट हो जाता है । इत्यादि ।

"पराजयों को निरन्तर सहते रहने पर भी" यह तथ्य गलत है। बल्कि अकबर निरन्तर पराजित हुआ है। प्रताप ने अकबर से बत्तीस किले वापस जीत लिया था इस ठोस सत्य विजय को लेखक महोदय जानबूझकर भूले है याने त्यागे है । राजस्थान को एकता मे अकबर ने बान्धा यह लेखन भी गलत है बल्कि राजस्थान के अधिक टुकडे कर गृह कलह करवाया है । प्रताप में रचनात्मकता का अभाव लिखना भी गलत है प्रताप का कार्यकाल रचनात्मक क्रियाशील रहा है । चार सौ वर्ष पहले की युद्ध विधी से आधुनिक [वर्तमान] युद्ध विधी जोडना हास्यास्पद है । उपरोक्त पक्तियो मे प्रताप विरोधी समस्त विचार निः सदेह मिथ्या है ।

महाराणा प्रताप

वंशानुगत ब्रम्हक्षत्रीय, शोडश संस्कारी, मांस मदिरा से दूर, धार्मिक मान्यताओ से ओत प्रोत उस युगानुसार हिन्दुत्वाभिमानी भारतीय शौर्य धर्म कर्म प्रजा एवं मातृ-भूमि की रक्षा मे सदैव कर्त्तव्य निष्ठ निर्लोभी जागृत पहरुआ शासक था। गर्विष्ठ नही था । मेवाडी सामन्त सरदारो ने साग्रह प्रताप को शासन भार सौंपे, उस के पहले ही राजस्थान के अन्य सभी राज्य अकबर की सेवा में समर्पित हो चुके थे । उन राजाओ द्वारा अकबरी पंजे से मुक्त होकर प्रताप की ओर लौटना, प्रताप की नीति का अनुसरण करना, वा प्रताप का साथ देना असम्भव था क्योंकि प्रताप साधन सम्पन्न नही था, उसका मार्ग कष्टप्रद था । इधर कठिन अग्निपरीक्षा थी । उधर वैभवीय चुम्बक था। वे राजागण कायर नही थे किन्तु अकबरी क्रूर आतकवश भयग्रस्त हो भौतिक सुखैश्वर्य की चकाचौंध से चुंधिया कर पदलोभ के गहन गर्त में धसे फसे थे, इन्होने अपने ही भाईयों को अकबरके लिये निर्दयता पूर्वक कुचला है । इन्हे केवल अपने राज्य की चाह थी।

भारतीय धन, जन, धर्म की हानी की चिन्ता इन्हें नही थी । इन्हें भविष्य का कोई विचार नही था कि हमारे गलत आचरण का आर्य-हिन्दू संस्कृति पर अरबी मुगलिया दुष्प्रभाव पड़ेगा ।

इस दुष्प्रभाव का अग्रद्रष्टा महाराणा प्रताप था । ई० १५६८ में चित्तौडी जौहर एवं कत्ले आम में मेवाडी धन जन का अकबर द्वारा अपूर्व लोमहर्षक वीभत्स संहार किये जाने को केवल तीन वर्ष ही तो हुए थे । मेवाडी हजारों महिलाओं के हृदय व्यथित थे पिता माता बहन पत्नी, पुत्र पुत्री बन्धु कुटुम्बियों आदि की हुई अकाल मौत से मेवाडी मर्माहत थे । हजारों बालक वृद्ध युवादि भी हजारो महिलाओं बालक बालिकाओं के जौहर एवं निर्दोष परिजनों के हुए कायराना क्रूर कत्ल को भूले नही थे । जौहर से बने फफोले, तलवार से बने जख्म भरे ही कहां थे । देश धर्म पर हुए जौहर के धधकते अँगारे और मातृभूमि की गोद में बहा उसकी निर्दोष सन्तानो का उबलता खून ठण्डा भी तो नहीं हुआ था । ऐसा उजडा हुआ मेवाड केवल तीन वर्ष में सशक्त सम्पन्न हो जाए यह सर्वथा असम्भव ही था ।

मेवाड़ की ऐसी जर्जर दशा में राज्य लोभी राजा गण अकबर का विरोध कर, प्रताप के सहयोगी नही बन सके किन्तु वे ही राजा-गण अकबर शरण जाने की अपेक्षा स्वयं अपना राजपूत संघ या भारतीय राज्य संघ बना लेते तो वे ही विजयी शासक हुये होते । देश धर्म संस्कृति की दुर्दशा न हुई होती ये राजागण अकबर के लिए संगठित हो युद्ध किये किन्तु अपनों के लिए संगठित या सहयोगी नही हो सके । क्या इनमें ऐसा ही विवेक एवं दूरदर्षिता थी । ये राजागण दूरदर्शी, विवेकशील, राष्ट्र हितैषी रहे होते तो भारत में मुगल पूर्व के रह रहे मुगल विरोधी मुस्लिम राज्यों को अपने सह-योगी बनाकर मुगलो को भारत से खदेड़ सकते थे ।

नासिरखां लोहानी एवं मारुफखां फरगुंदी के नेतृत्व में चालीस हजार पठान कन्नौज निकट बाबर से टकराने डटे हुए थे । भारत से

हुमायूं को खदेडने वाला शेरशाह पठान था, ईरान के शाह तहमास्य की शरण हुमायूं गया एव सिया पंथ स्वीकारा तव सहायता पाया था।

वावर से लड़े युद्ध मे राणा सांगा के साथ मुस्लिम सेना सह युवा नेता हाजीखां पठान एवं महमूद लोदी था। उदयसिह और मालदेव ने हाजीखां को सैन्य सहयोग दिया हैं। ई० १५६८ के चित्तोड़ी युद्ध में किले पर एक हजार पठान मेवाडियो के साथ था। शेरशाह का वंशज हकीमखां सूर तथा जालौरी ताज खांन ने हल्दी-घाटी युद्ध मे मेवाड़ की ओर से प्रचण्ड रणकौशल दिखाया है युद्ध मे प्रताप को वचाकर वाहर भेजने वाला हकीमखां सूर था यह हल्दी-घाटी मे शहीद हुआ तथा मेवाड़ के लिए धन एकत्र करने मे ताजखा भामाशाह का अन्त तक सहयोगी रहा। ई० १७२० के करीव मेवाड मे खजाना खाली रहने से सेनापति पठान आदिल वेग और इसके मुस्लिम सैनिको को वहुत समय तक वेतन नही मिला तव सेना सह आदिलवेग विद्रोही वनकर राणा का अपमान तक किया था। किन्तु खाली खजाने की सच्चाई मालूम होने पर इसने राणा से क्षमायाचना कर वगैर वेतन लिए मेवाड की सैनिक सेवा करने की घोषणा किया एवं मेवाड़ पर चढ़ आये सिन्धिया को इसी आदिलवेग ने परास्त किया था।

ऐसे और भी प्रमाण है कि मुगल विरोधी मुसलमां भारत मे वड़ी सख्या मे थे इन्हे साथ ले राजपूत सगठित हो मुगलिया हुकूमत के फुटवाल को भारतीय ग्राउण्ड से किक मारकर फरगना मे फेंक सकते थे। किन्तु ये राजागण अकवरी डमरू के भौतिक ताल मे वैताल वन चुके थे।

मेवाड़ एवं प्रताप इस्लाम विरोधी नही थे मेवाड़ [प्रताप] एवं मुस्लिम परस्पर सहयोगी थे। प्रताप के सत्तारूढ होने के पहले ही सीमावर्ती, राष्ट्रीय, जातीय, राजनैतिक, सैनिक, आर्थिक आदि समस्त

वातावरण मुगलिया क्रूरतावश भयाक्रान्त दूपित हो चुका था। इतनी विपरीत परिस्थितियों में किसी भी निर्बल-घायल राज्य का, कम समय में सबल होना असम्भव है।

मेवाड़ को निर्बल जानकर ही अन्य राज्यो ने मेवाड़ की घोर उपेक्षा की थी यही मुख्य कारण है । अन्य कारण सत्य नही है कल्पना की कलाबाजी है । इन राजाओ की स्वार्थ और सकीर्ण मनोवृत्ति ने भारतीय धन जन धर्म का घोर विनाश किया। भारत मे मुगल शासन की जडे जमी और हिन्दू-मुस्लिम द्वेश का जहर निरन्तर व्याप्त होने लगा जिसका दुष्परिणाम सदैव होता रहा है होता रहेगा । मुगल भक्त राजाओं की देशघाती घृणित सच्चाइयो को छुपाकर उन पर मित्थ्या प्रशंसा का आवरण डालने का कुटिल यत्न सत्यान्वेषण नही है भ्रमोन्माद है।

आदर्शवान बनने का भाव प्रताप मे कही भी प्रगट नही हुआ है। प्रताप भावुक भी नही था द्रढ निश्चयी अवश्य था राष्ट्र हित में निःसन्देह दूरदर्शी था । स्वधर्मे निधनं श्रेयः तथा कर्मण्येवाधिकारस्य उसका राजयोगी जीवन पथ था यह प्रताप की जीवनचर्या से प्रमाणित होता है। प्रताप का अनुसरण राजागण करते तो भारत में मुगल शासन समाप्त हो जाता, साम्प्रदायिकता नही जन्मती, भारतीय सम्पदा नष्ट नहीं होती. हिन्दू बाहुल्यता नही घटती और भारत के टुकडे भी नही होते। क्योकि मुगल पूर्व के भारतवासी मुस्लिम राज्यों की नीति भारत भारतीयता के लिये मुगलों जैसी घातक नही थी । कृपया पाठक भली प्रकार मनन कर ले।

महाराणा प्रताप राज्यलोभी रहता तो वह भी अकबर शरण पधारकर अन्य राजाओ की तरह शाही शानो शौकत ऐशो इशरत धन दौलत मन्सब जागीर सूबेदारी पाकर परम ऐश्वर्यशाली बन सकता था, कष्टो की छाया भी नही पड़ती किन्तु तब प्रताप भी वन्दनीय न रहकर निन्दनीय रह जाता।

अस्तु प्रताप राजर्षी था मृत्यु तक त्यागी ही रहा. वह राजैश्वर्य एवं सुख वैभव का भूखा नही था यह प्रताप के आद्योपान्त कथानक से सुस्पष्ट प्रमाणित है। मृत्यु समय तक प्रताप ने बत्तीस किले अकबर से छीन लिया था फिर भी वह महलो मे नही रहा चाँवड कुटिया मे रहा धरती पर सोया. पत्रावलि मे सादा भोजन किया मेवाड़ की अधिकांश प्रजा का जीवन भी ऐसा ही था और प्रताप अपनी प्रजा में समरस था। प्रताप महाराणा होकर भी राज महर्षी था। देश धर्म और क्षात्र कर्म की रक्षा में सर्वस्व समर्पित करनेवाला प्रणवीर, त्यागवीर, उद्भट साहसी योद्धा था।

महाराणा प्रताप अपनी शक्ति से कई गुना अधिक प्रवल शक्ति सम्पन्न शत्रु समूह से सफलता पूर्वक चतुर्दिक जूझनेवाला रणवीर, शत्रु के वौद्धिक कुटिल प्रहारों को निरस्त करनेवाला कुशल क्रीड़ा पटु था। अपनी प्रजा के साथ सहजीवन जीनेवाला प्रजावत्सल सजग प्रहरी था। सिंहासन और शिलासन उसके लिये समान थे।

रणथम्वौर की तरह अभेद्य कुम्भलगढ पहाडी दुर्ग प्रताप के पास था किन्तु किले में घिरे रह युद्ध हारना या जौहर, केसरिया कर के मिट जाने के वजाए अपनी सीमित शक्ति की हानि कम हो सफलता अधिक मिले तदर्थ वडी शक्ति को बार बार आक्रान्त कर क्षीण और त्रस्त करने पहाड़ी-जंगली छापामार गुरिल्ला सफल युद्ध निरन्तर करते रहना हितकर समझ वह किले मे छिपा नही रहा। विशाल हाथी पर वार वार आक्रमण कर सिंह सफल होता है वह नीति प्रताप ने अपनाया था। हल्दीघाटी युद्ध में प्रबल शत्रु समूह को भयाक्रान्त कर वच निकलना अपने सीमित साधन ही लेकर विपुल साधन सम्पन्न अकवरी शक्ति से सफल टकराना ओर अपनी नयी युद्ध नीति से अकवरी योजनाएं विफल करना।

इस से सिद्ध होता है कि प्रताप नीति निपुण, रणकुशल था, कुशल सैन्य संचालक एवं राज्य व्यवस्थापक, प्रजा पालक था।

मैदानी क्षेत्र से प्रजा को हटाकर कुम्भल और गिरवा के पहाड़ी क्षेत्र मे बसाया, मैदानी कृषी बन्द करवाया ताकि कृषी और कृषक रक्षित रहे, प्रजा की हानि न हो, प्रजा की रक्षा की चिन्ता कम रहे तथा मेवाड़ मे शत्रु को खाद्य सामग्री नही मिले, उसे पशु आहार में भी अत्यन्त कठिनाई हो, मेवाड़ी प्रजा को रात्रि मे प्रकाश एवं दिन मे धुआ करना मना था ताकि शत्रु को वसाहत का अनुमान न हो सके।

मैदानी वर्जित भूमि पर कृषी करता कृषक पकड़ा गया उसे खुला मृत्यु दण्ड प्रताप ने दिया तब कृषक पुत्र प्रताप की हत्या करने रात्रि मे चुपके से जाने लगा किन्तु इस की पत्नी ने दौडकर पति को देश हित का वास्ता देकर उसे प्रताप की हत्या करने से रोकी है।

प्रताप ने मेवाड़ी सीमा रक्षा एवं गुप्तचरी हेतु विवेकी अश्वारोही तीन सौ वीर नियुक्त किया। मेवाड़ की चतु: सीमा पर प्रशिक्षित नागरिक जत्थे (होमगार्ड) रखा। अन्यत्र पथगामी मुगलिया शत्रु जत्थो पर तीव्र गति से अकस्मात् छापा मार आक्रमण कर लूट खसोट और तहस नहस कर छलावे की तरह ऐसे हवा हो जाते कि शत्रु के वार मे कभी नही आए।

मेवाड़ियो के छापामारी आतकवश मेवाड़ होकर अहमदाबाद-दिल्ली वाला शाही मार्ग बन्द हो गया था। प्रताप की विजय का यह भी सशक्त प्रमाण है।

सीमावर्ती कृषक, नागरिक, पर्वतवासी भील, आदि भी शत्रु की टोह रखते एवं सन्देह होते ही गुप्तचरों को सांकेतिक भाषा मे सूचित कर देते थे।

कुम्भलगढ़, देसूरी, भोमट चप्पन के क्षेत्र मे देसूरी, हल्दीघाटी, चौरवा, देवारी, केवड़ा, झर, दिवेर, हाथीगुड़ा, मुकन्दरा, धांगड़मउ, ऊंदरी, आदि घांटी और नाल मेवाड़ मे प्रवेश के इन कुदरती द्वारो पर सशक्त सैनिक गुप्त चौकियां नियुक्त की गई थी। गोगून्दा से राणकपुर वाली घाटी आज भी भयावनी, बीहड़ है।

ढोलन, नाहरामगरा, मोती मगरी, मचीन, मायरा गुफा, जावरखदान, रोहीडा, उवेश्वर, वदराणा, कमोल, कमलनाथ, आवर-गढ [आवरमाला] चाँवड, चून्दा, ऋषभदेव, सेमल, उनवास, वदमाल, भूताला घाटी, डावून, वलीचा, मालदेव, राहंग, मछावला, भाडेर, जरगा, आदि वन्य स्थानो पर स्थान वदल–वदल कर भूमिगत रूप मे राणा प्रताप परिवार सह रहते हुये आदिवासी पहाडी जीवन जीया है। इसलिये इनके निवास का सही पता खोज करने पर भी शत्रु को कभी नही मिल सका।

कुछ स्थानों पर सुरक्षात्मक भवन बनवाए गए इनमें राजसी सौन्दर्य नही है किन्तु सामरिक दृष्टि से सराहनीय है। मंत्री रामा साहनी के वदले भामाशाह को मंत्री बनाया। प्रजा को निष्पक्ष न्याय दिया। अपराधी को कठोर दण्ड एवं प्रजा को निर्भीक रक्षण दिया। वन्दी गृह खाली रहने लगे, प्रजा निर्भय रहने लगी, इतना स्वच्छ सशक्त शासन सदियों पहले और वाद में भी कही नही रहा।

सभी धर्मावलम्बियो से, सभी जातियों एवं वर्गों से अहंकार रहित अपनत्व मय समान व्यवहार रखा। ई० १५६८ से ही मेवाडी सम्पूर्ण क्षेत्र में घूम घूम कर कष्ट साध्य प्रवास करके भी घर घर अलख जगाते हुए जनता को मातृभूमि के प्रति कर्तव्यनिष्ठ जागृत किया है। कई वार ग्रामीण जनता मे रहा इन की समस्या को अपनी समस्या मानकर उसे सुलझाया। यत्र तत्र छोटी छोटी पाल बसा कर कृषक रूप में उन्हे रख उन से भी शत्रु पर नजर रखवाया तथा मेवाड़ी सैनिक, गुप्तचर, पथिक आदि के लिये विश्राम स्थल भी ये पालें थी। शत्रु को भ्रमित करवाना, उनके सेवक वनकर रहस्य लाने की चेष्टा करना। पशु पक्षी की वोली में भीलों द्वारा दूर तक शीघ्र सन्देश भिजवाना। अश्वारोही के पहुँचने के पहले ही पदगामी धावक पर्वतारोहियो द्वारा निकट मार्ग से शीघ्र पहुँच कर सूचना पहुँचाना। मेवाड़ी सैनिको को मेवाड़ मे कही भी सहायता प्राप्त होना। सीमा–

वर्ती शत्रु की लूट या मौत करना। भामाशाह के निर्देश में कोष एवं शस्त्रादि पर्वतीय विभिम्न कन्दरा-गुफाओं में गुप्त रूप मे धरे जाते थे ताकि उस स्थान पर शत्रु मँडरा रहा हो तब भी शत्रु को वह कोष न मिल सके। इन कोषागारो का व्योरा भामाशाह अपनी बही में लिख रखता था।

प्रताप ने जन सम्पर्क समय प्रजा के साथ कन्द मूल फल भी खाया उनके साथ झोंपड़ी में रह रूखा सूखा भी खाया। प्रजा के साथ अपनत्व दृढ करने प्रताप द्वारा उन्हे गूलर फल अपने हाथ से वितरित करना प्रसिद्ध है। प्रताप ने स्वय को राजपुत्र या राजा नही दर्शाया साधारण जन की तरह प्रजा मे घुलमिल कर रहा था। हल्दीघाटी युद्ध मे घायल हुए वीरों की सेवा सुश्रुसा लोशिल एवं कोल्यारी में राणा प्रताप ने अपने हाथो की है जबकि खुद प्रताप भी घायल था। प्रताप लोहारो के घर पर रहकर शस्त्र निर्माण मे भी श्रमपूर्वक सहयोग दिया है। ऊँच-नीच का भेद त्याग प्रजा के साथ समरस हो कर रहा है।

प्रताप के पहले से मेवाड़ मे मुस्लिम पठान रह रहे है इन्होने मेवाड़ को जी जान से सदैव सहयोग दिया है। प्रताप के समय से प्रतिज्ञा बद्ध गाड़िया लोहारों में मुस्लिम परिवार भी वचन बद्ध साथी है कि मेवाड़-चित्तौड पर मेवाडी ध्वज एवं शासन नही होगा तब तक वे कही स्थायी रूप सेनही रहेगे। हजारों गाडिया लोहार आज भी गाडियों पर है। आज चार सौ वर्ष बीतने पर भी वे अपना प्रण निभा रहे है।

प्रताप के समय चाँवड़ में प्रताप के आश्रय मे निसारुद्दीन नामक प्रमुख चित्रकार था। जिसकी चाँवड़ शैली प्रसिद्ध हुई थी।

जोधपुरी रावल चन्द्रसेन राठोड़ की तरह प्रताप ने प्रजा को पीड़ित नही किया, जबरन धन एकत्र नही किया, टैक्स नही बढाया, नया टैक्स नही लगाया। प्रजा एवं युद्ध की आवश्यक पूर्तियो हेतु

पर्याप्त धन एकत्र करने के लिये मेवाडी सीमा से जानेवाले मुगलिया जत्थे लूटने के अलावा मेवाड़ के बाहर मुगलिया क्षेत्र के मालवा गुजरात ढूँढाढ आदि प्रदेशो को लूटने कुशल सहायको के साथ भामाशाह, ताज खां जालोरी [पठान] एवं ईडर के नारायणदास को हल्दीघाटी युद्ध के पहले और बाद मे भी भेजा था ।

प्रताप की उपरोक्त योग्यताओ का ही फल था कि मेवाडी प्रजा ने स्वय मे महाराणा प्रताप को देखा है। प्रताप प्रजा का महाराणा राजा नही था वरन उनके परिवार का मुखिया सदस्य जैसा था कि जिस के पसीने की बून्द पर मेवाडियो ने अपना खून सोत्साह वहाया है और जव प्रताप का खून टपका तो उसके प्रतिशोध की प्रतिस्पर्धा मे सैकडो मेवाड़ी अपना सिर निछावर करने रोषोन्मत्त हो शत्रु पर काल की तरह टूट पड़ते थे ।

बनवासी प्रताप का पता प्राप्त करने मेवाडियो को शत्रुओ ने अनेक लोभ दिये क्रूरतम यातनाए दी किन्तु पुरुष तो क्या वल्कि स्त्रियां और बालक भी विचलित नही हुए। इनाम की लालच और मन्सब्र का भूखा सरदार सलीम अपने सैनिक जत्थे के साथ प्रताप की खोज मे भटक रहा था कि रात्रि मे वन मे पहाड़ की तलेटी पर एक कुटिया दिखाई दी। सलीम के आदेश मे साथी सैनिको द्वारा झोपड़ी अचानक तोड दी गई, भीतर एक महिला दो बालक थे, महिला को लोभ दिये किन्तु प्रताप का पता नही बतलाई। उसके एक बालक को सैनिक ने ऊंचा उछाल कर धरती पर पटक मारा, माँ मौन रही। इनायत खां ने दूसरे वालक को आकाश मे उछालकर खिलाडी की तरह भाले की नोक पर- वालक को फास लिया मानव खून की ताजा गर्म धार इनायत खा स्वाद लेकर पी गया, और माँ का दिल फौलाद वन गया वह ऐसी चुप हुई कि जैसे जन्म से ही मूक हो लेकिन उस अकेली वेबस महिला को वस्त्रहीन करके साथी सैनिको के भालो को आग में लाल सुर्ख तपा कर महिला के नग्न

शरीर को तव तक छेदा गया जब तक उसमें प्राण थे। उस महिला ने अत्यन्त असहनीय कष्टमय वीभत्स लोमहर्षक कुर्बानी अपने देश के लिये निर्विरोध दे, दी किन्तु देश के पहरुआ प्रताप का पता नही दी। ऐसा था उन देश भक्त वीरांगनाओ का मनोबल।

मेवाडी प्रजा मे प्रताप के लिये ऐसी आत्मीयता थी। ऐसी घटनाओ को एक विद्वान ने नाटकीय गप्प माना है ताकि घटना प्रभावहीन हो सके। किन्तु घटनाये नाटकीय हो सकती है किन्तु सत्यरहित नही है।

अनेक भीलों ने और कई नागरिकों ने खुद की रोटी खाकर भी राज्य की सेवा की है। यत्र तत्र पर्वतो पर रहकर दूर दूर तक शत्रु पर नजर रखते थे। नगे पैर नगे बदन, केवल एक पोतिया [लगोटी] बांधे कड़क धूप हो, बर्षा हो या ठण्ड हो रात हो या दिन हो ऊँची दुर्गम पहाड़ी की चढाई पर मीलों लम्बा रास्ता बड़ी तेजी से तय कर सन्देशा पहुँचाते थे। प्रताप की सफलता में मेवाड़ी प्रजा का सबल सफल सोत्साह सहयोग मुख्य आधार है किन्तु इस सहयोग के लिये प्रजा को प्रोत्साहित करने वाला पदयात्री प्रताप ही है। अधिकांश मेवाड़ी सेना मातृभूमि के लिए स्वेच्छया अवैतनिक जूझने वाली भी थी मुगल सेना वैतनिक थी किन्तु मुगल स्वार्थ ने इस्लाम प्रचार की भावना में इन्हे युद्धोन्मादि बना दिया था।।

मेवाड़ी जनता से प्रताप को अकूत प्यार मिला है आज भी है। प्रताप राजपुत्र नही प्रजा पुत्र बनकर सभी को अपना आत्मीय बनाया है। खुद को प्रजा का स्वामी नही, बल्कि सेवक समझकर प्रजा के साथ उन्ही के जैसा जीवन जीया है। इसी कारण वह सदा रक्षित एवं अन्ततः सफल विजयी हुआ है। प्रताप के पर्वतीय निवास के समय मुगलों से कई बार प्रताप और उसके परिवार की रक्षा भीलो ने एवं मेवाड़ी प्रजा ने प्राणपण से की है क्योकि प्रताप अपनी प्रजा को दिल से प्यारा था।

एक बार प्रताप की माँ को मुगलों से बचाने हेतु पानड़वा का भील सरदार पूंजा राजमाता को पीठ पर लादे हुए पहाड़ी खन्दक पर छलाग भर के लांघ गया था अगर फिसल जाता तो दोनो की मौत निश्चित थी। इस मातृ रक्षा के उपलक्ष मे भील सरदार को 'राणा' का सम्मानप्रद सम्बोधन प्रताप ने दिया था। ऐसी उपरोक्त रचनात्मकताओ का धनी महाराणा प्रताप था।

आधुनिक युद्ध प्रणालि से चार सौ वर्ष पहले की प्रताप की युद्ध व्यवस्था की तुलना मीन-मेख हास्यास्पद है। प्रताप द्वारा पूर्वजो की मर मिटने की चार सौ वर्ष पहले की प्रचलित युद्ध नीति को छोडकर किलों का मोह तोड़कर मैदानी एव छापामार युद्धनीति की सफलता हेतु सैन्य शिक्षण, सैन्य संचालन तत्कालीन परिस्थितियो के अनुसार परिवर्तन सर्वथा उचित ही था।

Guerilla-swift march-sudden attack scorched earth Pal:cy

इस नयी युद्ध प्रणालि ने मुगल युद्ध नीति को सदा ही पराजित की है अकबर को मैदानी-छापामार युद्ध होने की कल्पना भी नही थी।

ई० १५६८ से १५७२ तक प्रताप ने जन जागृति का कार्य किया। १५७२ से १५७३ जून तक साढे तीन वर्ष मे जूझारु कट्टर मेवाड़ी सशस्त्र सैनिक बावीस हजार तैयार किया। प्रताप स्वतन्त्रतापूर्ण सगठन का पक्षधर था जैसा कि राणा सांगा के समय एक सौ बीस राज्यो मे परस्पर था। अकबर मेवाड़ी पानी को नही परख सका एव प्रताप के पूर्ण समर्पण की जिद्द पर अड़ा रहा इसी कारण प्रताप अकबर समझौता नही हो सका।

प्रताप कुशल राजनीतिज्ञ एवं कुशल राज्य व्यवस्थापक था। ई० १५६८ में जौहर सहयुद्ध की भयानक विभीषिका देख चुका था। प्रताप युद्ध का इच्छुक नही था किन्तु युद्ध की घटा घनघोर वन बरस ही पड़े तो उससे प्रतिरक्षा के लिए निरन्त प्रयत्नशील अवश्य था।

प्रताप के पास धन बल और सैन्य बल कम था इसलिये भी अकबर की ओर से आए सन्धि दूतों से सद्व्यवहार करके प्रताप ने युद्ध को टालने या आगे धकेलने का भरसक प्रयत्न किया है।

प्रताप का आरम्भिक शासन स्थल गोगून्दा चारो ओर पर्वतीय प्राचीर से वेष्ठित होने के कारण गोगून्दा मे रहकर मुगल आक्रमण से मुकाबला करना या बच निकलना असम्भव था इसी कारण मुगल आक्रमण के समय प्रताप ने गोगून्दा त्याग कर बीहड गहन वन मे कुम्भलगढ पर निवास किया किन्तु गोगून्दा या कुम्भलगढ से युद्ध न कर हल्दी घाटी के मैदान को रणक्षेत्र चुनना प्रताप और उसकी युद्ध परिषद की रणकुशल सूझबूझ का प्रमाण है।

हल्दी घाटी मैदान में युद्ध, और वही पर्वतीय ओट में सैन्य सुरक्षा मुगलो की पकड़ से बचाव के उद्देश्य की पूर्ती में यह स्थान पूर्ण उपयुक्त सिद्ध हुआ है तथा अकबरी युद्ध योजना असफल हुई है।

गोगून्दा या कुम्भलगढ में रह युद्ध करता प्रताप तो प्रताप का प्रताप ही समाप्त हो जाता। हल्दी घाटी तीर्थ न बनती, प्रताप आदर्श वन्दनीय न होता।

जो लेखक हल्दी घाटी युद्ध में प्रताप को विजयी नही मानते है अडियल अकवर की तरह वे लेखक भले ही प्रताप को विजयी न मानें किन्तु वस्तुत प्रताप पराजित भी नही हुआ। मुगल विजयी नही हुए। हालात से प्रताप विजय का ही पलडा भारी मालुम होता है। प्रताप की विजय ही नि:सन्देह सिद्ध होती है। इसलिए मुगलों पर मेवाडियों का घना आतंक अवश्य रहा है। मेवाड़ी छोटी सी शक्ति ने मुगलिया बड़ी शक्ति से निश्चय ही सफल टक्कर ली है यह ध्रुव सत्य है।

मुगल पराजय को छुपाने चाटुकार बदायूनी मुगल विजय लिखे तो आश्चर्य नही है किन्तु "लेख की अन्तर्ध्वनी मे मेवाड़ का विजयी होना ही सुस्पष्ट सिद्ध होता है।" हल्दीघाटी युद्ध में मुगल सैन्य सख्या कम थी तथा घाटी मार्ग संकरा होने से तोपे नहीं लाई जा

सकी यह दोनों ही कुतर्क है । ई० १५६२ मे वीरमती से हुई पराजय एवं १५६८ में चित्तौड़ आक्रमण के समय कई महीने कड़ा संघर्ष हुआ था अ-परिमित धन जन की हानि के वाद वीरान ध्वस्त चित्तौड़ अकवर को मिला था यह कटुतम अनुभव अकवर भूला नही था । जलाल खां, मानसिंह, भगवानदास, टोडरमल इन चारो कुशल सन्धि दूतो द्वारा प्रयास करने पर भी प्रताप का अकवर शरण नही आने का अर्थ है प्रताप के पास अकबर से टकराने की ताकत है यह सोच कर ऐसे रहस्मय शत्रु प्रताप पर अकबर द्वारा विशाल सेना भेजना ही नीति सम्मत है । कम सेना भेजना मूर्खता रहती । किन्तु पराजय को ढाँकने सैन्य सख्या कम लिखी जाना गलत है । वारूदी अस्त्र रहित पाँच या दस हजार का सैन्य दल ही अकवर ने भेजा था यह सडक छाप मदत्ती गप्प है । अकबर का मजाक उड़ाना है ।

प्रताप की वास्तविक शक्ति का पता अकवर को नही मिला । कभी नहीं मिला । हल्दीघाटी मे दोनो पक्ष के हाथी थे अतः हाथी पर लादकर छोटी तोपें युद्धस्थल पर लाना सम्भव है वाद मे ये तोपें पहियों पर वैठाई जाती हैं। तोप आने का प्रमाण अमर काव्य वंशावली मे एवं राज रत्नाकर शिला लेख मे है, इन प्रमाणो को गलत कहना ही गलत है । पंक्ति प्रस्तुत है—प्रक्षेपण ज्वलन यंत्र धरैः प्रचण्डै स्थूलाननै (१५ श्लो) गोला निपेतुरयसो ज्वलन–प्रयुक्ता (१) गोलानु खर्व धनियोजित तीव्र वेगान (१८) प्रक्षेपणीयक मयो गुटिकास्त्र माशु (१९) अर्थात इस युद्ध मे तोपो ओर बन्दूक, तमंचों का प्रयोग अवश्य हुआ है । उक्त दोनो रचना मेवाड़ी है इस लिए इन्हे काल्पनिक गप्प कहना दुर्भावना है ।

प्रताप का समकालीन कवि वीकानेरी माला सांदू की इस युद्ध पर लिखे काव्य की पक्तियों मे से एक—सोर पलीता गड़ड़िया हथनाल हवाई । याने तोप और बन्दूक का प्रयोग अवश्य हुआ है । इन वारूदी घातक विनाशक अस्त्रो के रहने पर भी विशाल मुगल सेना

घाटी में पराजित हो कर भागी है । इसलिए मेवाड में इस जबर-दस्त शर्मनाक मुगलिया दुबारा हुई पराजय को छुपाने या उसे साधा-रण बतलाने, हल्दीघाटी युद्ध से मुगलिया तोप और बन्दूके कुछ लेखकों ने खुद की पुस्तको मे गायब कर दिये है सैन्य संख्या भी बडी तादाद मे घटाये है । हल्दीघाटी युद्ध स्थल पूर्ण नियोजित नही था । राणा प्रताप ने किले मे रह युद्ध लड़ने की परम्परा त्याग कर विषम स्थल को रणक्षेत्र चुनकर अकबर और उसके सलाहकारो की युद्ध योजना ध्वस्त कर उन्हे बौद्धिक शह दे दिया ।

मेवाड–प्रताप का दमन करने विशाल सेना सहित अकबर अज-मेर पहुँचा किन्तु इस आँधी के आने से मेवाड़ भयान्वित नही हुआ यह जानकारी पा कर अकबर भयान्वित हो मेवाड पर आक्रमण करने खुद जाने का साहस नहीं कर सका अजमेर मे युद्ध योजना बना कर मानसिह, महावत खा आदि अनेक सेनापतियो सहित "अस्सी हजार" का विशाल सैन्य दल बारुदी अस्त्र सह, मेवाड़ ध्वस्त करने रवाना कर खुद अकवर सीकरी वापस भाग गया यह सोच कर कि अगर मुगल पराजय हुई और मैं मदद करने या बदला लेने तत्काल नही पहुँचा तो यह मेरे लिए बडी लज्जा जनक दशा होगी इसलिये अकबर अजमेर मे रुके रहने का भी साहस नही कर सका । हल्दी-घाटी युद्ध मे हुई मुगल पराजय के समय युद्ध मे स्वयं अकबर रहा होता तो उसके जीवन मे मेवाड़ मे यह दुबारा पराजय रहती । इस शर्मनाक पराजय का मुगल शासन पर विपरीत प्रभाव अवश्य पड़ता ।

अकबरी योजनानुसार विशाल सेना सहित मानसिंह मेवाड में प्रवेश कर माण्डलगढ में कुछ दिन ठहरा कि श्यायद प्रताप साथियो सह भयातुर हो हमारी शरण दौडा आयेगा लेकिन अकबरी कल्पना ही दौड़ती रही प्रताप की हवा तक भी नही आई अर्थात मुगल सैन्य सज्जा की विशालता के आतंक रूपी गरल को मेवाड़ पी गया ।

मानसिंह आगे बढा । गोगून्दा से कुछ दूर बनास नदी के उत्तर तट से मोलेला एव खमनोर के मध्य मुगल सैन्य शिविर था। प्रगट मे मेवाड शान्त था। मुगल सेनापतियों को पूर्ण विश्वास हो चला था कि अब तो प्रजा सह प्रताप भयविव्हल हो हमारी शरण भागता आएगा या कही भाग जायगा । किन्तु उद्‌भट साहसी प्रताप और प्रजा तनिक भी विचलित न हो युद्धोत्साही बने रहे।

मेवाड नरेश महाराणा प्रताप की सरलता का यह भी एक प्रमाण है कि खमनोर में मुगल सेना का पहुँचना सुनकर स्वयं महाराणा प्रताप अपने आश्रित किन्तु आयु से आदरणीय भूतपूर्व ग्वालियर नरेश रामशाह तंवर की हवेली पर पहुँच परामर्श हेतु अन्य सामन्त सरदार भी यही एकत्र किये गये। जैसलमेर जालोर सिवाना रणथम्बोर चित्तौड़ आदि किलों मे रह युद्ध जौहर, केसरिया से हुए विनाश को याद कर पुरानी किलाबन्द युद्ध प्रणाली वदलने का निश्चय किया गया।

मरण युद्ध की परम्परा त्याग दी गई। युद्ध हेतु साथियों से हुई मंत्रणानुसार किले मे बन्द रह कर युद्ध लड़ने की पुरानी नीति त्याग कर अपनी उपलब्ध सेना और युद्ध सामग्री ले कर गोगून्दा से आगे वढ कर लोहसिंह कोल्यारी एव हल्दीघाटी के मध्य भू भाग पर मुगल सेना से आठ दस मील की दूरी पर महाराणा प्रताप सेना सह पहुँचा था। यही परिक्षेत्र रणक्षेत्र बना था। लोहसिंह और कोल्यारी में मेवाड़ी सैन्य शिविर थे। यहां ही घायल सैनिकों की चिकित्सा का प्रबन्ध था।

अकवरी सैन्य दल को विश्वास था कि बारूदी शस्त्र सज्ज विशाल मुगल सैन्य को देख कर, चितौड़ी बिनाश को याद करके प्रताप भय-भीत हो मुगल शरण मे आ फंसेगा। किन्तु वह नही आया। मुगलो को आशा नही थी कि प्रताप मुठ्ठी भर साधन ले कर ही मुगलिया

तूफान से टकराने पहाड की तरह अड जायगा। प्रताप की इस प्रचण्ड निर्भीकता से मुगल सैन्य समूह में भय व्याप्त हो रहा था।

मानसिह संभावित रणस्थलो का सामरिक दृष्टि से निरीक्षण करने वन में भ्रमण कर रहा था कि मेवाडी सेना के गुप्तचर दुरसा एवं भाखरोट ने सघन झाडियों से अचानक निकल कर मानसिंह को बन्दी बना लिये थे। यह सूचना प्रताप को मिलते ही प्रताप तत्काल वहां पहुँच कर मानसिंह को बन्धन मुक्त करवाकर कहा कि यूं अकेले को घेर कर आक्रमण करना राजपूती शौर्य नही है। इन की वीरता रणक्षेत्र मे देखेगे।

यह प्रताप की क्षात्र धर्मीय नैतिकता का प्रमाण है। मानसिंह की तरह यदि प्रताप पकडा गया होता तो उसे अविलम्व मौत के घाट उतार दिया जाता या ग्वालियर के किले की काल कोठरी मे बन्द किया जाता।

"प्रताप सेनापतित्व करने योग्य कदापि नही था"। यह आक्षेप हास्यास्पद है। प्रताप प्रतिष्ठित राज्य का राजपुत्र था राजनीति और युद्ध उसके लिए मनोरंजन थे। वह रण कुशल खिलाडी था मेवाड़ दमन के मुगलिया योजना रूपी अनेक फुटबॉल मेवाड रूपी ग्राउण्ड पर हर वार प्रताप ने किक मार कर अकवर पर गोल किया है। अक-बर एक भी गोल नही कर सका।

प्रताप ने जौहर एवं युद्ध में कट मरने का हानिप्रद अन्धानुकरण त्याग कर सु-नियोजित रूप से युद्ध प्रणालि बिलकुल ही वदल कर हल्दी घाटी युद्ध लडा था। अकवरी सलाहकारो को परम्परानुसार पूर्ण विश्वास रहा होगा कि प्रताप के पास कई किले है प्रताप किसी किले मे रहकर ही युद्ध कर सकता है। खुले मैदानी युद्ध की आंशिक कल्पना भी मुगल नही कर सके। किन्तु प्रताप की नयी रणनीति से अकबरी युद्ध योजनाएं पहली ही धोबी पछाड़ में धूल धूसरित हो गई।

मुगल दल हक्का बक्का पशेमां हो देखता रह गया और प्रताप छलावे की तरह आया और विजय लूट कर लौट गया।

मोलेरा से खमनोर-भागल एव हल्दीघाटी के उत्तरी क्षेत्र मे मानसिंह ने मुगल सेना की व्यूह रचना किया था। हरावलिया पंक्ति मे बारहा हाशम के नेतृत्व मे चूजा-ए-हरावल मे जांबाज खूंखार नौ जवान अस्सी (८५) योद्धा थे, इन जवानो का किसी से रिश्ता नही था अपह्लत दुग्ध पायी पुष्ट शिशुओ का एकान्त मे पालन कर मास मेवा दूध आदि ही आहार देकर उन्हे क्रूर हिंसाचार मे प्रवीण किया जाता था। [ऐसे युवक से क्रूर पद्धति द्वारा मोमियाई नामक औषधी मुगल हकीम बनाते थे इससे प्रमाणित होता है कि अकबर मानव भक्षी भी था। इस लेखक ने मोमयाई और उसके गुण एक हकीम के पास देखा है सीखा है।]

हरावल पंक्ति के पीछे की पक्ति में गयासुद्दीन, आसफखां, वदायूनी, जगन्नाथ कछवा, आदि अपनी सेना के साथ थे। इन दो दीवारो के पीछे तीसरी पात में कछवा माधवसिंह, अल्तमश, महावत खा, ख्वाजारफी बदक्शी, वहलोल खां, पायन्दा कज्जाक, शहाबुद्दीन करोह, अलीमुराद उजवेग, एवं कछवा मानसिंह के साथ हाथी पर शहजादा सलीम भी (दर्शक) था। दाँए पक्ष पर सैय्यद अहमद, सीकरी का सलीम चिश्ती का भाई इब्राहिम, सैय्यद राजू एव मुजाहिद बेग था। बाँए पार्श्व पर काजी खा (गाजी) बदक्शी, शेख मन्सूर एवं साभर का लूणकरण था। अन्तिम पृष्ठ रक्षक चन्द्रावल मे महतर (मेहरतरग) खा विशेश दक्ष सेना के साथ था। गज सेनापति हुसेन खां कुशल फीलवानो के साथ प्रसिद्ध हाथी-खासा गजमुक्ता, गजराज रमणदार, आदि का दल लिये हुए था। उक्त सेनापतियो मे से कुछ नाम छूट गये होगे। राजपूत सेनापति चार इनमे कछवा तीन हैं, मुस्लिम सेनापति अठारह या उन्नीस थें। अर्थात अकवर को राजपूतो पर अधिक विश्वास था इस मित्थ्या सराहेना की धज्जियां उड रही है

क्योकि राजपूतों से चारगुना अधिक संख्या में मुस्लिम सेनापति थे। मुस्लिम सेना थी।

इन बावीस सेनापतियों के तहत अस्सी हजार सेना ही अवश्य थी। इनके तहत पाँच हजार या आठ–दस हजार सेना थी यह लिखना लेखक का बौद्धिक दिवालियापन है। चौगुनी मुगल सेना पर चौथा भाग मेवाडी सेना हमेशा ही भारी प्रमाणित हुई है। इसके प्रमाण भी है।

युद्ध हल्दीघाटी में नही हुआ उसके निकट क्षेत्र में हुआ। सोरोखेरा, माछेरा, खमनोर–भागल, रूपजी का गुढा, हर्बिया, सिन्नादा, मोलेरा, तनतोल आदि तक का भूभाग रणक्षेत्र था।

मेवाडी योजनानुसार मुगल सेना घाटी मे बढ जाती तो बुरी तरह मारी जाती और इसी भयवश मानसिंह घाटी में प्रवेश करने का साहस नही कर सका। प्रतीक्षा से उकता कर कुछ ही दिन बाद मेवाडी सेना ही घाटी के पूर्वोत्तरीय मुहाने से बाहर निकली और पूर्व योजनानसार मैदान में अपना अपना मोर्चा त्वरित बना लिये, केसरिया सुनैरी सूर्यध्वज गज पर फहरा रहा था।

युद्ध के आरम्भ की हरावलिया जबरदस्त जिम्मेदारी का महत्व–पूर्ण भार अति विश्वस्त जांबाज बहादुर को ही दिया जाता है कि उसके प्रचण्ड प्रहार से शत्रुपक्ष थर्रा जाए। यह उच्चतम भार चण्ड के वंशज को दिया हुआ है। किन्तु इस युद्ध में वह गौरवशाली भार महाराणा ने मुसलमान शेरशाह सूर के वंशज हाकिम खां सूर को सौपा था। यह इस बात का सुस्पष्ट प्रमाण है कि प्रताप–मेवाड़ मुस्लिम विरोधी नही था। हकीम खां के साथ उस के मुस्लिम सैनिक भी थे। इनके साथ मेवाडी प्रथानुसार हरावलिया, चन्दावत, कृष्ण–दास, सलूम्बर अपने दल सहित था देवगढ का चूड़ावत रावल सांगा, बेदनोर का राठौड़ जयमल का पुत्र रामदास एवं मुकुन्ददास भी साथ थे। बाँए पक्ष पर पाली का मानसिंह सोनीगरा (शोनगढ) वडी सादड़ी का चन्द्रवंशी झाला मानसिंह बीदा (अज्जावत) था। दाँए

पक्ष पर तंवर रामशाह अपने तीनों पुत्र शालिवाहन, प्रतापसिंह एव भवानीसिंह के साथ था। मध्य मे महाराणा प्रताप के साथ पानडवा का भील सरदार पूजा, सरदारगढ का भीमसिंह डोडिया, झाला मानसिह सज्जावत दिलवाडा, राठोड़ शकरदास, दुर्गादास, जगन्नाथ परिहार, जगन्नाथ महसानी, कल्याणसिंह परिहार, जयमल महत्ता; रतनसिंह खेतावत, जयचन्द महता बच्छावत, गोपीनाथ पुरोहित, जगन्नाथ पुरोहित, चारण जैसा, केशव, प्रयाग भाखरोत, कवि रामा सान्दू, कान्हा सान्दू (बीकानेरी), राठोड़ कल्ला का पुत्र वाघसिंह, रावत नेतसिंह, राणा के भाई कान्हा और कल्ला, ईडर का नारायणदास, जालोरी ताजखां, शमशेर खां, मेवाड़ी नगा, जगा, मेघा कावड़िया, गोविन्द, गोपाल; शेरसिंह, मानसिंह–सीसोदा, आदि सामन्त, सरदार, सहयोगी, प्रतिष्ठित नागरिक भी साथ थे। इनके साथ उल्लेखनीय सैन्यदल नही थे। अधिकाश वीर स्वेच्छया प्रताप को सहयोग देने आए थे। चन्दावल की पिछली रक्षित सेना भाई ताराचन्द के साथ भामाशाह के नेतृत्व मे थी। इन पर दुहरा कार्यभार था। युद्ध समय मुगल सेना के डेरे लूटना तहस नहस करना और फिर रणक्षेत्र पर पहुँच कर शत्रुओं को धराशायी करना। यह दोनो वीर बन्धुओ ने कुशलता पूर्वक सफल किये कि समस्त मुगल शिविर ध्वस्त एव युद्ध से लौटे क्लान्त मुगल सैनिक खाद्य के घोर अभाव मे भूख से अति–त्रस्त हो गये थे "है न प्रताप मे रण कौशल।"

महाराणा प्रताप युद्ध का इच्छुक नही था। युद्ध को टालने का भरसक यत्न किया किन्तु युद्ध आ ही पहुँचा तब उस समय तक सेना और युद्ध सामग्री जो एकत्र हो सकी उसी को लेकर प्रताप रणक्षेत्र पर पहुँचा। मेवाडी जनशक्ति ने सोत्साह प्रताप को आत्मीय सहयोग अन्त तक दिया है। जो देशहित मे अविस्मरणीय अनुकरणीय आदर्श है कि इसतरह से देश का हर नागरिक शासक को सहयोग दे तो शासन का पतन नही होगा, सकट का दमन होगा। इसी जन सहयोग ने प्रताप को सदैव-रक्षित एव विजयी बनाया है।

ई० १५६८ मे चित्तौडी विनाश में समस्त मेवाड़ी प्रजा का कोई न कोई कुटुम्बी सम्बन्धी निर्दोष मारा गया है। उन मृतको के परिजन हल्दीघाटी युद्ध मे मुगलो से प्रतिशोध लेने एव प्रताप को प्राणार्पण सहयोग देने विभिन्न सभी जातियो के अनेकों लड़ाके दल जिनमे भील अधिक थे-अपने अस्त्र लेकर स्वय स्फूर्त आए थे। इनमे-धनुर्धर अधिक थे। बाण सही-निशाने पर पहुँचे इसलिये बाण की लकड़ी विशेष वृक्ष की हल्की एवं मजबूत ली जाती है इसमे मछली काटा एवं क्ररगस के तीन पख लगाते है। कमठ–धनुष जैसा होता है। प्रत्यचा का मध्य–भाग तीन अगुल चौडा होता है। इस पर पत्थर धर कर वाण की तरह चलाते है इस का छूटा पत्थर बड़ी सख्त चोट करता है, इसे सिद्ध हस्त-ही चला सकता है। लाठी, गोफण, पाषाण आदि जिसके जो हाथ लगा उसी को हथियार बना लिया था। इन्हे पर्वतीय वृक्षो एव शिलाखण्डों की ओट मे नियुक्त किया गया था ताकि शत्रु के प्रहार से बचे रहकर शत्रु पर प्रहार कर सकें। उस युग मे पर्वतमाला आज की तरह श्रीहीन (नंगी) नही थी प्रचुर वनश्री से आवृत्त थी। दोनो पक्ष की सेनाएं मोर्चा बान्धे खड़ी रही। मुगल सेना आक्रमण का साहस नही कर सकी। तब मेवाडी हरावलिया हाकिम खां सूर ने प्रताप का शखनाद सुनते ही प्रचण्ड वेग से मुगल हरावल पर आक्र–मण कर दिया। सूर के भयंकर प्रहार का प्रतिकार करते करते मुगल हरावल के क्रूर हिसक पशु जैसे खू खार ८५ जवान लड़ाको की वह सुदृढ दीवार चूजा–ए–हरावल बुरी तरह ढह गई और अपनी ही पिछली हरावल पक्ति पर जा गिरी सैयद हाशम घोड़े के पैरो मे गिरा कुचला गया मगर उठकर भाग छूटा था ये दोनो दल परस्पर धकिया ही रहे थे कि सूर के दल ने मकई के भुट्टे जैसे काटने शुरू कर दिया कि इस कटाई से मुगल दस्ता हो गया खस्ता कई भाग छूटे कई मारे गये। मेवाड़ी सेना के दाए पक्ष से रामशाह तँवर का दल, बाँए पक्ष से मानसिंह सोनीगरा का दल मुगलों पर बिजली की

तरह टूट पडा। इनके भीषणतम प्रहार से मुगल सैन्य भयातुर हो रण से भागने लगा था। "महाराणा प्रताप" काजी खां के दल को चीरता हुआ शत्रुओं मे वढता गया। अपनी ओर के शत्रुदल पर विजय पा कर रामशाह प्रताप की सहायता को पहुँचा। तरवार की अविश्रान्त ऐसी चपलता मुगलों ने शायद पहली बार देखी थी। काजी खां का अंगूठा कटते ही यह गाजी वाजी छोड रण से भाग छूटा। सीकरी का शेखजादा भी अपने दलसहित भाग निकला था सूर को रोकने आसफखां बढा तो उस पर हुए वार से घोडे की गर्दन कट गिरी, आसफखां गिरकर भागा तो इसकी मदद के वहाने बदा-यूनी भी जान बचा कर चल दिया। आसफ की मदद को बढ़ा कछवा जगन्नाथ और माधो सिंग लेकिन दूसरी ओर शेख मन्सूर भी बेतहाशा भाग चला और वनास से आगे १०-१२ मील जाकर दम लिया था, इल्तमश भी हौसला खो बैठा और साम्भर का लूण करण भी सैयदों के डेरे मे शरण लिया। लूणकरण अपने दल सहित भेड़ वकरियो के झुण्ड की तरह भाग कर दाहिनी ओर पहुँचा। (यह बदायूनी ने लिखा है)

"मुन्तख्वाब उत्तवारीख" भाग २ पृ. २३१ से २३८ तक बदायूनी की पंक्तियां विचारणीय हैं।" इस युद्ध में आसफखां से वदायूनी ने पूछा कि शत्रु पक्ष के हिन्दू सैनिक को कैसे पहचानकर उस पर तीर चलाऊं ताकि अपने पक्ष का हिन्दू न मारा जाए। आसफखां ने जवाव दिया कि तुम तीर चलाओ हिन्दू किसी भी पक्ष का मरे अपने लिए सवाव (पुण्य) है। मुगलिया मुस्लिम सैनिक अपनी ही सेना के हिन्दू सैनिको को मौत के घाट उतारने में अपना और अपने धर्म का भला मानते थे। मुगलों के आने के पहले जो मुसलमान भारत में कही शासक थे उनमें अपने हिन्दू सैनिक-सहयोगी को मार देने की नीति नही थी शेरशाह की सेना में आरा वलिया बंग बिहार के हिन्दू कई सैनिक थे। सहयोगी हिन्दू सैनिक सरदार आदि को मार देना

अकबरी नीति रही है ताकि हिन्दू संख्या घटे। अकबर के लिए युद्ध में अपने ही हिन्दु भाइयो से जूझनेवाले हिन्दू सैनिक अपने साथी मुस्लिम सैनिक द्वारा विश्वास में मार दिये जाते थे इस विश्वासघाती तरीके से हिन्दू साथियो को मार डालने की धोकेबाज नीति रीति का गुप्त आदेश अकबर ने मुगल सैनिकों को अवश्य दिया है। अकबर के आदेश के वगैर ऐसी हत्याएं होना असम्भव है। अत. अकवर हिन्दू और मुस्लिम दोनो मे समान नीति रखता था इस झूटी तारीफ की पोल वदायूनी की कलम ने दी है खोल लिहाजा मित्थ्या कलम ने मातम मना लेना चाहिये।

वदायूनी अरवी मुसलमां नही था, उसने आखों देखा वर्णन मुगल पराजय एवं मेवाड़ी प्रताप की विजय वडी खूबी से लिखा है जो प्रगट मे मुगल विजय भासती है।

मेवाड़ी हाथी "लूणा" मुगल सेना को रौन्दने लगा था इसे खदेड़ने हुसेनखां ने गजमुक्ता हाथी को मुकाबले पर लगाया किन्तु लूणा की मार से गजमुक्ता लुडकता मुढकता भाग गया। इधर लूणा के महावत को गोली लगने से वह लूणा को लेकर लौट गया। तब रामशाह के पुत्र प्रताप तवर ने मेवाड़ के प्रसिद्ध लड़ाका हाथी रामप्रसाद को मोर्चे पर भेजा, इसे पछाडने हुसेनखा ने "खासा" हाथी भेजा लेकिन वह पहली ही टक्कर खाकर लड़खडा कर भाग छूटा तब हुसेनखा रणमदार और गजराज नाम के प्रसिद्ध दो हाथी एक साथ रामप्रसाद पर ठेल दिया किन्तु रामप्रसाद के प्रबल प्रहार से दोनो हाथी रण से भाग छूटे तब इसी अवसर मे रामप्रसाद का महावत तीर लगने से धराशायी हो गया और उसी क्षण हुसेनखां अपने हाथी पर से रामप्रसाद पर कूद पड़ा एवं उसे कावू में कर साथ ले गया।

महावतखा, वहलोलखां, कछवाह जगन्नाथ एवं माधोसिंह के संरक्षण मे मानसिंह, शहजादा सलीम को साथ लिए एक ही हाथी

पर ठोस लोहे से बने हौदे में रक्षित सवार हो अपनी सेना के मध्य मे था । महाराणा प्रताप के इशारे पर मुगल सेना को रौंदता चीरता हुआ चेतक मानसिंग के हाथी तक पहुँचा कि मानसिंह का अग्रिम रक्षक बहलौलखां प्रताप को रोकना चाहा किन्तु प्रताप के सशक्त हाथ की ३७ll सेर वजन की तरवार के एक ही प्रहार से शिरस्त्राण कवचसह बहलोल और उसका घोड़ा दो टुकड़े हो गये । यह इस बात का भी प्रमाण है कि प्रताप की भुजा में प्रहार शक्ति अति सशक्त थी ।

[प्रताप और चेतक दोनों ही कवचधारी थे चेतक के मुंह पर हाथी का मुखौटा था । प्रताप दोनों हाथों से दो तलवार एक साथ चलाता था। तलवार का वजन साड़े सैंतीस सेर होता था, प्रताप का भाला पूर्ण लोहे का सवा मन वजन का सात हाथ लम्बा होता था, प्रताप दो हत्थी एवं नागोरी राठोड अमरसिंह देडहत्थी कहलाए हैं।]

महाराणा प्रताप को शत्रुओ के मध्य पहुँचा हुआ देख हाकिमखां सू-सूर, तंवर रामशाह, और झाला मानसिंह प्रताप की ओर बढनें लगे । उधर मुगलिया तम्बू डेरे लूट पाट कर भामाशाह भी युद्ध भूमि पर आ पहुँचा था । मुगल सेना के दाँए–बाँए और हरावल दस्ते (तीनों मोर्चे) बुरी तरह टूट गये थे कई सैनिक बनास नदी के पार ६-७ कोस दूर तक भाग कर अपनी जान बचाए थे बहलोल धराशायी हुआ और प्रताप की एड़ का संकेत पाते ही चेतक ने मानसिंह के हाथी के मस्तक पर अगली टाँगे टिका दिया और प्रताप ने मानसिंह पर साग से वार किया, किन्तु शत्रु के प्रहार से चेतक लंगड़ा हो असतुलित हो गया इसलिए प्रताप का निशाना चूक गया फिर भी १। मन वजनी सांग से महावत मारा गया एवं लोहे की ठोस अम्वारी (हौदा) मोच खा गई सलीम के साथ मानसिंह हौदे में दुबक कर बच गया एवं अपने हाथी को पीछे हटाते हुए प्रताप पर जबरदस्त आक्रमण करने का रोषपर्ण आदेश देता गया। चारों ओर शत्रुओं से घिरा

हुआ प्रताप दोनों हाथ से प्रचण्ड वेग से तलवार चलाकर शत्रुओं को मार स्वयं को बचाते रहा । इस संकटावस्था से प्रताप को वचाने में रामशाह तंवर कछवा जगन्नाथ के हाथो मारा गया । कछवाहे अभी तक दर्शक थे ताजादम थे । कछवा माधोसिंह भी तलवार चमकाने लगे थे । शत्रुओ में घिरे हुए प्रताप और चेतक निरन्तर घायल हुए जा रहे थे । अविरल रक्त प्रवाह से जीवन शक्ति को निगलने मृत्यु आतुर हो रही थी । भाले के तीन, तलवार के तीन, गोली का एक ऐसे सात घाव विशेष गहरे थे चेतक भी बहुत घायल और लंगड़ा हो चुका था । इन पर मुगल दवाव वढता ही जा रहा था कि पूर्व योजनानुसार वड़ी सादड़ी का चंद्रवंशी अज्जा झाला मानसिंह वीदा जो प्रताप का पृष्ठ रक्षक था, शत्रुओं को काटता प्रताप के निकट पहुँचा कि तभी दूसरी ओर से हाकिमखा सूर भी प्रताप को बचाने अपना सर कटा हुआ समझकर तलवारों की बौछार मे शत्रुओ को वुरी तरह कत्ल करता हुआ दीवाना, प्रताप के निकट पहुँच चेतक की लगाम खीच उसे युद्ध से बाहर की ओर मोड़ दौड़ा दिया और रणसमूह से निरापद बाहर करने मार्ग प्रषस्त कर हकीमखां लौट आया इधर प्रताप की छेगी (मेवाडी राज चिन्ह ध्वज युत छत्र का छोटा रूप) जैसी छेगी एवं कलंगी (सूर्य का प्रतीक) आदि राज चिन्ह जैसे बनावटी चिन्ह झाला मानसिह ने खुद पर लगा लिये जो पूर्व योजनानुसार इनके पास धरे थे । प्रताप पर लगा हुआ ध्वज छत्र उतार कर झाला ने अपने पर लगाया, यह कथन पूर्ण मित्थ्या है क्योंकि राजमर्यादा का घोर अपमान है छत्र उतारना, अतः प्रताप के छत्र ध्वज को कोई हाथ भी नही लगा पाया एवं ध्वजा से पहचानकर ही मुगलिया दो सैनिक प्रताप का पीछा किये थे । इधर झाला मानसिंह प्रताप का प्रतिरूप धारण कर शत्रुओं को भ्रमित कर अपनी ओर मोड़ता हुआ विकट संहारक बन गया । हकीमखा भी शत्रुओं को काल

की तरह समाप्त किए जा रहा था । हकीमखां सूर, झाला मानसिंह, मानसिंह सोनीगरा, रामशाह तंवर आदि अनेक वीर सीसोदिया अथवा मेवाड़ी नहीं थे फिर भी अकबरी अन्याय के विरुद्ध मेवाड़ के लिए प्राणार्पण युद्धरत हो रहे थे। अन्य सभी जाति के लोग ऊँच नीच भेदभाव रहित हो सभी का केवल एक ही एकात्म संकल्प था, मुगलिया दानवी पंजे से मेवाड़ को बचाना।

[आज अछूत या हरिजन कहा जानेवाला उस युग का शूद्र भी युद्धों मे सहयोगी रहा है किन्तु छुआछूत का वर्णन या विवाद कहीं पढ़ने में नहीं आया।]

सभी जाति और वर्ग के लोगो को प्रताप की नीति पर जूझते हुए देखकर शक्तिसिंह को आत्मग्लानि हुई, मुगल सेवा को ठुकराकर प्रायश्चित करने हेतु भाई प्रताप की रक्षा करने दौड़ चला और प्रताप का पीछा करने वाले खुरासानी, मुल्तानी इन दो सैनिको को समाप्त कर प्रताप के चरणो मे अश्रुपूरित जा लिपटा। चेतक वलीचा नाला लाँघने बाद दुनिया को ही लाँघ गया, प्रताप पीड़ित तन मन थे कि भाई के मिलन से दुख दर्द भूलकर तत्काल उत्साही हो उठे। दोनों भाई गले मिले। शक्तिसिंह ने अपना घोड़ा प्रताप को देकर वहां से विदा किया। इस उपलक्ष मे शक्तिवंश को प्रताप ने राणा वल्लभ की उपाधि से सम्मानित किया है। मृत यवन सैनिक के घोड़े पर सवार हो शक्तिसिंह रणक्षेत्र पर मुगल दल मे पहुँचा। प्रताप ने अपने जख्मो की मरहम पट्टी निकटस्थ ग्राम कालोडा मे करवाई तथा चेतक के अन्तिम संस्कार का प्रबन्ध भी करवाया।

मेवाड़ी प्राणार्पण लड रहे थे युद्ध चरमसीमा पर था। रणक्षेत्र से मुगल सेना की दयनीय भगदड देखकर बची हुई सेना को रोकने, बिखरी हुई सेना को एकत्र हो युद्धोत्साही करने चन्द्रावलिया महतर खां ने भेड़िये की तरह धोके बाज़ी का ढोल बजवाकर झूठा ऐलान करवाया कि बादशाह खुद जंग लड़ने आ रहे हैं। यह सुनकर

निकटस्थ मुगल सैनिक लौटे और बड़े जोश से लड़ने लगे। लेकिन कोसो दूर भागे सैनिक और सेनापति वापस नही आ सके। वह युग वायरलेस का तो नही था, कौन किधर भागा पता नहीं था।

'ज्येठ की धधकती ज्वाला सी धूप से दहकती लू भरी सनसनाती हवा,' तपती 'चट्टाने' कटीली सूखी झाडियां खजूर खेजडा बोरडी वबूल आदि के बनवासी गाछ और पीली माटी मे खेलने वाले मेवाडियों ने मुगल फौज को भागने पर मजबूर कर दिये थे किन्तु महतर खां द्वारा झूठा ऐलान मैदान पर वची मुगल सेना को अपनी ताजादम रक्षित चद्रावल सेना को साथ लिये पुनः युद्ध करने बढा दिया था। यह देख थकित मेवाड़ी पुनः उत्साह भर युद्ध रत हो उठे थे।

मुगलिया वन्दूक और तोप के दहकते गोले मेवाडियों को विचलित नही कर सके। युद्ध पुनः जोश पर आया। मानसिंह सोनगरा, रामशाह के तीनो पुत्र एवं हकीम खां सूर शहीद हो गये। झाला मानसिंह (अज्जा) वीदा, शीस कट जाने बाद भी जूझार हो अनेक शत्रुओं को मौत के घाट उतारा है। दोनो पक्ष के हजारो व्यक्ति मारे गये।

वदायूनी की लेखनी से ज्ञात होता है कि रणस्थल पर प्रताप लौट आया था। सायंकाल तक घमासान युध्द हुआ, सूर्य अस्त हो रहा था, दोनो पक्ष विखरने लगे थे। पाठक—बदायूनी के लेख में मेवाडी—प्रताप की विजय स्पष्ट देखे। यथा—पृ० २३८

[१] मेवाडियो के आक्रमण से हमारी अधिकांश सेना भाग छूटी जो वनास नदी से आगे ५–६ कोस दूर तक भागती गई (यह दूरी ८–१० कोस भी रही होगी।)

[२] धूप इतनी तेज थी कि खोपड़ी मे भेजा उवल रहा था (मेवाड़ियो का भेजा भी उवला होगा किन्तु ये देशभक्त थे।)

[३] लू आग के समान बरस रही थी हमारे (मुगल) सैनिको मे चलने फिरने की शक्ति नही रह गई थी (उतनी ही गर्म लू मेवाड़ियों के लिये भी थी, शक्ति का ह्रास पराजय का प्रमाण है।)

[४] ऊबड खाबड़ टेढे मेढे रास्ते, काँटो भरा झाड़ झंखाड वाला मैदान होने से "हमारे घुडसवार भी हमले का जवाव देने मे असमर्थ थे" (याने पैदल सेना तो निष्क्रिय जैसी हो गई)

[५] मेवाडियो की जानी पहचानी सरजमी थी मेवाड़ियो के बेतहाशा हमले से हमारी फौज के पैर उखड गए। (याने पराजय ही हो रही थी, डिस्को नही था।)

[६] अगर सैय्यद डटे न रहते तो हमारी हार बुरी तरह होती (यह हार होने की स्पष्ट स्वीकारोक्ति है इससे अधिक स्पष्ट लिखना मौत को दावत देना होता, वदायूनी अकवर के आश्रित था)

[७] "मेवाडी सेना के दोनों पक्ष (हरावल–चंदावल) एकत्र हो गये राना पहाड़ो मे लौट गया" अर्थात मेवाडी विजयी हुए थे इसी कारण मेवाड़ी सैन्यदल एकत्र हो लौट सका है। मेवाडी पराजित हुए होते तो इधर उधर भागते या मुगलो द्वारा कैद किये जाते या कत्ल किये जातें किन्तु मेवाडी विजयी हुये थे इसी कारण पराजित मुगल मेवाडियो का पीछा नही कर सके।

[८] "राना" पहाडी के पीछे घात लगाए खड़ा होगा इस भय से हमारे सैनिको ने "राना" का पीछा नहीं किया (मुगल पराजित थे इसलिए विजयी मेवाडियों का पीछा करने का साहस नही कर सके)

[९] रामप्रसाद हाथी को लेकर मैं (वदायूनी) अकबर को भेट देने सीकरी जाते समय मार्ग मे बागोर, माण्डलगढ, आमेर आदि नगरो मे मुगल विजय का समाचार जहा भी जनता को मैंने सुनाया मेरी इस वात पर किसी ने भी जरा भी विश्वास नही किया। (अर्थात प्रताप की सुस्पष्ट विजय का सुखद समाचार पहले ही सर्वत्र प्रचारित हो चुका था। इस प्रकार वदायूनी ने जनमुख से प्रताप को विजयी प्रमाणित किया है। वदायूनी के साथ सलीम भी लौटा हो)

[१०] घायल राणा मरहम पट्टी करवाकर युद्ध भूमि पर लौट आया था। प्रताप की अन्त तक उपस्थिती का प्रमाण वदायूनीं ने दो

बार दिया है (१) राना पहाड़ों में लौट गया, लौट गया लिखा है भाग गया नही लिखा (२) राना पहाड़ी पीछे घात लगाए खड़ा होगा। यह दोनों बात प्रमाण देती है कि प्रताप युद्ध से भागा नही था, घायलो की मरहम पट्टी जरूरी थी युद्ध बाद मेवाड़ी विजयी थे इसी कारण एकत्र होकर लौट सके थे। प्रताप को मरहम पट्टी के लिये भेजना प्रताप का भागना नही है।

[११] अपने शिविर पर लौटने पर मुगलों के होश उड़ गये तमाम माल असबाब खाद्य सामग्री मेवाडी लूट ले गए। रक्षक मारे गये, डेरे तम्बू शामियाने रावटी छोलदारी आदि सभी तहस नहस उजड़े पड़े थे। इस विनाश का प्रतिशोध पराजित मुगल विजयी मेवाडियों से नही ले सके। युद्ध से क्लान्त, पराजय की ग्लानि, घायलों की दुरावस्था, भूख की व्याकुलता, भोजन की चिन्ता आदि से पीड़ित शेश सेना को मानसिह गोगून्दा ले गया क्योकि गोगून्दा प्रताप पहले ही खाली कर गया था। गोगून्दा मे प्रवेश करते समय मुगल दल को प्रताप ने जानबूझकर नही रोका क्योकि मुगल सैन्य खन्दक से निकलकर कूंए में गिर रहा था (गिर ही गया,) प्रताप की योजना सफल हुई। अर्थात —

(१२) गोगून्दा में हल्की सी झड़प हुई थी। मेवाड़ियों की बची खाद्य सामग्री मुगल सैन्य एक ही दिन मे खाकर सफाचट्ट कर दिये दूसरे ही दिन से भोजन के लाले पड गए थे।

[१३] गोगून्दा में मुगल। मेवाडियो के आक्रमण के भय से रातभर जागते रहे तथा वसाहत के चारों ओर गहरी खन्दक और ऊंची दीवार तत्काल बनाए ताकि मेवाड़ियो के आक्रमण से बचाव हो सके तथा राती वाहा मे मेवाडी दीवार न फांद सके।

[१४] गोगून्दा पहले ही चारो ओर पहाड़ी से घिरा है, पहाडी से बाहर जाकर खाद्य सामग्री लाने का साहस मुगल नही कर सके। चार महिने गोगून्दा में मुगल घिरे डरे-डरे दुबके पड़े रहे।

[१५] खाद्य के लिये निकटस्थ मेवाड़ी ग्राम, जनहीन ग्राम भी लूटने का साहस मुगलों में नही था।

[१६] मुगलो को खाद्य सामग्री किसी भी मूल्य पर नही मिल सकी।

[१७] मुगल—कन्द मूल फल माँस आदि खाकर ही चार महिने विताए, कई वीमार हो गए, कई मौत की गोद में भी सो गए।

[१८] इनकी दुर्गती के समाचार अजमेर पहुँचे तव अजमेर से महमूद खां सैन्यदल साथ लाया। और गोगून्दा में स्वयं कैद मुगल सेना एव आसफखां मानसिह आदि को अपने रक्षण मे साथ ले गया। यह मुगल पराजय का सशक्त सफल प्रमाण है।

[१९] प्रताप से बुरी तरह पराजित होने के कारण ही अकवर ने मानसिंह और आसफखा को दरवार मे आने से मना कर दिया एवं दोनो का मुंह देखना भी पसन्द नहीं किया (तवकाते अकवरी एवं अकवरनामा) मुगल पराजय का यह भी सशक्त स्पष्ट प्रमाण है।

[२०] महाराणा प्रताप मारा नही गया।

[२१] महाराणा प्रताप वन्दी नही बनाया गया।

[२२] महाराण प्रताप सन्धि हेतु नही मनाया गया।

[२३] महाराणा प्रताप मेवाड़ से भगाया नही गया।

[२४] मेवाडी धन–जन की अधिक हानि नही हुई।

[२५] मुगलिया धन जन और प्रतिष्ठा की हानि वहुत वड़े प्रमाण में हुई।

[२६] मुगलिया सैनिक या सेनापति को अकवर द्वारा इनाम, मन्सव, खिताव. खिलअत जागीर, आदि कुछ भी नही दिया गया क्योकि मुगलिया शाही वडी ताकत, मेवाडी छोटी सी ताकत से वुरी तरह पराजित हुई थी। रामप्रसाद हाथी पर सलीम को सकुशल सीकरी पपहुँचाने पर वदायूनी को इनाम में अकवर ने छयानवें अशरफी दिया। उस समय जो हाजिर थी।

[२७] हल्दी घाटी में मुगल पराजित हुये थे। इसी कारण मुगल राज में कही भी किसी भी प्रकार से खुशी नही मनाई गई।

ऊपर लिखे तत्थ्यो से पाठकों को सन्देहरहित विश्वास हो जाना चाहिये कि महाराणा प्रताप अवश्य ही विजयी हुआ है।

अकबर की तरह अडियल अन्धड़ तूफानी लेखक प्रताप की स्पष्ट विजय को विजय नही माने तब भी (उनकी तसल्ली के लिए) दोनों बराबर रहे इसमें भी मेवाडी पलडा भारी रहा है इसीलिए मुगल फ़ाकाकशी सह, गए वर्ना मेवाड़ को लूटकर चौपट कर देते और सैकडो निर्दोष मार दिये होते किन्तु यहाँ तो मुगल दुबके पडे रहे।

मानसिंह प्रताप का सजातीय है इसलिये प्रताप से नरमी रखता है यह गलत शिकायत आसफ ने अकबर से की थी खुद का महत्व बढवाने वर्ना बदायूनी ने लिखा है, इस युद्ध मे मानसिंह ने पूरी वहादुरी दिखलाई। अभियान का नेता राजपूत रहने पर भी राजपूत सेना और सेनापति पर मुस्लिम सेना और सेनापतियो की वाहुल्यता सदैव रहती थी यहां भी महावतखा, आसफखा, काजीखां, महतरखां मुख्य चार थे, मानसिंह अकेला था। बगावत करता तो मौत तैयार थी। प्रताप से समझौते के लिये मिला तब मान द्वारा प्रताप को अड़े रहनेपर प्रोत्साहित करने मे मानसिंह की मशा रही हो कि प्रताप का दमन होने से मुझे यश एवं आमेर राज्य, राजपूतो मे वर्चस्व पाएगा और यदि प्रताप का दमन नही हुआ तो राजपूती एक नाक ऊंची रह जायगी।

महाराणा प्रताप युद्ध से भागा था यह मिथ्या आक्षेप प्रताप के शौर्य को धूमिल करने का कुटिल यत्न है। प्रताप भागने वाला होता तो रण के पहले ही समझौता कर लेता या दुर्भेद्य कुंभलगढ़ किले में रह द्वार वन्द कर बचाव कर लेता किन्तु, प्रताप ने ऐसा न कर, शार्दूल की तरह उसने शत्रु-समूह को बार-बार पटखनी दिया है। अपने से अत्यधिक सैन्य शक्ति सम्पन्न अकबर से सफल टक्कर लेने

की छापामार नयी रणनीति अपनाकर अन्ततः प्रताप पूर्ण सफल हुआ है।

पहाड़ी आश्रय लेकर हल्दीघाटी मे युद्ध लड़कर लौट जाना पूर्व नियोजित था;एव,छापामार नीति का श्रीगणेश था। अपने से अधिक वलवान हाथी पर सिंह वार बार अकस्मात आक्रमण कर उसे क्षत-विक्षत कर धराशायी कर देता है। यही नीति हम प्रताप मे पाते है। तत्कालीन मेवाड़ी परिस्थितियो के कारण शत्रु से टकराना और वच निकलना यह नीति नितान्त उपयोगी सिद्ध हुई है। युद्ध से घायल प्रताप का मरहम पट्टी के लिये हटना पलायन नही था नवनीति पालन था भागने के लिये तो साधन पम्पन्न भी भागे है-यथा—

(१) मारवाड़ का प्रसिद्ध राठोड़ राव गांगा जालोर अली शेरखां गाजी खां पर चढ़ाई किया। चार दिन युद्ध कर पराजित हो भाग चला था।

(२) अस्सी हजार अश्वसेना का स्वामी राठोड़ मालदेव ई० १५४४ मे शेरशाह सूर के आक्रमण समय अजमेर से, फिर सुमेल से, फिर गिर्री से भी रात के अन्धेरे में साथियो को छोड़कर भाग ही गया था। वर्णन राठौड़ में पढिए।

(३) शेरशाह जोधपुर की ओर वढा तव जोधपुर का किला छोड़-कर राव मालदेव पीपलण पहाडी पर जा छुपा था। भागना इसे कहते है।

(४) अपने ही वश के जयमल राठोड से मेड़ता छीनने मालदेव ने आक्रमण किया तव जयमल ने स्वयं को मालदेव का सेवक वत-लाया किन्तु मालदेव ने युद्ध छेड दिया और जयमल के प्रत्याक्रमण से घवराकर चाँदा वीरमदेवोत से कहा चाँदा मुझे किसी तरह जोधपुर पहुँचा दे। भागना इसे कहते है।

(५) जोधपुर वसानेवाला राठौड़ जोधा चित्तौड़ से मण्डोर तक लगातार भागा है फिर मण्डोर से भी भागा था।

(६) सूजा की मदद के वहाने शरफुद्दीन आमेर पर चढाई किया तव भारमल पहाड़ी में जा छुपा और वही से समझौता किया था यह भी भागना ही हुआ।

(७) फलौदी का शासक मोटा राजा उदयसिंह ई० १५६२ में मारवाड के शासक छोटे भाई चन्द्रसेन मे राज्य छीनने लोहावटी पर युद्ध किया। यह घायल हो घोड़े से गिर गया था इसे इसके सेवक हद्दाखीची ने अपने घोड़े पर युद्ध से व्राहर भेजा था। याने भागना स्पष्ट है।

(८) जलालखां से लड़े युद्ध में चन्द्रसेन राठोड़ युद्ध से निकल गया था। यानें भागा है।

(९) ई० १६४७ में वलख में पठानो का दमन करने औरंगजेव और मिर्जा जयसिंह गये थे लेकिन चार करोड़ रुपया हर्जाना देकर जान वचाए थे। भागे थे।

(१०) ई० १६५८ मे धरमत युद्ध में औरगजेव और मुराद की सेना से पराजित हो जसवतसिह राठोड़ भागकर जोधपुर पहुँचे थे इस पर माँ और पत्नी ने काफी लताड़ा था क्योकि भागे हुए थे। घोड़ा जोड़ा पागड़ी, मुठवाली' र मरोड, पाटण मे पधरायगा रकम पांच राठोड़, राठोडो का पाटण युद्ध से भागने का प्रमाण है।

(११) ई० १६६६ मे मिर्जा राजा जयसिह काफी श्रम करके भी वीजापुर नही ले सका, सूवेदारी छिन गई। वापस लौटना पडा। पुत्र रामसिंह की मन्सवदारी भी छिन गई थी। मुगलिया तीस लाख रुपया एव "जयसिह का एक करोड़ रुपया खर्च हुआ था" खेलना और पुरन्दर पर आक्रमण-समय भी जयसिंह का निजी रुपया काफी लगा था। अर्थात मुगल विजय के लिये राजाओं को निजी रूपया वड़ी संख्या मे खरचना पड़ता था।

(१२) ई० १७१६ में सवाई जयसिह कछवा पचास हजार सेना साथ लेकर भरतपुर के चूड़ामन जाट को वीस महीना घेरे रहा, दो

करोड़ रुपया खर्च किया असफल हो लौटा था। यह भी भागना ही है।

(१३) ई० १७४८ मे ईश्वरसिंह कछवाहा सरहिन्द के पास अब्दाली से हारकर भागा था फौजी सामान भी फेंक आया था।

(१४) ई० १७५० मे मराठों ने जयपुर पर चढाई किये तव राजा ईश्वरीसिंह कछवा, विषपान कर दुनियां से ही भाग गए।

(१५) ई० १७६१ मे माधोसिंह कछवाने कोटा पर चढाई किया। भटवाडा मे युद्ध हुआ। माधोसिंह अठारह सौ घोडे तिरहत्तर तोपे, सत्रह हाथी छोड़कर भाग आये थे।

(१६) तौरावटी पाटण मुकाम पर महादाजी सिंधिया से राठोड और कछवाहे सयुक्त लडकर भी हार गए। तेरह सौ ऊट तीन सौ घोडे इक्कीस हाथी एक सौ पाँच तोप महादाजी के लिए सादर भेट छोड भागे। भागना इसे कहते है।

महाराणा प्रताप युद्ध से भागा नही था। घायल प्रताप अपने घावो की मरहम पट्टी करवाकर युद्ध मे लौटा है। उसकी अन्त तक उपस्थिती बदायूनी की लेखनी से होती है। घायल चेतक एव महा-राणा प्रताप को अत्यन्त उचित समय पर युद्ध से निकाला गया है। विलम्ब होने पर चेतक रणक्षेत्र में प्राण छोड देता और प्रताप की दशा युद्ध मे पृथ्वीराज या हेमू जैसी हो जाती प्रसगवश सेनापति बद-लना पराजय या पलायन नही है। प्रताप के राजचिन्ह उतारकर झाला मानसिंह ने धारण किया यह कथन असत्य है। राजा पर लगे राजचिन्ह उतारना राजा का घोर अपमान है। शत्रुओ मे घिरे हुए अश्वारूढ व्यक्ति पर से दूसरे अश्वारूढ व्यक्ति द्वारा खनकती तल-वारो के वीच राजचिन्ह उतार कर धारण करना इस क्रिया के होते समय असावधानी होते ही शत्रु के घातक वार से मृत्यु होना निश्चित है अत प्रताप के अंगरक्षक वीदा मानसिंह के पास मेवाडी राजचिन्ह जैसे चिन्ह थे उन्हे संकटावस्था मे धारण करने की स्वीकृति मेवाड़ी

युद्ध परिषद ने दी है। इस कार्य में मृत्यु होना अधिक सम्भव है यह जानकर ही प्रताप के बच निकलने, तथा युद्ध को पूर्ण गतिवान रखने प्रताप के प्रतिरूप की प्रतिष्ठा रखने में अज्जा झाला मानसिंह ने कोई कमी नही रखा है वल्कि इसका सिर कट जाने वाद भी इसके धड़ ने कई शत्रुओ को चण्डी के खप्पर मे झोका है ऐसी तन्मयता मेवाडियो मे थी। झाला मानसिह का एव हकीमखा सूर का स्मारक चॉवड में विद्यमान है। अकवर ने अपने किसी हिन्दू मन्सबदार वफादार का कही कोई स्मारक नही बनाया है। हकीम खां सूर की मजार रक्त तलाई क्षेत्र मे विद्यमान है। आज भी अपने हजारों शहीद साथियो के साथ जैसे ताजा घटी घटना की चित्रावलि दर्शक के नेत्रपलट में उभार देती है और सम्वेदनशीलता मानवता अश्रुसुमन अर्पित करही देती है। उन देशभक्त शहीदों को हमारी भी श्रद्धांजलि अर्पित है।

मुगल सेना अस्सी हजार के मुकाबले मेवाडी सेना वावीस हजार (चौथाई) थी। किन्तु मुगल सेना पर भारी थी क्योकि मेवाड़ी सैनिक केवल वेतन भोगी ही नही थे वे देशभक्त भी थे।-

सुमेल गिररी के प्राङ्गण से राठोड़ मालदेव के भागजाने पर भी राठोड़ी सरदारों ने मुट्ठीभर सैनिक साथ ले शेरशाह पर भीषण प्रहार किया था कि शेरशाह को मुट्ठीभर वाजरा याद हो आया था। यह राठोड़ी प्रहार शक्ति वेतन की नही थी स्वाभिमान की थी। इसी तरह मेवाडी देशभक्ति जनशक्ति प्रताप के साथ थी उसी के वलपर प्रताप सफल हुआ है यही जनशक्ति जव दुर्वल हुई तव विवश हो राणा अमरसिंह को जहाँगीर से समझौता करना पड़ा। यह विश्व के लिये संगठन और विघटन के नतीजे की एक मिसाल है।

वारूदी शस्त्र सज्ज अस्सी हजार मुगल सेना की वावीस हजार मेवाड़ियो द्वारा हुई शर्मनाक पराजय की गर्द झाड़ने किसी लेखक ने २००–३०० का मरना लिखा है। किसी ने दोनों पक्ष के १००० लिखा है जो हास्यास्पद है। २०० से २००० व्यक्तियो के कट मरने से तहा

खून रक्त ताल नही बनाएगा। उस माटी पर पानी या सरकारी बूचड़ खानो से जानवरों का रक्त ४–६ टँकर भर कर ले जाइये, वहा वहाकर ताल बनाकर परीक्षण करलें कि ताल वनने मे कितना रक्त वहा होगा।

हल्दीघाटी का धरातल सख्त नही है वालू मिश्रित नर्म है ऐसी जमीन पर जहा भी रक्त गिरेगा शोशित हो जाएगा। रेतमाटी का तल भाग रक्त से तर होने के वाद ही धरा पर रक्त वहेगा। रक्त शीघ्र ही गाढा होकर सूखता है इस प्रक्रिया के बाद भी चारो ओर के ढलान से रक्त वहकर वड़े भाग पर एकत्रित हो तालाव का आकार लिया है, कुण्ड का नही। इसलिए वह स्थान आज भी रक्त ताल' कहा जाता है। उस माटी से तिलक करो वह माटी है वलिदान की। युद्ध मे हजारो व्यक्ति, सैन्य, पशु, हाथी, ऊँट, घोड़े आदि वहां कटे है। मेवाडी १४०००, मुगल ४६००० योग ६०००० के लगभग व्यक्ति मारे गए है। इतने व्यक्तियो के रक्त से ही वालू धरती पर ताल वन सकता है, वना है यह त्रिवार सत्य है। वनास का पानी भी लाल होने का उल्लेख मिलता है। अर्थात नदी मे भी काफी रक्त वहा है।

यह तर्क भी मिथ्या है कि वह मैदान इतना वडा नही है कि जहा इतनी वड़ी संख्या में सेना समा सके। दोनो पक्ष के समस्त सैनिक एक ही समय नही लड मरे तथा युद्ध दो दिन या सुवह से शाम तक दो मर्तवा लम्वे समय तक चला है। कुरुक्षेत्र का मैदान भी एक अक्षौहिणी सेना योग्य नही है वही अठारह अक्षौहिणी सेना धराशायी हुई है। इसे भी गलत कह दोगे। कह दो।

अकवरी रणयोजना धूल धूसरित कर विजयी प्रताप रण–स्थल से विश्राम करने अन्य राजाओ की तरह महलो में नही गया वल्कि कोल्यारी स्थित मेवाड़ी सैन्य चिकित्सा शिविर में शीघ्र पहुँच कर घायल साथियो की सेवा सुश्रुषा स्वय के हाथो किया। अपने जखमो की पीड़ा वह भूल गया। राव, रंक, ऊंच, नीच का भेद प्रताप मे नही

था वह प्रजा से समरस था । तभी तो मेवाड़ी प्रजा अपने लाडले प्रताप पर प्राण-भी सहर्ष निछावर करने उत्सुक रहती थी । राजा और प्रजा मे हार्दिक अपनत्व था । तभी तो शत्रुओं से घिरा रहकर भी प्रताप और उसका परिवार रक्षित निरापद रहा है । राणा के परिवार का सदस्य मुगलों के हाथ कभी नही पड़ सका । मेवाड़ी प्रजा इतनी जागृत थी कि मुगल जत्थे मेवाड़ी सीमा पर भी लूट–खसोट नहीं कर सके । किन्तु मेवाड़ी सीमा के बाहरी राज्य ग्राम एव मुगलिया प्रवासी आदि को मेवाडियो ने निरन्तर लूटा है । कोल्यारी चिकित्सा शिविर से निवृत्त होने के बाद साथियो सहित प्रताप कुम्भलगढ रहने लगा था ।

ई० १५७६ अक्टूबर १२ को अकबर हिम्मत वान्धकर प्रताप को धूल-धूसरित करने एवं अकबरी आतक रखने सैन्य सहित गोगून्दा में डेरा डाला । किन्तु मेवाडी छापामार प्रहार से खुद अकबर भी भयग्रस्त था । मेवाड़ में यात्रा समय अकबर के दल से कुछ दूर आगे आगे सशस्त्र मुगल सैन्य दल मार्ग रक्षाहेतु चारों ओर निगरानी करताहुआ चलता था । अकबर को यह रक्षा व्यवस्था केवल मेवाड़ मे ही करना पडा । अन्य किसी शत्रु राज्य में ऐसा प्रवन्ध नही किया गया । यह प्रताप की विजय का ठोस प्रमाण है कि पराजित अकबर मेवाड मे भयग्रस्त रहता था कि कही से प्रताप अकस्मात छलावे की तरह आक्रमण न कर दे ।

प्रताप का दमन करने अकबर मेवाड मे आया किन्तु यहां घाट, घाटी, पहाड दुर्गम सघन वन का कुदरती चक्रव्यूह देख हैरत मे पड. महसूस किया कि इन कुदरती सुरक्षा साधनों के विरुद्ध पाशेव, गरगच अर्रादा, मजनीक़, तोप, सुरंग, अशर्फी बांट (रिश्वत) आदि मुगलिया सभी अस्त्र–शस्त्र व्यर्थ है ।

मेवाड़ मे लड़े गए गत तीन युद्धो में हुई मुगलिया जबरदस्त हानी याद कर प्रताप को घेरने या ललकारने का दु:साहस अकबर में नही

था । अकवर-गुजरात, चित्तौड काबुल, परोख, असीरगढ आदि के युद्धों मे हाजर रहा किन्तु खुद हाथ मे तलवार लेकर किसी भी शत्रु से रूवरू मुकावला नही कर सका । भाले से वाटी सेकता रहा है [1]

पहाडी परकोटा एवं खंदक और प्राचीर से घिरे गोगून्दा मे रक्षित रह कर अकवर ने कछवा भगवानदास, मानसिंह, जगन्नाथ, शाहवाज और कुतुबुद्दीन को ससैन्य भेजा । महाराणा प्रताप को रौंदने । किन्तु इनको प्रताप की हवा तक नही मिली निराश हो लौट आए ।

"अकबर ने कई जगह रक्षा चौकी स्थापित किया ।" पुन भगवानदास, मानसिह, कुतुबुद्दीन एव मीरन बहादुर को सेना सहित भेजा और इन्हे हुक्म दिया कि "प्रताप को जिन्दा या मुर्दा लेकर ही लौटना और मेवाडी सेना को तहस–नहस कर देना ।" किन्तु अकवर का दुर्भाग्य है कि यह सैनिक कठोर कार्यवाही भी पूर्ण असफल रही इस उपलक्ष मे अकवर ने ईन्हे अपने सामने आने से मना कर दिया था एव पदावनित कर भगवानदास को पंजाव का सहायक सूवेदार तथा मानसिंह को शालकोट में फौजदार वनाकर भेज दिया ऐसा इनका सम्मान हुआ । अर्थात इन राजाओ की यह अवनति करना अकवर के मन मे इन वफादार जां निसार राजाओ के प्रति कोई इज्जत नही थी यह प्रगट होता है । जगन्नाथ को उदयपुर भेजकर अकवर बाँसवाड मालवा होता हुआ वाइज्जत ना–काम मायूस हो वापिस लौट गया कि कही वेइज्जत होकर भागना न पड़े । इसी अवसर मे शाहवाज ने अकवर को विश्वास दिलाया कि ये राजपूत प्रताप के सजातीय है इसलिए प्रताप से मुरव्वत करते हैं इत्यादि समझाकर प्रताप पर आक्रमण करने की इजाजत अकवर से लेकर सेना सहित शाहवाज कुम्भलगढ़ पहुँचा इसके साथ गाजीखां, शेखमुनीर वदक्शी, मीरजादा अलीखां, एवं मुहम्मद हुसैन थे ।

शाहवाज खाँ आठ महीने तक कुम्भलगढ को सख्ती से घेरे रहा । प्रताप से झड़पे होती रही । सघन वीहड़ पहाड़ी शृंखला से घिरे

दुर्गम पर्वत पर ३४०० फीट की ऊंचाई पर बना दुर्भेद्य किला कुम्भल-गढ है । इस पर युद्ध कर विजय पाना अत्यन्त कठिन मानकर सुरंग, तोप, मजनीक, गरगच आदि यंत्र यहाँ निरुपयोगी जानकर भेद नीती का सहारा लेकर देवलिया सरदार को लोभ का टुकड़ा डालकर उसे देशद्रोही विश्वासघाती बनाकर उसके द्वारा किले के एकमात्र पेय जलाशय को विषैला बनवा दिया था । जिसे तत्काल शुद्ध करना सम्भव नही था । इस सकट में भी प्रताप ने केसरिया नही किया बल्कि साथियों को साथ ले रात्रि के समय १५७८ एप्रिल ३ को अचानक मारकाट करता हुआ किला त्याग कर देवीर की ओर चला गया ।

प्रताप को पकडने सेना सहित शाहबाज दौडा किन्तु प्रताप से हुए घमासान युद्ध मे शाहबाज खुद पछाड़ खा गया कि कुछ ही दिनो में दुनियाँ छूट गई । धोखेबाजी से कुम्भलगढ़ तो ले लिया किन्तु अकबर से मन्सब या बक्शीश लेनें जीवित्त नही बचा । प्रताप गहन पहाडी क्षेत्र ढोलन मे रहने लगा ।

चप्पन के चौन्दा गाँव में रहे यहाँ अमीरशाह ने घेरना चाहा किन्तु प्रताप ढोलन मे जाकर रहा । तथा साथियो को भी उनके घर भेज दिया । फरीदखां, अब्दुल्लाखा, सेरीमा-चगताई, भी प्रताप को कुचलने सेना सहित आए किन्तु तीनो ही कुचला गये धरा में समा गये । सेरीमा कुँवर अमर के हाथ मारा गया था किन्तु अमर की रणकुशलता पर मोहित सेरीमा के प्राण युवक अमर को देखने अटके थे । अमर को पुनः देखने के बाद सन्तोषपूर्वक सेरीमा ने प्राण त्यागा था । मुगल पराजय के कारण ये तीनो अभियान प्रसिद्ध नही हुए ।

प्रताप ने युद्ध का आर्थिक भार प्रजा पर नही डाला । भामाशाह ताराचंद, ताजखाँ एव नारायणदास को कुशल सहयोगियों के साथ मालवा, गुजरात, ढूंढाड़ आदि राज्यों को लूटकर मेवाड़ के लिये धन एकत्र करने को भेजा । मेवाड़ी सीमा के निकटस्थ मुगलिया

ग्रामों पर छापामारी होती रही। छापामार वीर और गाडिया लोहार साथ साथ रहने लगे। ताकि शस्त्रो की मरम्मत मे विलम्ब न हो। मेवाड में धन जन की हानि न हो, मेवाड़ पुनः शक्ति जुटा सके इसलिए प्रताप शान्त रह कुछ समय अज्ञातवास मे (भूमिगत) रहा किन्तु शासन प्रवन्ध मे शिथिलता नही आने दी।

ई० १५८० मे शेरपुरा थाने पर अब्दुलरहीम खान अधिकारी बनकर आया किन्तु प्रताप को छेडने का साहस नही किया। किन्तु कुंवर अमर ने शेरपुरा पर छापा मारकर, लूट-खसोट, तहस-नहस कर रहीमखान की बीबी को भी धर लाया था। प्रताप ने महिला को बन्दी बना लाने का समाचार सुना तो इस कृत्य की बड़ी भर्त्सना किया कि नारी से अभद्रता करना हिन्दू शौर्य को लज्जित करना है धिक्कार है तुम्हारी वीरता को। यू डाँटकर प्रताप ने बेगम का सम्मान पूर्वक आतिथ्य सत्कार कर वस्त्रादि भेट दे सुरक्षित शेरपुरा भिजवा दिया। (इस नारी मर्यादा की नीति का अनुसरण छत्रपति शिवाजी ने भी किया था। इतिहासज्ञ खफी खां ने भी लिखा है कि शिवाजी परस्त्री, मस्जिद, एव कुरान का पूर्ण सम्मान करते थे।) यह है हिन्दू संस्कृति की नैतिक देन।

कुंवर अमर का शौर्य सुन अकवर की पुत्री खानम सुल्ताना विवाह की इच्छा से प्रताप की सेवा में पहुँची किन्तु प्रताप ने शह-जादी को समझाकर सकुशल वापस भेज दिया।

चरित्रवान कहे जाने वाले अकबर की पैशाचिक वासना का एक साधन जश्न-ए-नौ रोजा मीना वाजार हर महीने की शुक्ल पक्ष की अष्टमी से नौ दिन भरता था। इसमे अमीर, उमरा, सामन्त, सरदारों के परिवार की महिलाओ का आना अनिवार्य था। पुरुषो को प्रवेश मना था किन्तु खुद अकबर जनाना वेश में बुर्का पहनकर इस बाजार मे घूमकर अपने पसन्द की स्त्री को दासियों द्वारा छल करवा कर अपने गुप्त कक्ष में बुलवाता था। मदान्ध अकबर ने बीकानेरी मन्सवदार राठौड पृथ्वीराज की पत्नी, शक्तिसिंह की पुत्री

किरणावती को दबोचना चाहा, अकवर की इस शैतानियत की जानकारी किरणावती को थी वह सतर्क थी। अकवरी कक्ष मे पहुँच कपाट बन्द होते ही किरणा ने तड़ित वेग से अकबर को पटक कर उसकी छाती को पैर से दबाकर उसके गले पर कटार की नोक अडा सिहनी की तरह गरजकर वोली कि जरा भी हिला तो कटार घोप दूंगी। कौल कर कि पर स्त्री से अभद्रता नही करेगा। अकवर कुछ फेगड़ा था पटकनी खा गया। छाती पर मौत, गले पर कटार और शहंशाह अकबर नारी के पैरों तले दवा पडा था। शहशाह जलालुद्दीन अकबर ने घिघियाकर, मिमियाकर दीनता-पूर्वक कबूल किया कि आइन्दा ऐसी हरकत कभी नही करूंगा। इसके बाद किरणावती को सुरक्षित भेजा एवं मीना बाजार सदा के लिए वन्द करवाया। ऐसा चरित्रहीन अकव्बर था।

युद्ध के समय प्रताप को शक्तिसिह ने बचाया था। इसलिए शक्तिसिंह को अकबर ने मुगल दल से निकाल दिया। (कही कथानक है कि अकवरी वंशज मेहरुन्निसा शक्ति पर मोहित थी इसी ने अक-वरी कैदखाने से शक्ति को मुक्त की है यह घटना राजपुतानी फिल्म मे भी चित्रित है।) शक्ति अपने सहयोगी एकत्र कर मेवाड़ मे मुगल थाना भिसरौरगढ जीतकर भाई प्रताप को सादर भेट अर्पित किया। प्रताप ने शक्ति को बॉहो मे भरकर भिसरौर शक्ति को ही वापस सौप दिया।

कुंवर अमरसिंह द्वारा सेरोमा चगताई का सेनासह मारा जाना। शेरपुरा थाने पर धावा, लूट, खान-खाना की वीबी का हरण आदि के बाद मुगलिया चौरासी थाने-चौकी मेवाड़ से बगैर भगाए खुद ही भाग गये। मेवाड़ी छापामारी का ऐसा आतङ्क मुगलों पर पडा था। हे विवेकशील न्यायप्रिय पाठक बन्धुओ प्रताप की विजय और अकबर की घोर पराजय के यह सुस्पष्ट ठोस प्रमाण हैं।

महाराणा प्रताप पर अकवर के सन्धि दूतो एवं बार वार किये गए सैनिक अभियानो के असफल होने पर बीरवल के साथ खुद

अकबर फकीर वेश में प्रताप से सन्धि हेतु मिलने में सफल हुआ। किन्तु अकबर की लचक चाल फेंगडापन, कंधो में विषमता, रग सांवला, चेहरे पर मसा देखकर प्रताप ने अकबर को पहचान लिया था। फिर भी अनजान बन दोनो फकीरो का अतिथी सत्कार कर सामयिक उपलब्ध रूखा सूखा भील भोजन करवाया। पश्चात कुशल-क्षेम तथा सामरिक चर्चा मे प्रताप की सराहना कर प्रताप से अकबर ने कहा "अकबर से समझौता करलो ऊंची मन्सबदारी, मालोदौलत, रुतवए बुलन्दी, मुगल अधिकार में दबा हुआ मेवाड़, और सुरक्षा आदि दिलवा दूंगा" ऐसा प्रलोभन दिया। उत्तर मे प्रताप ने तलवार पर हाथ धर के कहा कि इस (तलवार) के बल पर हम अपनी धरती वापस ले लेंगे। अकबर ! तुम्हारी तरह आए शत्रु पर हम भारतीय वार नही करते हैं। कहकर प्रताप ने भीलो के रक्षण मे सीमा तक अकबर को सुरक्षित भिजवा दिया था।

रणथम्भौर मे सुरजन हाडा से अकबर बल्लमदार के वेश में मिला था एव प्रताप से फकीर के वेश मे मिला है। इस तरह शत्रु से मिलना अकबरी साहस नही है। यह हिन्दू नीति की नैतिकता है अकबर को विश्वास है कि दूत, फकीर (याचक), अतिथी एव नारी हिन्दुत्व मे अवध्य एव सम्मानित होते है। इसलिए इसे खुद पर आक्रमण का भय नही था किन्तु इसी तरह अकबर के सामने प्रताप गया होता तो अविलम्ब कत्ल किया जाता। यह अरब नीति है।

अहसान फरामोश, नमकहराम अकबर ने सीमा से बाहर होते ही प्रताप पर घेराबन्दी अधिक सख्त करवा दिया। अमीरशाह, मुहब्बतखा एव जगन्नाथ कछवा ने तीन दिशा से उस क्षेत्र को घेर कर प्रताप तक पहुँचना चाहे किन्तु असफल हो पहाड़ियो मे भटकते रह गए।

इस समय प्रताप का जन सम्पर्क अवरुद्ध हो गया। खाद्य सामग्री या भोजन प्रताप तक पहुँचना असम्भव हो रहा था। अगुणा पानोर

(पानड़वा) का भीलराज प्रताप के परिवार के लिए भोजन तैयार कर भेजता था। छूआ–छूत ऊंच नीच का भेद नही था। अमीरशाह ने घेराबन्दी सख्त कर दी थी। बड़ी ही कठिनाई से पेटिया (आटादाल) पहुँचा था।

दिन में धुआ और रात में आग शत्रु को सुराग दे सकती है बहुत सावधानी और कठिनाई से जगरे पर एक समय भोजन बन पाता था। फिर कभी जलता जगरा तो कभी जगरे मे बाटी छोड़ भागकर शत्रु से वचना पडा है। सख्त घेरा और ऐसी आखमिचोली के बाद भी प्रताप या उसके परिवार का कोई सदस्य शत्रु के हाथ कभी नही पडा।

इसी भाग भाग के दौर में क्षुधा को शान्त करने रक्षक भीलो ने "मोल" नामक घास का बीज एकत्र कर शिला पर पीसकर इस आटे की अंगाकडी (मोटी, छोटी रोटी) बनाई और सभी को आधा आधा टुकड़ा रानी ने दी। शेश आधा भाग शाम के लिए धरा गया। सभी तो शीघ्र खा लिए किन्तु प्रताप की छोटी पुत्री इलावती (ईला)अरुचि से मुँह बिगाड़कर आहिस्ता आहिस्ता खा रही थी कि उसके हाथ से रोटी का टुकडा बन बिलाव झपट ले भागा। बच्ची का चीखना स्वाभाविक था, क्षुधातुर थी। मचलकर रो पडी। माँ की ममता ने आँचल मे लाडली को समेट ली। करुणा के आंसु पलकों पर नही तैरे। राणा का तेजोमय मुख आज पहली बार म्लान देख डिगने की आशंकावश पुत्री पर रानी ने तलवार खैंच ली कि तभी लपककर प्रताप ने रानी का हाथ थाम लिया। रानी ने कही–देश, धर्म, स्वाभिमान, स्वाधीनता और आपके प्रण से बढकर सन्तान नही है, आर्य गौरव पर लाखों सन्तान निछावर हुई हैं, होती रहेगी उनमे यह कली भी मिल जाए तो यह भाग्यशाली होगी प्रताप ने रानी को धैर्य दे विश्वास दिया है कि, अज़्वांदे मेरा प्रण अटल है मैं डिगूंगा नही।

आंसू झरने के पहले ही सूख गए । वालिका सहम गई, गालो पर लुढकते मोती अपनी नन्ही हथेलियों मे छुपाकर बोली–माँ अव मैं रोटी नही माँगूंगी । मातापिता ने लाडली को दुलार प्यार किए । किन्तु कुछ समय से चल रही, लुकाछिपी मे अनियमितता, भूख एव वनबिलाव के डरावने रूप से भीत वालिका को भय ज्वर हो गया (प्रलापो भय शोकजे) । मुगलिया सख्त घेरावन्दी के कारण अत्यन्त कठिनाई से भी लडकी का ईलाज नही हो सका । उसने कही थी माँ अव रोटी नही मागूगी, नही मागी अपने शव्दो को निभाई और वह लाडेसर इलावती माँ इला की गोद मे शातिपूर्वक सदा के लिए चिरनिद्रा मे सो गई । इला मे इला खो गई । मातृभूमि पर वह नन्ही कली समर्पित हो गई ।

दूसरी ओर भील किशोर १०–११ वर्षीय दूलिया को ज्ञात हुआ कि राणा के वालक भूखे है । व्याकुल हो वह अपने हिस्से की रोटी छुपाकर ले दौडा, राह मे मुगल सैनिको ने उसे रोक कर प्रताप का पता पूछा, पता नही वताया । खच्च-खच्च दोनो हाथ कट गए हाथ खोकर भी वह शिखर की ओर दौड चला कि पीठ मे कुछ धस गया मौत को रुकने का समय नही था, दूलिया भी नही रुका शिखर के दूसरी ओर लुढककर पैरो से घसरता गया । दूर से देखकर प्रताप उसकी ओर दौड कर निकट पहुँचे उसे अपनी गोद मे सम्हाले । दूलिया को अपनी सफलता और राणा की गोद मे इद्रासन मिल गया । निराश मुख प्रसन्नता से खिल गया, अपनी पगडी मे छुपी रोटिया राणा को वतलाकर मुस्कुरा दिया, रणा सोचे यह और कुछ वोलेगा किन्तु उसके होठ मुस्कराहट पर अडे रह गए । दूलिया के कटे कन्धे, पीठ मे धसा वाण, छिला शरीर और मूस्कान देख प्रताप की आखो के अश्रुविन्दुओ ने दूलिया की आत्मा को तृप्त कर दिया । प्रताप की प्रजा में प्रताप के लिए इतनी आत्मीयता थी । यह आत्मीयता ही मेवाड़ की जवरदस्त ताकत थी । इन्ही सकटापन्न

दयनीय दु.खद परिस्थितियों के सुखद समाचार सुनकर अकबर महान दया निधान ने कुटिल मुस्कान के साथ धूर्तता का पासा फेकते हुए मेवाडी प्रजा को प्रताप से वागी करने अपने दरबार मे झूटा पत्र धरवाया कि "राणा प्रताप सुलह चाहता है।"

लेकिन पृथ्वीराज राठौड अकबर की मक्कारी एवं प्रताप की दृढता को भली भाँति जानता था। पृथ्वीराज ने भरी सभा मे अकबर के पत्र जाल को नष्ट करते हुए दृढता पूर्वक स्पष्ट कहा कि 'इस पत्र में हस्ताक्षर प्रताप के नही है, यह पत्र नि:सन्देह मिथ्या है।"

मेवाडी प्रजा को प्रताप से वागी करने की अकवरी योजना पृथ्वीराज राठौड के कारण धराशाई हो गई किन्तु इस अफवाह से मेवाडी प्रजा गुमराह न हो तथा प्रताप का मनोवल दृढ रहे तदर्थ पृथ्वीराज ने प्रताप को सोरठा-दोहे लिख भेजे थे। पृथ्वीराज का उपनाम "पीथल" है। प्रताप का उपनाम "पातल" है। राजकीय पदनाम "दीवान" है, मेवाड के राजा एकलिंग जी हैं। प्रताप ने अकबर को बादशाह कभी नही कहा "तुर्क" ही कहा है। पृथ्वीराज ने प्रताप को दृढता दी है कि प्रताप के मुँह से बादशाह कहा जाना सूर्य का पश्चिम से उदय होने जैसा होगा। मूंछों पर ताव दूँ या गरदन काट दूँ दो मे से एक वात लिख दे, दोहे का आशय यही है प्रताप द्वारा अकबर को पत्र लिखने का सकेत रंच मात्र भी नही है।

पातल जो पतसाह बोले मुंख हूंता वयण।
मिहर पंछम दिस मांह ऊगै कासप राववत।

कुछ लोग इस छन्द को पीथल का लिखा नही मानते है, उनका तर्क है कि उस समय राज सम्मान काफी ऊँचा था। छन्द में प्रताप को पातल और दीवाण सम्बोधन सम्मानप्रद नही है, यह तर्क मिथ्या है, छन्द सीमा के कारण भी सम्मान होना आवश्यक नही है पृथ्वीराज राठौड का वडा भाई रायमल प्रताप का बहनेउ था, पृथ्वीराज एवं प्रताप निकट सम्बन्धी थे।

जालोर के नवाव कमालखाँ को जैसलमेरी कवि वीरदास ने रूवरू कहा, "कुट्टण तेरा बाप जिकै सिरोही कुट्टी।" बारैठ भोपाल दान ने जोधपुर के प्रसिद्ध प्रतापसिंह से कहा—"दाढी मूँछ मुँडाय के कान्धे धरियो कोट परतापसी तखतेसरा लारै घटै लंगोट। (व्यंग भी है)।

बीकानेरी अमरसिंह से पद्माचारिणी ने रूवरू कहा था, "जाग हो कलियाण जाया" महाराणा फतहसिंह से केसरीसिंह बारहठ ने कहा था, "पसरैलो किम पाण-पाण छता थारो फता" ऐसे और भी प्रमाण है, इन पंक्तियो में भी सम्मान नही है, तीखी भी है, यह स्पष्ट है। पीथल की पंक्तियाँ उद्‌वोधक अर्थपूर्ण है, दीवाण याने राज्य और प्रजा के सेवक, धर्मरक्षक हो। काव्य पंक्ति पीथल ने महाराणा को नही लिखा। मेवाड के स्वामी एकलिंग जी को नही लिखा उनके दीवान को लिखा है। राजा से अधिक जिम्मेदारी दीवान (मंत्री) पर होती है। यह सर्व विदित है, अत. "दीवान" यह अर्थपूर्ण सम्बोधन जो कर्तव्यसूचक है, पीथल ने प्रताप को दिया है किन्तु प्रताप ने भी अपने उत्तर में स्वयं को और भी छोटा चित्रित किया है जिस "पता" सम्वोधन से माता-पिता बुलाते थे।

"तुरक कहा सी मुख पतो, इण तन सूँ इकलिंग,
ऊगै जां ही ऊग सी प्राची वीच पतंग।"

"खुसी हूंत पीथल कमध पटको मूछां पाण,
पछटण है जे तै पतो कलमां सिर कैवाण।"

प्रताप के मुख से तुर्क ही (अकवर को) कहा जाएगा। यह शरीर एकलिंग जी का नाम लेगा। सूर्य पूर्व में ही उदय होगा। पत्ता (प्रताप) जव तक है तव तक अकवर के सर पर (मेरी) तरवार ही रहेगी। "खुसी हूंत" याने नि शक सगर्व सहर्ष मूंछों पर ताव देते रहो तथा "भड़ पीथल जीतो भलां, वैण तुरक सूं वाद" हमारे लिये

वाक् युद्ध मे तुर्क (अकबर) से विजय पाते रहो अर्थात प्रताप का प्रण उन्नत ही रहेगा तुर्क के आगे कभी नही झुकेगा।

बाल्यता का सम्बोधन "पत्ता" याने छोटा हूँ फिर भी सूर्य की तरह दृढ निश्चयी क्रियाशील हूँ। अर्थात् प्रताप ने सुमेरु, हिमालय या ध्रुव की जड़ता अडिगता को आदर्श नही माना, सूर्य की नियमित निर्विरोध क्रियाशीलता को आदर्श माना है, कर्तव्यनिष्ठ रहा है।

प्रताप द्वारा अकबर को सन्धि पत्र लिखा गया. इस आशय का आंशिक संकेत या अन्तर्ध्वनी की प्रतिछाया का आभास मात्र भी पीथल और पातल की काव्यपंक्ति मे नही है। प्रताप के निर्दोष चरित्र को दूषित दर्शाने किसी कुटिल ने लिख दिया कि प्रताप ने सन्धि हेतु अकबर को पत्र लिखा था। इसी का पुनरावर्तन बाद के शोधक भेड़िया धसान लेखक करते चले गए।

यदि सन्धि हेतु प्रताप ने अकबर को पत्र लिखा होता तो उस पत्र को अकबर खुद के गले में सुरक्षित तावीज बनाकर रखता। पत्र का लेखक, पत्रवाहक, मजमून का उल्लेख, सत्य पत्र लाने वाले को ईनाम, या झूठा पत्र लाने वाले को कोई सजा, सन्धि हेतु पत्र लिखने बाद सन्धि करने से मुकरने पर अकबर व किसी दरबारी द्वारा प्रताप की भर्त्सना करना आदि का कही भी उल्लेख हिन्दी या उर्दू किसी भी ग्रन्थ या ग्रन्थ सग्रहालय में रक्षित नही है। क्योकि प्रताप ने सन्धि हेतु अकबर को पत्र लिखने की कल्पना तक नही किया है। यह मेरा दृढतम मत है। पत्रकाण्ड केवल अकबरी फरेब था। प्रताप की जनशक्ति को तोडने का कुचक्र था जिसे प्रताप के पैने प्रताप ने छिन्न भिन्न कर दिया था।

प्रताप पर घेरा तंग था। प्रताप का पता लगाने हेतु सीमावर्तीय ग्रामों पर मुगलों द्वारा क्रूर अत्याचार चर्म सीमा पर थे। भामाशाह का पता निश्चित नही था। ऐसी स्थिति में अपनी प्रजा को अत्याचारों से बचाने कुछ समय देशान्तर जाने का विचार प्रताप ने किया

है। यह समाचार मेवाड़ मे पवनवेग सर्वत्र पहुँच गया। प्रताप को रोकने प्रजा दौड़ चली। जनगगा का प्रवाह देख मुगल सैनिक खिसक निकले। सौभाग्य से भामाशाह वापस आया ही था। समाचार सुन वह भी लूट का धन ज्यो का त्यो साथ लिये प्रताप की ओर दौड गया। चूलिया गाँव मे पचीस लाख रुपया तथा बीस हजार सुवर्ण मोहरे इनके साथ खुद का पैतृक धन भी मेवाड़ के लिए प्रताप की सेवा मे अर्पित कर दिया। इसमे प्रजा ने भी अधिक से अधिक अपनी पंखुड़ियाँ अर्पित की है।

❀ इसी तरह जिस देश मे नेता और जनता एकात्म हो वह देश वडी ताकत को भी पछाड़ सकता है, वह देश स्वाधीन और उन्नत रहता है। नेता भी देश भक्त प्रजावत्सल सर्वत्यागी नीतिज्ञ दृढ़-निश्चयी प्रताप जैसा होना चाहिये। ❀

[भामाशाह की तरह-मेवाडी मन्त्री अमरचन्द बरुआ ने ई० १७७० मे द्वितीय अमरसिह के समय खजाना पूर्णतः खाली हो जाने पर अपने परिवार की वस्त्रादि सहित समस्त सम्पदा राज्य की सेवा में अर्पित कर दिया था केवल तन ढांकने के वस्त्र ही शरीर पर रखा था ऐसे कई त्यागवीर देशभक्त हुए है]

महाराणा प्रताप ने भामाशाह को बाहो में भर उसे दिया हुआ मन्त्री पद वश परम्परा के लिए प्रदान किया। भील समाज की ओर से भील सरदार सूला ने प्रताप को आजीवन सहयोग देने का पुनः आश्वासन दिया और प्रताप से बोला कि–राणा इस माटी का ऋण चुकाना है।

कुछ ही समय मे युद्ध व्यवस्था कर मेवाड़ी वीरों का आव्हान किया गया। आजादी के दीवाने सैन्य शक्ति के रूप में एकत्र हो गए। इन्हे योजना समझाकर साथ ले चप्पन क्षेत्र के "चाँवड़" पर प्रताप ने आक्रमण कर लूणा चावड़िया को परास्त किया एव चॉवड़ को अपनी राजधानी बनाया तथा सामरिक दृष्टि से उपयोगी सभी के लिए सुरक्षात्मक भवन बनवाए जो सराहनीय हैं।

चाँवड़ के तहत तीन सौ पचास गाँव थे, उपजाऊ क्षेत्र था। इस पर प्रताप का अधिकार हुआ सुनकर, अकबर के दिलो दिमाग का और अधिक सन्तुलन बिगड़ गया और शीघ्र ही कछवाह जगन्नाथ को सेनासह चाँवड़ पर आक्रमण करने भेजा। जगन्नाथ दलबल सहित निर्विरोध चाँवड़ में प्रवेश कर गया किन्तु समूचे नगर में एक भी नागरिक स्वागत करने वाला नही मिला नगर जनशून्य मिला था। झुंझलाकर तोड़फोड़ आगजनी करता गया। कुछ सैनिक नगर रक्षा के लिए छोड़ गया।

जगन्नाथ चला गया तब कुछ ही दिनो बाद प्रताप ने चाँवड़ पर सहज ही अधिकार कर लिया फिर से वसाहत हो गई।

मुगल सैन्यशक्ति जहां पर भी कम होने का समाचार मिलता, वही प्रताप छापामार आक्रमण कर देता। इस गोरिल्ला (छापामार) रणनीति में हानि कम, लाभ अधिक रहा है। इस प्रकार मुगल और मेवाड़ियों मे परस्पर छीना झपटी कई जगह हुई किन्तु मेवाड़ी पलड़ा भारी ही रहने लगा था। प्रताप विजयसोपान चढने लगा था।

दवी हुई चिगारी शोला दहक उठी। महाराणा प्रताप के निरन्तर विजय नाद से अब अकवर परेशां और पशेमां हो निढाल हो गया था। मेवाड़ को रौंदने प्रताप को धूल धूसरित करने बदरुद्दीन अकवर के हर तरह के हथकण्डे मेवाड़ियों ने हमेशा कर दिए थे ठण्डे। इससे अब आगे और अधिक लज्जित होने से बचने के लिए, मेवाड़ से मिली बुरी तरह की नाकामयाबी की झेप छुपाने वेशर्मी की दागदार काली चादर ओढ गंम् हज़म् करने मायूस हो काबुल, पंजाब, बंगाल की ओर पहुँच कर बागियों का दमन करने में उलझे रहने का बहाना बना लिया। आखिर मेवाड़ियों से और कितना अपमान सहता, सहने की भी हद होती है, यह तो अकवर ही था जो मेवाड़ में कई मर्तबा पटखनी खाकर भी आत्महत्या नही किया, दिल में पराजय का तूफान होठों पर कुटिल मुस्कान संजोए, कर गया काबुल तरफ प्रस्थान

कि वहुत वे आवरू होकर शाह मेवाड़ से भागा। अकवर द्वारा जारत करना भी फरेब था क्योंकि ई० १५७६ के वाद अकवर अजमेरी ख्वाजा-शरीफ की जारत करना भूल गया। अर्थात मोर्चे से प्रताप नही भागा, अकबर अवश्य ही भागा है। "भागना इसी को कहते है।', अकवर के इस पलायन पर सुनहरी लुभावनी चादर ढांकने अकवरी चाटुकार ने लिखा है कि–शहंशाह अकवर प्रताप पर रहम खाकर उसे तंग करना छोड़कर पंजाव चला गया था।

यह रहमवाली सराहना नि.सन्देह गलत है, रंचमात्र भी सत्य नही है, अकवर के सम्पूर्ण जीवन में प्रताप से बढकर दूसरा शत्रु अन्य कोई था ही नही। "प्रताप को जिन्दा या मुर्दा हाजर करने का हुक्म देने वाला अकवर" । दया को दफनाकर चित्तौड़ी कत्लेआम करवाने माला निर्दयी अकवर।

छोटी रियासत मण्डलागढ़ की रानी दुर्गावती एव अहमदनगर की चाँद वीवी काश्मीर की हव्वा खातून याने महिलाओ का भी क्रूरता-पूर्वक दमन करवाने वाला अकवर, प्रताप के परिवार बच्चो को भूखों मारनेवाला नराधम अकवर, रहमदिल कभी नही रहा, उसने कभी भी किसी पर रहम नही किया। सरपरस्त वहरामखां एवं वालक अकवर का पालन पोषण देख रेख करने वाली माँ जैसी सेविका माहमअंगा का पुत्र अकवर का खास सहायक आदमखां आदि जैसे कइयों पर उसने रहम नही किया मरवादिया तव जिस छोटे से प्रताप के कारण कई वर्ष मुगलिया धन–जन और तानाशाही प्रतिष्ठा की निरन्तर जवरदस्त हानि हुई। ऐसे एक मात्र दुर्धर्ष विजयी शत्रु प्रताप पर मगरूर अकवर ने रहम किया, यह कहना चण्डूखाने की वकवास है। सच्चाई कतई नही है। वस्तुतः अंगूर वेहद खट्टे। नही नहीं–वल्कि अंगूरी गुच्छे के भ्रम में अकवर वर्रे के छत्ते पर झपट पड़ा था इसी दुर्गत से छुटकारा पाने शाही शान मान- वचाने पंजाब आदि की ओर अकवर भागा है।

मुगलिया इतिहास लेखक प्रताप की विजय एवं अकबर की पराजय लिखते तो उन्हें अकबर कत्ल करवा देता । मुगल लेखक अकबर के आश्रित चाटुकार थे। मेवाड़ी कलम राज रत्नाकर के अलावा बीकानेरी कवि माला सांदू ने प्रताप को विजयी लिखा है।

महाराणा प्रताप को अकबर की शरण लाने या परास्त या धूल धूसरित करने–जलालखां, कुतुबुद्दीन, मानसिंह, भगवानदास, टोडरमल, आसफखां, हाशमखां, शाहवाज खां, गौहर, सेरीमा चगताई, अब्दुल्लाखां, फरीदखां, अमीशाह, मिर्जाखां, खुद अकबर, सीकरी का सैयद राजू, रहीमखान, एवं जगन्नाथ कछवाहा ने सुलह और सैन्य संघर्ष के लिए कई बार प्रहार किया है। बहलोल खां, शाहवाज खां, अब्दुल्ला, फदीरखां, सेरीमा मेवाड़ में मारे गये । अकबर सदैव पराजित एवं प्रताप हर बार विजयी हुआ है। यह पूर्व वर्णित अनुशीलन से स्पष्ट प्रमाणित है फिर भी कुछ अड़ियल लेखक प्रताप को पराजित कहने के पूर्वाग्रह से ग्रस्त रहें तो उन्हें चाणक्य की पंक्ति ः षित है—
"नोलूको ऽ प्यव लोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणं ।"

प्रताप ने नैतिक, राजनैतिक, चारित्रिक, बौद्धिक, साहसिक मात अकबर को दी है । प्रताप खुद हाथ में तलवार ले शत्रुओं से लड़ा हैं किन्तु अकबर यह साहस कभी नहीं कर सका।

मेवाडी सामन्त सरदार सैनिक और शक्तिसिंह आदि को साथ लेकर मुगल अधिकार में गया हुआ मेवाड़ का भूभाग तलवार के बल पर प्रताप ने वापस छीनना आरम्भ कर दिया और यह कार्य अविश्रान्त आंधी की तरह तेजी से छापामार नीति से कर निरन्तर सफलता छीनते हुए "बत्तीस किले वापस ले ही लिया कि जैसे मुगल जबड़े से बत्तीस दाँत उखड़ गए । महाराणा प्रताप ने मानसिंह के प्रसिद्ध व्यापार नगर मालपुरा को लूट कर अपनी प्रजा में बांट दिया किन्तु मानसिंह या अकबर अब प्रतिशोध लेने का साहस नहीं कर सके प्रताप की विजय का यह भी सशक्त प्रमाण है । किसी कवि ने लिखा है—

दावा रान पत्ता सो, न धावा रान पत्ता सो, न जावा रान पत्ता सो न आवा रान पत्ता सो।

प्रण, आक्रमण, त्वरित आवा–गमन प्रताप जैसा किसी मे नही था। प्रताप ने कुम्भलगढ जैसा दुरुह किला भी जीत लिया था। माण्डलगढ और चित्तौड़ लेना शेष था। ई० १५७२ फरवरी २८ को राज्यारोहण बाद गोगून्दा मे अब पहली बार विजयोत्सव मनाया गया किन्तु प्रणवीर प्रताप चाँवड़ कुटिया मे साधारण नागरिक जीवन ही जिया है राजसी नही।

महाराणा प्रताप ने अपने बुद्धि कौशल से अकबर की हर चाल को शह देकर अन्त में उसे जबरदस्त मात दी है और यह अविस्मरणीय कार्य उस युग मे भारत के छोटे से भू–भाग मेवाड़ ने संगठित जनशक्ति एवं प्रताप के कुशल नेतृत्व मे किया है। कठोरतम संकट में भी प्रताप नही डिगा। अकबरी उच्चतम वैभव लोभ उसने ठुकराया। मुगलिया विपुल धन जनशक्ति की तुलना मे मेवाड़ी धन जन शक्ति तुच्छ रहने पर भी छापामार नूतन रणनीति (Guerilla-swift march-sudden attack) द्वारा मुगल शक्ति को बुरी तरह पछाड़ा जाना। मेवाडी सगठित अल्पतम शक्ति का निरन्तर विजयी होना। शत्रु से मानवोचित व्यवहार करना। स्वाधीनता हेतु विकट परिस्थितियो मे भी हतोत्साही न हो संकटो से निरन्तर जूझते रह अन्ततः अपने लक्ष्य मे सफल होना। इन्ही वैशिष्ट्यताओ ने महाराणा प्रताप को अमरत्व दिया है। प्रताप की इन्ही उज्ज्वलतम कृतियो ने स्वाधीनता के, हर युद्ध, को और हर सेनानी को प्रेरणा शक्ति दी है। छत्रपति शिवाजी ने भी प्रताप को आदर्श माना है। समग्र भारत मे स्वाधीनता सग्राम के नरम गरम दोनो दलो ने प्रताप को अपना सम्बल मानकर पूजा है। उनके लिये प्रताप के प्रताप की अदृश्य ज्योति सादृश्य रही है, सदैव रहेगी।

स्वतन्त्रता प्रेमियों के लिये राजस्थान के छोटे से भू-भाग मेवाड़ की यह अनुपम अनुकरणीय अमरदेन "राजस्थानी देन है।"

प्रताप मे निकृष्टता रही होती तो वह निर्विरोध आदर्शमय वन्दनीय नही माना जाता। प्रताप ने ७ गाँव, १०० गौ, १००० अश्व, ६०० महिष २ हाथी दान एवं बक्शीश मे दिया है।

जावर खदान के निकट सिंहनी का शिकार करने हेतु धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाते समय राणा के पेट में अंत्राघात होने से रक्तश्राव होने लगा था। अन्त समय निकट जानकर कुंवर अमर एवं सामन्त सरदारों ने प्रताप के प्रण को निभाना स्वीकारे तब वि० १६५३ माघ शुक्ल ११, ई० १५६७ जनवरी १६ को प्रताप का "प्राण प्रताप" पाँच घोडों के रथ पर आरूढ हो स्वर्गारोहण कर अमरत्व पा गया।

ई० १५७६ जून १८ को हल्दीघाटी युद्ध से ई० १५६७ जनवरी १६ तक "बीस वर्ष छह महिना खूनी संघर्ष में बीते है"। ई० १५६८ से जन जागरण अभियान छेड दिया था तदनुसार "अठ्ठावीस वर्ष अविश्रान्त कठोर जीवन जीया है"। राम केवल १४ वर्ष वनवासी रहे थे। किन्तु प्रताप २८ वर्ष वनवासी रहा था।

किसी अकबरी चम्मची ने लिखा है कि-प्रताप की मृत्यु पर शहंशाह अकबर रो पड़ा था वह इतना कद्र-दां था। यह लिखना अकबरी मिथ्या सराहना की ही एक कड़ी है, जो सत्य से शून्य है। प्रताप द्वारा मुगलिया प्रचण्ड सैन्यशक्ति की मेवाड में बार-बार हुई घोर शर्मनाक पराजय पर अकबर रोया था, प्रताप की महानता पर अकबर नही रोया। जो निष्ठुर अकबर माँ, बाप, बूआ आदि कुटुम्बियों को नही रोया, अपने गुरु बहरामखाँ को मरवाकर जिसे खुशी हुई। ऐसा मदान्ध नरहन्ता हिंसक अकबर अपने दुर्धर्ष विजयी शत्रु प्रताप की मृत्यु पर "रो पड़ा" यह सर्वथा असम्भव है निःसन्देह मिथ्या है। अकबर प्रताप की सफलता और खुद की पराजय पर

रोया है। कवि दुरसा की पंक्तियां प्रमाण दे रही है। कवि दुरसा आडा प्रताप का समकालीन है।

इसीलिए भारत के सभी प्रान्त, सभी भाषायी लेखक, बहु संख्या में महाराणा प्रताप की उज्जवलतम विजयगाथा के ही प्रवल समर्थक हैं।

प्रताप के समकालीन जोधपुरी राजकवि दुरसा आडा की पंक्तियां प्रमाण है गहलोत राण जीति गयो दसण मूंद रसणा डसी, निसास मूक भरिया नयण तो मृत शाह प्रताप सी। अस लैगो अणदाग पाघ लेगो अणनामी। अण दगिया तुरी उजले असमर चाकर हुवण न डिगियो चीत। सारा हिन्दुस्थान तणे सिर 'पातल' (पातल याने प्रताप), घण पडियाँ सांकड़ियां घडियां ना धीहड़ियां पढ़ी नका। साराश— राणा जीत गया। प्रताप तेरी विजय प्रधान मृत्यु पर दांतों में जीभ दबा, उसांसे भर, शाह (अकबर) रोया है। मेवाडी अश्व अनदाग रहा, प्रताप शाह के आगे नही झुका। अत्यंत कठिन जीवन जीया। किन्तु डोला देकर सुख की चाह नही किया। अकबरी सेवा में जाने का विचार तक मन में नही लाया (अर्थात सन्धि हेतु प्रताप ने पत्र लिखने की कल्पना भी नही किया)। समग्र हिन्दुस्तान में एक मात्र राणा का सर ऊंचा है तथा राणा के कारण हिन्दुस्थान का गौरव-रूपी शीस गौरवान्वित हो सदा के लिये उन्नत हुआ है।

इन पंक्तियों से अकाट्य सिद्ध हो रहा है कि प्रताप अवश्य विजयी था, अपने जीवनकाल में ही आदरणीय अनुकरणीय माना जाने लगा था।

उक्त कवि दुरसा आड़ा जोधपुर का है इसे मेवाड़ से कभी कोई पुरस्कार नही मिला था यह मेवाड़ का चाटुकार नही था, इसने निःस्वार्थ निष्पक्ष सत्य लिखा है, विश्वस्त लिखा है।

ई० १८०३ के लगभग जोधपुर नरेश राठोड़ मानसिंह के हृदयोद्गार [मानसिंह चारण भाट या सीसोदिया या मेवाड़ के आश्रित नहीं

है, मुगल भक्त है ।] गिरपुर देस गमाड भमिया पग-पग भाखरां, मह अँजसै मेवाड़ सह अँजसै सीसोदिया । हिन्दू पति परताप पत राखी हिन्दवाण री । साराश—अपने नगर ग्राम गवाए—पर्वतों में भटका और हिन्दुत्व का गौरव रखा प्रताप ने, मेवाड़ और सीसोदा जाति को उसपर गर्व है ।

वि० १६३० से ७० तक बीकानेरी राज्य का कवि माला सांदू मेवाड़ के आश्रित या पुरस्कृत नही था उसकी काव्य पंक्तियों के कुछ अंश प्रताप को कितना उच्च स्थान दिये है—आज हुआ निकलक अहाड़ा । पेखे मुख ताहरो प्रताप । मिलतां समै राण मेवाड़ा टलियो प्राछत देह तणो । होतां भेट समै राव हींदू । हुवा पवित्र सग्राम हरा । जनम तणों गो पाप जुवो । हर सूं जाण जुहार हुवो । इत्यादि सारांश-महाराणा प्रताप को देखने मे जन्म जन्मान्तर के पाप छूट गए प्रताप से जुहार हुई मानो शिव से जुहार हुई । दुरसो आढ़ो दीन प्रभु तुव सरण प्रताप सी । दुरसा और मालाजी ने अपने राठोड़ राजाओ में किसी को ऐसा देवत्व नही दिये जबकि राठोड़ों में पराक्रमी योद्धा कई हुए है । महाराणा प्रताप विजयी था इसलिये विपक्ष ने भी प्रताप का सर्वोच्च यशगान किया है ।

दुरसा आडा ब– आरज (आर्य) कुल री आज पूंजी राण प्रताप सी
रोकै अकबर राह लै हिन्दू कूकर लषां, बीभर तो बाराह पाड़ै घणां
प्रताप सी ।

पूगी समंदां पार पंगी राण प्रताप सी याने राणा के समय ही राणा का यश समुद्र पार पहुँच गया था । उदयपुर जगदीश मन्दिर में ई० १६५२ के शिला लेख में प्रताप की विजय अकित है । बीकानेरी राजपुत्र पृथ्वीराज राठोड़ की पंक्ति—रह राषियो षत्री ध्रम राणै सारा ले बरतो संसार अर्थात अकेले राणा प्रताप ने क्षात्र धर्म की रक्षा किया है उस गौरवधन का उपयोग सारा संसार करे ।

ई० १९०३ में लिखी सोन्याणा के केसरीसिह बारहठ की पंक्तियों में से एक महाराणा र मेवाड़ हिरदै बसिया हिन्द रै । व्रज भाषा की पंक्तियां भी पढिये—

पूरन पवित्र परताप है चरित्र तेरो, पढिवेतें मेट देत संकट भिताप में।
मेरे जानिवे में राम नाम सो महान मंत्र–पाठ के करे तें हठि जात पुंज पाप के।

चारण पीथाजी की पंक्ति-पड़िया रहे अवर नृप पावां चढ़ियो कुंभ कलोधर चीत, अन्यराजा अकबर के पैरो मे पड़े है किन्तु प्रताप अकबर के मन मे चढ़ा है।

प्रसिद्ध कवि गंग की पंक्ति–गायत्रि मत्र गहलोत गुर तिहिं प्रताप शरणै रहै अर्थात सनातन धर्म का रक्षक राणा प्रताप था।

उपरोक्त पंक्तिथो से प्रमाणित है कि प्रताप का प्रखर प्रताप पूर्ण सत्य है कि सूर्य छिपै नही वद्दर छायां, उसे धूमिल करने के कुटिल प्रयास निन्दनीय हैं।

भौतिक ऐश्वर्यानुरागी मुगल भक्त राजाओ की शान में बून्दी के कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने लिखा है—

धर जावे ध्रम जाय धके तिरियां लुटे सतीत्व।
तीनूं खोयां सुख मिले कायम रख अस्तित्व ।।

ऐसी मनोवृत्ती के थे अकबर प्रिय राजा गण इसी कारण इन वैभवशाली शिखरों को किसी ने रंच मात्र भी आदर्श नही माना है। किन्तु प्रताप का चरित्र अनुकरणीय आदर्श है। सदैव उपयोगी है।

उस मेवाड भूमि के प्रति भीलवाडा के दौलतसिंह लोढा ने लिखा है—मेवाड धरा रो नामज लेता पाप पडै उप साम।

महाराणा प्रताप:—

अपने समय का वेजोड़ जबरदस्त अटूट नशेवाज था। उस नशेवाजी में थी विलक्षण विलास प्रियता। वह नशेवाजी अफीम, कसूम्बा

या भाग मदिरा की नही थी। वह नशा था देश धर्म की रक्षा मे जूझने का। वह विलासिता, सुगन्ध से महकते ऐश्वर्यशाली रंगमहलों मे मखमली कालीनो पर इठलाते आमोद की नही थी, वल्कि बीहड़ों में कष्टमय जीवन बिताने की स्थिती मे भी अपने सिद्धान्त पर जूझने हेतु कठिनतम संकटो को विलास रूप समझकर उन से सहज खेलने की वह विलासिता थी। तभी तो बनैले शार्दूल की तरह प्रताप निर्भीक रह शत्रु समूह मे विचरण करता रहा है। शिकारी दौडते-दौडते हतोत्साही हो गिर पडा किन्तु शिकार हाथ नही आया। क्योकि बनैले वनवासी अपने प्रताप की रक्षा मे हर क्षण हर प्रकार से तत्पर रहते थे। प्रताप राज-महर्षी था। देश धर्म और नीति के लिए सर्वस्व समर्पित करने वाला त्याग मग्न प्रणवीर था। अपने से कई गुना अधिक प्रबल शक्ति सम्पन्न शत्रु समूह से सफलता पूर्वक चतुर्दिक जूझनेवाला रणवीर। शत्रु के बौद्धिक कुटिल प्रहारो को व्यर्थ करने वाला नीति निपुण। अपनी गरीब प्रजा के साथ समरस सह जीवन जीने वाला प्रजा वत्सल और अपनी मातृभूमि का अवि-श्रान्त सजग प्रहरी था। उसके लिये सिहासन और शिलासन दोनों समान थे। प्रताप को विश्वास था कि भारतीय राजागण मुगल आँधी मे भटके हुये है। राष्ट्र हित की भावना जागृत होते ही वे वापिस लौट आवेगे किन्तु वे मुगलकृपाभिलाषी स्वार्थ में दिग्भ्रमित हो रहे वापिस नही लौटे। तब मुगल आँधी के मुकाबले पर प्रताप (मेवाड) अकेला ही अचल सुमेरु बन तनकर अड़ गया और मुगलिया तूफान टकरा टकरा कर क्षत विक्षत हो काबुल पंजाब की ओर भाग कर मुंह छुपा बैठा।

कृष्ण भक्त वीर अर्जुन से अधिक धैर्यशाली साहसी प्रताप की चहुँमुखी आदर्श श्रेष्ठताओ से अन्त: करण पूर्वक प्रभावित होकर ही श्रीगणेश शकर विद्यार्थी ने अपने राष्ट्रीय समाचार पत्र का नाम

"प्रताप" रखा। विद्यार्थी जी प्रताप के चारण, भाट या आश्रित नहीं थे।

विद्यार्थी जी ने ई० १९१३ नवम्बर के प्रवेशांक में प्रताप के प्रति जो हार्दिक विचार प्रस्तुत किये है वे सर्वथा उचित ही है। यथा—

"महान पुरुष नि. सन्देह महान पुरुष !"

"भारतीय इतिहास के किस रत्न में इतनी चमक है। स्वतन्त्रता के लिये किसने इतनी कठिन परीक्षा दी है। जननी–जन्मभूमि के लिये किसने इतनी तपस्या की। परम देशभक्त लेकिन देशपर अहसान जताने वाला नही। सार्वभौम निरकुश राजा किन्तु स्वेच्छाचारी नही। उस की उदारता और दृढता का सिक्का शत्रुओ–तक ने माना। प्रताप हमारे देश का प्रताप, हमारी जाति का प्रताप, दृढता और उदारता का प्रताप। तू नही है। है तेरी धवल कीर्ति और यश, जब तक यह देश है और जब तक ससार मे दृढता, उदारता, स्वतन्त्रता और त्याग तपस्या का आदर है, तब तक हम क्षुद्र प्राणी ही नही बल्कि सारा ससार तुझे आदर की दृष्टि से देखेगा। ससार के किसी भी देश मे तू होता तो तेरी पूजा होती और तेरे नाम पर लोग स्वय को न्योछावर करते। अमेरिका मे होता तो जार्जवाशिगटन और अब्राहम लिकन से तेरी किसी तरह कम पूजा नही होती। इग्लैड मे होता तो वेलिंग्टन और नेल्सन को भी तेरे सामने सिर झुकाना पड़ता। स्कॉटलैंड मे वालेस और रावर्ट ब्रूस तेरे साथी होते। फ्रास मे जॉन ऑफ आर्क तेरे टक्कर की गिनी जाती। इटली तुझे मेजिनी के मुकावले ऊपर रखती।"

इतना उच्चतम आदर प्रताप को विद्यार्थी जी ने दिया है। किन्तु एक मात्र महाराणा प्रताप की ऐसी सराहना से पीड़ित राज्यों ने धावल से लेखको द्वारा प्रताप के उज्जवल चरित्र को दूपित करवाए है ऐसा ज्ञात होता है।

निष्पक्ष अनुदर्शन करने पर तत्कालीन मेवाड की सीमावर्ती भौगोलिक आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, जातीयविपरीत परिस्थितियों मे प्रताप की सम्पूर्ण राज्य व्यवस्था उसकी सर्वश्रेष्ठ कुशल रचनात्मकता का प्रमाण है। इसी कारण राजर्षीप्रताप की विविध श्रेष्ठताओ को जानकर अनेक मूर्धन्य विचारक विद्वानो की आत्मा प्रताप के प्रतापी प्रताप के समक्ष श्रद्धावनत हुई है ।

इतिहास-शिरोमणि डॉ० रघुवीर सिंह—राजस्थान के एक मात्र तेज पुंज मेवाड़ की महत्ता, उसकी प्रचण्डता, और वह चिरतन राज्य श्री ''। प्रताप की द्र.ढना, धीरज, अडिग आत्मविश्वास, अनवरत प्रयत्न ससार के इतिहास की बहुत ही अनोखी और सर्वथा अनुकरणीय वस्तुए है।

डा० रघुवीर ने लिखा है—राज्यारूढ होते ही राणा प्रताप ने स्पष्टतया मुगल विरोधी नीति अगीकार की और यो मेवाड के ही नही राजस्थान के इतिहास मे भी एक महत्वपूर्ण स्फूर्तिदायक अध्याय का प्रारम्भ हुआ । जो कठोर पराधीनता के गहरे निराशापूर्ण दु ख–मय दिनो में राजस्थान के नाथ ही समूचे भारत तक को स्वाधीनता के लिए सर्वस्व वलिदान कर उसकी निरन्तर अडिग साधना का पाठ पढाता रहा ।

डॉ० गोपीनाथ शर्मा—गहलोतों के रोमॉचकारी इतिहास की तुलना अन्यत्न नही है । महाराणा प्रताप स्वतंत्रता का अग्रज आदर्श प्रातः स्मरणीय है । गुजराती ग्रंथ प्रतापसिंह मे लिखा है–प्रतापसिंह के वीरत्व में नीचता का चिन्ह नही था ।

गुजराती ग्रंथ मेवाड नी संध्या मे लिखा है—प्रताप जैसा सद्‌गुण उच्चभाव और पराक्रम उसके वाद कोई नहीं दिखा सका ।

पारसी कवि आर्देशियर फरामजी खवरदार ने प्रताप का गुणगान किया है । राष्ट्र कवि दिनकर के मनोभाव—प्रताप की वीरता जुल्मों के आगे गर्दन झुकाने से इन्कार करना सिखाती है ।

स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेन्द्र प्रसाद—राणा प्रताप के जीवन से मिलने वाली प्रेरणा हमारे लिए सहायक होगी।

काका कालेलकर की आस्था—राणा प्रताप की विभूती उज्ज-वलतर हैं।

माणिकलाल वर्मा—अवसरवाद से कभी भी समझौता नहीं करना प्रताप के जीवन और उसकी भूमि का आदर्श रहा हैं।

स्मिथ के विचार—स्वाधीनता प्राप्ती के लिए 'संघर्ष' ही उसका अपराध था।

आर० पी० त्रिपाठी ने भी सत्य लिख ही दिया—महाराणा प्रताप ने अपने पीछे इतिहास का ऐसा स्वर्णिम पृष्ठ छोडा है जो हर स्थान के स्वतंत्रता - मीं व्यक्तियो के लिये प्रेरणादायक हैं।

पं० जवाहर लाल नेहरू का विचार सार—राणा प्रताप के अलावा लगभग समस्त राजपूत अकबर शरण हो चुके थे। राणा प्रताप यत्किंचित भी अकबर के आगे नही झुका। अपने जीवन पर्यन्त दिल्ली के महान सम्राट से लड़ता रहा, पर उसके सामने झुका नही। राणा के महान कार्यो की यादगार भारतीय नवयुवकों मे महान प्रयत्नो एव उच्च विचारो की ›रणा दे।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के हृदयोद्गार—यदि हम प्रताप को सही अर्थ में याद करते है तो हमे प्रताप के बलिदान और महान कार्यो का अनुकरण करना चाहिये

लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की मार्मिक प्रखर वाणि—जो सकल्प, उन्होने जिस मतलव से किया था उसी मतलव से हम उसको परिपूर्ण करे (गहन अर्थ है)। कालीकिंकर दत्ता, जे० एम० शेलेट, मुंशी देवीप्रसाद, श्रीराम शर्मा, के० एम० पणिकर, वी० पी० सक्सेना तथा अन्य कई विद्वानो ने प्रताप की महानताओ को आदरा-जलि सादर समर्पित की है।

प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने १९७६ जून २१ को हल्दीघाटी के प्राङ्गण पर एक लाख से अधिक संख्या मे उपस्थित जनता के समक्ष कही थी कि हल्दीघाटी युद्ध अपने वतन से प्यार के खातिर लड़ा गया था। यह कतई हिन्दु मुस्लिम युद्ध नही था। इस आयोजन में दूर दूर से मेवाड़ी बच्चे बूढे स्त्री पुरुष पद यात्रा कर बडी उमंग से पहुँचे थे हजारो भील गरासिए वनवासी अधनगे ही आये थे जून की दहकती धूप, धधकती लू उनके लिए शीतल थी क्योकि उनके पूर्वजों के बलिदान पर्व का ४०० वॉ वर्ष था उनका महाराणा उनकी आत्मा मे सदियो से जीवित है, हमेशा जीवित रहेगा प्रताप का प्रताप।

कर्नल टॉड ने महाराणा प्रताप को प्रसिद्धी दिलवाया यह मत गलत है। ई० १८२१ अगस्त में टॉड का सकलित केवल प्रथम खण्ड पूर्ण हुआ था। ई० १८२३ तक टॉड राजस्थान में था। प्रथमखण्ड १८२९ मे प्रकाशित हुआ है इसके कई वर्ष पहले ही महाराणा प्रताप विश्व मे विश्व के महान आदर्श एव आदरणीय व्यक्ति के रूप मे प्रसिद्ध हो चुका था। प्रमाण है ई० १७९९ मे ईरान मे ईरानी कारीगर मुहम्मद बिन जाफर ने सहयोगी पन्द्रह कारीगरो के साथ चौदह वर्ष निरन्तर एकान्त में रह तत्कालीन ईरानी शाह के बेशुमार शाही खर्च से शाही महल मे सोलह फुट लम्बा नौ फुट चौडा गलीचा बनाया इसमे प्रसिद्ध एक सौ पच्यासी राजपुरुषो के चित्र नाम सहित है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि चेतक पर सवार प्रताप का चित्र शीर्षस्थ पक्ति में गु फित है तथा अन्य किसी भी वीर के अश्व का चित्र नही है अर्थात चेतक-चेटक- जादु जैसा चमत्कारी था, इसीलिये वह भी चित्रित है।

ईरानी शाह से तत्कालीन को "नेपोलियन" मुंहमागे दाम देकर भी नही खरीद सका क्योकि वह इस पर बैठना चाहता था। किन्तु १८६० मे ग्वालियर नरेश जीयाजी राव के शिष्ट मण्डल ने ईरान के शाह से वह गलीचा सप्रेम भेट मे ले आया था क्योकि उस

अद्वितीय कलाकृति को जीयाजीराव ने अपनी पगड़ी जेसा सम्मान दिया था । राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन-ने इस गलीचे को देखकर स्वय ने लिखा है कि-यह अकेला गलीचा ही पूर्ण संग्रहालय है इसके कारीगरो को श्रद्धाजलि अर्पित है । गलीचे का वर्तमान मूल्य दस करोड रुपया आँका गया है ।

गलीचे मे विदेशी मुस्लिम शासक एव कलाकार द्वारा विदेशी हिन्दू शासक को सर्वोच्च स्थान दिया-जाना प्रमाणित करता है कि प्रताप का जीवन चरित्र वास्तव मे सर्वतो मुखी आदर्श है । प्रताप के समक्ष अकवर सूर्य के , समक्ष मोमवत्ती का शेष शुन्य मात्र है यह मरणोपरान्त प्रताप की अकवर पर नैतिक एव राजनैतिक कीति विजय का प्रमाण है ।

प्रताप के उद्देश्य, नीति, दूरदर्शिता, भारतीय चिन्तन, निःसन्देह चिरन्तन एव श्रेप्ठतम थे उसकी कीर्ति तप्त कुन्दन की तरह थी । आशिर्वादीलाल-श्रीवास्तव ने भी मुक्त कठ से प्रताप की सराहना की है,–प्रताप–भारत की तात्विक भावना [Elemental spirit] का प्रतीक था । यह भावना सदैव राप्ट्र की स्वतत्रता और गौरव की रक्षा के लिये सघर्ष मे आगे रही है । महाराणा प्रताप राप्ट्रीय स्वतत्रता और गौरव की भावना से ओत प्रोत था यद्यपि उसने यह भावना एक छोटे ने क्षेत्र मे वड़ी शक्ति का मुकावला करते हुए प्रदर्शित की । यह-प्रताप के उच्च आदर्श ही थे, जिन्होने प्रताप-को भारत की भावी पीढियो के हृदय मे प्रतिष्ठित किया और जिनके कारण वह भारतीय जनता का अन्तर प्रेरणा श्रोत वना । भारत मे जव भी अन्याय और जुल्म के खिलाफ आवाज उठी, प्रताप का स्मरण किया गया । छत्रपति शिवाजी के लिये प्रताप आदर्श था । व्रिटिश-विरोधी स्वातन्त्र्य सग्राम मे वगाल से गुजरात तक और सुदूर कर्नाटक तक महाराणा प्रताप के अनुपम स्वातंन्त्र्य सघर्ष और वलिदान के उदाहरण ने जन जन को उत्साहित किया, बल और विश्वास दिया । स्वतत्रता

के लिये सर्वस्व अर्पित करने की रणा दी । यह कम महत्व की वात नहीं है कि भारतीय इतिहास का महान सम्राट विशाल साम्राज्य का स्वामी और शक्तिशाली शासक अकवर भारतीय जन-मानस मे वह स्थान नहीं ग्रहण कर सका, जो महाराणा प्रताप ने प्राप्त किया है। यह भी प्रताप की विजय का सुदृढ प्रमाण है।

प्रताप के विचारो की उदारता, सिद्धान्तों और आदर्श की महानता चरित्र की पवित्रता व्यवहार की नैतिकता तथा स्वतन्त्रता के लिये उसके अटल निश्चय अप्रतिम त्याग और वलिदान ने उसको भारतीय इतिहास का अमर व्यक्तित्व वना दिया है।

प० श्रीपाद सातवलेकर–महाराणा की वीरता ओजस्विता त्याग तपस्या एवं हृदय मे स्वातन्त्र्य रहने की लालसा कायरो के भी रग-रग मे वीरता प्रवाहित कर देती है। महाराणा का जीवन एक योगी का, एक तपस्वी का, एक स्वातन्त्र्य वीर का और सवसे वढकर स्वातन्त्र्य समर के सेनानी का जीवन था।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गौरीशकर हीराचन्द ओझा—

जव तक ससार मे वीरो की पूजा होती रहेगी तव तक महाराणा प्रताप का उज्ज्वल और अमर नाम लोगों को स्वतन्त्रता और देशाभिमान का पाठ पढाता रहेगा।

राहुल साकृत्यायन–प्रताप की वीरता और त्याग इतिहास के पृष्ठो पर सुवर्ण से लिखा गया है।

साहित्य महाराणा प्रताप पर–

सस्कृत भाषा मे १ हिन्दी में ४० मराठी १७, गुजराती १४, राजस्थानी १३, वगला ६, इग्लिश ५, कन्नड ४, तेलगू ३, उड़िया २, योग १०३। मेरी अल्प जानकारी मुजव इतनी पुस्तके है इनके अलावा और भी होगी, फुटकर साहित्य भी वहुत है। मेवाड़ी शौर्यगाथा भी प्रचुर मात्रा मे लिखी हे। लोकगीतों मे भी है।

जैसा विभिन्न भाषाविदों नें प्रताप का यशगान किया हैं उसी तरह समस्त जातियों ने प्रताप को अटूट सहयोग दिया है। मुगलिया क्रूर अत्याचार मेवाड़ी प्रजा को नहीं डिगा सका, रहीम खान का लोभ भामाशाह को नहीं खरीद सका। प्रजा में प्रताप के प्रति दृढ़ निष्ठा एवं प्रताप मे दृढ निश्चय मेवाडियों की विजय का प्रमुख आधार है। प्रताप कालीन राजस्थानी साहित्य मे अकबराधीन राजाओं को स्वय के क्षुद्र स्वार्थों के लिए नैतिक पतन एव विलासिता के लिये दोषी लिखा है। तथा प्रताप को क्षात्र धर्म रक्षक सच्चा क्षत्रीय माना है।

प्रताप की टेक प्रताप के वंशजो में आज भी झलकती है, वह भले ही आशिक ही हो। किन्तु अनेक मिथ्या महानताओ से अलकृत अकवरी चिरागुहीन कहीं नहीं है।

अकवर के जीवन काल मे मेवाड स्वतन्त्र ही रहा था। प्रताप की मृत्यु वाद भी प्रतापी जाहो जलाल का आतंक मुगल शासन पर सदैव रहा है। ई० १५७६ के वाद मेवाड़ को दबोचने का साहस अकवर मे कतई नहीं था इसीलिये वह पजाव भागा था।

मेवाड़ी गहलोत–सीसोदा राजवश ई० ७२८ से ई० १७१८ तक लगभग ग्यारह सौ वर्ष निरन्तर युद्धरत रहा है। प्रसिद्धी है कि मेवाड मे सत्रह जौहर हुए हैं। जौहर तो गजनी १, देरावल १, महलावा १, जैसलमेर ३, रणथम्भोर १, जालोर १, सिवाना १, चित्तौड़ मे १७ जौहर हुए। योग २६। दो कत्लेआम भी हुए है। वल्लभी पतन ई० ५२८ से संघर्ष काल गिने तो तेरह सौ वर्ष इस वंश ने संग्राम भूमि पर तलवार से इतिहास लिखा है जो विश्व मे बेजोड़ है। चित्तौड़, हल्दी घाटी, गोगून्दा और चांवड मे युद्धकालीन शहीद मृतात्माओं की स्मृति मे शताब्दियों पहले से स्वयं स्फूर्त मेले प्रतिवर्ष भरते आ रहे है। जिनमें मृतात्माए भी आती है। ऐसा महेन्द्र भानावत का अनुभव है। आप भी जाकर स्वयं अनुभव करलें। प्रणाम करलें।

"महाराणा प्रताप का प्रताप"

ई० १५९७ जनवरी १९ को अमरसिंह राज्यारूढ़ हुआ। ई० १५९८ में अमरसिंह का दमन करने अकबर ने सलीम और मानसिंह को सैन्य सह भेजा किन्तु अजमेर तक पहुँचकर सलीम मेवाड़ में जाने का साहस नहीं कर सका। ई० १६०३ में अकबर ने पुनः सलीम को भेजा किन्तु सलीम सीकरी से आगे नहीं बढ़ा।

ई० १६०५ में विष द्वारा अकबर की मृत्यु होने पर (सलीम ने दवा के बदले अकबर को जहर दिलवाया था) सलीम जहांगीर के नाम से बादशाह बना, तब पुत्र परवेज के साथ महावतखां तथा अन्य चार सेनापति, तीन सौ तोप एवं विशाल सेना, महाराणा अमरसिंह का दमन करने भेजा था। मेवाड़ियों ने छापामार आक्रमण कर शाही सैन्य शिविर लूट लिया। कई सैनिक मारे गए। बची हुई मुगल सेना ऊठाला और देवारी के मध्य एकत्र हुई थी कि इस पर पानड़वा के भीलराज पूंजा राणा के पुत्र रामा ने भील बन्धुओं की सेना साथ ले परवेज पर जबरदस्त छापामार आक्रमण किया, मुगल सैनिक बड़ी संख्या में मारे गए। परवेज का पुत्र भी मारा गया। तोपें बेचारी मौन पड़ी रहीं। बची हुई मुगल सेना मुश्किल से माण्डलगढ़ में शरण ले सकी थी। याने यह देवारी घाटी दूसरी हल्दीघाटी हुई। परवेज हो पराजित वापस लौट गया।

जहांगीर ने बीस लाख रुपया, बारह हजार अश्व सेना, दो हजार बन्दूकची, विशेष खूंखार लड़ाके पाँच सौ, अस्सी तोप, साठ हाथी के साथ कुशल सेनापति महावत खां को भेजा। इस सैन्य दल पर बेगूं वाले गोविन्द के पुत्र मेघा ने अपने साथियों सह वहीं छापामार आक्रमण कर मुगल सेना की छंटाई कर गया और रात में दूर से

सैकड़ों मशालें दौड़ती देख तथा तोपों की आवाज सुनकर मुगल सैनिक ,जिस हाल में थे, भागते ही भागे। इन्हे रोकने के लिये महावतखां पागल की तरह शोर मचाता रह गया। मशाले और आगे आई तब महावतखां भी सैनिक, सामान, मैदान पर छोड़ भाग गया।

"वे धमाके तोप के नही थे आवाजो बांम्ब के थे और मशाले भैंसो के सीग पर बन्धी थी"।

❀ पाठक ध्यान दे कि यहाँ दो मर्तवा तोप और हाथी आने का वर्णन हुआ है तब हल्दीघाटी युद्ध में हाथी और तोप नही आये यह लिखना चण्डूखाने की गप्प है। ❀

जहागीरी फौज से राणकपुर जैन मन्दिर की रक्षा हेतु मेवाड़ियो ने सफल मुकावला किया, इस युद्ध मे जयमल राठोड़ का पुत्र मुकुन्द शहीद हो गया।

ई० १६११ में ससैन्य अब्दुल्ला मेवाड़ पर चढाई किया तब प्रताप के पौत्र कुंवर कर्णसिंह ने सामन्त सरदारो को साथ ले अब्दुल्ला पर राणकपुर की अति गहन दुर्गम घाटी मे हमला कर दिया फिर इसी फौज पर कैलवा मे दुवारा आक्रमण कर भगा दिया था। महाराज वसु तंवर भी मेवाड़ से असफल हो लौटा था।

जन शक्ति के सहयोग से महाराणा अमरसिंह ने जहांगीरी जबरदस्त आक्रमणो को "सत्रह मर्तवा असफल किया है।" अमरसिंह को कायर एवं विलासी का मिथ्या दोष लगानेवाले अव शीर्षासन कर लें।

मेवाड़ मे वार वार हुई पराजय से झुंझलाकर जहांगीर ने लड़ाके सेनापति सूरसिह, किशनसिह, रतन हाड़ा, वसू का पुत्र, सूरजमल तवर, वीरसिंह वुन्देला, नवाजिशखा, शौफखा, खान आजम, अब्दुल्ला खां, महमूदखा, याकूवखा, एव शहजादा खुर्रम को विशाल सेना तथा प्रचुर युद्ध सामग्री सह मेवाड़ भेजा। किन्तु जहांगीर खुद अजमेर मे ठहरा रहा था।

इस विशाल सैन्य समूह से हल्दीघाटी युद्ध का पुनरावर्तन होगा यह भली प्रकार विचार कर तथा १५६८ से सोत्साह युद्धरत रही मेवाडी जनशक्ति अब क्लान्त थकित हुई जानकर सामन्त सरदारों ने महाराणा अमरसिंह को आग्रहपूर्वक बाध्य कर खुर्रम द्वारा प्रेषित सम्मानित सन्धि प्रस्ताव कुंवर कर्ण द्वारा स्वीकृत करवाये किन्तु शर्तें मेवाड़ द्वारा तय की गई थी। शर्तें बून्दीवाली शर्तों के अलावा क० ख० ये दो शर्त अधिक हैं। डोला नही दिया जायगा, के अलावा (क) राणा शाही दरबार में नही जायगा (ख) राणा किसी भी शाही दूत का अभिवादन नही करेगा, विशेष दो शर्तें यही थी। मुगल शर्त थी किलो की मरम्मत नही कराना शेष शर्तें आम तौर पर थी। जहाँगीर ने बगैर नुक्ताचीनी किये फौरन मंजूरी में दस्तखत कर दिया यह ई० १६१५ फरवरी की घटना है। इस सन्धि के बाद भी मुगलों के विरुद्ध मेवाड़ में रोष कायम ही था।

शाहजहां के उत्तराधिकारी, राज्य हथियाने हेतु परस्पर लड रहे थे तब ई० १६५८ में महाराणा राजसिंह ने दरीबा, मांण्डल, फूलिया वनेडा, जहाजपुर, शाहपुरा, मालपुरा, टोंक, टोड़ा, सांभर, लालसोट तक धावा कर लूट लाया था।

औरगजेब शासक बना तब इस धर्मान्ध के प्रहार से रक्षण पाने हेतु ब्रज से रवाना हो अनेक राज्यों से उपेक्षित हुई नाथद्वारा वाली श्रीनाथजी की मूर्ति की रक्षा में केवल मेवाड़ ने कर्तव्य निभाया, एक लाख मेवाडी वीर निछावर हुये थे। मूर्ति ईसा से २००० वर्ष पहले की है। औरंगजेब की हिंसकता से, जसवन्तसिह रोठोड के पुत्र अजीतसिंह की रक्षा तलवार के बलपर राणा राजसिह ने की थी। अन्य राज्य रक्षण देने का साहस नही कर सके थे।

ई० १६६० में किसनगढ़ (रूपनगर) के राठोड़ रूपसिंह की कन्या चारुमती (रूपमती) से बलपूर्वक विवाह करने औरंगजेब ससैन्य खाना हुआ तब चारुमती के निमंत्रण पर राजसिह ने चारुमती से

तत्काल विवाह किया है। इसी समय औरंगजेब को रोकने एवं लौटाने मुट्ठी भर मेवाड़ी वीरों ने अत्यन्त कठोरतम संघर्ष कर, उसे साज सामान छोड़कर खाली हाथ भगा दिये थे। इसी युद्ध समय हाडी राणी का शीसअर्पण सैनाणी प्रसिद्ध है। औरंगजेब के सैन्यदल को उदयपुर महल के द्वार पर रोकने पोलपात नरूजी कडा संघर्ष कर जूझार बना था। इस का धढ जगदीश मन्दिर के पास गिरा था, वहीं इस का चबूतरा बना है। जिसे अब मजार बतलाते हैं। औरंगजेब से चारुमती का उद्धार, श्रीनाथजी की मेवाड में सुरक्षित स्थापना, राठोड जसवंतसिंह के पुत्र अजीतसिंह को रक्षण तथा जजिया टैक्स का कडा विरोध राणा राजसिंह ने किया इसलिये खुद औरगजेब अपने पुत्र अकबर, अजीम, मुअज्जम को तथा विशाल सेना साथ ले मेवाड पर चढाई किया। माण्डल, मन्दसौर, चित्तौड़ जीरन पर अधिकार कर देवारी में ठहर गया।

राणा राजसिंह ने चप्पन क्षेत्र के ग्यारह मील लम्बे नाहन गिरि मार्ग पर नाकाबन्दी करली थी। औरंगजेब खुद आगे बढ़ने का साहस नहीं कर सका। पुत्र अकबर को सेना सहित आगे भेजा था इसे मेवाड़ियों ने घाटी में घेरकर बुरी तरह पटखनी दी थी कि अकबर ने राजसिंह के पुत्र जयसिंह से प्राणदान मांगा तब जीवित लौट सका था इसका खजाना, नक्कारा, निशान, डेरे तम्बू साज सामान और नौ हाथी मेवाड़ियो ने लूट लाये थे।

इसी अकबर की सहायता को औरंगजेब ने दिलेरखां को ससैन्य भेजा था इसे देसूरी गहन के घाटे में घेरकर राठोड गोपीनाथ और विक्रम सोलंकी के सैन्य दल ने समाप्त ही कर दिया था। इसी अव-सर में रुहेलाखां १२००० सेनासह इसी घाटी में बढ़ आया था। इसके दल को राठौड शामलदास ने छापामार आक्रमण कर भगा दिया था। ❀ उधर राणा राजसिंह और प्रसिद्ध वीर दुर्गादास राठौर ने औरंगजेब पर छापामार आक्रमण कर दिये। औरंगजेब घबराकर

साज सामान छोड भाग गया था। मेवाड़ियों ने समस्त सामान बटोर लाए थे, जिसमें औरंगजेब की एक बेगम भी पकड़ी गई थी, इसे राजसिंह ने सादर वापस भेज दिया था। ❀

अजीम के सैन्यदल को मंत्री दयालदास ने इस बुरी तरह रौंदा था, कि अजीम को भी भागना पडा। क्रूर औरंगजेब के मातहत रह-कर भी मेवाड नरेश राजसिंह ने औरंगजेब से युद्ध करने में कभी संकोच नही किया। यह साहस केवल अकेले मेवाड ने किया है। अन्य किसीने नही किया। अर्थात प्रताप के बाद भी मेवाड़ी शौर्य रहा है।

कुंवर भीमसिंह, मंत्री दयालदास, बानसी के शेखावत्त ठाकुर का पुत्र गंगादास ने मालवा, गुजरात को लूटे, मुगली मुसलमां जहां मिला मौत के घाट उतारा गया। भीम के दल से मुगलिया मुसलमां भय-भीत रहने लगे थे। तब मुस्लिमो की प्रार्थना पर राजसिंह ने भीम को रोका था।

औरंगजेब की आगरा कैद से भागकर लौटते समय साधुवेश में शिवाजी ने प्रताप की समाधि पर प्रणाम और प्रणकर राजसिंह से आशीर्वाद लिया है। किन्तु शिवाजी से अधिक साहसी उनका पुत्र सम्भाजी था, औरगजेब की कैद में सम्भाजी को सेनापति रोहिलाखां ने यातनाएं दी प्रलोभन दिया ताकि किले, खजाने और औरंगजेब के द्रोही औरगजेब को सौप दे। किन्तु जबाब मे हर बार वीर सम्भाजी ने बादशाह और उसके धर्म को गालियां ही दिया है एवं औरंगजेब की पुत्री से शादी करना चाहा है। सम्भाजी का साथी कनौजिया कवि कलश दुर्गुणी था, यह भी साथ था। सम्भाजी और कलश दोनों को फटे चिथड़े पहनाकर ऊंट पर बैठाकर टीन टपरा बजाते हुए उन्हें यत्र तत्र घुमाया गया और इनका एक एक अग काटा गया किन्तु वह वीर अडिग रहा सम्भाजी ने जीवनदान और राजैश्वर्य के लोभ को ठुकराकर क्रूरतामय मृत्यु स्वीकारा है किन्तु झुका नही।

सन्धि के विरुद्ध राणा राजसिह ने किले की मरम्मत करवालिया था इसलिये बहुत वडी सेना लेकर सादुल्ला खा मेवाड मे आया। सन्धिवार्ता मे सादुल्ला ने मधुसूदन से पूछा मेवाड़ी सेना कितनी है। उत्तर सगर्व मिला छव्वीस हजार। शादुल्ला ने व्यंग में कहा शाही घुडसवार एक लाख है। मधुसूदन-ने उपेक्षा से सहज ही कहा तव तो छव्वीस हजार ही काफी है। यह सुन सादुल्ला चिन्तित हो गया कि ये मेवाड़ी कम रह कर भी जबरदस्त मुकाबला करते हैं। यह सोचकर पुनः सन्धि किया है।

औरंगजेब ने कई मन्दिर तुड़वाया किन्तु वंगाल में हनुमान मन्दिर, राजस्थान मे भ्रामरी (जीण माता) का मन्दिर तोड़ने गया तव दैवी प्रकोप से भयभीत हो क्षमायाचना कर भेंट चढा कर ही जान वचा पाया था। वर्ना हज्जारो भौरे इसपर टूट पड़े थे। जीणपर मदिरा प्याली, आज भी होती है खाली।

ई० १६८८ के अन्तिम सप्ताह में भरतपुर नरेश राजाराम जाट ने सिकन्दरा लूटा। अकवर के मकवरे की मूल्यवान सभी वस्तुएं वटोर लाया एव कब्र तोड़कर अकवर की हड्डिया वटोर कर आग में झोका था।

पाठक स्मरण रखें कि राजसिंह के पुत्र जयसिंह तक मेवाड़ का यह गहलोत सीसोदा राजवश मांस मदिरा सेवी नही था, शिकार करते थे लेकिन शौखसे या अनावश्यक नही। महाराणा जयसिंह का पुत्र (ई० १६९८–१७१०) अमरसिंह द्वितीय मदिरा पीने लगा था, इसी पर पिता पुत्र मे सैनिक युद्ध तक ठन गया था किन्तु अमरसिंह नहीं मुधरा।

अमर राज्यारूढ हुआ इसने मुगलो को भारत से भगाने का विचार कर मुगलविरोधी संघ वनाने जयपुर, जोधपुर व अन्य रज-वाड़ों को सगठित करना चाहा किन्तु सफल नही हो सका। १७२६ से १८१७ तक मराठा पेंढारी, सिंधिया ने राजस्थान को खूब लूटा, इसमें

मेवाड़ को अधिक हानि सहनी पड़ी । अर्थाभाव के कारण ही जयपुर जोधपुर से वैवाहिक सैन्य युद्ध टालने ई० १८१० में राणा भीमसिंह की लाडली पुत्री "कृष्णा" ने दो बार जहर पीकर कुर्बानी दी है। अपने कारण होने वाले रक्तपात को रोकने के लिये इस राज कन्या ने निर्विरोध कुर्बानी दी थी।

धनाभाव के कारण ही ई० १८१८ मे महाराणा भीमसिंह ने उपरोक्त लुटेरों से बचाव के लिये अंग्रेजों से सन्धि की है। इसके पहले ई० १८०३ में जयपुर, जोधपुर, अलवर, भरतपुर आदि राज्यो नें अंग्रेजों से सन्धि कर लिये थे। राजस्थानी प्रजा दैवी प्रकोप से भी जूझती रही है। राजस्थान मे ११ वी सदी में भयानक अकाल पडा था, जिसका प्रभाव बारह वर्ष रहा था। ई० १७६४, १७९४, १८०४, १८१२, १८६९, १९०१ में भी भंयकर अकाल पडे थे। त्रेपन अकाल की जानकारी मिलती है। ई० १८१२ में एक रुपये का तीन सेर अन्न बिका था। जवकि इसके पहले एक रुपये मे गेहूँ १२ मन, चाँवल १७ मन, दाल १६ मन बिकती थी। ई० १८१८—२० मे जयपुर में एक रुपये मे गेहूँ १। मन, तिल तेल एवं रुई २२ सेर, चाँवल २१ सेर, चीनी ७ सेर, उत्तम ऊची मिठाई सात रुपया मण भाव था। ई १७९९ में ५० लाख, १९०१ मे पच्चीस लाख रुपया जयपुर नरेश ने प्रजा के लिये खर्च किया था। ई० १८५७ के गदर के पहले राजस्थान में अंग्रेज विरुद्ध विद्रोह आरम्भ हो चुका था। चालीस से अधिक नगरों मे अंग्रेजों पर घातक आक्रमण हुए थे।

प्रतापी स्वाधीनता के साधक वीर

कोइल (अलीगढ) निकट प्रसिद्ध हाथरस का राजा दयाराम अंग्रेजी दासता नही स्वीकारा। ई० १८१७ फरवरी १७ से अंग्रेजो से युद्ध आरम्भ हुआ किन्तु दयाराम के गूजरी पुत्र नेकराम ने किले का रहस्य अंग्रेजो को वतला दिया। अंग्रेजों ने मार्च २ को प्रातः से ही ४२ तोपो द्वारा गोलावारी कर किले का वारूदी भण्डार ध्वस्त कर दिये। इस जवरदस्त क्षति से दयाराम हाथरस छोड़ गया लेकिन झुका नहीं। नेकराम को राज्य मिला नहीं। दयाराम के प्रपौत्र प्रसिद्ध क्रांतिकारी राजा महेन्द्र प्रताप ने अपनी राज्य सम्पदा मोतीलाल नेहरू के पहले ही देश को अर्पित किया है। गाँधी के पहले ही छूआ छूत का विरोध किया है। सुभाष के २६ वर्ष पहले से भारतीय स्वतंत्रता हेतु जनमत तैयार करने पत्नी, पुत्र एवं राजत्याग २८ वर्ष की आयु से ही वर्षो विदेश यात्रा करता रहा है।

राजस्थान से ई० १८१७ से हस्तलिखित समाचार पत्र आरम्भ हुआ। ई० १८८१ से भारतीय भाषा में उदयपुर से सज्जन कीर्ति सुधार नामक मुद्रित साप्ताहिक समाचार पत्र निकला, यह हैदरावाद, पूना, कलकत्ता तक जाता था।

ई० १८२४ में दद्रेवा (वीकानेर) के ठाकुर सूरजमल ने अंग्रेजी इलाके मे भिवानी, लोहारू, झूंपा, वहण का थाणा की अंग्रेजी छावनी लूटा था।

अंग्रेजों के समक्ष न झुकनेवाला वूंदी निकट गोठड़ा का राजा वलवन्तसिंह, भाई शेरसिंह, पुत्र धौकलसिंह, फतहसिंह के साथ कार्तिक पौणिमा को धार्मिक कार्य से केशवराय पाटण नदी तट पर गया था। इन्हें अंग्रेजों के सैन्यदल ने ई० १८२४ में अचानक घेर

लिया ये लोग लड़ते हुये शहीद हो गये किन्तु अंग्रेज की शरण नही गये।

ई० १८३४ से सीकर के डूंगरसिह जवाहसिह ने हिसार मे अग्रेजी थाने लूटे, मेजर फॉरेस्टर का कैम्प लूटकर हाथी, घोड़े, ऊँट भी छीन लाए।

ई० १८३५ जून ४ को जयपुर राजमाता से मिलकर लौटते समय मार्ग पर ब्लेक, लडलो. एल्वेस पर फतहसिह नामक व्यक्ति ने तलवार से आक्रमण किया था। एल्वेस घायल हुआ, ब्लेक और लडलो भागे किन्तु जनता ने ब्लेक को तथा उसके चपरासी, छडी वरदार, और महावत को मौत के घाट उतार दिया था। इस अपराध पर अमर-चन्द तथा अफगन नेता हिदायतुल्ला को फॉसी हुई एवं मेवालाल, हुकमचन्द, माणकचन्द, और दीवान झूंथाराम को सश्रम कारावास की सजा हुई थी। लडलो पर जोधपुर में भी तरवार से आक्रमण हुआ था।

जोधपुर, लांविया, वांता, भिवालिया, रड्डावास, बीजावास, आलणियावास, मूनवाडी, वूंदी, चोपासनी, रघुनाथगढ, कोटा, आउवा, चौमू, भरतपुर, अल्वर, निम्बाहेड़ा, नीमच, ऐरनपुरा, देवली, टोंक, नसीरावाद, महीदपुर, आसोप, गूलर, बीकानेर ठठावत, लासाणी, भोजोलाई, डीडवाना, खिरोड मफाउ, खड़व, देवता, सीकर, सिंगरावट, डूंगरपुर, बांसवाडा, जैसलमेर, उदयपुर, अजमेर, आसीद, खेतडी, धौलपुर, मनोरपुरा, बिसाउ, वठोठ, सलूम्बर, रूपनगर, जयपुर, शाहपुरा, आदि अनेक स्थानों के स्वाधीनता प्रेमी क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी सत्ता पर करारे तमाचे जडे हैं। अंग्रेजों ने इन वीरों को भी चन्द्रशेखर आजाद, बिस्मिल, अशफाक, भगतसिंह, लाहिडी, आदि की तरह वागी देशद्रोही, डकैत गद्दार आदि घोषित किये थे।

१८४३ से १८५० के मध्य अमरकोट (सिंध) का सोढा राजा रतनसिंह था, अग्रेजो से छापामार युद्ध करता रहा। इसे मित्र ने धोके से वन्दी वनवाया था, राजा रतनसिंह को फांसी दी गई थी।

शेखावाटी में क्रातिकारियो के गढ सिगरावट किले मे डूंगजी जवारजी को मेजर फारेष्टर एक महीना तक घेरे रहा। निशानेवाजी होती रही। अन्तत. डूंगरसिंह अपने साथियो सहित किले से वचकर निकल गया। फारेष्टर की सहायता को नसीराबाद से कर्नल शा भी पहुँच चुका था।

सिगरावट पर अधिकार करके फारेष्टर ने दुगाली और वरडवा की गढियों को घेरा था। डट कर युद्ध हुआ, गढियां ध्वस्त हो गई। डूंगजी जवारजी के दल ने अग्रेजी जत्थो को कई बार चोट पहुँचाई है। अंग्रेज और उनके सहायको को लूटना तंग करना इनका नियम था, इससे अग्रेज वेहद परेशान थे।

नसीरावाद के निकट झड़वासा मे गौडक्षत्रिय मित्र के घर ठहरे हुए डूगजी को मित्र ने अग्रेजो के दवाव एवं लोभवश गहरा नशा करवाकर वेहोशी मे नि शस्त्र कर रस्सी से वान्धकर सगीनो की नोक पर अंग्रेजी सैन्यदल को सौंपा था। अग्रेजो ने आगरा किले की जेल मे सख्त पहरे मे डूगजी को रखा था जेलर अलबर्ट ने घृणित एव कठोर यातनाएं दी थी। कुछ ही दिन मे जवाहरसिह साथियोसह छद्मवेष मे जाकर दि० १८-१२-१८४६ को डूगजी को किले के जेलखाने से निकाल लाए एवं दूसरे कैदियो को भी मुक्त कर दिये। तथा मेजर अल्वर्ट का अपहरण कर उसकी आखे फोड दिये। बाद मे उसकी सरकटी लाश उसी के घर के पास मे टगवा दिए। ई० १८४७ जून १८ को नसीरावाद की प्रसिद्ध अग्रेज छावनी से फौजी सामान एव ५२०००) रुपया तथा १८४८ मे २५८७८॥=) रु० डूगजी लूट ले गया। छावनी के लुटने से अंग्रेज दहल गए और भयभीत हो नसीरा-वाद का तोपखाना और घुड़सवार ब्रिगेड कर्नल शां, मेजर फारेस्टर,

मॉक मेसन, एव हार्ड कैसल, के नेतृत्व में डूंगजी के दल पर लगाई गई (ऐसी मिसाल शायद ही हो) घडसीसर गाँव के निकट जंगल मे इन्हे चारो ओर से घेरा गया। गोलियां बरसने लगी किन्तु सैन्यदल को चीरता हुआ डूंगजी साथियों सह बच निकला। डूंगजी जोधपुर राजा के तथा जवारजी बीकानेर राजा के खास रक्षण मे रहने लगे थे। क्योंकि ये क्रांतिकारी थे।

ई० १५८८ के लगभग से अफगन अनेक परिवार जयपुर राजस्थान मे बसे हुए हैं। इन्होने १८४३ में विप्लवकारियो को साथ दिये थे इसलिये इनके नेता अमीरखां पठान एवं ताराचन्द चोबदार को १८४३ जून २८ को फांसी दी गई थी।

मेवाड नरेश फतहसिंह, झालावाड़ का जालिमसिंह, बूंदी का राव रूपसिंह, कोटा का उम्मेदसिह, बीकानेर का गगासिह, चौमू का रणजीतसिह ये राजा क्रांतिकारियो के गुप्त सहायक थे। इसी कारण फतहसिह और जालिमसिंह का राज्यपद समय से पहले छूटा था। ई० १८५४ मे फतेपुर (शेखावटी) के मैदान पर रणजीतसिंह नाथावत ने, तोपखाना साथ लाये हुए जार्ज स्मिथ एवं जार्ज फ्रांसिस को सेना सह पराजित कर भगा दिया था। बाता, भीवालिया, रड्डावास, बीजावास, सलूम्बर, रूपनगर, लासाणी, आमीद के जागीरदार भी क्रांतिकारियो के सहयोगी थे। क्रांतिकारियों के आश्रयस्थल दुगाली, बरड़वा, आउआ, बाता, भींवालिया, रघुनाथगढ़, ठठावत, भोजोलाइ, खीरोड, मूनवाडी, मफाउ, खड़ब, देवता, पाहोरा, बठोठ, सिंगरावट, आसोप, लांबिया, रड्डावास, बींजावास, सरूपनगर, सलूम्बर, लासाणी, आसींद के जागीरदार विद्रोही थे। दुगाली, बरडवा, आउआ, रघुनाथगढ, भोमट, कोटडा, भूला, बालोलिया, निम्बाहेडा, बांतां, भीवालिया, आलणियावास, टौंक, कोटा, गूलर आदि ग्राम, सुरंग, तोप या आगजनी आदि से अंग्रेजों ने ध्वस्त कर दिये थे। १८५७ जून ३ को नीमच छावनी से अंग्रेजी सेना के क्रांतिकारी

भारतीय सैनिक दिल्ली के लिये रवाना हुए, तव नीमच की छावनी जला कर खजाना लूटे, नसीरावाद, देवली, महीदपुर, डीसा, एव एरनपुरा की छावनी के सैनिक भी साथ होते गए। मार्ग मे कोटा, निम्वाहेडा, टोक, आसोप, गूलर, आलनियावास, रड्डावास, बीझावास भरतपुर, अलवर आदि गाँवो मे इन क्रातिकारियो के लिये स्वागत एव भोजन व्यवस्था सोत्साह जनता ने की थी।

वीकानेरी अमरचन्द वाठिया ई० १८३४ मे ग्वालियर मे आकर वसा। राज्य के खजाची वृद्धिचन्द सचेती ने वृद्धावस्थावश अपना पद धर्मनिष्ठ विश्वस्त सजातीय अमीरचन्द को दिलवादिया था। दि० २८-४-१८४८ को विप्लवियो ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिये कई यूरोपियन मारे गये। दि० ६-६-१८४८ को गदर नेता नानासाहव पेशवा के आदेश से एव जयाजीराव सिधिया के गुप्त सकेत से उनके प्रतिनिधि राव साहव को राजकोष अमरचन्द ने सौप दिया। जवाहरात के अलावा २०॥ लाख रूपया नगद (आज करीव ७ करोड होता है) था जो गदर सेना को वेतन मे वाटा गया।

इसके पुरस्कार मे अग्रेज ब्रिगेडियर नेपियर द्वारा सराफा वाजार मे नीम के पेड़ पर दिये गये फासी के फन्दे अमरचन्द के गले पर तीन मर्तवा टूट गये किन्तु वड़ी मुस्तैदी से दि० २२-६-१८४८ को लश्कर सराफा वाजार मे सरेआम न्याय विरुद्ध चौथी मर्तवा अमरचन्द को फासी ने मौत मे फास दी थी। इसके पहले जून १४ को पचास व्यक्ति फासी पर लटकाये गए थे।

१८५७ अगस्त २१ को एरणपुरा छावनी के क्रान्तिकारी सैनिक आवू पहुँचे। कर्नल हाल एव अन्य कई अंग्रेजो को मौत के घाट उतार दिये। डीसा की छावनी के सैनिक भी वागी हो गए थे। उपरोक्त सैन्य समूह का दिल्ली जाते समय मारवाड मे आउआ शहर के ठाकुर मारवाड़ी कुशलसिह द्वारा आतिथ्य सत्कार किया गया। यह सैन्य सगठन ६००० तक पहुँचा था। यहा से इस सेना के नेता कुशल

सिह बनाये गए। इसी अवसर मे अजमेर से ब्रिगेडियर पेट्रिक लॉरेंस जोधपुर राज्य से सैन्य सहायता लेकर आउआ के बिठोरा ग्राम निकट डेरा लगाया। सितम्बर ८ को डटकर सग्राम हुआ। जोधपुर के दो सेनापति मारे गए। सेना भाग छूटी तव लॉरेंस जोधपुर के पॉलि-टिकल एजेन्ट मॉक मेसन की वड़ी सेना ३०००० एव तोपखाना साथ ले आउआ पर आक्रमण कर दिया। घमासान युद्ध हुआ "मेसन" मारा गया। फिर दूसरे दिन युद्ध हुआ लारेंस अपने दो हजार सैनिक कटवा कर भाग गया। इसी वीच नसीरावाद से यूरोपियन तीन हजार सैनिक आउआ पहुँचे गोलावारी का मुकावला आउआ ने छह दिन किया। छोटा सा किला (गढी) था टूटने-लगा था तव क्रातिकारियो को आउआ छोड़ना पडा था। कुशलसिह भूमिगत हो मेवाड़ के कोटारिया मे आश्रय पाया था।

आउआ ध्वस्त हो गया किन्तु इतिहास ने उसे वुलन्द कर दिया कि उन क्रातिकारी सैकडो शहीदो का उन्नत भाल, पचीस फुट ऊँचा जयस्तम्भ वहा शोभित है।

१८५७ मे ही कोटा मे भी क्राति ज्वाला धधकी थी। अग्रेजी सभ्यता एव नीति के विरुद्ध जनता मे रोष व्याप्त था। कोटा राज्य की सेना भी क्षुब्ध थी। नीमच की छावनी के क्रातिकारियो का दमन करने नीमच के कमाडिग ऑफिसर मेकडानॉल्ड की सहायता के लिये कोटे का पोलिटिकल एजेन्ट सैन्य सह नीमच गया था अक्टूबर १२ को मेजर बर्टन दो पुत्रो सहित कोटा वापस लौटा। कोटा की क्रातिकारी सेना ने अग्रेजी रेजीडेंसी पर आक्रमण कर दिया मेजर वर्टन और इसके दोनो युवा पुत्र एव मिष्टर सेविल डॉ० साल्डर एव यूरोपियन कई सैनिक मारे गए। सरकारी कोठार कोतवाली तोपखाना बगले वाजार आदि पर क्रातिकारियो का छह महीने अधिकार वना रहा। शेरगढ मे भी विद्रोह हुआ था। अंग्रेजो के दवाव से कोटा नरेश के आग्रह पर भैंसरोड, पीपलदा, गैता, कोयला, करौली के शासको ने

सैनिक सहायता भेजी । इनसे हुए युद्ध मे ८०० क्राति सैनिक एव ३०० राज सैनिक मारे गए । तोपखाने के वलपर मेजर रॉवर्ट सफल हुआ। योरोपीय सैनिकों ने वाजार, मन्दिर, मुहल्ले खूव लूटे थे ।

विद्रोही नेता जयदयाल को सरेआम तोप मे उडाया गया था तथा महरावखां पठान को सरे वाजार वृक्ष पर लटकाकर उसे भूखा प्यासा मारा गया था किन्तु ये विचलित नही हुए ऐसे थे आजादी के आशिक । दिल्ली में राजपूत सातवी पल्टन के कई सैनिक गदर अभियोग मे फांसी पर लटकाए गए इनकी सख्या अज्ञात है ।

ई० १८७५ में महर्षी दयानन्द सरस्वती ने वम्वई मे आर्य समाज की स्थापना की थी । १८८० में राजस्थान मे अनेको स्थान मे (राज्यो में) रहकर आर्य-हिन्दू वैदिक धर्म (एकात्मवोध) समान समाज रचना स्त्री शिक्षा, व्यक्ति-स्वातंन्य, अछूतोद्धार, स्वदेशी वस्तु, स्वराज्य श्रेष्ठता, राष्ट्रीय शिक्षा, राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं मानव प्रेम के प्रति जनता को जाग्रत करने हेतु निरन्तर प्रयत्न किये हैं । ये सस्कृत के विद्वान थे, मातृभाषा गुजराती थी किन्तु राष्ट्रहित की दृष्टी से हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानकर हिन्दी मे लेखन एव प्रवचन करते थे । आज विश्व मे आर्य समाज द्वारा संचालित सार्वजनिक सैकडो प्रतिष्ठान है । इनमे हरिजनो के लिये विशेष व्यवस्था पूर्ण चार हजार विद्यालय हैं भारत के वाहर भी दक्षिण अफ्रीका, पूर्वीय अफ्रीका, जर्मन सीरिया, हागकाग, मलेशिया, मारीशस, मेसोपोटामिया, फिजी, वर्मा, रगून, सूरीनाम, वलोचिस्तान अफगान, अरव, ईरान, वगदाद, इगलेंड, स्याम,अनाम, अमेरिका, कम्वोडिया, सिंगापुर,गायना, चीन,त्रिनिडाड थाइलेंड, आदि कई देशो मे आर्य समाज द्वारा शिक्षा एव वैदिक ज्ञान का प्रचार हो रहा है । निष्कपट दयाशीलता ने इन्हे दयानन्द कहलवाया है । स्वामी दयानन्द ने स्वतंत्रता के लिये प्रथम आव्हान किया, टिलक ने पाँच जन्य फूंका और कांग्रेसी रथ पर महात्मा गाँधी, वल्लभभाई पटेल, जवाहर लाल, सुभाष वोस आदि अनेक सेनानी

हज़ारों सैनिकों के साथ स्वतंत्रता पाने के लिये रणांगण पर दौड़ चले।

ई० १८८५ में ह्यूम द्वारा स्थापित्त काँग्रेस की प्रस्तावबाजी को व्यर्थ जानकर ही टिलक उग्रवादी बन गए थे। पूना में चाफेकर ने कलेक्टर रैण्ड को मार डाला था। टिलक को अठारह माह की सख्त कैद हुई थी। टिकक की सजा ने भारत में राष्ट्रीय और स्वतंत्रता की भावना भर दी। स्वामी दयानन्द एवं दिवेकानन्द द्वारा राजस्थान मे यत्र तत्र हिन्दुत्व प्रधान जन जागृती अभियान से जनता को वहुत आत्मवल मिला।

किन्तु इसके पहले १८८८ मे अग्रेजों की भेदनीति वश सैय्यद अहमद ने हिन्दू-मुस्लिम दो अलग राष्ट्र की मांग किया था और यह भावना १९३० से अधिक बढाई गई। फूट डालो राज करो इस विश्व प्रसिद्ध अंग्रेज नीति का व्यापक अनुसरण आज भी राष्ट्रीयता के नाम पर भारत मे अत्यन्त गतिमान है। इसी कारण गली कूचे में अडोस पड़ोस में हिन्दू–हिन्दू लड़े जा रहे है। साठ करोड़ हिन्दू संगठित न हो जाय इसलिये विदेशियो ने भ्रान्त समस्याए उत्पन्न करवाकर पंजाव, सिक्ख, सवर्ण, बौद्ध, जैन, हरिजन आदि के नाम से फूट का बबूल वन लगा दिया है। जो वहारपर है। ई० १८९३ मे खेतड़ी नरेश अजीत सिह की सहायता से स्वामी विवेकानन्द शिकागो धर्म सम्मेलन मे पहुँच हिन्दू धर्म ध्वज सर्वोपरि उन्नत किये थे। रामकृष्ण मिशन की सर्वप्रथम स्थापना खेतडी के राजमहल मे हुई है, मिशन का विशाल महल विद्यमान है। चद्रधर गुलेरी खेतड़ी नरेश अजीतसिह के शिक्षक थे, खेतड़ी राज्य मे करीब ई० १८९० से हिन्दी को प्रधानता दी गई रामकृष्ण मिशन की स्थापना एव सचालन हेतु एक महल मिशन को दिया है। विवेकानन्द ने कहा था कि राजाजी मुझे न मिलते तो भारतवर्प की उन्नति के लिये जो कुछ काम कर सका हूँ वह कभी न कर सकता। इन्ही अजीतसिह की वहन की स्मृति मे पति

उमेदसिंह (शाहपुरा) द्वारा १६१८ के करीव एक लाख रुपया दिया जाने से काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा सूर्यकुमारी ग्रथमाला प्रकाशित है। प्रसिद्ध पं० मदन मोहन मालवीय एव उनकी महान कृति काशी हिन्दू विश्व विद्यालय राजस्थानी स्मृति है। पं० मदन मोहन मालवीय गौड ब्राह्मण है' इन्दौर निकट कोडिया ग्राम के थे। ई० १६०३ मे एडवर्ड के राज्यारोहण के उपलक्ष मे दिल्ली में आयोजित समारोह मे लार्ड कर्जन के निमत्रण पर सभा मे सभी राजा पहुँचे किन्तु दिल्ली मे रहकर भी महाराणा फतहसिंह सभा मे नही गया। यह उपेक्षा देख लार्ड कर्जन तिलमिला कर रह गया।

स्वामी दयानन्द के शिष्य वणजारा गोविन्द (गुरु) १६०५ से भोमट, वांसवाडा, सिरोही क्षेत्र मे पहाड़ी जन जातियो को धर्मनिष्ठ, राष्ट्रीय, सात्विक संगठित, करने लगा था। गोविन्द गुरु के मार्गदर्शन मे खाड़ गाँव के भील सरदार मानसिंह के नेतृत्व मे १६०८ के वार्षिक मेले मे वैदिक हवन के सामूहिक आयोजन पर उपस्थित जन समुदाय और भील सरदारो द्वारा यज्ञ कुण्ड में घी-खोपरा आहुति दे देकर स्वतंत्रता आन्दोलन मे सशस्त्र भाग लेने हेतु यज्ञ के समक्ष प्रतिज्ञा की जा रही थी । यह समाचार अग्रेजो को मिलते ही निकटस्थ खैरवाडा की अंग्रेज सेना डूंगरपुर वासवाडा की सामन्ती सेना को दबाव में साथ लेकर आयोजन स्थल को चारो ओर से त्वरित घेर कर अचानक अधाधुंद गोली वर्षाकर असावधान नर नारी बाल वृद्धादि को गोलियों मे छलनी कर दिये। यहाँ "पन्द्रह सौ से कुछ अधिक ल्हाशे" गिरी थी । यह शहीद संख्या जलियांवाला शहीद संख्या से निश्चय ही चार गुना अधिक है । जलियांवाला काण्ड १६१६ एप्रिल मे हुआ तथा वैसाखी त्योहार का वह मेला भराथा स्वतंत्रता सग्राम की सभा नही थी।

भारत मे सर्वप्रथम जयपुर में अर्जुनलाल सेठी ने १६०७ से वर्धमान जैन विद्यालय के नाम से सशस्त्र क्रांतिकारियों के रक्षण एवं

प्रशिक्षण का केन्द्र खोला था। सेठी का सहायक महाराणा फतहसिह का उद्‌वोधक कवि शाहपुरा का बरहठ केसरीसिंह सपरिवार था, व्यावर का दामोदरदास राठी, एवं खर्वा का गोपालदास प्रमुख थे। केन्द्र व्यवस्था के लिये कभी कभी लूट और डकैती भी की गई।

१९०५ में दामोदर दास राठी ने स्वदेशी वस्तु स्वीकार विदेशी वस्तु का बहिष्कार नारा दिया जिसे सारे देश में स्वीकारा गया।

१९११ में पंचम जार्ज के सम्मान में दिल्ली दरवार में सभी राजा पहुँचे किन्तु मेवाड का महाराणा फतहसिह दिल्ली पहुँचा किन्तु सभा में नही गया। इसका प्रभाव जनमानस पर शक्तिप्रद हुआ था।

१९१३ मे वीर भारत समाज संस्था बनी। यह गुप्त सैनिक संगठन था। केसरीसिंह भाई जोरावरसिंह पुत्र प्रतापसिंह के अलावा रामजीकृष्ण वर्मा, भूपसिंह, रामनारायण, गोपालसिंह, माणिकलाल वर्मा, घनश्याम जोशी, जयसिंह धाकड़ आदि और भी कई मुख्य नेता थे।

१९१३ में सेठी के छात्र मोतीचंद, माणकचंद, जयचन्द एवं जोरावरसिंह ने आगरा के निमाज गाँव को लूटे थे। केसरीसिंह, लाहीडी, रामनारायण, हीरालाल जालोरी ने कोटा के महन्त को लूटे थे। यहाँ संघर्ष में महन्त मारा गया।

लार्ड हार्डिग्ज पर केसरीसिंह के अनुज जोरावरसिंह ने मुस्लिम महिला के वेश में बुर्के में छिपाया हुआ बँम फेका था। रासबिहारी बोस ने बम नही फेका था। लाला लाजपतराय की आत्मकथा में-जोरावरसिंह बारहठ ने लार्ड हार्डिग्जपर बॉम्ब फेंका था। लिखा है।

१९१३ के लाहोर बम काण्ड में सेठी का छात्र शिवनारायण पकड़ा गया। इसने भेद दे दिया तब केसरीसिह की जागीर भव्य भवन आदि सम्पत्ति जप्त हो गई। हीरालाल जालोरी, लाहीडी, और रामनारायण की भी सम्पत्ति जप्त हुई, तथा बीस वर्ष सश्रम कारा-वास की सजा हुई थी सेठी को भी वेलूर जेल में रहना पड़ा था।

केसरीसिंह की पैरवी करने लखनऊ से बैरिस्टर हामिदअली कोटा आते थे। १९१४ मे स्पेशल जज की अदालत में केसरीसिंह को सजा सुनाई गई, तव अदालत मे केसरीसिंह की शान मे वैरिस्टर हामिद-अली द्वारा सुनाई गई पक्तियो मे से तीन—वो मुल्जिम उम्र जिसकी देश की खिदमित मे गुजरी है। वो मुल्जिम केसरी के जां और दिल से देश का हामी। वो जिसकी खूवियां अखलाख का दम भरती रहती है।

रासविहारी वोस का साथी प्रतापसिंह (केसरीसिंह का पुत्र) वारहठ कठोर क्रूर यातनाओ के कारण १९१६ मे जेल मे मर गया किन्तु क्रातिकारियो का छोटा सा भी रहस्य वतलाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया था।

ई० १९१५ फरवरी २१ को क्रातिदल ने फरीदाबाद शस्त्रागार पर तथा भूपसिंह के नेतृत्व मे नसीराबाद एवं गोपालसिंह और दामोदरदास राठी के नेतृत्व मे व्यावर के सरकारी छावनी खजाना कार्यालय आदि पर अधिकार करना था, किन्तु भेद खुल जाने से सभी पकडे गए।

भूपसिंह भूमिगत हो विजयसिंह पथिक के नाम से कार्य करने लगा था। १९१६ मे उदयपुर क्षेत्र मे सूखा पीड़ित जनता न माणिक वर्मा, जयसिंह धाकड़ घनश्याम जोशी के नेतृत्व मे लगान एवं यूरोपी प्रथम महा युद्ध हेतु फण्ड अनिवार्य दिया जाना, माफ करवाने शासन से प्रार्थना करने, एकत्र होकर शासन से राहत की माँग की थी। लेकिन महाराणा के मना करने पर भी अंग्रेजो ने गोली चलवादी शहीद सख्या अज्ञात है। गाँव लूटे और जलवा दिये थे। राजस्थान-कांग्रेसियो से जमनालाल वजाज, शिवमूर्ती, सम्पूर्णानन्द, आनन्द वर्मा हीरालाल शास्त्री, जयनारायण व्यास, मौलवी अब्दुल रहीम, काजी महमूद अय्यूब, हरीभाऊ उपाध्याय, मोहनलाल सुखाडिया, हरदेव जोशी, एवं अन्य कई थे। राजस्थान के वाहर भी राजस्थानियो ने

कांग्रेस को भरपूर सहयोग दिया है। मगनलाल वागडी, ब्रजलाल वियाणी, नृसिंहदास नागोरी, बिडला आदि अनेक सेनानी हुए हैं, कई महत्वपूर्ण निर्णय दिल्ली एवं बम्बई के बिडला भवन मे लिए गए। गाँधीजी की मृत्यु दिल्ली बिडला भवन मे हुई।

१९१८ दिल्ली कॉग्रेस अधिवेशन मे राजस्थानियो ने राजपूताना मध्यभारत सभा वनाये। जमनालाल बजाज, चांदकरण शारदा, गिरधर शर्मा, नृसिंहदेव, गणेशशकर विद्यार्थी आदि प्रमुख थे। कानपुर मुख्यालय था। विद्यार्थी के सम्पादन मे "प्रताप" साप्ताहिक निकला इसने जन जागृती खूब की थी।

१९२० में आन्दोलनों से तंग आकर अंग्रेजों ने क्रांतिकारी बन्दी छोड़े थे तब सेठी और केसरीसिंह भी छूटे थे। सेठी का पूना में टिलक ने भव्य स्वागत किया था। इन्दौर में भी भव्य शोभायात्रा निकाली गई थी।

१९२० अक्टूबर २२ को बजाज ने वर्धा से "राजस्थान केसरी" पत्र निकाला, सम्पादक क्रांतिकारी पथिक था विचारों मे विषमता थी। पथिक राजस्थान लौट गया। रामनारायण ने वर्धा में राजस्थान सेवासंघ वनाया था यह अल्पायु ही था।

१९२१ में पथिक ने अजमेर से "नवीन राजस्थान" पत्र निकाला था बाद में इस पत्र का नाम "तरुण राजस्थान" रखा गया।

जयपुर में ब्रजमोहन माथुर के नेतृत्व में अभिनव भारत समिती बनी यह भी क्रांतिकारी संगठन था।

आंदोलनकारियो को सहयोग देने के कारण अंग्रेजों के दबाव से महाराण फतहसिंह ने पुत्र भूपालसिंह को १९२१ में राज्यभार सौंपा था। "महाराणा फतहसिंह दैनिक शिव पूजन हेतु पिछौला झील से जलकलश भरकर स्वयं ही लाते थे"।

१९२१ मे विजयसिंह पथिक रामनारायण चौधरी, हरीभाई किंकर ने राजस्थान सेवासंघ बनाया था। इसके सदस्य संस्था को पूर्ण समय

देनेवाले ही होते थे सदस्य को परिवार के भरण पोषण हेतु १००) रु० मासिक मिलता था। पथिक केवल ८) रु० लेता था। अजनादेवी, माणिक वर्मा, नानूराम व्यास, लादूराम, शोभाराम मुख्य कार्यकर्ता थे।

अग्रेजो की दी हुई रायवहादुरी को ठुकरा कर जमनालाल बजाज ने टिलक स्वराज फंड मे "एक लाख रुपया" एवं खिलाफत समिति को दस हजार रुपया दिया था। बजाज के आग्रहवश गाधीजी वर्धा रहने लगे थे। मद्रास का धन सम्पन्न व्यापारी नृसिहदास नागोरी ने अपनी पूर्ण सम्पदा काँग्रेस को देकर वास्तव मे बावाजी कहलागया। इन दो के सहयोग ने अनेक राजस्थानियो को काँग्रेसनिष्ठ बनाया था।

तिलक स्वराज फड मे चन्दा देने एवं खादी पहरने के अपराध मे बीकानेर में सम्पूर्णानन्द, शिवमूर्तिसिंह, आनन्द वर्मा को शासकीय नौकरी से निकाला गया था। यही सम्पूर्णानन्द १९६२ मे राज्यपाल बने थे। इन्सपेक्टर की नौकरी छोड़कर कुम्भाराम आर्य भी आन्दोलन मे सेनानी बने थे।

राजस्थानी कवियो की कलम कृपाण भी खूब चमकी थी—दो चार नमूने—(राजपूतो का गौरव ऐसा गाया जाता था)—

धरतां पग भर धूजती दक्कलतां दिगपाल,
जणती रजपूताणियां थणती झाल वम्वाल ॥
रण कर-कर रज-रज रगै रवि ढकै रजपूत,
रज जेती धर ना दियै रज-रज ह्वै रजपूत ॥

आन्दोलन के समय ऐसा तीखा व्यग्यात्मक काव्य गाया जाने लगा था।

दुसमन देसां लूट कर लें जावै परदेस,
राजन चुड़ला पहरल्यो धरो जनानो भेस ॥

पराधीन भारत हुयो प्यालां री मनवार,
मातृ भोम परतंत्र हो बारबार धिक्कार ॥

ठाकर गया ठग रह्या रह्या मुलक रा चोर,
वैठुकराण्या मर गई ठाकर जणती और ॥

खूंटी पर लटका दो अब तरवारे धुलने दे दो केसरियाँ बाने,
कुम्भकर्ण मर गया पर छोड़ गया कायर सन्ताने ॥

ठाकर होता देस मे देस न हु तो गुलाम ।

जन जागृती हेतु कवियो ने इतने तीखे व्यंग बाण बरसाए थे । 'माथा देणा पडसी' एवं 'जाग रण बका सिपाही जागरे' (जैसी अनेक) जोशीली राष्ट्रीय कविताओ के सर्जक गायक जोधपुर के कवि गणेशीलाल उस्ताद को उनकी कविता किन्नरी ने जेलयात्रा करवादी थी । यह भी एक मिसाल है । हीरालाल शास्त्री, जयनारायण व्यास, माणिकलाल वर्मा आदि ने भी राष्ट्रीय गीत राजस्थानी भाषा मे लिखे और गाये हैं ।

फरवरी १९२२ में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में उदयपुर के भोमट और कोटड़ा गाँव की भील जनता ने अंग्रेजो की सलाह से बढ़ाये हुये टैक्स एव बेगार विरोधी आन्दोलन किया था । मेजर सटन ने इनपर गोली चलवा दी थी । करीव "दो सौ" व्यक्ति मारा गया । मोतीलाल तेजावत भी घायल हो गया ।

१९२२ मार्च ७-८ को विजयनगर के पाल छितरिया गाँव निकट मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व मे बेगार एव टैक्स विरोधी अभियान की तयारी मे एकत्र हो रहे जन समूह पर अंग्रेज अधिकारी के आदेश से अंग्रेज पुलिस एवं विवश राज्य सेना ने मशीनगन से गोलियां वर्षा कर १२०० ल्हाशें गिराये थे ।

सिरोही राज्य की रोहीडा तहसील के गाँवो मे अग्रेजो के इशारे पर विलायती मकरानी मुसलमान, थानेदार द्वारा जनता पर किये जा रहे सामन्ती जुल्मो के विरोध मे १९२२ मई मे मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व मे भील और गिरासियो ने आन्दोलन किया था। इसे दमन करने अग्रेज सैनिको ने दानवता पूर्वक "अठारह सौ" स्त्री पुरुप वच्चे वूढों को मौत के घाट उतार दिये थे। करीव छह सौ घर जलवा दिये, भूला और वालोलिया गाँव भी जला दिये थे। यह शहीद संख्या भी जलियांवाला शहीद संख्या से पाँच गुना अधिक है।

उदयपुर के वेगूं ठिकाने में खुद ट्रेंच साहव कैरोसीन के कनस्तर एवं पुलिसदल को साथ ले जाकर कई घर जलवा दिया, सैकडो स्त्री पुरुषो को सरे मैदान नंगा करवाकर बुरी तरह पिटवाया था। करीव छ-सौ नागरिको ने अधिक यातना सही थी। नेता रूपा जी धाकड और किरपा जी धाकड़ शहीद हुये थे।

अंग्रेजो के मार्गदर्शन मे विगडी हुई नई राज्यव्यवस्था के विरुद्ध १९२५ में अल्वर के नीमूचाणा ग्रामवासियो के प्रदर्शन से क्रुद्ध अग्रेज अधिकारी के दवाव से अल्वर नरेश जयसिंह ने प्रदर्शन कर्त्ता जनता पर गोली चलवाया था, सैकड़ों घर जलाए गये। सैकडो स्त्री पुरुप वच्चे मारे गए। यह लोम हर्षक काण्ड भी जलियांवाला वाग शहीदी काण्ड से अधिक हृदयद्रावी था। [जलियांवाला के शहीदी आन्दोलन कारी नहीं थे, वैसाखी वार्षिकोत्सव मनाने एकत्र हुए थे।]

उपरोक्त घटनाओ के जन्मदाता अंग्रेज, अधिकारी ही थे उन्हीं की चलाई हुई गलत नीतियो का विरोध जनता करती थी, राज्य शासन विवश हो मौन रहता था अंग्रेज दमन करते थे।

१९२५ में जोधपुर नरेश का इंगलैण्ड जाना रोकने के कारण प्रताप सोनी, जयनारायण व्यास, चाँदमल सुराणा को देश निकाला हुआ था। १९२८ में जयनारायण ग्रुप के मुख्य कार्यकर्ता आनन्द सुराणा

एवं भवरलाल को जेल यात्रा करनी पडी थी। १६३० में राजस्थान में नमक सत्याग्रह डाँडी से कम नही था, सेठी, उपाध्याय, पथिक आदि कई बन्दी बनाये गए थे।

१६३२ जनवरी २६ को जोधपुर मे राष्ट्रीय ध्वज चोपासनी के छगनलाल ने फहराया था। इसे बुरी तरह पीटा गया था।

जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, डूंगरपुर, बूंदी, कोटा, बीकानेर, अजमेर, सीकरी, सिरोही, झुंझनू, भरतपुर, धौलपुर, खेतड़ी, ब्यावर आदि अनेक नगरो में संगठन बने, आन्दोलन हुये, कई घायल हुए, कई बन्दी बनाये गए एव कई मारे गये। समस्त संख्या अज्ञात है। शोध होना चाहिए।

१६३५ मे सीकर मे जाट किसान सम्मेलन मे ८०००० सदस्य एकत्र हुआ देख अग्रेज अधिकारी ने शंकावश स्थानीय शासन द्वारा सैकड़ों को बन्दी करवा दिया था। १६३८ मे सीकरी मे धारा १४४ तोड़ने के अपराध मे तीन वार गोली चलाई गई १७ मारे गए, १०० बन्दी बनाए गये, कई घायल हुये थे। उदयपुर १६३८ मे अग्रेज नीति में अधिकारियो के दुर्व्यवहार पर नगर में सात दिन कड़क हड़ताल रही, शासन को झुकना पडा था। माणिकलाल वर्मा के नेतृत्व मे प्रजा-मण्डल ने सत्याग्रह किया था २१३ वन्दी बनाए गए। इनमें ३५ को सश्रम सजा हुई थी। भीलवाड़ा, नाथद्वारा भी आन्दोलन मे क्रिया-शील रहा है।

भरतपुर क्षेत्र में, हरि शर्मा, लक्ष्मण त्रिपाठी, सुशीला त्रिपाठी, गफूरवेग, रामजी अग्रवाल, शोभाराम, रमेश स्वामी आदि प्रमुख कार्यकर्ता थे। वीकानेर क्षेत्र में रघुवर गोयल, गगादास, दाऊदयाल, मेघाराम मुख्य थे।

१६३६ फरवरी में तीसरी बार निषेधाज्ञा उल्लंघन करने पर जमनालाल बजाज को बन्दी बनाया गया, प्रजामण्डल ने आन्दोलन किया हीरालाल शास्त्री एव चिरंजीलाल मिश्र के नेतृत्व में ६००

व्यक्ति वन्दी वनायें गए। फरवरी १२ से मार्च १८ तक आन्दोलन चला था। अगस्त में ये सभी छूटे थे।

जैसलमेर राज्य मे महता रघुनाथसिंह नेता वन्दी वनाया गया। तव प्रवासी जैसलमेरियो मे चेतना आई। जुल्म के विरुद्ध नागपुर मे आवाज उठाने वाला सागरमल गोपा जैसलमेर गया तव वन्दी वनाया गया। कठोर यातनाएं इसे नही मार सकी तव झल्लाकर जेलर ने गोपा पर तेल डालकर जिन्दा जला दिया था।

१९४२ में अंग्रेज सेनापर वॉम्व फेंकने के अपराध मे कई गिरफ्तार किये गए। अत्यधिक पिटाई के कारण जून १९ को वालमुकुन्द विस्सा (जोधपुर) की मृत्यु हो गई थी।

१९४२ में ही कोटा में पलिस को वैरकों में ब्रन्द कर कोतवाली पर कब्जा कर सरकारी भवनो पर तिरंगा फहराया गया था तीन दिन यह दशा रही। कोटा नरेश ने कार्यवाही न करने का वचन दिया तव क्रांतिकारी हटे थे। कोटा मे नैनूराम शर्मा शहीद हुआ था।

१९४६ में राजगढ (वीकानेर) मे जुलुस पर लाठी प्रहार हुआ कई घायल हुए। रायसिंह नगर में एक सभा पर लाठी चली थी यहां वीरवल शहीद हुआ।

नागपुर क्षेत्र मे मगनलाल वागडी क्रांतिकारी था नागपुर में अंग्रेज मिल्ट्री एवं गवर्नर था किन्तु निर्भीक मगनलाल वागडी से अंग्रेज पुलिस भी भय खाती थी।

१९४७ मार्च में ड़ावड़ा (जोधपुर) ग्राम में किसानो की सभा पर सशस्त्र वावीस ऊंट सवार दौडाए गए इन्होंने गोली और तलवार से कइयो को घायल किये थे। मथुरादास माथुर, नृसिंह कछवाहा, द्वारका शर्मा, छगनराज चोपासनी आदि प्रमुख नेता थे। यहां चुन्नीलाल शर्मा शहीद हुआ है। १९४७ मे भरतपुर आन्दोलन कारियों पर वस-लॉरी दौड़ाई गई, इसमें नेता रमेश स्वामी मारा गया।

धौलपुर में राष्ट्रीय ध्वज फहराते समय प्रजामण्डल का कार्य-कर्त्ता पचम पुलिस की गोली से शहीद हो गया ।

डूंगरपुर मे नानाभाई खोंट एवं कालीबाई शहीद किये गए । उदयपुर मे देहली द्वार पर धरी दो प्रतिमा शहीद छात्र आनन्दीलाल एव शान्तिलाल की है । बूंदी मे नानक भील एव बीकानेर मे वलवीर सिंह शहीद हुए ।

इसके अलावा अन्य सैकड़ों स्त्री पुरुष और बच्चे भी मारे गए जिनकी संख्या अज्ञात है । राजस्थान मे कांग्रेसियो से अधिक कार्य और प्रभाव क्रातिकारियो का था ।

सन् १९२०–२१–२२ मे मोहर्रम और गणपति एक ही समय में हुए थे । महाराष्ट्र मे दोनो की शोभायात्रा ताजिया एव गणिपत के जुलुस एक दूसरे के स्थल समक्ष रुक कर उत्साह मनाए थे कोई विरोधक नही हुआ । मौलाना शौकत अली को अग्रेजो द्वारा वन्दी बनाए जाने का समाचार सुनते ही गणेश विसर्जन के जुलुस ने अपने झण्डे नीचे कर वाद्योत्सव स्वेच्छया वन्द किये थे, इस पर अब्दुल्ला शेठ ने सभा मे शुक्रिया अदा किया था । ई० १९०८ मे सैय्यद हैदर ने पूना में । १९०९ में मौलवी सै० मुर्तजा ने वड़ौदा में । १९१९ में गुलशेर खान एवं जफर हुसेन ने खामगाँव मे । १९२० मे मौलवी काजी अब्दुल गफूर ने सोलापुर मे । मौलाना करीम साहब ने वीजापुर मे । मजीद खा सुजात खा ने अमलनेर में । १९२१ में बॅ० आजाद ने नासिक मे । १९२५ में उस्मान भाई रसूल भाई ने डोबीवली के गणेशोत्सवों में व्याख्यान दिये थे । १९२४ में हजरत दगडू भाई ने वाकर में कीर्तन किया था ।

इसी दौर में फिल्मों द्वारा राष्ट्रीयता एवं नागरिक एकता वर्धक चित्र भी बने थे वाड़िया का दूसरा ही चित्त जय–भारत बना इसमे सरदार मन्सूर द्वारा गाए-गीत मे से दो पंक्ति—हम वतन के वतन है हमारा ।

एक कान के दो हैं हीरे हिन्दू मुस्लिम का नाता।
काबा काशी दोनो आला भारत सवकी है माता।

प्रसिद्ध अजीम कव्वाल द्वारा जय भारत चित्र मे गाई गई १५ पंक्तियों मे से दो—राम समझ रहमान समझले, धरम पुण्य ईमान समझले। मजिद कैसी मन्दिर कैसा ईश्वर का यह स्थान समझले। ऐसा मैत्री भाव भारतीय जनता में देख कर अग्रेजो ने भारतियो मे फूट और साम्प्रदायी जहर ऐसा गहरा डाला है कि उसका दुष्प्रभाव निरन्तर बढता ही जा रहा है।

मुस्लिम बहुल बस्ती अचलपुर मे मेरे संगीत शिक्षक सैयद हसन अली थे। धनंजय पुजारी, कृष्णैया, अहमद तबलयी साथी थे। नगर में आये नये सगीतज्ञ की पहली बैठक (सभा) मेरे घर होती, सभी जाति के लोग आते थे, भेदभाव नहीं था। मेरे शायरी के गुरु वुजुर्ग शहर काजी करम मोहियोद्दीन थे, वम्वई, हैदरावाद तकरीर के लिये जाते थे, निजाम से वजीफा पाते, पोषाख आती, इदगाह आते जाते जरीदार छत्ता लगता सुन्नी थे। धार्मिक चर्चा मे सतुलित जवाव देते। विभाजन के समय शांति प्रयास किये। वड़ा वेटा पाकिस्तान ले जाना चाहा, इन्होने जवाव दिया हमारा वतन यही सर जमी है, हमारे अखलाक नेक है तो हमारे निगहवां खुद हिन्दू होगे। १९४६ में दाखा मे ऑ० इ० मशायरे मे खुद की जिम्मेदारी पर मुझे भी ले गए। उस वख्त कौमी माहौल बडा गर्म था, दगे चालू थे। मजूर हुसेन शोर की सदारत मे कशमकश रहती। पेट्रोमेक्स थे। उतने वडे अवाम मे हिन्दू एक अदद मैं ही था। अचलपुर इलाके मे मशहूर डकैत महंमद मुजात हमारे ही मुहल्ले मे थे। छोटे-वडे सभी से मधुर सम्वन्ध साम्प्रदायिकता के कड़े विरोधी थे। वालाघाट मे मौलवी हमीद खा के आग्रह पर उन्ही के घर पर मेरे दवाखाने की ब्रांच थी। ट्रेन चूकने से २-३ वार रात में रुकना पड़ा, उस समय रात ९ के वाद वालाघाट मे नाश्ता मिलना भी मुश्किल था। मनोविचार समझकर अगले वख्त

नये वर्तन, राशन वगैरा एक पेटी में मेरे लिए धर दिये थे कि मैं बना लू लेकिन मुझे छूत या ग्लानी व्यक्ति से नही थी मटन से थी । अतः भाभी से परौंठे वनवा लेता । गोदिया में मेरे मित्र ७० वर्षीय इब्राहिम खान हिन्दू स्कूल में चार जमात पढे हैं । शाला में सीखी हुई हे प्रभो आनन्ददाता प्रार्थना आज भी सुना देते है। इन के मुस्लिम बाल साथी और भी है। लेकिन उस युग मे प्रार्थना का विरोध किसी ने कही नही किया। किन्तु अब राष्ट्र गीत का विरोध वच्चों से करवाया गया था। यह गुमराही-नेतागिरी अमन की घातक है । इब्राहिम खान के दो बेटे बम्वई घाट कोपर पर हिन्दू समूह में वर्षो से रह रहे है । इनके आग्रह पर सपरिवार मैं बम्वई पहुँचा, इन्ही के घर ठहरा, इन्होने हमारी सात्विक व्यबस्था का पूरा ध्यान रखे । इनके सरक्षक चर्च गेट पर अग्व बँक और इमारत के गॉड थे । देखने में पेशावरी पठान असर खान से हमें मिलवाये वे ऐसे मिले कि जैसे बिछड़ा भाई मिला हो, आवभगत में भी कमी नहीं की, उनका परिवार वैंक इमारत में ही था। प्रसिद्ध स्वर्ण मन्दिर की स्थापना सूफी सन्त ने की है। मैसूर का प्रसिद्ध शासक हैदरअली श्री रंग पट्टम मे पूजा के लिये जाता था, दशहरा मनाता था । हैदराबाद के मुस्लिम भक्त ने सुवर्ण के १०६ फूल बनवाकर तिरुपति को चढ़ाया है प्रत्येक फूल पांच ग्राम वजन का है, पखुड़ियों पर नमो नारायण अंकित है । बरेली मे लक्ष्मी नारायण मन्दिर एक मुस्लिम व्यापारी ने वनवाया है यह व्यापारी अति धनाढ्य नही है । स्वामी दयानन्द एवं महात्मा गाँधी की हत्या हिन्दू ने की है, गुरु गोविन्दसिंह और सन्त कवराम की हत्या मुसलमान ने की है, गुरु नानक देव का परम सेवक मुसलमान था। राजस्थान में लाडनू और छापर के मध्य बन्नूखां क्यामखानी ऊँटवाल., किराये में बहू को पहुँचाते समय राह मे अपनी ही बिरादरी के डकैतों से हिन्द बहू की सफल रक्षा करते हुए मारा गया। असकाक उल्ला, मौलवी अब्दुल रहीम, काजी महमूद अयूब, रफी

अहमदकिदवई, अबुल कलाम आजाद, जाकिर हुसैन आदि जैसे खोजने पर कई उदाहरण मिलेंगे । किन्तु कमलापति त्रिपाठी का कथन भी सही है कि राष्ट्रभक्त मुसलमां १०% ही होगे । कानपुर क्षेत्र मे दिनाक ६-५-८३ को अखबार मे छपे मुजब दि० १५-५-८३ को विशाल जन समूह के मध्य थाना इन्चार्ज काजी मन्सूर अहमद एव नौ पुलिस कर्मियों(सुरक्षा वल) के समक्ष गो-वध के विरोध मे ठीक वारह वजे हरिनारायण वाजपेयी पचीस वर्षीय युवक ने आत्मदाह किया था । सभा मे इस युवक को मन्सूर अहमद ने रोकने के वजाय व्यगात्मक उत्तेजित किया था । १९८७ मे शिवपुरी (म० प्र०) मे गायत्री महायज्ञ मे सब्जी भाजी मुस्लिम विक्रेताओ ने नि शुल्क दिये थे । टाटा मे आयोजित यज्ञ मे एकता सभा के अध्यक्ष जलाल अहमद सिद्दीकी, रजीउद्दीन खान, डॉ० एस० एम० हुसेन, डॉ० मतलूव हुसेन सिराजुद्दीन, मौलवी अजीज शामिल हुए थे । देश की एकता एव अखण्डता हेतु शपथ लिये, ऐसे कई उदाहरण मिलेगे । अर्थात हर धर्म और समाज में भले बुरे व्यक्ति होते है ।

भारत मे फूट डालो राज्य करो नीतिवाले अग्रेजो के पुत्र विटिश प्रधानमंत्री मेकडानाल्ड ने १९३१–३२ मे मुसलमान, सिक्ख, ईसाई यूरोपियन, अँग्लो–इंडियन, मराठा, अछूत और हिन्दू इनका अलग–अलग निर्वाचन मण्डल वनाने की घोषणा किया था । इसका कडा विरोध एवं अनशन महात्मा गाँधी ने किया तथा अछूत नाम का भी कड़क विरोध कर हरिजान सम्वोधन दिया ।

"अंग्रेजो की फूटनीति मे कूटनीति की घातक योजना की नीच मिसाल वम्वई गवर्नमेन्ट एज्युकेशन सोसायटी द्वारा जॉन विल्सन, जे० मोलेस्वर्थ, जार्ज और थामस कैण्डी के सम्पादन अनुवादन का अँग्रेजी, मराठी शव्दकोष का दूसरा संस्करण ई०१८५७ मे प्रकाशित हुआ है । प्रथम सस्करण का प्रकाशन समय ज्ञात नही हो सका । इस कोष मे मारवाड़ी शव्द के नीचतापूर्ण अर्थ दिये है । जो सर्वथा गलत

हैं, दुष्टतापूर्ण है। ताकि भारत के श्रेष्ठ राजस्थानी प्रान्त और समाज के प्रति अन्य प्रान्तवासियों के मन में द्वेषमय हीन तिरस्कृत भावना का विष व्याप्त होता रहे। संघर्ष होता रहे, परस्पर सद्भाव न हो इसी उद्देशवश शब्दकोष में हीन अर्थ अँग्रेजों ने लिखे थे किन्तु भेडियाधसानी वाद के ग्यारह शब्द कोषकार भी विवेक को लात मार विल्सन का अन्धानुकरण ही करते गये।"

☸ ह राजस्थानी श्रेयॉकन सत्यांकन है, चाटुकारिता नही है। मारवाड़ी भाषा भूषा रीत रिवाज तौर तरीको मे दीखने वाला हर परिवार वास्तव मे मारवाडी नही है वस्तुतः मारवाडी २०-२५% ही होगे। राजस्थानियो ने मुझे कोई जागीर नही दी है कि लोभवश मै उनकी मित्थ्या सराहना करूं। वल्कि इनसे मुझे भी कुछ कटु अनुभव हुए है। जिनका वर्णन १६ पृष्ठ में हो सकता है। किन्तु सकेत ही प्रस्तुत है। (१) १६६२ जनवरी में मेरी सर्जिकल हत्या का यत्न हुआ था। अंगस्त तक अस्पतालों मे मैं रहा। मैं स्वय चिकित्सक होने के कारण भी बच सका हूँ। तव से निरन्तर औषध सेवन पर ही जीवन है। (२) उक्त कारणवश बिगड़ती आर्थिक स्थिती सन्तुलित करने मेरी पत्नी नर्मदा को समाज द्वारा सचालित कन्याशाला में प्रायमरी शिक्षिका पद पर रखवाया गया। समिती मे परिवर्तन हुआ। कुछ निहित स्वार्थियो ने नर्मदा को अन्ट्रेण्ड कहकर निष्कासित कर दिये, जबकि नगर मे अन्य शालाओ मे अन्ट्रेण्ड शिक्षक विद्यमान थे। समाज के वरिष्ठ लोगो द्वारा अधिकारियों को समझाने के प्रयास विफल हुये। समाज का बहुमत नर्मदा को मिला, अधिकारी ने त्यागपत्र दिया। नर्मदा एम० ए० बी० एड० होकर मिडिल-हाईस्कूल की योग्यता पर उसी संस्था में कार्यरत है। किन्तु उनका पक्षपातमय प्रतिशोधी व्यवहार निरन्तर क्रियाशील हो आता है। समाज की ही अन्य शाला के प्रधानाध्यापक गजाधर शर्मा विवाद मे हमारे कानूनी

सहायक थे, उन्हे भी रौदने का अथक प्रयास किये। मेरी जानकारी या मंजूरी के वगैर अचलपुर (जिला अमरावती) मे वीस हजार रुपये मूल्य का मेरा मकान इका नेता अग्रवाल व्यापारी ने हथिया रखा है हडपने की साजिश में है। उक्त घटनाये हमे विद्रोही वना सकती हैं किन्तु हमारे विरोध में और समर्थन मे राजस्थानी थे, अत हर समाज मे दुर्जन और सज्जन होते है। ॐ

गलत शब्दार्थ के शोधकर्त्ता प० वद्रीप्रसाद सांकरिया एव सहयोगी हजारीमल वाठिया के प्रयास से रतनगढ (चूरू)वीकानेर एवं कलकत्ता मे १९२८, ५६, ५८ मे शब्दकोश विरोधी अभियान का प्रयास किया गया, किन्तु गतिमान नही हो सका। इसी प्रयास मे गोदिया समाज से मुझे भी भर्त्सना ही मिली। तव १९७७ मे रायपुर के किसनलाल सिंघानिया आकोला से पन्नालाल शर्मा सम्पादक (जमाना) एवं म्हम्मद भाई तेली, नागपुर से वैद्य शिवकरण शर्मा छांगाणी एवं मारवाडी मुस्लिम मजलिस सहित राजस्थानी समाज के समस्त संगठनो के सहयोग से नागपुर को केन्द्र मानकर छांगाणी के नेतृत्व में आन्दोलन चलाया गया और तव दूर-दूर तक समाज ने सामुहिक हुंकार भरी। आन्दोलन सफल हुआ। दि० २४।१०।७७ को नागपुर अग्रसेन भवन से निकलने वाले मोर्चें के समय महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री वसंत दादा पाटिल, विधान परिषद के अध्यक्ष (कम्युनिष्ट-हरिजन) रा० सु० गवई आन्दोलन स्थल पर पहुँचकर समाज की मांग सहर्ष स्वीकारे इन्हे प्रेरित करने वालो मे एम० एल० सी० छेदीलाल गुप्ता (उ० प्र० वैश्य), कम्युनिष्ठ नेता वर्धन, हेडाउ तथा राज्यमंत्री जमनालाल गोयनका भी है। समाज की माग पर केन्द्रीय गृह मंत्रालय एवं गुजरात तथा राजस्थान सरकार ने भी ध्यान दिया है।

राजस्थानी समाज की वीरगाथा के अलावा भारत के सभी प्रान्तों मे सार्वजनिक उपयोग के लिये धमार्थ दवाखाने, धर्मशाला, विद्यालय

आश्रम, कूँए, तालाब, बावड़ी घाट, मन्दिर, सुरक्षा कोष, सूखा पीड़ित कोष, वाढ पीड़ितकोष आदि माध्यम से पीडित जन समुदाय की तात्कालिक निष्पक्ष सहायता मे राजस्थानी विभिन्न समाज का (सभी जातियो का) अरबों रुपया लगा है । लग रहा है, सदैव लगता ही रहेगा, यह वंशानुगत दानशीलता प्रसिद्धी के लिये नही होती है । यह सेवाभाव परोक्षा परोक्ष वैदिक सस्कार का फल है, जो प्राणी में एकात्म भाव का प्रवर्तक है ।

प्रवासी राजस्थानी (मारवाडी) भारत में जहां–जहां जाकर बसा है, वहां–वहा की जनसेवा में राजस्थानी ने सहयोग दिया है । कलकत्ता, हैदरावाद, भोपाल, झाडसुगड़ा आदि अनेक नगरों में मुहल्लो के मारवाडी नाम है । कलकत्ता, कानपुर, पटना, हैदराबाद मथुरा, टाटा, वम्वई, वाराणसी, अहमदाबाद, पूना, आकोला, वाशिम अमरावती, हिंगनघाट, भागलपुर, गोहाटी, दरभंगा, सम्भलपुर, नागपुर, चक्रधरपुर, जसीडीह, लातूर, गोंदिया आदि अनेक नगरो में मारवाड़ी या राजस्थानी या राजस्थानी दानदाता के नाम से जनसेवी सस्थाएं है। राजस्थानियों मे निष्पक्ष जनसेवा की भावना परम्परागत है । विभिन्न प्रान्तो में राजस्थानियों द्वारा की गई निष्पक्ष जनसेवाओ के कारण ही उन स्थानो पर राजस्थानी नामक मुहल्ले, मार्ग, संस्थान सर्वत्र विद्यमान है । गोरखपुर में कल्याण पत्रिका के सचालक सम्पादक हनुमान प्रसाद पोद्दार की स्मृति में कैंसर अस्पताल ५०० रोगियों के रहने योग्य वना है ।

वम्बई मे मारवाड़ी सम्मेलन १९१४ से जन सेवा में संलग्न है, राजस्थानी महिला मण्डल भी महिला सेवा में क्रियाशील है । सार्वजनिक सेवा प्रतिष्ठान राजस्थानियों द्वारा संचालित,-यत्र तत्र जहां भी है, उनकी उपयोगिता सभी के लिये है ।

कलकत्ते की मारवाड़ी रिलिफ सोसायटी किसी भी पीड़ित क्षेत्र मे सेवा हेतु पहुँचती है । पटना, मुंगेर मे भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ितो की

सहायता सेवा सभी से अधिक राजस्थानियो ने ही की है । वम्वई मे मारवाडी विद्यालय, जूनियर कालेज, वगड़का कालेज, पोद्दार विद्यालय, धर्मार्थ औपधालय, वजाज विद्यालय, भवन, मित्तल आयुर्वेदिक कालेज, जालान, सेक्सरिया ट्रष्ट, सम्भलपुर, भागलपुर, दरभगा, वाराणसी, चक्रधरपुर मे मारवाडी विद्यालय, महाविद्यालय गोदिया मे मारवाडी एवं राजस्थानी विद्यालय, आकोला मे तोष्णीवाल विद्यालय, धर्माथ औषधालय, खडेलवाल विद्यालय एव धर्मशाला, भरतिया विद्यालय, कामठी मे लोहिया हॉस्पिटल, एव विद्यालय, पोरवाल विद्यालय, नागपुर मे डागा पार्क, डागा हॉस्पिटल मेमोरियल, धीरन विद्यालय, पोद्दार एव सराफ धर्मशाला, आदि इस प्रकार समग्र भारत मे वागड़, विड़ला, सोमाणी, सिंघाणिया, जैपुरिया, खडेलावल, मोहता, राठी, तापड़िया, डालमिया, पित्ती, कानोडिया, चमडिया रूईया, *शर्मा आदि असंख्य प्रतिप्ठानो* द्वारा सर्व जनोपयोगी विविध कार्य स्थायी रूप मे किये जाने के हजारों प्रमाण विद्यमान हैं । यहां तो अल्पतम उदाहरण मात्र प्रस्तुत किया हूँ । "वस्तुतः आल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन ने सम्पूर्ण भारत से जानकारी एकत्र करवाकर ग्रथ वद्ध करवाना चाहिए ।" मारवाड़ी व्राम्हण वैद्य गोवर्धन शर्मा छाँगाणी द्वारा नागपुर मे ई० १९३४–३५ से सचालित वटाकुर श्री आयुर्वेद महाविद्यालय, वैद्यनाथ प्रतिष्ठान के मारवाडी व्राम्हण वैद्य रामनारायण शर्मा एवं पुत्र सुरेश शर्मा द्वारा लाखो रुपये की सहायता पाकर वट वृक्ष अ० भा० आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान वन गया है, इस में हरगोविन्द वजाज ने भी १४ लाख रुपया दिया है । इसी तरह अन्य दान दाताओ ने सहायता दी हैं । १९८२ से वैद्यनाथ प्रतिप्ठान द्वारा प्रतिवर्प एक लाख रुपया पुरस्कार आयुर्वेदीय शोधपूर्ण नव निर्मिती पर दिया जा रहा है ।

उपार्जन का एक-एक पैसा मारवाड़ी जमा करता है, इसे अज्ञानवश लोग कंजूसी कहते हैं । किन्तु वह ही मारवाड़ी उचित अवसर

पर असीम धन राशी उदारतापूर्वक परोपकार में लगा देता है, यह सर्व विदित है, मित्थ्या प्रषंसा नही है। मारवाड़ी के उक्त दोनो गुण वास्तव में अनुकरणीय है।

एक उदाहरण और है—तमिलनाड़ प्रदेश हिन्दी भाषी नही है। मद्रास रेल्वे स्टेशन के पास नि.संकोच मारवाड़ी भाषा भूषा रीत रिवाज में रह रहे वैभवपूर्ण राजस्थानी व्यापारियों का मुहल्ला सौकार पेठ नाम का है। सोना, चान्दी, जवाहरात, आभूषण, साहु-कारी, अनाज, कपडा, किराना, आड़त इनका मुख्य व्यवसाय है। ये राजस्थानी बन्धु तमिलनाडु की सर्वागीण प्रगती में सहयोगी है। राजस्थानियो द्वारा संचालित तमिलियो के लिये तमिल भाषा प्रधान स्कूल एवं कालेजों में तमिल छात्रो की ही अधिकता रहती है। हिन्दी माध्यम के कुछ ही स्कूल हें। जिनमें भिन्न भाषी छात्र पढते हैं। तमिल भाषियों को हिन्दी एवं हिन्दी भाषियो को तमिल सिखाते है। तथा हिन्दी भाषियो मे तमिल साहित्य एवं संस्कृति का प्रचार करते है। तदर्थ राजेन्द्र तमिल वर्ग नामक राजस्थानी संस्था कार्यरत है। राजस्थानियों द्वारा संचालित धर्मार्थ आतुरालय चिकित्सालय अनेक है। तमिल छात्रों हेतु निःशुल्क शिक्षा, भोजन, एवं आवास व्यवस्था है। समाज कल्याण की दृष्टि से अनाथ, गरीव बालको के पालन पोषण, शिक्षा, सिलाई, कसीदाकारी, हस्तकला आदि स्वावलम्वन शिक्षा व्यवस्था की जाती है। मधुरैवरम् में बाल मनोरजन के लिये "दया सदन चिल्ड्रन टाउन" नामक संस्थान राजस्थानियो द्वारा जनता को समर्पित हैं।

मद्रास के प्रसिद्ध व्यापारी नृसिहदास नागोरी ने अपनी पूर्ण सम्पदा गांधीजी को अर्पित कर देश सेवा में बावाजी वन गया था, इसकी लिखी पुस्तक राजस्थान की पुकार अप्राप्य है।

प्रसिद्ध विड़ला परिवार के जी० पी० बिड़ला ने हिन्दुस्तान चैरिटी ट्रष्ट द्वारा विश्व हिन्दू परिषद के माध्यम से तमिलनाडु के कई नगरों

मे अस्पृश्यता एवं जाति संघर्ष दोष दूर करने हेतु विशेष कर हरिजन बस्तियों मे १०० मन्दिर बनवाये है। प्रत्येक मन्दिर के निर्माणार्थ ३०,०००) रु० निर्धारित किया गया था। रामनाथपुरम् तहसील मे जहाँ धर्मान्तरण अधिक हुआ था वहाँ हरिजन बस्तियो मे २० मन्दिर पहिले बनवा दिये थे, उन मन्दिरो से हरिजनो मे हुई जागृतीवश हरिजन बहुल २०० गावो के हरिजनो ने अपने गाँवो में भी मन्दिर बनवा देने हेतु विश्व हिन्दू परिषद के माध्यम से निवेदन पत्र भेजे थे तदर्थ उक्त १०० मन्दिर बनाये गये।

बिडला के सहयोग मे वि० हिं० प० द्वारा कन्याकुमारी जिले मे ७ विद्यालय, १ वेद पाठशाला, रामनाथपुरम् मे १७ बालवाडी, एवं माध्यमिक शाला के छात्रो हेतु छात्रावास प्रारम्भ है। १९८२ के दंगापीडितो के सहायतार्थ बिडला लक्ष्मी चैरिटी ट्रष्ट ने वि० हिं० प० के माध्यम से कन्याकुमारी कोलाचल क्षेत्र मे २ मन्दिर तथा ९ घर एव मीनाक्षीपुरम् मे हरिजनो के ३० मकानो की मरम्मत का पूर्ण व्यय दिया है। उक्त कार्यो मे ७० लाख रुपया बिडला का लगा है। बिडला प्रतिष्ठान ने पाक युद्ध समय पैंतालिस लाख रुपया सुरक्षाकोष मे दिया था। जयपुर मे लक्ष्मीनारायण मन्दिर तीन करोड की लागत से बना है। तथा प्रसिद्ध गोविन्द जी के मन्दिर के नवीनीकरण पर दो करोड रुपया लगाया जा रहा है, ग्वालियर मे एक करोड की लागत मे सूर्य मन्दिर बनना है। हैदराबाद, इग्लैड, कल्याण, दिल्ली, भोपाल, मथुरा आदि मे भी करोडो रुपयो के व्यय से दर्शनीय भव्य मन्दिर बनवाये है। बिडला का मेडिकल रिसर्च सेण्टर बम्बई अस्पताल भारत का सबसे बडा अस्पताल है। बिरला मातुश्री सभागार एव बिडला क्रीडा केन्द्र भी बम्बई मे सर्वोपयोगी है।

पिलाणी मे विज्ञान मय बिडला विश्वविद्यालय तथा कलकत्ते मे वैज्ञानिक खगोलीय तारामण्डल भी प्रतिष्ठा के धनी है। १९७५ मे पच्चीस लाख रुपया राहत कोष मे दिया है।

करीब १६० वर्ष पहले शिवनारायण विडला ने कमाकर चौवीस हजार रुपया बचाया तब पिलाणी मे रहने की हवेली ११,०००) रुपयों से बनवाया, किन्तु साथ ही १३,०००) रुपयो मे शिव मन्दिर वनवाया इस अन्तर की धार्मिक भावना विचारणीय है। यह ही पैतृक परम्परा उस विडला परिवार मे आज भी विद्यमान है।

ई० १९४६ अगस्त १६ को मुस्लिम लीग ने डायरेक्ट एक्शन के नाम पर अग्रेजो को तो छुआ तक नही, किन्तु हिन्दुओ का कत्लेआम मचा दिया था एव विभाजन के समय भी कत्लेआम मचाया गया था, उक्त दोनों समय विडला फर्म ने हिन्दुत्व रक्षण मे यथा सम्भव सह-योग दिया था कलकत्ता, वम्बई, दिल्ली के विड़ला भवन कॉग्रेस के आवास एव रण नीति के सचालन-केन्द्र थे। १९३० से ई० १९४७ तक वम्बई का विड़ला भवन काग्रेस का मुख्य केन्द्र था। महात्मा गाँधी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, जवाहर लाल नेहरू एव अन्य समस्त वरिष्ठ नेता यहां ही ठहरते थे। यहां हर समय आवासीय पूर्ण व्यवस्थाएं उपलब्ध रहती थी। भारत छोडो का उद्घोष यही से हुआ था। समस्त वरिष्ठ नेता यही पर बन्दी वनाए गए थे। लौह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल का देहान्त इसी भवन मे हुआ था (काश सुभाष, पटेल, सजय दस वर्ष और रहते) दिल्ली के विडला भवन मे महात्मा गॉधी का देहान्त हुआ था। "गाँधी महामानव थे, भावुक थे, सहृदय थे, कूटनितिज्ञ नही थे।"

ई० १९२६ मे बत्तीस वर्षीय युवावस्था मे लक्ष्मीपुत्र जी० डी० याने घनश्यामदास विड़ला ने अग्रेजो से सर की उपाधि लेना मजूर नही किया किन्तु राष्ट्रपति वावू राजेन्द्रप्रसाद से "पद्म भूषण" का अलंकरण सादर ग्रहण किया है। इस वैभव सम्पन्न व्यक्ति ने व्यक्त किया था कि मेरी मृत्यु जहां होगी, अन्तिम सस्कार उसी भू-भाग पर किया जाय। क्या यह पूर्वाभास था। इनकी मृत्यु एव दाह सस्कार इग्लैण्ड मे हुआ है। यह कर्म योग हुआ। डॉ० लक्ष्मीनारायण "लाल"

द्वारा लिखित "कर्मयोगी घनश्यामदास" नामक ग्रंथ में जनोपयोगी साहित्य है इसी कारण वसन्तराव साठे की उपस्थिती मे राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने उक्त पुस्तक का विमोचन किये है।

स्वतत्रता संग्राम में–झालावाड़ का जालिमसिंह, मेवाड का राणा फतहसिंह तथा शाहपुरा का बारहट केसरीसिंह सपरिवार, अर्जुनलाल सेठी, दामोदरदास राठी, सागरमल गोपा, गोविन्दगुरु, जमनालाल, ब्रजलाल वियाणी, मगन लाल बागड़ी, गोविन्ददास मालपाणी लाला लाजपतराय, कृष्णदास जाजू, पूनमचद राँका, जयनारायण व्यास, हीरालाल शास्त्री, श्री प्रकाश, श्रीमन्नारायण, धर्मवीर, सम्पूर्णानन्द, अचलपुर का मालगुजार मदन गोपाल चौधरी, साहूकार धौकल सेठ, गोदिया का गिरधारीलाल शर्मा, रघुनाथदास शर्मा, लोढूलाल अग्रवाल, सुखदेव अग्रवाल आदि अन्य सैकडो सम्पन्न एव साधारण परिवार के सभो जातियो के राजस्थानी स्त्री पूरुषो ने अपने आवासीय प्रान्त के आन्दोलनो मे खुलकर हिस्सा लिये हैं। यातनाए सहन की है। ब्रजलाल वियाणी विदर्भ केसरी कहलाया है। इनका लिखा विजय दशमी उपन्यास राजस्थानी भाषा मे समाज को उद्बोधन है। लगभग ६० वर्ष पहले धामण गाँव (विदर्भ) मे मारवाड़ी भापा प्रचारक मण्डल ने राजस्थानी कई पुस्तके प्रकाशित किया था। करीव पचास वर्ष पहले अचलपुर के मदन गोपाल चौधरी ने नागपुर तुलसी बाग मे मदन फिल्म निर्माण क० खोला था। राजस्थानी सावू युवक पहला अभिनेता है जो इग्लिश पिक्चर थीप ऑफ वगदाद मे हीरो वना है। वीडी जगत मे वार्निश रगीन लेवल का आरम्भ १९१२ से कामठी की रामाकृष्णा रामनाथ फर्म ने किया है। इसी के सहयोग से शिवराज प्रेस शनीचरा नागपुर मे लगा था। मध्य प्रदेश और विदर्भ मे सवसे पहला वीडी कारखाना नागपुर मे सिद्दी मिया का था, गाय और डवल हाथी लेवल था। १९१० के पहले तक पूना के नररुप्पा गुण्डप्पा की खुली वीड़ी वुलन्नाकर

सभी व्यापारी अपना लेबल पेकिग बनवाते थे । बाद मे बीड़ी कार-खाने कई खुलते गए । प्रसिद्ध साहित्यकार झाबरमल शर्मा ने टिलक, गाँधी, विवेकानन्द, खेतडी राज्य एवं अजीतसिंह पर पुस्तकें लिखा है । पत्र पत्रिकाओं का सम्पादन किया है । खेतड़ी रामकृष्ण मिशन का आजीवन संरक्षक सदस्य रहा । १९८२ मे मृत्यु पूर्व नेहरू मेमो-रियल म्यूजियम एव नयी दिल्ली ग्रन्थागार को ३००० पुस्तके, पत्रिकाएं एवं राष्ट्रीय नेताओं के पत्रादि ६००० भेट दिया है । चित्तौड़ी कवि अब्दुल जब्बार मंच पर सरस्वती वन्दना प्रस्तुत करता है । राजस्थान आकाश वाणी के कवि इकराम राजस्थानी रचित 'प्रकाश पंथ' नामक ग्रंथ कुरान के सूरा २९-३० के आध्यात्म का सार है इसका प्रकाशन उदयपुर के महाराणा मेवाड हिस्टौरीकल पब्लिकेशन ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है । उक्त वर्णन सहस्रांश भी नही हैं ।

बम्बई मे गुजरातियो पर, गोहाटी, असम, दार्जिलिंग, बंग, बिहार, उडीसा आदि मे राजस्थानियो पर हुए आक्रमण पुरुषार्थहीन ईर्षाग्रस्त अकर्मण्यो की कुत्सित मनोवृत्ति है । देशहित जनहित नही है औरों की प्रगति पर द्वेश मे दहकता, बहकना ही अकर्मण्यता है वे शब्दवीर द्वेश की अपेक्षा प्रतिस्पर्धी कर्मवीर बने तो उन का एव देश का हित होगा, सौजन्यता, सम्पन्नता बढ़ेगी ।

ई० पू० ५१८ मे ईरानी दायखौप (डेरियस) ने, ई० पू० १५६ में ग्रीक नरेश मनेन्डर ने भारत पर आक्रमण किया था ई० १५२७ तक पचास से अधिक आक्रमण भारत पर पश्चिमोत्तरीय दिशा से हुये है इनका प्रथम मुकाबला राजस्थान ही करता रहा है १९७१ मे पाकी हमले से भी राजस्थान टकराया है ।

पाश्चात्य मुस्लिम आक्रामको से सैकडों वर्प निरन्तर युद्धरत रहने के कारण व्यापार, कृषी, धन, जन, पशु आदि का निरन्तर वहुत जबरदस्त विनाश राजस्थान मे । हुआ है । मुगलो के बाद

मराठो ने भी राजस्थान को जी भर कर लूटा था । इन्ही आघातो ने निरन्तर जूझते रह विनाश से पीडित, त्रासित राजस्थानी मानव निर्वाह के लिये विवश हो मातृ भू से सैकडो मील दूर तक भटकता पदयात्री पहुँच गया । उस युग में प्रवास निरापद नही था । वाहन साधन कठिन था, पत्राचार भी सुलभ नही था । वह प्रवासी मानव उस नई हर वसाहत की भाषा भूषा रहन सहन आदि से अपरिचित था । नया था, इसलिये विनम्रता सह सेवाभावी मिलनसारिता के सहज गुणो द्वारा वहा अपनापन उसने पाया । बुद्धि और श्रम मे उपार्जन पाया । लूट खसोट या डाका जनी नही किया, राजस्थानी जहा भी वसा है, वहा की जन सेवा उसने तन, मन, धन से अवश्य की हैं । बुरे व्यक्ति तो संसार के हर समाज में है अत हस बन कर मोती ही चुनिये, गन्दगी सूअर के लिये हे ।

देश–विदेश मे उद्योग एव परोपकार मे राजस्थानी सहयोग अन्य किसी भी समाज से पिछड़ा हुआ नही है ।

राजस्थान के प्रसिद्ध डकैत दयाराम गूजर, हरफूल, टट्या भील वलजो, भूरजी, विरजसिंग, वुद्धसिंग आदि शोषक धनिको को लूट–कर गरीवो की मदद करते थे, आतकवादी नही थे, किन्तु कही की भी जेल इन्हे रोकने मे असमर्थ रही है । अंग्रेज अधिकारी भी इनसे भयग्रस्त रहते थे । चोरी मे खापरिया, बीजा, खींवा अद्भुत सिद्ध हस्त थे ।

दो सौ वर्ष पहले सत्रहवी सदी के अन्तिम वर्षो मे औरगजेव के समय नागोर का हीरानन्द आगरा मे गल्ला व्यापारी था । शाही दीवान मुर्शिद कुली खॉ आदि ओहदेदार इसके खास ग्राहक थे । शाही कार्य वश मुर्शिद कुली खाँ को ६००० सेना सह वगाल, विहार सपरिवार जाना पडा, इनके साथ हीरानन्द का पाँचवा पुत्र माणकचन्द भी गया, यह १७०४ मे मुर्शिदावाद मे वसा इसकी अन्य शाखाएं भी हुई, १७५० तक काफी सम्पन्न हो गया था ।

माणकचन्द के प्रपौत्र महताबराय को दिल्ली शाह ने जगत सेठ की उपाधि दिया। इस फर्म के सहयोग से अन्य राजस्थानी भी व्यापार के लिये इस क्षेत्र मे आकर बसने लगे। नवागन्तुक को आवासीय व्यवस्था एव २१) से १०१) रुपये तक व्यवसाय के लिये ऋण रूप में दिया जाता था, यह परम्परा नवागन्तुको ने भी बाद मे आने वालो के साथ कई वर्ष निभाये। "इसी महताब्राय ने करोड़ो रुपया मराठो को भेट देकर बगाल को लूटने से मराठो को रोका था।" इस प्रकार की महत्वपूर्ण घटनाएं और भी है। जो राजस्थानेतर व्यक्तियों की नैतिकता के लिये मार्मिक विचारणीय है। मराठो ने राजस्थान को जी भरकर कई बार लूटा था, किन्तु सभी मराठा तो बुरे नही है। उक्त महताबराय फर्म का ऋण इस्ट इण्डिया क० पर एक खरब से अधिक संख्या मे आज भी बकाया है। इससे अपशब्द कोषकार मोले स्वर्थ एवं जॉन विलसन की नैतिकता श्यायद लज्जान्वित हो।

द्वितीय महायुद्ध के वाद वगाल, विहार, आसाम, महाराष्ट्र आदि के यूरोपियन कारखाने, चाय बगान, मिल्स आदी काफी सस्ते दामो मे इन व्यापारियो को मिल गए। ये लोग उनसे एव कार्य से परिचित थे। सम्पन्न वनने का अवसर मिल गया। अग्रेजो को यहाँ से भागना था, जो दाम मिले ले भागे, भागते भूत की लंगोटी, क्या लम्बी, क्या छोटी। ले भागे।

हैदराबाद-पूना का प्रसिद्ध पित्ती परिवार (पूना मिल्स) विभिन्न रूप से जनसेवा प्रिय है। अमलनेर-धूलिया (खानदेश) की प्रताप मिल्स के स्वामी अग्रवाल प्रताप सेठ ने जनसेवा हेतु अनेक संस्थान स्थापित किया है। नासिक का भोसले मिलिट्रि स्कूल इन्ही का प्रयास है। प्रताप सेठ महाराष्ट्रीय भाषा एव वेष भूषा धारी था। पूना में सूरेजमल सघवी न रूबी नर्सिग हॉल को कोवाल्ट यूनिट (कैंसर) के लिये दस लाख रुपया दिया है। सोलापुर मे सूरजरतन दम्माणी ने वीस लाख की लागत से भव्य सार्वजनिक भवन वनवाया है। भैरू-

रतन दम्माणी ने वालवाड़ी से हाई स्कूल तक का निर्माण किया है। पूना मे वालमुकुन्द संस्कृत महाविद्यालय, पूना की लोइया फर्म की कृति है। भीवडी मे स्वतन्त्रता आन्दोलन मे जेल यात्रियो के परिवार का भरण पोषण एव राष्ट्रीय नेताओ की आवागम निवास व्यवस्था विठ्ठराम लाहोटी द्वारा की जाती थी। इन्ही की भक्ति ने पढरपुर के विट्ठल मन्दिर में नियमित भोग का प्रवन्ध किया हैं।

हजारीमल सोमाणी (वम्वई-मोलासर) ट्रष्ट जनसेवा एवं धार्मिक कार्यो में सदैव उत्साही है, सोमाणी आरोग्य केन्द्र (वम्वई) का उद्-घाटन प्रधान मन्त्री इन्दिरा जी ने किया था एव गजाधर सोमाणी पोलिटेकनिक इन्स्टीट्यूट का शलिान्यास मोलासर राजस्थान मे राष्ट्रपति गिरी महोदय ने किया था।

कानपुर का आनन्दराम जयपुरिया ट्रष्ट कई जगह विश्राम भवन धर्मशाला, धर्मार्थ दवाखाने, देवालय, विद्यालय, कालेज, छात्रावास, छात्रवृत्ति का सचालक है। वाढ़, सूखा, भूकम्प, आदि मे भी उदार सहयोगी है। कानपुर का ही जे० के० सिंघानिया आर्गनाइजेशन (ट्रष्ट) मारवाड़ी कालेज, जौहरी देवी गर्ल्स कालेज, इण्टर कालेज, एवं कई स्कूल, तथा जे० के० इन्स्टीट्यूट मे टेक्नोलॉजी, सोश्योलॉजी, फिजिक्स, ह्यूमनरिलेशन, रेडियोलॉजी कैसर रिसर्च, कमलापत मेमोरियल हास्पिटल, वीमन हास्पिटल, एवं छात्र वृत्तियां आदि स्थापित किया है। जिनमे प्रतिवर्ष दस हजार से अधिक छात्र शिक्षा पा रहे है।

जालोर जिले का वम्वईवासी नैनमल पूंजाजी ने १९६८ में अकाल सहायता मे पचीस लाख रुपया दिया है। केवल पश्चिमी महाराष्ट्र के ही अनेक मारवाड़ियों ने सामूहिक रूप से लाखों रुपया दानार्थ दिए है। जिनकी संख्या करोड़ो पर है यही उदार दानवीरता बंगाल, विहार, उड़ीसा आदि के मारवाड़ियों मे भी है।

१९१३ से १९८६ तक कलकत्ता की मारवाढी रिलिफ सोसायटी ने वाढ, अकाल, भूकम्प आदि के समय जनसेवा मे करीव छह करोड़ रुपया लगाया है। १९७६ में चण्डीगढ कांग्रेस अधिवेशन मे दस दिन समस्त भोजन प्रवन्ध तीन लाख व्यक्तियो के लिये सुव्यवस्थित किया गया था। सपरिवार प्रधानमन्त्री भी यही भोजन करती थी। प्रधान-मंत्री, पंजाव के मुख्य मन्त्री-ज्ञानी जैलसिंह, काग्रेसाध्यक्ष देवकान्त वरुआ आदि ने मारवाड़ी रि० सो० की कार्य कुशलता की भूरि भूरि प्रषंसा किये थे।

वंग मुख्य मंत्री सिद्धार्थ शंकर राय ने सगर्व कहा था यह सोसा-यटी तो मेरी है। उसी वगाल में मुख्य मंत्री अजय मुखर्जी के समय उद्योगपतियों के माथ बगाली कर्मचारियो द्वारा किये गये क्रूर व्यव-हार एवं यांत्रिकी तोड फोड के कारण डेढ़ दो सौ कारखाने वन्द हुये, ऑफिस उठ गये, करीव डेड दो लाख मजदूर बेकार हुआ, इनकी रोजी रोटी गलत नेतागिरी ने छीनी। कलकत्ता के लेक गॉर्डन की भयानक वीभत्स जबरदस्त घटना योजनाबद्ध काण्ड था। इसके लिये सभी बंगालियों को बुरा समझना विवेकहीनता होगी। श्रीमन्तों के उबलते अनेक भोण्डे प्रदर्शन करना उद्योगपतियों की नयी पौध की जबरदस्त गलती है। कलकत्ता के प्रसिद्ध उद्योगपति रामेश्वर टांटिया धनवान थे, किन्तु श्रीमन्तो की फिजूल खर्ची एव हानिप्रद धनोन्मादि प्रदर्शनों का सदैव विरोध कर पत्र पत्रिकाओ के माध्यम से भी कई मर्तबा समाज को सचेत किये थे। एक शेर कहा था इन्होने—सम्हलो तो सम्हल जाओ ऐ शीश महल वालो, अजाम बुरा होगा हर हाथ मे पत्थर है। यह शेर सख्त चेतावनी है। लाल चीन की निर्मिती का लोमहर्षक उदाहरण देकर जरूरतमन्दों की आर्थिक सेवा करने के लिये धनिको से उनका आग्रह था।

बंगाल की उक्त घटना के कारण ब्रिटेन और अमेरिका ने भी बंगाल को औद्योगिक सहयोग देने से हाथ रोक लिया था। वंगाल की

औद्योगिक प्रगति में वाधा होने से वेकारी एवं गरीवी वढी। यह अकर्मण्य स्वार्थी नेताओ की गुमराह नीतियो का फल है। नेता सुखी जीवन पाता है किन्तु गुमराही नेता के कारण श्रमिक परिवार को कष्ट सहना पडता है। बगाल की घटी प्रगति से महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि अन्य प्रान्तो की काफी तरक्की हुई है। कलकत्ते का स्थान वम्बई ने लिया है। किन्तु महाराष्ट्र मे भी कभी-कभी मराठा गैर मराठा का भेद उत्पन्न कर फूट डालने की कोशिश की जाती है। विहार और असम मे भी शोर उठता है। इस प्रकार की अकर्मण्यता ईर्षालु नीति सभी प्रान्तो के लिये हानिप्रद है। गोहाटी, सिलिगुडि, जामुडिया, तिनमुकिया, दीमापुर, सीतामढी, रायगज, भिवडी आदि के दगो मे सभी की हानि हुई, किन्तु मारवाडियो का सर्वाधिक करोड़ो का नुक्शान हुआ है। दगा या नुक्शान करनेवाले गुमराही वन्धु विचार नही करते कि किसी भी प्रवासी नागरिक का नुक्शान भी उसी नगर का नुक्शान है। किसी भी समाज पर हमला करना उसी क्षेत्र की प्रगति पर हमला करना है। भारतीय सस्कृति ने विधर्मी विदेशी शरणागत के रक्षण मे सर्वस्व निछावर किया है। तव हम सभी तो भारतीय वन्धु ही हैं। राज-स्थानियो द्वारा सार्वजनिक सेवाए सभी के लिये होती है। इनके उद्योग मे सभी जाति एव क्षेत्र के श्रमिक लाभान्वित होते है। पूना मिल्स, प्रताप मिल्स एव विडला उद्योग ने अपने श्रमिको को पर्याप्त सुविधाएं दी है अतः सभी समान नही होते है। नागपुर मे वनवारी-लाल पुरोहित ने करीब पैंतालीस लाख रुपया जनहित मे लगाया है। पिता रामेश्वर टाटिया की स्मृति मे पुत्र नन्दलाल ने कलकत्ता राम-कृष्ण मिशन को चालीस लाख रुपया एव सीकर मे कल्याण आरोग्य केन्द्र को दस लाख रुपया दिया है। करीव चार सौ पचास वर्ष पूर्व आमेर से सागानेर मे जोगाजी पारीक के यहां आई वारात मे व्यंग वश परोसी गई अशर्फियां जूठन मे भगी को दी गई किन्तु भगी ने

उन अशर्फियो से वावडी वनवा दिया जो जूठन की या भगी की वावड़ी के नाम से विद्यमान है। दौसा में हरिजन (वलाई) की धर्मशाला एवं शिवालय है। वागोत में रैवारी (हरिजन) का शिव मन्दिर दर्शनीय है। डिग्गीपुरी मे धोवी की धर्मशाला है। गोंदिया, नागपर एव तुमसर मे तिवारी, सराफ, खण्डेलवाल धर्मशाला हरिजन एवं मुस्लिम को भी दी जाती है। कुरुक्षेत्र एवं पुष्कर मे सुनारों की धर्मशाला है। ब्राह्मणों की धर्मशाला भी कई जगह है। महिलाओं ने भी अनेक धर्मशालाए वनवायी है ववाई मे दीदारू सौदागर ब्राह्मणो को भी रजाई वॉटता था।"

फिल्म जगत में राजस्थान

फिल्म जगत की सभी विधाओं में राजस्थान सहयोगी है। राजस्थान क्षेत्रीय कथानको के वने चित्रों की वाहुल्यता है। ई० १९२१ में मूक चित्र मीरावाई वना, १९२९ मे सन्त मीरावाई। इसके वाद सागर फिल्म का वोलता चित्र मीराबाई बना। न्यू थिण्टर्स ने राजरानी मीरा वनाया इसमे दुर्गा खोटे एव पृथ्वीराज कपूर थे। १९४० में मतवाली मीरा वनी। १९४६ मे मीरा चित्र तमिल भाषा मे वना इसका हिन्दी करण भी हुआ था। इस चित्र का उद्घाटन लार्ड माउंट वेटन ने किया था। मीरा का सफल अभिनय शुब लक्ष्मी ने की थी एवं सफलता पर नेहरू ने बधाई दी है। इसी दौर मे पूना के शालीमार के चित्र मीरा मे नीना और भारत भूषण थे। इनके वाद भी मीरा पर फिलमे बनती रही है। भक्त नरसी महता भी प्रसिद्ध फिल्म थी।

दक्ष यज्ञ विध्वस, गंगावतरण, भस्मासुर मोहिनी, शिव पार्वती विवाह, गणेश जन्म, भक्तप्रल्हाद, सती तुलसी वृन्दा, अमृत मथन, राजा बलि याने वामन अवमार, लवकुश, कृष्ण जन्म, कृष्णलीला, जन्माष्टमी, चक्रधारी, वांसुरी की आकर्षक धुनवाला चित्र-श्वामसुन्दर, गोपाल कृष्ण, गोकल का चोर, कंस वध, कृष्ण सुदामा, कालिया मर्दन

रुक्मिणी हरण, सुभद्रा हरण, द्रौपदी स्वयंवर, द्रोपदी चीर हरण, भीष्म प्रतिज्ञा, जयद्रथ वध, वीर वभ्रुवाहन, महाभारत, महारथी कर्ण वीर घटोत्कच, कीचक वध, कृष्ण बलराम, कृष्णार्जुन युद्ध, उपा अनिरुद्ध, माया नगरी, शकुन्तला, नलदमयन्ती, भक्त पूर्णमल, माया-मछीन्द्र, गोरखनाथ, बाबा रामदेव, तेजाजी विक्रमादित्य, गोपीचन्द, भर्तृहरि, पृथ्वी वल्लभ, कालिदास, वाल्मीक, सूरदास भक्तराज अम्बरीष, विल्वमंगल, कृष्णभक्त-सन्त तुकाराम, चैतन्य महा प्रभु, गोरा कुम्हार, सन्त सखु, सन्त जनाबाई, भक्त पुण्डलीक, चोखा मेला, नामदेव, आदि।

ऐतिहासिक कथानको में यथा सम्भव महाराणा प्रताप पर प्रथम फिल्म १९२५ मे बनी है। १९२९ मे राजपूतानी, १९४६ मे राणा प्रताप एवं १९४८ मे तमिल और तेलगू भाषा मे वीर प्रताप फिल्म बनी। पृथ्वीराज चौहान एवं संयोगिता नामों से हिन्दी, तमिल, तेलगू भाषा मे पन्द्रह से अधिक फिल्मे बनी है। सिकन्दर पोरस पर दो फिल्म तथा पन्नादाई पर दो फिल्म बनी है। हुमायूँ, अमरसिंह राठोड़, वीर दुर्गादास राठोड़, पद्मिनी, आल्हा ऊदल, चित्तौड विजय, राजपूत, राजहठ, राठोड कुमारी, ढोला मारू, रानी रूपमती, नूरजहा, मुगले आजम, अनारकली, ताजमहल, जहाआरा, रजिया सुल्तान, तानसेन, बैजू बावरा, सोनी महीवाल, हीर रांझा, रगीला राजस्थान, नौलखा हार, दो बून्द पानी, रेशमा शेरा, भगतसिंह, तथा राजस्थानी संस्कृति एवं ऐतिहासिक शिल्प भण्डारो पर अनेक वृत्त चित्र बने है इनमे बीकानेर और जैसलमेर पर चित्रित "थ्रू द आइज आफ ए पेन्टर" विशेश सराहनीय है।

राजस्थानी समाज के औद्योगिक सहस्रों प्रतिष्ठानो की सामुहिक उपलब्धी का एकत्र योग देखें तो सराफा, चिकित्सा समूह, जवाहरात, कपडा, खाद्य वस्तुएं, मिल्स, कारखाने, सिने उद्योग, राष्ट्रीय, धार्मिक एवं सार्वजनिक सेवा में इनका उच्च स्थान रहेगा"। अर्थात राज-स्थान की सभी जातियो में सार्वजनिक सेवा की धार्मिक प्रवृत्ति है।

बम्बई चौपाटी स्थित "भारतीय विद्या भवन" मारवाडी सेठ मूंगालाल गोयनका के दो लाख रुपयों के दान से बना है। एवं गो मेवा में छह लाख रुपया दिया है काशी नागरी प्रचारिणी सभा की व काशी हिन्दू विश्व विद्यालय की समृद्धी में राजस्थान का योगदान कम नही है। उक्त वर्णन राजस्थानी श्रेष्ठताओं का शताश भी नही है। समस्त विवरण एकत्र करने मे कई वर्ष लगेगे। संसार के सभी समाज में बुरे व्यक्ति हुए है, किन्तु चन्द बुरे व्यक्तियों के कारण पूरे समाज को दोष देना न्यायोचित नही है।

"राजस्थानी समाज के प्रति अ-राजस्थानीय कुछ नेताओ के विचार" राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह–राजस्थानी जिस प्रदेश में बसते है उस प्रदेश की तरक्की में योगदान देते है किन्तु अपनी मातृभूमि को नही भूलते। सम्पन्न होने पर भी घमण्ड नही करते हैं।

१९६७ जुलाई २० को दिये सन्देश में इन्दिराजी ने लिखा है कि हिन्दी रगमंच स्वर्गीय माणिकलाल डांगी के प्रति आभारी है। क्योकि उन्होने कठिन समय में हिन्दी–नाटक और उसके द्वारा राष्ट्रीय भावना को जागृत रखा।

[महाराणा कुम्भा एवं जयपुरेश रामसिंह, नाट्य प्रोत्साहक थे]

प्रधानमंत्री इ दिरा गांधी—अपने देश की सांस्कृतिक एवं पारम्परिक धरोवर में राजस्थानी साहित्य का अनूठा योगदान है।

[१९७२ मे इन्दिराजी ने स्वीडन, हगरी, जेकोस्लोवाकिया में राजस्थानी लोकगीतो के रेकार्ड बांटे थे]

केन्द्रीय वित्त राजमत्री एस० एम० कृष्णा—भारत के विकास में राजस्थानियों का अनूठा योगदान है। राजस्थानी भाषा और संस्कृति ससार मे अपना ऊचा स्थान रखती है। राजस्थानी संस्थाओ की सामाजिक और सास्कृतिक प्रवृत्तिया सराहनीय है।

खाद्य आपूर्ती मत्री माणिकराव—राजस्थानी जहा रहते है वहां के लोगो से घुलमिल कर रहते है यह परम्परा लोगो के लिये मिसाल है।

मुख्य मंत्री महाराष्ट्र वसंत दादा पाटिल—व्यापार मे राज-स्थानियो का कार्य सराहनीय है, राजस्थानी धन का सदुपयोग करना जानते है, विद्यालय, औषधालय, धर्मशाला आदि जनहितैषी कार्य में उदारतापूर्वक द्रव्य लगाकर चारित्रिक आदर्श उपस्थित करते हैं।

महाराष्ट्र के लेवर, ट्रासपोर्ट एव जेलमंत्री एस० एम० ई० वशीर ने १९८३ मे कहा है कि—सम्पूर्ण भारत हमारा मुल्क है और यह (राजस्थानी) कौम जहां कही भी गई अपनी छाप व सिक्का छोडा है। मेहनत की है और बांटा है? दुनिया को दिया है। यह वात राजस्थान के लोगो मे रही है। गरीब से गरीव वस्ती में भी मन-मोहक गीतो मे जो रंग और जिंदादिली दिखाई देगी वह कही नही मिलेगी।

उपरोक्त वर्णन् से स्पष्ट ज्ञात होता है कि राजस्थानी समाज (मारवाड़ी) वास्तव मे बुरा नही है। एक विदेशी योरोपियन ने भारत के एक श्रेष्ठ समाज के प्रति अन्य भारतियों मे द्वेशोत्पन्न करने के उद्देश्य से ही शब्दकोष में हीन अर्थ लिखे है यह सत्य है।

राजस्थान मे शाही तरवार के भय से इस्लाम स्वीकारे हुये तथा मुस्लिम सन्त बुह्लानुद्दी, मिट्ठी बावा एव ख्वाजा साहब के प्रभाव से वने राजस्थानी मुसलमान दूसरे नेव मुस्लिमो की अपेक्षा परस्पर नागरिक सौजन्तता, धार्मिक सहिष्णुता एव परम्परागत भाई चारे मे उदारमन रहे है। भाषा भूषा अधिकांश रीति रिवाज एवं हिन्दुओ से मिलन सारिता वशानुगत है। पूर्वजो की तरह उनकी वंशावली वंश भाट आज भी लिखते हैं चौहान खत्री सोलकी भाटी पण्डा तगाला आदि वॅक (सरनेम) यथावत विद्यमान है। सदियो पूर्व राजस्थान से निकले सैकड़ो परिवार दूर देशो मे बसे है कुम्हार, काश्तकार, मूर्तिकार आदि उद्यमी हैं, भाषा भूषा वदल गई किन्तु इनके भी वॅक भाटी, गहलोत, सीसोदा, राणा, चौहान आदि पूर्ववत है इनके वंश भाट है। यह राजस्थानी माटी से रक्त सम्बन्ध का

स्वाभाविक परिणाम है । इसीलिये राजस्थानी भिन्न सम्प्रदायों मे परस्पर सौमनस्यता है । नौटकी उस्ताद गोविन्दराम दर्जी का शिश्य उजीरतेली का लिखा हरिश्चद्र का ख्याल मे लिखी वन्दना–गौरीपुत्र गणेश मनाया वुद्ध चौगुणी होय । सारदा माता शुभ की दाता विद्या वर द्यो मोय । ऐसे अनेक प्रमाण है ।

अंग्रेजो ने भेद विष फैलाने १९४६ मई १६ को योजना दिये कि विधान सभा के निर्वाचितो को केन्द्रीय और प्रान्तीय शासन अग्रेज सोप देगे । तदर्थ भारतीय तैयार हो गए किन्तु जुलाई २६ को मुस्लिम लीग वादे से हट गई और अगस्त १६ को सीधी कार्यवाही के नाम पर गप्त योजनानुसार मुस्लिमो ने अचानक कलकत्ता से आरम्भ कर समूचे भारत मे लाखों हिन्दू स्त्री पुरुष बच्चे कत्ल कर दिये । वाइसराय लार्ड वेत्रल के बदले माउन्ट वेटन आया इसने घोर अराजकता दगे फसाद हिंसा देख इग्लेण्ड से स्वीकृति ले १९४७ अगस्त १५ को भारत के दो टुकड़े कर स्वतत्रता दे दी क्योकि जर्मन वार के कारण इंग्लैण्ड राज्य की हालत पूरी तरह गिर गई थी ।

विभाजन के समय–पूर्वी एव पश्चिमी पाकिस्तान में असख्य हिन्दू मारे गए, उनकी सम्पत्ति नष्ट की गई । पन्द्रह करोड़ दस लाख मानव वेघर वार हुआ था । वीस लाख मानव मौत के शिकार हुए है ।

उस समय काश्मीर नरेश ने भारत से सैन्य सहायता मांगी जो विलम्व से दी गई थी उधर मुस्लिम आक्रामक आधुनिक शस्त्र सज्ज वडी सख्या मे वारामूला आ पहुँचे थे उसी ग्राम की रक्षा करता हुआ ब्रिगेडियर राजेन्द्रसिह अपने २५० सैनिको सह मारा गया । अपने सैन्यदल सहित लेफ्टिनेन्ट कर्नल राय भी मारा गया किन्तु वारामुला मुक्त करा लिया था । चौदह हजार की जनसंख्या वाला यह गाँव जनहीन के जैसा हो गया था ।

राजोरी में मुस्लिम गरोह ने नवम्बर ११ को क्रूरतम अत्याचार किये थे । तहसील की इमारत मे असुरक्षित ३००० महिलाओ ने जौहर किया था। मुस्लिम गरोह से राजोरी मुक्त करवाई गई तब तक नर सहार निरन्तर होता रहा, केवल १२–१३ सौ महिलाए वची थी, जिन्हे मुस्लिम वनने हेतु यातना दी जा रही थी । पन्द्रह फुट गहरे डेड सौ वर्ग फुट के तीन गड्डे शवो से भरे थे । उन पर मिट्टी भी नही थी, पशु पक्षियो ने वीभत्स वना दिया था । क्षेत्र के आधे से अधिक मकानात तोडकर जलाकर ध्वस्त कर दिये थे । कई वच्चो के शव टूटे खिलौने की तरह पडे थे । माताओं के सामने वच्चो को दीवार पर कील से ठोक दिये थे। नौरोश, पेशावर, गूजर खा, झागेर, टीटवाव, उरूसा, पोरकाटो, क्वेटा, करांची, रावल–पिंडी, गिलगिट, जालधर, लुधियाना, राजपुरा, राजोरी, उरी, वन्नू, गुजरात, लाहोर, सियालकोट, पिंडदादन, खुशआव, वजीरावाद सरगोधा, लायलपुर, लालामोसा, पाराचिनार, टिप्पेरा, कलकत्ता, नोआरवाली आदि कई नगरों मे मुस्लिमो द्वारा भयानक क्रूरतम आक्रमण हिन्दुओं पर हुए थे । हिन्दुत्वनिष्ठ करीव १५ ००० सिक्ख गोलियो से भून दिये गए । करीव १५ ००० हिन्दू मीरपुर मे मारे गए । हिन्दु नारी की आन पर दहकती आग और गहरे पानी में कूदकर सैकड़ो वहन वेटियां शहीद हो गई । मुस्लिम नर पिशाचों द्वारा पकडी गई औरतो को नंगा करके शहरो मे घुमाया गया । कई महिलाओ को नग्नकर रस्सियो से वाधकर जहां–तहा पटका गया । वच्चो को कील से दीवार पर जड दिये । स्त्रियो के गुप्तांगो में कठोर वस्तुएं ठोकी गई । कुरान की कौन सी आयत मे ऐसे जेहाद का आदेश है कोई नही वताएगा।

जहा तहां लाशें, क्षत विक्षत लाशे, नग्न लाशें, गली कूचे सड़को पर लाशे, खचाखच शरणार्थी भरी ट्रेनो मे लाशे ही लाशे। "ल्हाशो से भरी दो ट्रेन भारत को पाकिस्तान ने भेट (सौगात) भेजा था"।

लूट खसोट, तोडफोड, आगजनी, अपहरण, मुस्लिमीकरण, कत्ल, विनाश ही विनाश । बेघरबार, नि:सहाय, चालीस मील लम्बा काफिला भूख, प्यास पदयात्रा से पीडित तड़फते साथियो की लाशे मजबूर हो राह मे छोड़-छोड़ कर बड़ी ही कठिनाइयो से भारत में पहुँचा था । राह में रावी और झेलम के पुलों पर मुस्लिम सैनिकों ने इन पदयात्रियों पर अचानक लूट, अपहरण. गोली वर्षा की थी । इतना विनाश होने पर भी महात्मा गाँधी ने कहा था सब वापस लौट जॉय, हत्यारो के आगे सर झुका दे रंच मात्र भी विरोध न करें इत्यादि । विभाजन पर सीमान्त गांधी अ० गफ्फार खा ने काग्रेस से कहा था तुमने हमे भेड़ियो के हाथो मे सौंप दिया है ।

इतने वीभत्स लाखों मानवो के सहार से भयानक विद्रूप शृगारित स्वाधीनता खण्डित रूप में धूर्त अंग्रेजो ने कांग्रेस की झोली मे डाली थी, मजबूर होकर, क्योकि जर्मनवार से इंग्लैण्ड दिवालिया हो गया था, एव भारत मे मुस्लिमो ने घोर हिसक अराजकता मचा रखी थी। सुभाष चन्द्र वोस भी अंग्रेज शासन के लिये काल बन रहा था, इन कारणोवश हताश, विवश हो अग्रेजो को मजबूरन भारत से जाना जरूरी हो गया था, तब स्वतन्त्रता देना ही पडा ।

यह स्वतन्त्रता केवल काग्रेसी अहिंसक आन्दोलन से ही नही मिली विश्व में बीसवी सदी की सबसे बडी संख्या मे अरबो रुपयो की हानि और लाखो व्यक्तियो की कुर्बानी भारत ने दी है, क्रातिकारियो के शौर्य ने अग्रेजो को भयातकित कर दिया था। १९५० के करीब कांग्रेसी शासन ने स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास एकत्र करवाया था, इसमें क्रांतिकारी शौर्य गाथा ही सर्वोपरि प्रकाशमान हो रही थी, इसलिये वह योजना स्थगित कर निष्प्रभ गाधी धारा को ही उजागर किया जाने लगा है । सत्य इतिहास को दफनाकर एकमात्र काग्रेस की मित्थ्या प्रषंसा करवाने मे वर्तमान शासन कटिबद्ध उत्सुक है सच है कि नीव के पत्थर दिखाई नही देते है] स्वतन्त्रता प्राप्ती के समय

सुभाषचन्द्र वोस रहे होते तो श्यायद भारत विकृत न हुआ होता। लाखो व्यक्तियो की मौत एव अरवो-खरवो की सम्पदा ध्वस्त न हुई होती।'

विभाजन के उपरोक्त वीभत्स हृदयद्रावक पैशाचिक समय मे मौत के भयानक चहुँमुखी विक्राल मुंह मे घुसकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक सघ के जा वाज सदस्यो ने ही हजारो हिन्दू परिवारो को भारत आने में मदद दी है।

ई० १९०५ अक्टूवर १३ को लार्ड कर्जन ने वग भंग किया तव कांग्रेस ने डटकर विरोध किया था किन्तु १९४७ मे उसी कांग्रेस ने भारत के तीन टुकड़े करवा लिये।

सत्ता शीघ्र पाने की उत्सुकतावश भारत माता की हथकडियां कटवाने के वजाए दोनो भुजा कटवा कर स्वतंत्रता पाने के उत्सव हेतु तैयारियाँ होने लगी थी। किन्तु—

पाकिस्तान में साम्प्रदायी उन्माद उफन पडा था उसका सक्षिप्त वर्णन ही उपरोक्त है। १९४७ अगस्त १५ के २६ दिन वाद ही सितम्वर १० को मुस्लिम लीग ने नारा लगाया था लडके लेंगे हिन्दुस्तान।

"श्री श्री निवास के पिता भारत रत्न डॉ० भगवानदास प्रसिद्ध दार्शनिक का लेखाश–भारतीय प्रमुख नेताओ द्वारा अन्तरिम सरकार की शपथ लेने के समय उन सभी भारतीय नेताओ को उस ही सभा भवन मे एकत्र सामूहिक रूप मे वॉम्व से उडा देने की अति गुप्त लीगी योजना का वह गुप्त रहस्य रा० स्व० से० सघ के देश भक्त एव अपनी जान पर खेलने वाले हिन्दुत्व हेतु कट्टर मुस्लिम वनकर वॉम्व का गुप्त रहस्य लाने वाले स्वय सेवको ने सरदार पटेल को विश्वस्त सूचना न दिये होते तो भारत सरकार नाम की चीज ही न रहती। सूचना के कारण भारतीय प्रमुख नेताओ की सामुहिक हत्या

नही हो सकी अन्यथा यह देश घोर दुर्दशा को पहुँच गया होता"। यह घटना विचारणीय है।

उक्त कार्य की सराहना महात्मा गांधी सह कांग्रेसी अनेक नेताओं ने की थी किन्तु इस सराहना से कई कांग्रेसियो को द्वेषात्मक ईर्षा भी हुई थी।

१९४७ अक्टूबर ११ को जम्मू कश्मीर पर अचानक पाकिस्तानी आक्रमण हुआ, कत्लेआम होने लगा था। यहाँ भारतीय सेना के पास युद्ध सामग्री कम थी इस अवसर में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्यो ने वर्फानी उफनती चट्टानी हिम नदियो को तैर कर गोला वारूद रसद आदि भारतीय सैनिकों तक पहुँचाते रहे है।

इस संघीय सेवा से प्रभावित हो दिल्ली की भंगी कालोनी में महात्मा गाँधी ने संघीय कार्य कर्ताओ को उद्बोधन करते हुए उनके कार्य की मनःपूर्वक सराहना किये थे। इससे महत्वाकाक्षी कांग्रेसी पुनः बौखलाए और संघ को कुचल देने की योजना पर मंत्रणा करने लगे थे तब—

सरदार बल्लभ भाई पटेल ने कहा था–आखिर संघ के लोग चोर या डाकू नही है देश को प्यार करने वाले सच्चे देश भक्त है। ऐसे संगठग को कोई भी डडे के बल से नही दवा सकता है।

देश विभाजन, बॉम्ब काण्ड, पाकिस्तानी आक्रमण, पाकिस्तान में हिन्दुओ का कत्लेआम करोड़ों की सम्पदा लूट खसोट ध्वस्त होना, पाकिस्तान को ५५ करोड रुपया गांधी द्वारा दिलवाया जाना आदि क्रूर घटनाओ के चक्र से मर्माहत उद्वेगित क्षुब्ध मन हिन्दुत्वनिष्ठ गोडसे ने गांधी की हत्या सम्मानपूर्वक कर दिया। संघ ने १३ दिन शोक घोषित किया। (गोडसे के संघी होने का कोई प्रमाण नही मिला। किन्तु कुण्ठित कांग्रेसियों को गाधी हत्या के कारण सुवर्ण अवसर मिल गया। संघ के सुयश से पीड़ित कुछ कांग्रेसियों ने सघियों के घरों में भी घुसकर क्रूर आक्रमण कर कइयों को घायल कर दिये

कुछ मारे गए कइयो के घर दूकान लूटे, जलाये, कामठी मे एक वयस्क की हत्या हुई। १९४८ फरवरी ३ को गुरु गोलवलकर सह २०००० स्वय सेवक कैद किये गए। इन्हे निर्दोष पाकर न्यायालय ने दि० ५-८-८४ को मुक्त कर दिया किन्तु सघ पर वन्दिश लगी रही तव गुरुजी के आदेश से शाखाए लगने लगी (अवज्ञा आन्दोलन) फलत शान्तता पूर्वक ६०००० स्वय सेवक वन्दी हुआ था संघ ने कही प्रतिकार नही किया अन्यथा यह दूसरा महाभारत गृह युद्ध होगया होता। ऐसे देश भक्त सघ पर आये दिन साम्प्रदायी आरोप लगाये जाते है किन्तु गत ६१ वर्ष मे साम्प्रदायी एक भी आरोप सिद्ध नही हो सका है।

"१ मई १९७९ को लखनउ मे उप प्रधान मंत्री जग जीवनराम ने सघ के प्रति कहा था हमे किसी की देशभक्ती पर तव तक सन्देह नही करना चाहिये जव तक प्रमाण न मिल जाय"।

कॉंग्रेसी खिलाफत आन्दोलन के समय केरल मे वहुत वडे प्रमाण मे हिन्दुओ का सहार, वडे प्रमाण मे मुस्लिमिकरण, एवं महिलाओं पर पाशविक अत्याचार हुए तव कॉंग्रेस मौन मूक दर्शक रही। इस तुष्टि करण नीति को घातक और सत्तावादी मानकर कॉंग्रेस के सक्रिय कार्य कर्ता हेडगेवार ने हिन्दू-हिन्दुत्व-हिन्दुस्तान के आत्म-रक्षार्थ ई० १९२४ मे राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ की स्थापना किये है। सत्ता के लिये नही किये। सघ ने रक्षात्मक कार्य किये है आक्रामक कार्य नही किये है, प्राकृतिक दुर्घटनाओ मे पीडितो की सेवा मे भी भेद भाव रहित संघ तत्पर रहा है।

सत्ता लोभ का मिथ्या आक्षेप मेवाड़ी राजवंश पर नव सत्तातुरो द्वारा लगाया जाता है। किन्तु भारतीय ५६२ राज्यो मे अग्रणीय मेवाड़ नरेश महाराणा भूपालसिंह ने ई० १९४८ मे सरदार वल्लभ भाई पटेल के राष्ट्रीय आह्वान पर अपने राज्याधिकार त्यागकर राष्ट्र की सार्वभौमिक एकता मे मेवाड़ राज्य को सर्व

प्रथम विलीन कर अपने पूर्वजों के त्यागमयी आदर्श को उन्नत किया है और यह राष्ट्रीय संगठन में राजस्थानी देन अविस्मरणीय स्वर्णांकन योग्य है। अहसान फरामोप चाहे भूल जाँय।

विलय के हस्ताक्षर करते समय महाराणा भूपाल सिंह के राष्ट्रीय आत्मोद्गार सार गर्भित है। ॐ स्वतन्त्रता का यह दीपक जिसे मेरे पूर्वजो ने मेवाड़ की स्वाधीनता प्रिय जनता के साथ अपना रक्त बहाकर जिस क्षण की प्रतीक्षा मे परमेश्वर एकलिंग नाथ की कृपा से शताब्दियो तक अखण्ड प्रज्वलित रखा है उसे आज देश की स्वाधीनता की सुखद घडी मे भारत माता के मन्दिर मे प्रतिष्ठापित करते हुए मै गौरान्वित हूँ। ॐ

इनके पुत्र महाराणा भगवतसिंह "गुरु" तथा सनातन रहस्य" पुस्तक के लेखक एव विभिन्न कार्यो मे जनोपयोगी अनेक ट्रस्टों के सस्थापक स्वयं को दीवान तथा भगवान एकलिग को राज्याधीश मानने वाली वंश परम्परा मे द्रढ हिन्दुत्व निष्ठावश निःस्वार्थ समस्त भेदभाव रहित हिन्दू एकात्मता यज्ञ १९८३ में आयोजित कर समग्र हिन्दुओं के मन मे भेदभाव रहित परस्पर अपनत्व निर्माण करने हेतु अनूठा सफल आयोजन किये थे। अन्य दिनो मे एकलिग शिवमन्दिर मे पूजा समय महाराणा निज मन्दिर मे प्रवेश करने का राजदम्भ नही करते है, गर्भ गृह के द्वार पर द्वारपाल की तरह खडे रहते है। पुजारियो को नमन करते है। शिवरात्रि को महाभिषेक समय महाराणा स्वयं कन्धे पर दुग्ध कलश लेजाकर शिव पर चढाते है। इसी प्रकार श्रीनाथ जी पर भी राणा स्वय के हाथो दुग्धाभिषेक करते है। अर्चना करते है। एकलिंग मन्दिर मे श्रद्धापूर्वक नियमवद्ध द्वार पर खड़े हुए महाराणा भगवतसिह को इस लेखक ने देखा है। वर्तमान महाराणा महेन्द्रसिह आधुनिक होते हुए भी विनयशील धर्म-निष्ठता का परिचय एक सभा मे दे चुके है।

विश्व को सच्चा प्रजातंत्र, द्रःढ़ जन संगठन, स्वतंत्रता का मंत्र, एवं स्वतंत्रता निष्ठ त्यागवीर नेता का उच्च आदर्श मेवाड ने दिया है। अन्य किसी ने नही दिया। यह भी विश्व को राजस्थानी देन है इसी कारण मेवाड़ी राजस्थान धरा वन्दनीय है यह रक्त रजित माटी शिरोधार्य है।

राष्ट्रकवि दिनकर ने लिखा है—

राजस्थान की मिट्टी वीरता की समाधी है
इस पर खडे होकर भावना को रोक रखना कठिन है
राजस्थान की धरती बलिदान की धरती है
यह मिट्टी तिलक करने योग्य है।

इस मिट्टी से तिलक करो यह धरती है बलिदान की।

❀

त्वमग्र गण्यम् धीराणाम् स्वत्व रक्षण तत्परम्
प्रतापसिंहं वन्देहम् लोकोत्तर पराक्रमम् ॥ (सं०)

❀

विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जन परिश्रमम्
नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीम् प्रसव वेदनाम् ॥ (सं)

॥ स्वस्ति ॥

❋

दीपै वाँरो देस जाँरो साहित जगमगै।

❋

रहता है सखुन से नाम कयामत तलक ऐ जौक।

❋

वि० २०४४ ई० १९८७
विजया दशमी [signature]

प्रति १०००

त्रुटि पूर्ति

पृ० ८३ पैरा २ के बाद—

रॉयल एशियाटिक सोसायटी लन्दन में डव्ल्यू० सी० टेलर द्वारा पठित शोध प्रबन्ध का अंश—

बड़े आश्चर्य की वात यह है कि जिस भारत पर कई क्रुद्ध आक्रामकों द्वारा आक्रमण होता रहा, जिनके पदचिन्ह उस भूमि पर पाए जाते है उसी भारत में समय और शासन बदलते रहने पर भी एक भाषा ऐसी टिकी हुई है कि उसके विभिन्न पहलुओ की और वैभव की तो कोई सीमा ही नही है, जो ग्रीक और लैटिन जैसी मान्यता प्राप्त यूरोपीय भाषाओं की जननी है जिसके दर्शनशास्त्र की तुलना मे पीथा गोरस का कथन बचकाना है—

प्लेटो की उच्चतम कल्पनाएं निष्प्रभ सी है। जिसके काव्यो में व्यक्त प्रतिभा अ-कल्पित-सी हें, जिसके शास्त्रीय ग्रन्थ तो इतने प्राचीन है कि उनका कोई अनुमान ही नही लगता। वह सारा साहित्य इतना विपुल और विशाल है कि उसका जितना वर्णन किया जाय कम ही पड़ेगा, उस सारे साहित्य का अपना एक विशिष्ट स्थान है। वह साहित्य एकांकी निजी बल पर टिका हुआ है। उसकी पौराणिक कथाओ की तो कोई सीमा ही नही है। उसके दर्शन शास्त्र में हर प्रकार की समस्या का विचार किया गया है। वैदिक समाज के प्रत्येक वर्ण और वर्ग के लिये उसके धर्मशास्त्र के नियम बने हुए है।

ॐ पृ० ८४ का प्रथम पैरा—ऋग्वैदिक इण्डिया मे मानव का प्रथम जन्मस्थल काश्मीर लिखा है। एक विदेशी शोध कर्ता ने भी इसे दोहराया है। दयानन्द स्वामी ने तिब्बत को आद्यमानव जन्मस्थल लिखा है। किन्तु यथा सम्भव मानव का प्रथमोत्पति स्थान हिमालयी मानसरोवर ही हो ऐस इस लेखक का मत है।

पृ० ८४ पैरा २ के वाद—

"एनी वेसेन्ट द्वारा चेतावनी मय आवाहन"

महात्मा गाँधी के सान्निध्य मे रहने आई हुई भारतीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन की कर्मठ कार्य कर्त्री विदेशी महिला एनी वेसेन्ट द्वारा चालीस वर्ष तक धर्माध्ययन के पश्चात विचार सार—

❀ विश्व के विभिन्न धर्मो का अध्ययन लगभग चालीस वर्ष तक करने के वाद मुझे हिन्दू धर्म के इतना सर्वगुण सम्पन्न और आध्यात्मिक धर्म अन्य कोई नही दिखा। उस धर्म के वावत जितना अधिक ज्ञान वढता है उताना ही उसके प्रति प्रेम वढता है। उसे अधिकाधिक जानने का यत्न करने पर वह अधिकाधिक अमोल सा प्रतीत होता है।

एक वात पक्की ध्यान मे रखे कि हिन्दुत्व के विना हिन्दुस्तान का कोई व्यक्तित्व नही है हिन्दुत्व ही हिन्दुस्तान की जड है। यदि हिन्दुत्व से हिन्दुस्तान विछड़ गया तो हिन्दुस्तान उसी तरह निष्प्राण होगा जैसे कोई वृक्ष उसकी जड़े काटने से होता है।

भारत मे कई धर्म और कई जातिया है किन्तु उनमे से कोई भी हिन्दू धर्म के इतने प्राचीन नही है और भारत के राष्ट्रीयत्व के लिये वे आवश्यक नहीं है। वे जैसे आये वैसे ही चले भी जायगे किन्तु हिन्दुस्तान तो वना रहेगा। किन्तु यदि हिन्दुत्व ही नष्ट हो गया तो भारत मे रह ही क्या जायगा? केवल एक भूमि। अतीत के श्रेष्ठत्व की केवल एक स्मृति।

भारत का साहित्य, कला, ऐतिहासिक इमारते आदि सब पर हिन्दुत्व की ही छाप है। यदि हिन्दू ही हिन्दुत्व को सुरक्षित नही रखेंगे तो कौन रखेगा! यदि भारत की सन्तान ही हिन्दुत्व को नही अपनाएगी तो हिन्दुत्व का रक्षण कौन करेगा। भारत ही भारत का रक्षण कर सकता है। भारत और हिन्दुत्व एक ही व्यक्तित्व है। ❀

उक्त विदेशी महिला के राष्ट्र हितैषी तथ्य पूर्ण विचार सार भारतीय शासन एवं विभिन्न धर्मावलम्वी जनता के लिये राष्ट्र हित में

नि संकोच निःसन्देह अत्यावश्यक स्वीकारणीय हैं क्योंकि किसी भी राष्ट्र का दृढ मूल इसी नीति मे निहित है। विश्व के राष्ट्र एवं विभिन्न धर्मी जनता पूर्वाग्रह त्याग नैतिक विवेकमयी कसौटी पर परखें तो उन्हें ईश्वर साक्षी में यह सत्य तत्थ्य स्वीकारना ही होगा कि २००० वर्ष से राज्याश्रय हीन तथा पक्षच्छिन्न रहकर भी स्वयं के सात्विक बल पर जो हिन्दुत्व विद्यमान है वह अवश्य ही महत्वपूर्ण शक्ति सम्पन्न पितृ महान है।

पृष्ट ८६ पैरा १ से

पृ० पंक्ति—इस्लाम में भारत की सिन्धु इजिप्त की "नील" ईराक की फरात, तुर्किस्तान की जेहू नदी विशेश आदरित है। मत्स्य पुराण में वर्णित आक्सस नदी ईरान के आर्मेनिया क्षेत्र मे प्रवाहित है।

प्रलय–शृष्टि–बाइबिल में है—प्रलय समय चालीस दिन और रात वर्षा होती रही ग्रीक इतिहास मे हैं कि ड्यू कॉलिथन नौ दिन–रात जल पर नौका में रहने बाद परनासस पर्वत पर उतरा था । अमेरिका, यूरोप, न्यू गिनी, मलाया, यूनान, चीन, आस्ट्रेलिया, बर्मा, अरब, वेविलन मिश्र में भी प्रलय कथा है । तथा ग्रीक, इजिप्त, यहूद, ईसाई, इस्लाम आदि में शृष्टि उत्पत्ती वर्णन वैदिक वर्णन से साम्य रखता है। बाईबिल में है—सर्वत्र अन्धकार था जल पर ईश्वर विराजमान था इत्यादि । वैदिक वर्णन है—सर्वत्र अन्धकार था जल में शेश शैया पर विष्णु भगवान थे इत्यादि साम्य स्पष्ट है।

पृ० ९२ पंक्ति १२ के बाद कुरान–पुराण, मख (यज्ञ स्थल)-मक्का मेदिन्या–मेदिनी (भूमि)–मदीना यज्ञ भू क्षेत्र देवनागरी, अंग्रेजी, अरबी, उर्दू के अंक लिखकर जरा हेर फेर कर देखें तो साम्यता दिखेगी । अरबी–उर्दू का वाम वाही लेखन का उद्गम संस्कृत प्रणाली है । संस्कृत में अंक लेखन "अंकानाम वामतो गति" सूत्रा–नुसार दांये से बाई ओर लिखने का नियम है । इसी अनुसार अरबी लेखन में अक्षर भी लिखने लगे।

पृ० ९३ पंक्ति १८ से—कुरान सूरा ४४ सूर-ए-अद्-"दुखान" आकाशीय धूंए की "यातना" पाना, यातना-दु:ख, दु:ख, सस्कृत शब्द है। गीता १२।३ सम "दु:ख" सुखक्षमीं । कुरान सूरा ११४ सूर तु "न्नासि", कुल अउजु वि रब्बिन्नासि, मलिकिन्नासि अिला-हिन्नासि। अर्थ है- शरण मांगता हूँ परवरदिगार की, लोगों के बाद-शाह की, लोगो के पूज्य की। ऋग्वेद १।१५०।२ व्यनिनस्य" विशेपता से प्रशंसित प्राण का निमित्त (ईश्वर)। दोनों मे भाव साम्यता स्पष्ट है । क्षेत्र भेद से उच्चारण दोश है । अतः सूर तु "न्नासि" शब्द संस्कृत है।

अल्लाहो अकवर याने "ईश्वर महान" ईश्वर महान यह स्तुति पण्डित पुजारी भक्त आदि प्राय वोलते रहते है किन्तु इसी शब्द को अरवी भाषा मे मन्दिर में वोलना धर्म द्रोह कहा जायगा। इसी तरह मजिद में ईश्वर-महान या महा देव नाम का नारा लगाना कुफ्र हो जायगा। क्योंकि भापा की अनभिज्ञता से-उत्पन्न निर्मूल भ्रम अल्पज्ञो को भटकाये हुए है । अन्यथा हिन्दू निराकार उपासना की तरह इस्लामी उपासना ध्यान प्रणाली ही है अस्सलामु अलैकुम याने तुम पर सलामति रहे हिन्दी वा संस्कृत मे मंगलं भूयात शुभ या भव: आदि है। महादेव शशिधर वा शशि शिशु अर्ध चद्र इस्लामी प्रतीक मजिदो पर शीर्शस्थ रहता है।

टर्की, मिश्र, ईरान, ईराक के इस्लाम पूर्व के रक्षित ग्रंथो से ज्ञात होगा कि इन क्षेत्रो मे भारतीय आर्यत्व था । धर्म की आड़ मे महत्वाकांक्षी सत्ता-लोभने भाइयो के भेद मे मदान्ध किया है।

पृ० ९७ पंक्ति १५ खाते से जोडे—सुखाया खून भी खाते थे ।

पृ० ९९ पं० ११ से—प्रभास में मूसल से उत्पन्न ऐरा नामक घांस से हुए परस्पर यादवीय विनाश के कारण अनेक यादव देशान्तर जा वसे एवं वहां के पूर्व निवासियो मे घुल मिल गए किन्तु ऐरा युद्ध की स्मृति में अपने आधीन स्थल को ऐराक नाम दिये हों जो ईराक कहा

जाने लगा हो । यादवेन्द्र श्याम के नाम पर श्याम और श्री का अपभ्र श सीरिया हो तो आश्चर्य नही । ग्रीक इतिहास मे है कि सीरिया, वेक्ट्रिया एवं खुरासान से यादवों ने युद्ध किये थे । यह यदु (यहूद) बहुल क्षेत्र है ।

पृ० १०२ पं० १ कुरान ने के बाद जोडे—दुनियां ११५ आखिरत ११५. शैतान ८८ फरिश्ता ८८ आस्मां ७ जमी ७ एव ज्ञात्र शब्द ८५० मर्तबा कहे हैं ।

पृ० १०८ पं० १२ यासीन सुनाते है से जोडें—मुस्लिमों में भी कई वर्ष पहले हिन्दुओं की तरह शव को दक्षिणोत्तरीय दफनाते थें । आज भी कभी कभी दक्षिणोत्तरीय दफनाते हैं । पैर दक्षिण की और एवं सिर उत्तर की ओर रखते है । प्रमाण विद्यमान है । तीजा–तीया, दसवाँ, बीसा, चालीसा एवं वार्षिकी करते है ।

पृ० १४४ पैरा ३ से—इस्लामी–जेहादी दबाव के कारण ईरान से पारसी भारत आये । ईसाइयों ने यूरोपीय टर्की छोडे । पन्द्रह लाख ईसाई उत्तर नाइजीरिया छोड़े । ई० १९१७ में तुर्कों ने चालीस लाख निवमों को मौत के घाट उतारे । जर्मन मोशे डायान ने साठ लाख यहूदी धर्म भेद में मार डाला । लेबनान में अरबी–मुस्लिम एव ईसाइयों में संघर्ष होता आ रहा है । अबी सीनिया और फिलिपाइन में भी संघर्ष है । भारत एवं साइप्रस का विभाजन हुआ ही है । पाकिस्तान के हिन्दू २२% थे अब ३% बचे है । बाँगला देश मे हिन्दू ३३ % थे अब १६ % बचे है । ई० १९८७ की हज यात्रा में ईरानी शियाओं ने मक्का में आन्दोलन छेड़ा था कई मारे गये । शिया सुन्नी द्वेश सर्वत्र हैं ।

पृ० १४३ पं० ३ में ४०००० से जोड़ें—शब्द १५३८२० है । अक्षर ४३२००० है । बहुत बड़ी संख्या में वेद मत्र लुप्त हो चुके है किन्तु जो उपलब्ध है वे भी महत्व पूर्ण हैं ।

पृ० १४४ पैरा ३ के बाद—ब्रम्हा द्वारा पुष्कर में किये गये विशाल यज्ञ की तरह कुरुक्षेत्र मे भी यज्ञ किया गया है। यहां भी यज्ञ क्षेत्र एक योजन मे था । पुष्कर कुण्ड की तरह "ब्रम्ह सर" पावन जल तीर्थ है जहां हजारो पुण्यार्थी श्नानार्थ जाते है।

पृष्ठ १७० पक्ति २१ के बाद—सामवेद भारतीय संगीत का मूल है तथा भारतीय संगीत केवल मनोरंजक ही नही है चिकित्सक भी है। यह क्षमता अन्यत्र नही है। कुछ उदाहरण—

भारतीय वैज्ञानिक वसु ने पेड़ पौधो पर संगीत का प्रभाव सिद्ध किया है। दीपक राग और मेघ मल्हार प्रसिद्ध है। क्रोधोन्मत्त नागराज सगीत पर मुग्ध हो जाता है। रणवाध कायर को भी उत्साही बनाता है। श्रुगी और शखनाद सिह को विचलित कर देता है। राग–जै जैवन्ती ऊष्णता शामक है शीतलता उत्पन्न करती है। दुर्गा–उत्साह वर्धक है। भैरव-वीर रस प्रधान है कफज कास नाशक है। भैरवी-उत्साह वर्धक है। जोगिया-करुण रस प्रधान है। विभास क्षय एव मस्तिष्क विकारो मे लाभप्रद है। टोड़ी–ऊष्णता वर्धक है। सारंग-पित्त शामक-शीत हर, स्वेदकारी है। आसावरी–सिर दर्द हर उत्साह प्रद है। धनाश्री–कफरोग नाशक बल वर्धक है। पूर्वी कांगड़ा–उदर वात हर है। सोरठ-श्रृगार-वीर। माड-श्रृगार विलास। दर्वारी कानडा आलस्य हर उत्साह वर्धक। कल्याण–बल उत्साह वर्धक। पीलू-बल वर्धक। विहाग एव केदार–निद्राप्रद। मालकौंस-म्लानता उदासी हर है। कालगड़ा, परज, सोहनी–हर्ष प्रद, वात कफ दोष के जीर्ण विकार दूर करने मे सहायक है।

पृ° ३४८ का पैरा २—चौहानी सोमानुसार वीरांगना लक्ष्मीबाई का जन्मोत्सर्ग "राजस्थानी धरा का गौरव है।"

निवेदन-

"राजस्थानी देन" तीन वर्ष पहले प्रकाशित होनी थी किन्तु पारिवारिक आकस्मिक जटिल समस्याओं एव गत वर्ष में निरन्तर आठ माह पत्नी की चिन्ताप्रद कठिन रूग्णतावश विलम्व हुआ है।

प्रथम कम्पोज हुआ ही था कि घर से तार आया, मुझे लौटना पड़ा अतः पृष्ठ २५५ तक कुछ प्रुफ दोश रहा है इसका मुझे खेद है। किन्तु विलम्व के कारण पुस्तक में उपयोगी साहित्य वृद्धि अवश्य हुई हैं।

हस्ताँकि पुनरांकन में शिक्षक बद्रीप्रसाद गोवला, पुत्री रोचना, पुत्र महेन्द्र एवं भतीजा मनोज एल० जोशी का सहयोग तथा मुद्रण में श्री निर्भय हाथरसी परिवार सह प्रेस कर्मियो का सहयोग उल्लेखनीय है।

सर्व श्री लक्ष्मणसिंह 'रसवन्त' बोरून्दा, कानदान कल्पित नागोर, मोतीसिंह महता, एवं शंभुसिंह 'मधु, उदयपुर,इतिहासज्ञ चतुर कोठारी कांकरोली व्याख्याता सत्येन जोशी जोधपुर, रावत सारस्वत जयपुर, वेदप्रकाश सुमन मुरादनगर, जगन्नाथ विश्व नागदा, भँवर जी भँवर गोविन्दपुरा जयपुर, पंवार राजस्थानी भोपाल, नागराज शर्मा पिलाणी, नागपुर के वै० पं० शिवकरण छागाणी, श्याम सुन्दर पोद्दार, रामेश्वर प्रसाद सिंघानिया, रामकृष्ण पोद्दार, पत्रकार आजाद साहू, कानपुर के हजारीमल बांठिया, हाथरस के प्रसिद्ध कवि सुधाकर, श्याम बाबू चिन्तन, सरस्वती महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ० रवीन्द्रमोहन शर्मा, पत्रकार मदनलाल आजाद ने 'राजस्थानी देन' को सराहा है। भारत प्रसिद्ध कवि निर्भय हाथरसी ने इसे पठनीय मननीय एवं संग्रहणीय कहा है।

दि ५।९।८७ को हाथरस मे अ. भा. सरस्वती साहित्य मच के तत्वावधान मे राष्ट्रीय युवा परिषद दिल्ली के केन्द्रीय सचिव, ब्रज समाचार साप्ताहिक के सर्वे सर्वा युवा कवि मागल्य मधुपुरी एव सहयोगी श्याम वावू चिन्तन के सयोजन मे

ब्रज कला केन्द्र–हाथरस में शाखा अ० भा० मा० सम्मेलन, डॉ० इन्दिरा शर्मा सेवा संस्थान एवं आजाद कमेटी ने डॉ० इदिरा शर्मा मार्ग स्थित इंदिरा शर्मा संस्थान द्वारा सचालित दुर्गाप्रसाद लोहिया वाचनालय मे वै० डॉ० रघुवीर प्रसाद त्रिवेदी (पाश्चात्य देशो मे आयुर्वेद के व्याख्याता) की अध्यक्षता में लेखक दिनेश मिश्र को सम्मानित किया है।

पुस्तक लेखन मे किसी भी ग्रन्थालय से सहायता नही ली है। व्यय भार की अधिकता तीन मर्तवा राजस्थान प्रवास कुछ वर्ष दैनिक आय मे क्षति, लेखन मे श्रम एवं दीर्घ समय लगा है। अतः पुस्तक मूल्य १००) रु० से अधिक रहना था किन्तु प्रचारार्थ ३०० पृष्ठ तक के लिये मू० ४०) रु० था किन्तु पृष्ठ ४०० से अधिक हुए है अतः मू० ५०) रु० रखा है। अगला संस्करण परिवर्धित होगा। सूचना एवं सुझाव आमंत्रित है।

प्रथम पक्ति : वायें से दाये – प्राचार्य शर्मा, आयुर्वेद के अन्तर राष्ट्रीय व्याख्याता द्विवेदी, लेखक दिनेश मिश्र; कवि डमरू, कवि आज़ाद.

हाथरस में लेखक का अभिनन्दन

पिछली पंक्ति- कवि चिन्तन, ३ सुधाकर, ६ मांगल्य मधुपुरी तथा अन्य

" राजस्थानी देन के दूसरे संस्करण मे [illegible] पृष्ठ अधिक रहेंगे "।

"संस्था प्रवास" साहित्य-मण्डल

श्री वै० डॉ० दिनेश मिश्र D.sc.-A. १९४६ पूर्व प्रधान चिकित्सक हिज हाइनेस श्री हरेन्द्रसिंह धर्मार्थ औषधालय कुशलगढ स्टेट (राज०) संस्थापक प्रमुख अचलचपुर नवयुग हिन्दी वाचनालय १४-८-४७ एवं गोदिया साहित्य मण्डल १९४७ राजस्थानी साहित्य संघ १९६२ राजस्थानी परीक्षा केन्द्र १९७४। अध्यक्ष आयुर्वेदिक तिब यूनानी मण्डल जिला प्रतिनिधी महाराष्ट्र प्रान्तीय वैद्य मण्डल नासिक। झासी बुन्देखण्ड आयुर्वेदिक कालेज मे गट प्रमुख थे। पाक युद्ध समय जन जागरण हेतु काव्य सेवा शासन को अर्पित किये हैं।
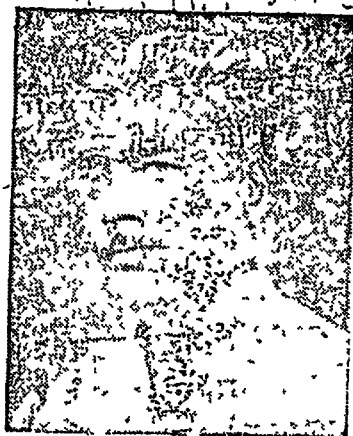
१९६० में अयोध्या संस्कृत विद्यालय ने गोवर्धन पीठाधीश जगदगुरु श्री शंकराचार्य द्वारा साहित्यालंकार एवं आयुर्वेद भूषण पदवी प्रदान की है। १९६४ में नागपुर साहित्कार संघ के कार्यकारी सदस्य मनोनीत हुए।

कलकत्ता आल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन ने जमशेदपुर-टाटा अधिवेशन १९८२ मे ताम्र पत्र एवं २४०१) रु० नगद प्रदान कर सम्मानित किया है। अ० भा० ब्रह्म कवि सम्मान सभा हाथरस ने विधायक प० सूर्यभान जी द्वारा शारदा मूर्ति, शाल, ५१) नगद एवं "मच श्री" मान पत्र से सम्मानित किया है। दिल्ली केन्द्रीय साहित्य अकादमी, बीकानेर राजस्थान भाषा साहित्य सगम अकादमी, उदय-पुर सात्यि सस्थान राजस्थान विद्यापीठ, दिल्ली एशिया इन्टर नेशनल. एवं री फेसीमेन्टो (इहरीन, कुवैत, सउदी अरवा हांग कांग, सिंगापुर, इसराइल लेबनान) आर्गनाइजेशन द्वारा प्रचारात्मक

प्रोत्साहन दिया गया है । पैतृक ज्ञानानुसार १९६२ से प्रकाशित राष्ट्र फलित सत्य सिद्ध हुआ है । इनके पिता स्व० प० घासीराम मिश्र सुधाकर पंचाग एवं मारवाड़ी विनोद भूषण उपन्यास (राजस्थान भाषा) के रचयिता है ।

दिनेश मिश्र की आगामी कृति (१) ज्योति किरण–फलित प्रधान (२) पुराणेतिहास-हिन्दू गौरव प्रकाशनीय है ।

स्व० श्री महादेवराव जी धोटे— साहित्य तण्डल एव विदर्भ साहित्य संघ तथा गोंदिया एज्युकेशन सोसायटी के अध्यक्ष थे । शिवानन्द इन्टरनेशनल पब्लिक स्कूल के संस्थापक एव स्पोंटिंग क्लव के पृष्ठ पोषक तथा अनेक सस्थाओं के एवं अभावग्रस्त जरूरतमन्दों के सहर्ष प्रमाद रहित परोपकारी निरभिमानी सहायक रहे हैं । वहुरगी उत्कृष्ट मुद्रण के लिये प्रषसित वसन्त फाइन आर्ट लीथो वर्क्स एवं व्ही० पी० एम० वर्कशाप के आप स्वामी थे । इसी फर्म द्वारा नगर मे धोटे सूतिका गृह एवं धोटे वन्धु साइंस कालेज स्थापित है ।

अधिवक्ता श्री कान्तीलाल जी अग्रवाल बी० एस. सी० एल एल बी.। साहित्य विशारद। नागपुर लॉ कालेज के छात्राध्यक्ष एवं गोदिया शारदा वाचनालय के अध्यक्ष, एवं गोरक्षण सभा, अग्रसेन भवन, बार असोसिएशन, मारवाड़ी युवक मण्डल के मंत्री तथा नगर परिपद में सदस्य रहे है। गोदिया लायन्स क्लब के संस्थापक सदस्य रेडक्रास सोसायटी के आजीवन सदस्य एव साहित्य मण्डल के लगनशील उपाध्यक्ष है।

श्री अमृतलाल जी (अम्बु भाई) सेठ आप गोदिया नगर परिपद मे १४ वर्ष शिक्षा विभाग के अध्यक्ष, साहित्य मण्डल में उपाध्यक्ष, कवि परिषद मे अध्यक्ष, भारतीय कलोपासक मन्दिर के प्रमुख संस्थापक एव अध्यक्ष रहे हैं। गोंदिया गुजराती राष्ट्रीय केलवणी मण्डल के ट्रस्टी, खादी भण्डार के आजीवन सदस्य एव भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर के भी आजीवन सदस्य है भारतीय जनता पार्टी के प्रान्तीय प्रतिनिधी तथा विश्व हिन्दू परिषद के जिला सयोजक है।

श्री प्रकाशचन्द्र जी धोटे—

आप साहित्य मण्डल के वर्तमान. अध्यक्ष एवंगो दिया एज्युकेशन सोसायटी के कोषाध्यक्ष है तथा शिवानन्द इन्टरनेशनल पब्लिक स्कूल के आप अध्यक्ष थे-।

वसन्त फाइन आर्ट लीथो वर्क्स एवं ब्री० पी० एम० वर्क शाप के वरिष्ठ सत्वाधिकारी हे ।
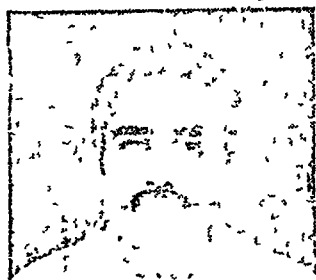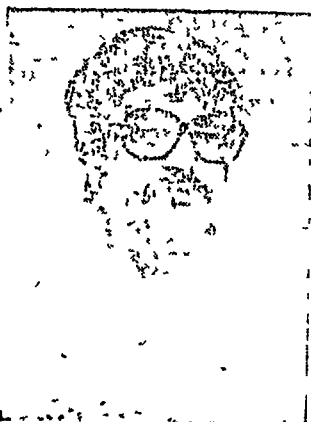
श्री प्रफुल्ल भाई पटेल

गोदिया नगर परिषद एवं गुजराती राष्ट्रीय केलवणी मण्डल के अध्यक्ष। साहित्य मण्डल एवं जेठामल माणिकलाल हाई स्कूल (समूह) के उपाध्यक्ष तथा कई कालेजो की सचालक गोदिया एज्युकेशन, सोसायटी के सचिव है। बीडी तमाकू तेंदू पत्ते का पैतृक उद्योग सी० जे० पटेल टोबेको प्रॉडक्ट्स नाम से प्रसिद्ध हे। सन् माइका की तरह कलात्मक मॉर्बल खनिज उद्योग इनका नतन अन्तर राष्ट्रीय उद्योग है।

इनके पिता स्वर्गीय श्री मनोहर भाई पटेल गोदिया विधायक चुनाव मे विश्व प्रसिद्ध व्यक्ति थे। १९३७ से नगर पालिका के सदस्य एवं ४६ से नगराध्यक्ष तथा ४२ से ६७ तक विधायक निरंतर चुने जाते रहे है। इनके प्रतिष्ठान के सहयोग से अर्थ वाणिज्य महाविद्यालय, क्षय रुग्णालय, इंजिनियरिंग कालेज स्थापित है।
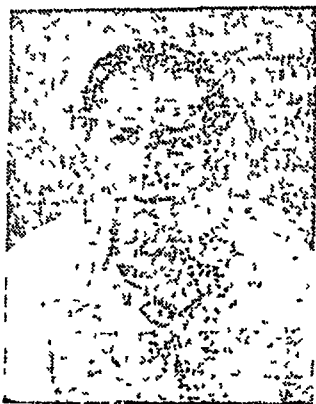
श्री नृसिंहदास जी गोयल

आप १९६१ से साहित्य मण्डल के प्रचार मंत्री है।

गोयल आभूषण भण्डार एवं विद्यायंत केन्द्र के स्वामी, क्रियाशील समाजसेवी तथा गोदिया सराफा असोसियेशन के अध्यक्ष है।

श्री अशोक कुमार जी एम, जैन-

आप साहित्य-मण्डल के वर्तमान कोषाध्यक्ष हैं एवं नगर के मानसेवी दण्डाधिकारी है। सुप्रसिद्ध महेन्द्र क्लाथ स्टोअर इनका व्यावसायिक प्रतिष्ठान है। गोंदिया लायन्स क्लब मे भी आप कोषाध्यक्ष है। नगर में लायन्स क्लब द्वारा नेत्र शिविर, स्वास्थ्य शिविर, पोलियो ट्रिपल वितरण, शैक्षणिक पुरस्कार, सांस्कृतिक प्रतियोगिता आदि के आयोजन होते रहते है।

(स्व० श्री सुखदेवजी अग्रवाल)

इन के पिता शालिग्रामजी नव गोंदिया के सस्थापकों मे है । लाख चपड़ा व्यवसाय ने लाखो का लाभ दिया किन्तु सम्पन्नता के मोह से हट कर स्वतन्त्रता आन्दोलन मे सन् १९२३ से १९४१ तक तीन मर्तबा मे २१ माह सजा जन जागरण हेतु वर्षा और धूप मे भी भोगे है । महीनों लगातार पदयात्रा करने से स्वास्थ्य एव आर्थिक हानि हुई । आप विधवा विवाह के समर्थक, मृतक भोज, कन्या विवाह मे सामुहिक भोज एव पर्दा प्रथा के विरोधी थे।

गोंदिया नगर पालिका मे सदस्य, उपाध्यक्ष, शिक्षाध्यक्ष भण्डारा जिला वोर्ड के अध्यक्ष, विधान परिषद के सदस्य, तहसील काग्रेस कमेटी नागपुर प्रदेश काग्रेस कमेटी, एव आल इडिया काग्रेस कमेटी मे आप पदासीन रहे है। आल इडिया कन्ट्रोल वोर्ड एवं लाख विकास वोर्ड के शासन द्वारा मनोनीत सदस्य रहे है। राँची एव कलकत्ता की लाख उद्योग समिती के कई वर्ष सदस्य रहे हैं । मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र लाख व्यापार वर्धिनी सभा के २० वर्ष अध्यक्ष रहे थे । नागपुर प्रदेश काग्रेस द्वारा प्रकाशित नव-सन्देश के सम्पादक थे । आपकी स्मृति मे उच्च माध्यमिक कन्या विद्यालय विद्यमान है।

साहित्य मण्डल–संस्था प्रवास

ई० १९५७ अगस्त २८ को संयोजक दिनेश मिश्र की अध्यक्षता में देवनागरी प्रधान भिन्न भाषायी साहित्य सेवी संस्था साहित्य–मण्डल की स्थापना हुई।

मण्डल के प्रथम अध्यक्ष कवि दिनेश मिश्र, उपाध्यक्ष पं० मगल प्रसाद तिवारी "सुमनेश", मत्री रमाकान्त जोशी "प्रलय", उपमंत्री व्यग कवि मदन पाण्डेय थे। पश्चात आकाशानन्द देशपाण्डे उपाध्यक्ष, एवं मत्री घनशाम गुप्त हुए। वसन्त फाईन आर्ट लीथो वर्क्स के स्वामी महादेवराव जी धोटे दि० १३–१०–६१ को अध्यक्ष, । उपाध्यक्ष दिनेश मिश्र एव अधिवक्ता कान्तिलाल अग्रवाल, मत्री रमाकान्त जोशी निर्वाचित हुए। पश्चात उपाध्यक्ष काव्य जगत के प्रिय अम्बू-भाई मेठ एव मत्री दिनेश मिश्र तथा चार विषय मे एम ए एम एड., साहित्यरत्न, आयुर्वेदरत्न, एवं पापी तन सन्यासी मन प्रकाशित उपन्यास के लेखक प्रेम सोनवाने उपमंत्री हुए, है। कोषाध्यक्ष थे रतन साहू, अव अशोक (ठोल्या) जैन है। आरम्भ से अद्यावत प्रचार मंत्री है नरसिहदास गोयल।

निरभिमानी व्यक्तित्व के धनी धोटे महादेवरावजी का दि० २१–२–८२ को स्वर्गवास हो जाने से उनके ज्येष्ठ पुत्र प्रकाश धोटे वर्तमान अध्यक्ष है। उपाध्यक्ष है प्रफुल्लभाई पटेल। व्यग कवि शशि तिवारी एवं कुंजविहारी जायसवाल निष्ठावान सहयोगी है।

मण्डल द्वारा दि० १३–८–८६ तक छोटे वड़े साहित्यिक आयोजन एक सौ छव्वीस हुए है। मण्डल के मंचपर स्थानीय अनेक कवियों की सख्या के अलावा क्षेत्रीय एव अखिल भारतीय एक सौ पन्द्रह कवि कवियत्री विभिन्न भाषा मे काव्य पाठ कर चुके है।

१९६० जुलाई मे महाराष्ट्र मे काव्य पाठ पर सेसर नियम लगा था, इसके विरोध मे दि० १३-८-६० को साहित्य मण्डल ने हुँकार भरी तथा-दिनेश मिश्र एवं रमाकान्त जोशी अनशन सत्याग्रह के लिए अग्रसर हुए तव स्थानीय नेता पन्नालाल दुबे विधायक ने मुख्यमत्री कण्णमवार से मिलकर सेसर नियम स्थगित करवाया था।

मण्डल के आयोजनो मे महिलाओ की अनुपस्थिती देख नागपुर की प्रतिष्ठित देश सेविका कवियत्री विद्यावती देवडिया की अध्यक्षता मे दि० १३-१०-६२ को अ०भा० कवियत्री सम्मेलन किया गया तव से महिला श्रोतिया भी आनेलगी।

चीनी युद्ध समय जन जागरण हेतु आठ भाषा देवनागरी मुद्रण में वीर काव्य संग्रह "सिह–गर्जना" पुस्तक १०४ पृष्ठ की १९६४ जनवरी मे प्रकाशित की गई।

स्वतंत्रता सग्राम के प्रणेता "महाराणा प्रताप" की शौर्य गाथा पर हिन्दी, मराठी, राजस्थानी भाषा मे काव्यात्मक ३६–३६ पृष्ठ की तीन पुस्तक भारत–सूर्य १९६५ जनवरी मे प्रकाशित की गई।

गद्य पद्य आठ भाषा देव नागरी मुद्रण मे पृष्ठ १०८ की "विश्व-वन्धु जवाहर" पुस्तक मई १९६५ मे प्रकाशित की गई।

राजस्थान जन सम्पर्क कार्यालय जयपुर ने हमारी कुछ पुस्तकें खरीद कर हमारा उत्साह वर्धन किया है।

पाक युद्ध समय १९६५ नवम्वर २२ को भण्डारा मे कलेक्टर महोदय की अध्यक्षता मे आयोजित सभा मे निमत्रण पर साहित्य-मण्डल की ओर से उपस्थित मंत्री दिनेश मिश्र ने अपने ओजस्वी काव्य पाठ द्वारा शहरो मे तथा सीमा पर सैनिको मे जन सगठन एवं जागृती हेतु स्वयं की काव्य सेवा राष्ट्र के लिये समर्पित किया है।

मण्डल द्वारा वाढ पीडित, सूखा पीडित, सुरक्षा कोष एव शिक्षा कोप एव शिक्षा सस्था को नगद ३४३२) रुपया एवं तीन ग्राम सुवर्ण दिया गया है।

मण्डल के सभी आयोजन आम जनता के लिये नि.शुल्क सुव्यव-स्थित हुए है।

कवि माणिक वर्मा हरदा, व्रजेश माधव जवलपुर, पवन दीवान राजिम, एवं मुजफ्फर नगर के कवि सत्यदेव गौतम भोपू को संकटा-वस्था में मण्डल ने रक्षण दिया है।

मण्डल के रौप्य महोत्सव के उपलक्ष में दानशील जनसेवी नगर पालिकाध्यक्ष हरिहर भाई पटेल की अध्यक्षता में दि० ३०।४।८३को भव्य आयोजन के समय मण्डल के उपाध्यक्ष कातिलाल एव प्रचार मन्त्री नरसिंहदास गोयल के हातों स्थानीय कवि पं० मंगल प्रसाद जी तिवारी "सुमनेश" व्यंगकवि मदन पाण्डेय, मणिभाई "मयूर", रमाकान्त जोशी "प्रलय", सैयद अहमद "इशरत" एव तुमसर के हरिप्रसाद जोशी "पराग" को मूल्यवान शाल, पेन सेट, स्टील गिलास, एवं श्री-फल सादर भेट प्रेपित कर सम्मानित किया गया है।

साहित्य मण्डल के विभिन्न कार्यो के प्रति सराहना, शुभकामना, वधाई, सुसम्मति एव सम्मान दाताओ मे से कुछ—

(१) सर्व श्री राष्ट्रपति जी दि० ३।८।६१ सचिव ज्ञानवती दरवार (२) २७।१।६६ सचिव डोगरा (३) उपराष्ट्रपति जी दि० २५।३।६४ (४) दि० १६।६।६५ सचिव फड़के (५) प्रधान मंत्री दि० २८।३।६४ सचिव प्राणनाथ साही। (६) प्रधान मत्री इन्दिरा जी, (स्वाक्षरी दि० २६।३।६६) (७) श्री प्रकाश राज्यपाल महाराष्ट्र (८) विजयलक्ष्मी पण्डित राज्यपाल महाराष्ट्र। (९) कण्णमवार मुख्यमंत्री महाराष्ट्र। (१०) वसन्तराव नाईक मुख्यमंत्री महाराष्ट्र। (११) सुखाडिया मुख्य-मत्री राजस्थान। (१२) अशोक महता अध्यक्ष योजना आयोग दिल्ली। (१३) महावीर त्यागी पुनर्वास मत्री दिल्ली। (१४) इतिहास सागर महाराज-कुमार डॉ० रघुवीरसिंह जी "सीतामऊ"। (१५) के० एम० मुंशी भारती भवन बम्बई (१६) यशपाल जैन दिल्ली (१७) कवि बच्चन दिल्ली (१८) सासद सेठ गोविन्ददास जबलपुर (१९) पं० वलदेव प्रसाद मिश्र राजनाद गाव (२०) अगरचन्द नाहटा वीका-नेर (२१) लक्ष्मीकुमारी चूड़ावत जयपुर। (२२) भरत व्यास वम्बई। (२३) देवराज दिनेश दिल्ली। (२४) रूपनारायण त्रिपाठी जौनपुर। (२५) ब्रजेन्द्र अवस्थी बदायू। (२६) सूण्ड फैजाबादी आजमगढ। (२७) चन्द्रकान्त पटेल वड़ोदा प्रेमानन्द साहित्य सभा। (२८) वरसाने

लाल चतुर्वेदी मथुरा। (२६) सरस्वती कुमार 'दीपक' वम्बई (३०) विमलेश झूंझनू। (३१) वेद प्रकाश सुमन मुरादनगर। (३२) देवकर्ण सिंह राठोड उदयपुर। (३३) उदयप्रतापसिंह करहल। (३४) विकल साकेती अकवरपुर। (३५) त्रिलोक गोयल अजमेर। (३६) निर्भय हाथरसी। (३७) मुकुटविहारी सरोज ग्वालियर। (३८) अयाज झांसवी। (३६) वाल कवि वैरागी मनासा। (४०) वशीलाल बेकारी हमीर गढ। (४१) नरेन्द्र मिश्र चित्तौड। (४२) जगन्नाथ विश्व नागदा (४३) वकट विहारी पागल जयपुर। (४४) गिरिवरसिंह भवर बेटमा। (४५) पत्नी रत्नादेवी सह कवि सत्यदेव भोपू मुजफ्फरनगर। (४६) माणिक वर्मा हरदा। (४७) व्रजेश माधव जवलपुर। (४८) विद्रोही भोपाल। (४६) महाराष्ट्र कवि यशवत पूना। (५०) ए. आर. अनिल देशपाण्डे दिल्ली। (५१) आत्मप्रकाश शुक्ल (५२) भंवरजी हाडा (५३) वलवन्त खापर्डे अमरावती। (५४) राम शेवालकर वणी। (५५) रामजीराव मोट धरे नागपुर। (५६) सौ० मनोरमाताई पाट-णकर दुर्ग। (५७) याद लखनवी। (५८) वीनारानी नाज वम्बई। (५६) श्रीमती वीणादेवी नेपाली वम्बई। (६०) सावित्री शुल्क निशा इटारसी। (६१) रश्मि कश्यप ग्वालियर। (६२) शशि प्रभा माथुर वदनावर। (६३) सिटिजन सेन्ट्रल कौसिल दिल्ली। (६४) केन्द्रीय साहित्य अकादमी दिल्ली। (६५) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग। (६६) प्रेमानन्द साहित्य सभा वडोदा। (६७) काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी। (६८) राजस्थानी भाषा सा० स० अकादमी बीकानेर (६६) साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर। (७०) रूपायन सस्थान वोरून्दा (७१) विदर्भ साहित्य सघ नागपुर। (७२) राष्ट्र भाषा प्रचार समिती वर्धा तथा अन्य अनेक।

१९६६ मे मण्डल के मचपर प्रसिद्ध शायर (७३) आनन्दमोहन गुलजार देहलवी, (७४) जगन्नाथ आजाद देहलवी एवं वम्बई के

स्वास्थ्य मंत्री रफीक झकरिया आघाड़ी ने साहित्य मण्डल द्वारा विभिन्न भाषाओं का समादर करने की नीति को भावनात्मक एकता के लिये अनुकरणीय श्रेष्ठ प्रयास कहा है।

१९६९ में सरस्वती पुत्र आशु कवि निर्भय हाथरसी ने कहा था कि–हिन्दी कवियों के लिये महाराष्ट्र का द्वार साहित्य मण्डल ने खोला है।

मण्डल ने प्रायः अप्रसिद्ध किन्तु श्रेष्ठतम् साहित्यिक प्रतिभाओं को प्राथमिकता दी है।

मण्डल के प्रयासों का परिणाम है कि कव्वालियों के वदले यत्र तत्र अधिकाधिक कवि सम्मेलन होने लगे हैं।

स्थानीय वसन्त फाइन आर्ट लीथो प्रेस, प्रसिद्ध बीडी निर्माता नगराध्यक्ष एवं विधायक स्व० मनोहर भाई पटेल (सी० जे० पटेल एण्ड कं०) तथा बीड़ी निर्माता दीनूभाई पटेल देवेन्द्र ट्रेडिंग क० एवं साहित्य प्रेमी अनेक नागरिकों ने मण्डल को सदैव अपनत्वमय मनः पूर्वक सहयोग दिया है। समाचार पत्र–नव भारत टाइम्स बम्बई, साप्ताहिक हिन्दुस्तान दिल्ली, राष्ट्र दूत जयपुर, साहित्य सन्देश आगरा, नव भारत युग धर्म, नव प्रभात, राष्ट्र दूत, तरुणभारत नागपुर, महाकौशल, नईदुनिया रायपुर, लाडेसर, सरवर, म्हारोदेश, नैणसी कलकत्ता, जलम भोम, बीकानेर, कल्पना, जागृत राजस्थानी, अग्रवाल समाज हैदराबाद, राजस्थानी वीर पूना, अग्रोहा दिल्ली, ओलमों रतनगढ, सत्यदर्शन दिव्य दृष्टि तुमसर, स्थानीय भण्डारा दर्शन, प्रहरी, रूद्रावतार, देश, कशिश, भवानी टाइम्स, लहरी प्रवाह आदि एवं स्थानीय छवि गृह राजक्ष्मी तथा प्रभात टॉकीज ने मण्डल के कार्यों को प्रसिद्धी प्रदान कर सदैव सहयोग दिया है तदर्थ इन सभी के प्रति एवं ज्ञात अज्ञात विस्मृत समस्त सहयोगी सज्जनो के प्रति मण्डल कृतज्ञ है।

साहित्य मण्डल के अलावा दि० १५।६।८५ तक गोदिया में अन्य अडतीस सस्थाए वनी किन्तु अकवर वंश की तरह अधिकाश चुप पडी हैं कब्र मे हूँ व हां कुछ भी नही। इन्ही मे किन्ही भ्रष्टालिप्त नीचात्माओ ने मण्डल के कार्यो मे सदैव बाधा पहुँचाने हेतु सदल वल निरन्तर कुटिल यत्न तन्मयता पूर्वक किये है यथा–मण्डल द्वारा निमन्त्रित कवियो को भीत करना भ्रमित करना, अपहृत करना, उनके प्रति एव आयोजन के प्रति तथा सस्था के प्रति नगर मे दूषित प्रचार कर जनमानस विकृत करना ताकि द्रव्य सचय मे बाधा पहुँचे, श्रोताओ की उपस्थिती न्यून हो अच्छे कवि एव सफल हो रहा आयोजन विकृत मानस द्वारा हूट किया जाना, साथियो से वार्तालाप या साथियों सह उठ चलना ताकि काव्य प्रभाव भग हो। सभा स्थल पर एव मच पर प्राय. महिलाओ की ओर पत्थर फिकवाने की नीचता भी वर्ण सकरो ने की है ताकि पथराव के भय से भगदड़ हो एव सफल हो रहा आयोजन असफल हो। किन्तु नि स्वार्थ साहित्य सेवा मे माँ–शारदा की वास्तविक अनुकम्पा से ही समस्त आयोजन अद्यावत सफल हुए है। फिर भी मण्डल के सफल कवि एवं कार्यो पर पतित घृणात्माओ ने मुख नालिका से निन्दा रूपी भ्रष्टा उगलना, माहिल वनकर मण्डल के सहयोगी एव सदस्यो मे द्वेश फैलाना परस्पर लाच्छन लगाकर फूट डालना आयोजक एव कवियत्रियो को चरित्रहीन पतित प्रचारित करना, किसी कवि को चोर वतलाए, किसी कवि को बोगस वण्डल आदि इसी तरह अन्य कवियो पर भी दोष लगाए गए है। सहयोगियो मे परस्पर जाति, प्रान्त, भाषा, ऊच नीच गरीव अमीर आदि के कुटिल वाक्प्रहारो से द्वेशोत्पन्न कर विभाजित करने मे श्रमशील रहना इत्यादि अनेक प्रकार के आक्रमण हिन्दी के कुछ स्वयं भू पण्डो द्वारा मण्डल के कार्य एव कार्यकर्ताओ पर किये जाते रहे हैं। मण्डल ने आक्रमण नही किया। वचाव मे प्रतिकार अनुचित नही है।

इन की तरह मण्डल में चन्दा हड़प, अवरोधक, विध्वंसक प्रति द्वन्दी ईर्षा वृत्ति कभी नही रही। प्रतिस्पर्धी भावना रही है, औरों में भी प्रतिस्पर्धी भावना रहती तो गोंदिया नगर का साहित्यिक वट वृक्ष विकसित रहा होता। सेवा भाव के कारण जन सहयोग के वलपर ही साहित्य-मण्डल आज भी क्रियाशील है तथा दि० २८।८।८७ को ३० वें सोपानपर पहुँचा है क्योकि यह संस्था सभी साहित्य प्रेमियों की है।

हां-हम कुछ व्यक्ति इस संस्थापर कुण्डली इसीलिये लगाए हैं अर्थात चिपके है कि अन्य अड़तीस संस्थाओं जैसी अवदशा इसकी भी न हो। पंजाधिकार के कारण १९५७ से अन्धड़ों में भी मण्डल अग्रसर रहा है अन्यथा १९६१ मे इसे समाप्त करने दुरात्माओ ने आसुरीय उछलकूद भरपूर की है।

हिन्दी प्रचार,के नाम पर भाषायी, जातीय, प्रान्तीय एवं दलगत दलदल मे मनोविकार से ग्रस्त मित्थ्या साहित्योन्माद में विक्षिप्त इन विषैले छुतहा-सक्रामक कीटाणुओं के कारण हिन्दी की एक हानि अवश्य हुई है कि मण्डल द्वारा ट्रष्टीय मुद्रणालय की स्थापता एवं त्रिवेणी नामक त्रिभाषा मासिक पत्रिका का देवनागरी मे प्रकाशन नही हो सका। ऐसी है छद्मचर तुरही वादी हिन्दी सेवको की घातक हिन्दी सेवा।हिन्दी भवन भी वनने से रह गया।

कवि श्रेष्ठ निराला को आकर्षक रूप से "काला कौआ" कहने वाले शृगाल समूह के सुर मे सुर मिलानेवाले नानारूप कुरूप मायावी असुरो को न्याय प्रिय जन मानस फटी पुरानी पादुकाओं की विद्रय भव्य माला सम्मान मे अर्पित कर धिक्कारना च हे तो धिक्कारे किन्तु साहित्य मण्डल साहित्य-सेवा में निरन्तर सलग्न रहे तदर्थ 'साहित्य प्रेमियों से सदैव हार्दिक शारिरिक आर्थिक उदार सहयोग की अभिलाषा है। साहित्य-मण्डल, साहित्य सेवियो का है।

सत्यमेव जयते

मानवता का कृपाकांक्षी
साहित्य मण्डल, गोदिया

साहित्य मण्डल गोंदिया द्वारा प्रकाशित–

हिन्दी, मराठी–पजाबी, गुजराती, उर्दू, राजस्थानी, -
भाषाओ का देवनागरी में मुद्रित राष्ट्रीय कविता संग्रह ।

[१] "सिंह गर्जना" पृ० १०५ मू० १–५० संम्पादक–

हिन्दी, मराठी, राजस्थानी, बंगला, सिन्धी, पंजाबी,
उर्दू आदि भाषाओं का देवनागरी में मुद्रित गद्य पद्य संग्रह

[२] "विश्व वन्धु जवाहर" पृ० १०८ मू० १–० सम्पादक-

महाराणा प्रताप का संक्षिप्त काव्य चित्र पृ ३६ मू. ०-७५ ले

[३] हिन्दी भाषा [४] राजस्थानी भाषा [५] मराठी भाषा

[६] "राजस्थानी–देन" इतिहास पृ० ३९८ मू० ४०) रु०

[७] "प्रतापादित्य"–राजस्थानी ४३१ पद्य, मू० ११) रु०

प्रकाशनीय–

"हिन्दू गौरव" "हिन्दू गौरवांश झलक" पुराणेतिहास
"ज्योति–किरण" भृगु सूत्रात्मक फलित प्रधान ।

प्राप्ति–स्थान

[१] साहित्य—मण्डल
सन्तोषी चौक, मु० पो० गोंदिया (महाराष्ट्र) ४४१६

[२] चम्पालाल रांका एण्ड कं०
धामाणी मार्केट-चौड़ा रास्ता
मु. पो. जि. जयपुर (राजस्थान)

[३] भारतीय पुस्तक
नारायण भवन–बेगम
मु. पो जि. हैदराबाद (

[४] सत्येन–पुस्तक भण्डार
चौपाटी बजार
मु. पो. नाथद्वारा, जि. उदयपुर (राज०)

[५] साहित्य नि
३७/४० शिवाला रोड़, गिलिस
कानपुर-२०